



## रूसी साहित्य का इतिहास



# रूसी साहित्य का इतिहास

लेखक

केसरी नारायण शुक्ल

एम० ए० डी० लिट्

सखनऊ विश्वविद्यालय

सखनऊ

हिन्दी समिति, सूचना विभाग

उत्तर प्रदेश

सखनऊ



# रूसी साहित्य का इतिहास

लेखक  
केसरी नारायण शुक्ल  
एम० ए० डा० डि०  
ससमरु बिद्विद्यालय  
ससमरु

हिन्दी समिति, मूचना विनाद  
उत्तर प्रदेश  
ससमरु

प्रथम संस्करण  
१९६३

मूल्य  
साठ रुपये

मुद्रक  
भावा प्रेस प्राइवट लि०, इलाहाबाद

## प्रकाशकीय

भारत की ही प्रमुख भाषाओं के साहित्य का नहीं बल्कि एशिया और यूरोप की भी उन्नत भाषाओं के साहित्य का इतिहास प्रकाशित करना हिन्दी-समिति की प्रकाशन-योजना का अंग रहा है। तदनुसार हम अभी तक मध्ययुग, बीसवा शताब्दी तथा उर्दू भाषाओं के साहित्य का इतिहास प्रकाशित कर चुके हैं और कन्नड़, तेलगू आदि का इतिहास लिखाया जा रहा है। इसी तरह अंग्रेजी तथा फ्रेंच साहित्य सम्बन्धी ग्रन्थ भी समिति से प्रकाशित हो चुके हैं। उसी परम्परा में अब यह स्त्री साहित्य का इतिहास पाठक के सामने प्रस्तुत है।

जैसा कि लेखक ने लिखा है, "स्त्री साहित्य के इतिहास को स्त्री जनता के स्वातंत्र्य-आंदोलन तथा धर्म के इतिहास से अलग नहीं किया जा सकता," वहीं के जनान्दोलन तथा जमसतप की विभिन्न स्मृतियों और कासा के आचार पर ही प्रायः स्त्री साहित्य का मुम-विमोचन किया जाता है। तदनुसार वहाँ की साहित्यिक प्रवृत्ति और विचारों, मन्त्रियों, अनुभवों आदि के इतिहास का संक्षिप्त विवेचन इस पुस्तक में किया गया है, जो सुवाच और सरल होने के साथ साथ मनोरंजक भी है। लेखक ने मास्को विदेशविद्यालय में रह कर स्त्री भाषा और साहित्य का अध्ययन किया और अनेक विद्वानों तथा साहित्यकारों के सम्पर्क में रह कर बहुमूल्य जानकारी प्राप्त की। आशा है कि उनकी इस कृति से हिन्दी के पाठक विशेष रूप से लाभान्वित हो सकेंगे और आज के आर्थिक तथा वैज्ञानिक क्षेत्र में स्त्री ने जो विकास उपलब्धि की है, उसका रहस्य समझने में भी उन्हें इससे सहायता मिलेगी।

ठाकुरप्रसाद सिंह  
अध्यक्ष, हिन्दी समिति





## निवेदन

बिम्ब-साहित्य में इसी साहित्य का अपना विशिष्ट और महत्वपूर्ण स्थान है। उसकी महान् मानवतावादी एवं जनवादी परम्पराएँ तथा उसका अत्याप-विराधी संदर्पणीय एवं प्रगतिशील रूप इस देश की सीमा का अतिक्रमण कर सारे बिम्ब की जनता को प्रेरणा और प्रोत्साहन देता रहा है। उसके अत्यन्त कलाकार पुरिजन, सेरमन्तोब गोयल सुर्सेब सोमन्तोय इस्तयेम्की बलब आदि बिम्ब-साहित्य की महान् विभूति बन गये और चेतना के विकास-यम के प्रकाश-नेत्रों के रूप में उनका धीरे-धीरे भी अक्षुण्ण है।

इसी साहित्य की इन परम्पराओं की परिणति अक्टूबर की महान् समाजवादी क्रान्ति है जिसमें इस में सोवियत शासन की स्थापना की और सोवियत साहित्य की गीत डाकी जिसके मुख्य सूत्रधार मैक्सिम गोर्की और मायाकोव्स्की हैं। इसी साहित्य के समान ही सोवियत साहित्य भी भी सम्प्राप्तियाँ नमन्य नहीं हैं। सोवियत साहित्य में इस की चिन्तनधारा ही बरक की। इसने समाजवादी विचारधारा और व्यवस्था को जनता के बीच घाह बनाकर उसकी अङ्ग जनता के हृदय में जमा दी। देश की सम्पुष्टि और सुरक्षा की भावना भी सोवियत साहित्यकारों द्वारा पुष्ट हुई। सोवियत संघ की प्रत्येक आति की जातीयता एवं विशिष्ट जातीय परम्पराओं का सम्मान करते हुए सोवियत साहित्य ने समाजवादी समाज के निर्माण का व्यापक उदार एवं उच्च सत्य सारे बंग के सामन रखकर नए की सारी जनता को स्वानीय नहीं बरन् व्यापक देश-जक्ति के सूत्र में पिरोकर एक कर दिया। फलतः सोवियत साहित्य और सोवियत साहित्य का रूप ही जातीय है, लेकिन उसका भाष्य समाजवादी है।

सोवियत-साहित्य ने इसी समाजवादी व्यवस्था की स्थापना का अपना अक्षय माना। समाजवादी परम्परा को विकसित करते हुए सोवियत

साहित्यकारों ने समाजवाद की प्रतिष्ठा में जो भीजें सहायक थीं उनका स्वागत किया और जो इसकी विरोधी अथवा प्रतिभूष थीं उन सब की भूलना की। इस प्रकार उनके समार्षवाद में समाजवादी समार्षवाद की संज्ञा प्राप्त की। फलतः साहित्य का जनता की चित्तवृत्तियों के साथ तादात्म्य हुआ वह पूर्वतया जनारम्भ बना और वह जनता को प्रेरणा देता हुआ उसका परिचासन करने लगा। देश के पिछड़ेपन को दूर करने के लिए, उसे उन्नत और विकसित करने के लिए अिठनी पंचवर्षीय योजनाएँ देश में जमी सोवियत साहित्य ने उन सबको त्रादात्मक एवं वसात्मक रूप में जनता के सामने प्रस्तुत कर उनका अत्यन्त प्राह्य बनाकर उन्हें जनता के जीवन और व्यक्तित्व का अमिन्न अंग बना दिया। फलतः ये योजनाएँ जनता के जीवन का स्वयं और प्रयत्न दोनों बन गयीं। परिणाम यह हुआ कि जनता में परिश्रम के प्रति नये उत्साहपूर्वक दृष्टिकोण का प्रादुर्भाव हुआ और जनता मून-वसीला एक कर पंचवर्षीय योजनाओं को पाँच बर्षों में नहीं बरन उमसे बहुत कम समय में पूरा करने लगी और देश प्रगति के लम्बे कदम बढ़ाता हुआ विश्व में अग्यतम प्रगतिशील राष्ट्रों की पंक्ति में प्रतिष्ठित हो गया।

देश-निर्माण का यह कार्य करते हुए सोवियत-साहित्य देश के सजग प्रहरी और रक्षक के रूप में भी हमारे सामने आया। अन्तरिक्ष में क्रासिस्म के बादलों के चिरने के साथ ही सोवियत-साहित्य ने जनता का बेतावनी ही और जब देश पर फानिस्टो का आक्रमण हुआ तो इस साहित्य ने जनता को प्राण-पण से हमें विकल्प कर देने के लिए प्रतिरोध उत्साह बलिदान आदि की आक्रमपूर्ण भावनाओं में भर दिया। मुञ्जकारीय साहित्य जनता के अमर बलिदान का अमरमात्रा हुआ अंग है। फलतः आक्रमण विफल हुआ और जनता विकसिनी हुई। इस विजय का अय सावियत साहित्य को ही है अिनने जनता में अपनी अनिवाय विजय का अद्विम विरवात भर दिया।

मुञ्ज के बाद जब जनता फिर म मुञ्ज म लूट और उर्ज देस क पुर्ननिर्माण में लगी तो सावियत-साहित्य पीछ न रहा। उमने नये बादरों

नयी व्यवस्था और नये प्रयत्नों का आभोग प्रदान किया। उसमें देश को और अधिक सुतंत्रित ब्रह्म और सशक्त बना दिया और ऐसा उत्साह मचा, जनबल परिधम की ऐसी भावना भरी कि बाबू लोबियत संघ ज्ञान-विज्ञान के किसी क्षेत्र में ससार के किसी भी देश से पीछे नहीं है।

इसी साहित्य और साक्षियत-साहित्य इस प्रकार देश और जनता के संघर्ष विकास और सुम्प्राप्ति की कथा कह रहा है जो जितनी मनोरंजक है उतनी ही हम सब के लिए महत्वपूर्ण भी है। इसी जनता की इसी कथा की अत्यन्त संक्षिप्त रूप देना प्रस्तुत पुस्तक के पृष्ठों में हिन्दी के पाठकों के लिए संकित की गयी है। प्रस्तुत पुस्तक इसी भाषा में प्राप्त और इसी विद्वानों द्वारा लिखित सामग्री और ग्रन्थों पर आधारित है। अपने साहित्य को इसी जनता ने जिस रूप में ग्रहण किया है और जैसा जाना है उसको इसी रूप में प्रस्तुत करने का यत्नायक प्रयत्न किया गया है। इसी-साहित्य अत्यन्त विद्याक एवं व्यापक है और प्रस्तुत लेखक का इसी भाषा और साहित्य का ज्ञान अत्यल्प है। लेखक अपनी सीमाओं से बच्ची तरह परिचित है। प्रस्तुत पुस्तक अत्यन्त विनम्र प्रयास है और इसके लिए किसी प्रकार की मौकिकता का दावा नहीं किया जा रहा है।

प्रस्तुत पुस्तक 'इसी साहित्य और 'साक्षियत-साहित्य' में उप-विभाजित है। लोबियत साहित्य का अंग इसी साहित्य की अपेक्षा कुछ अधिक विस्तृत हो गया है। यह सकारण है इसी साहित्य के संघर्ष में तो कम-से-कम एक या दो पुस्तकें हिन्दी में हैं किन्तु साक्षियत-साहित्य पर तो जहाँ तक लेखक की सूचना है हिन्दी में एक भी पुस्तक नहीं है। फिर लोबियत-साहित्य समकालीन साहित्य है जिसकी कर्तृ सम्स्याएँ हैं जो हिन्दी साहित्य की समस्याओं से काफी समानता रखती हैं। इसलिए यह अंग कुछ अधिक विस्तार से लिखा गया है। इनीलिए यह अर्थपूर्ण कुछ साम्य भी हो जाता है।

पर यहाँ उन चीजों का भी अत्यन्त संक्षिप्त उल्लेख कर देना आवश्यक है जिनकी इस पुस्तक में कमी या अभाव है। प्रस्तुत पुस्तक केवल इसी और लोबियत-साहित्य का इतिहास है। विस्तारमय से इसमें लोबियत

संघ में रहने वाली कुछटी जातियों का साहित्य का इतिहास नहीं दिया गया है, यद्यपि वह भी बड़ा मनोरंजक और महत्वपूर्ण है। विस्तारबद्ध से कवी-सहित्य की भी बहुत-सी कृतियों का कथानक नहीं दिया जा सका केवल उनका सांकेतिक परिचय ही प्रस्तुत किया गया है। इसी प्रकार कृतियों की भाषा टीबीयत विशेषताओं का अधिक विचार नहीं किया गया है क्योंकि क्वी भाषा के ज्ञान के बिना अपिक्रम पाठकों के लिए ऐसा विस्तरेष्य निरर्थक और अशुभकर ही होता है। इसी से क्वी ने अनूदित अंश ही दिये गये हैं किन्तु क्वी में उद्धरण नहीं प्रस्तुत किये गये हैं। क्वी-वही क्वी नामों का अनुवाद कर दिया गया है किन्तु वहाँ उनका हिन्दी में कोई मतलब न निकलता वहाँ उनको ज्यों-का-त्यों लिख दिया गया है।

क्वी भाषा में स्वरापाठ लिख नहीं है बल्कि अक्षर अक्षर है। यद्यपि इस संबंध में लेखक ने कई क्वी मित्रों से सहायता ली और उन्होंने सह्य सहायता दी फिर भी बहुत संभव है कि क्वी नामों के प्रति स्थान में बर्ष-विद्यमान और स्वरापाठ की गलतियाँ रह गयी हों। इसका दोष क्वी मित्रों पर न होकर, लेखक पर है।

भास्की विश्वविद्यालय में अध्ययन और अध्यापन करते हुए, प्रस्तुत पुस्तक की रचना अथक के मास्को के इस आश्रमकाल के बीच हुई। लेखक को मास्को विश्व-विद्यालय में क्वी भाषा और क्वी साहित्य पर क्वी विद्वानों के लेखक मुने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मास्को ही अध्ययन क्वी बिना से भी इस संबंध में सहायता मिली और परामर्श प्राप्त हुआ।

इस अवसर पर अपनी अध्यापिका श्रीमती ईस्वरा मस्किनि-विद्यानाम्ना पुष्पिता का मैं बड़ी यत्ना और आदर से स्मरण करता हूँ किन्तु मैं मुने क्वी की गिफत ली और मुने मास्को विश्व-विद्यालय में क्वी भाषा और साहित्य पर लेखक मुने को प्रोत्साहित किया। मैं मास्को विश्व-विद्यालय के विदेशियों के लिए क्वी विभाग और उनकी अध्यापिका श्रीमती गलीना इयनाम्ना र्दकावा का भी अत्यंत आभारी हूँ किन्तु मैं क्वी भाषा के अध्ययन में यही हर प्रकार की सहायता की।

मास्को विश्वविद्यालय के मेरे विद्यार्थी जीवन के साथी मीखा तिमर्सेका और मनातोकी जेरेब भी मेरे बहुत बड़े सहायक रहे हैं और दोनों मुझे बराबर प्रोत्साहित करते रहे। मैं इन्हें कभी नहीं भूल सकता।

कभी मामों के प्रतिस्खलन में रईसा किरिस्त्वाबा ने मेरी बड़ी सहायता ही और प्रस्तुत इतिहास-रत्न में कई परामर्श दिये। उनका सहयोग का मूल्यवान् रहा है।

इस समय मैं पमेरान्स्केव परिवार को नहीं भूल सकता जिनके कारण मेरा मास्को का आवास बड़ा ही मधुर और सफल रहा। प्रोफेसर मेरान्स्केव बराबर मत्परामर्श देते रहे। धीमती पमेरान्स्केवा (जिनको हम सब भारतीय मामा कहते थे) हमारी मुद्रिया का बराबर ब्याज रखती थीं। और नताशा पमेरान्स्केवा से हर कार्य में हम लोगों का हाथ बढ़ाया। प्रस्तुत पुस्तक के लिए उन्होंने कुछ सामग्री भी एकत्रित की और उत्साहपूर्ण भी किया। उनका योगदान मेरे लिए बड़ा बहुमूल्य रहा है।

×

×

×

पुस्तक करीब-करीब सात भर पहले तैयार हो गयी थी। सितम्बर १९६० में जब मैं एक माम के लिए मास्को से भारत आया तो सखमऊ में बसप्लावन में इसकी पाण्डुलिपि डूब गयी। पुस्तक एक प्रकार से मृत बोधारा तैयार करनी पड़ी। यह कुछ कठिन काम था।

किन्तु हमने भी कठिन काम इस डूबी भूमी और मिटी पाण्डुलिपि से प्रेस-बायी तैयार करना था और जिसे छापनऊ विश्वविद्यालय के मेरे सहपाठी डाक्टर प्रताप नारायण टंडन ने बड़े उत्साह से नपत्र किया। मैं दा-बीच-बीच में विद्यार्थी भी हो जाता था, किन्तु वे बराबर उत्साह की शक्ति बने काम में लगे रहे और उसे पूरा करके ही छाड़ा। यह पुस्तक जो छप सही उत्साह पूरा श्रेय उन्हीं को है।

संघ में रहने वाली दूसरी जातियों के साहित्य का इतिहास नहीं दिया गया है, यद्यपि यह भी बड़ा मनोरंजक और महत्त्वपूर्ण है। विस्तारभय से कहीं-स हिंदूय की भी बहुत-सी इतियाँ का कथानक नहीं दिया जा सका केवल उनका सांकेतिक परिचय ही प्रस्तुत किया गया है। इसी प्रकार कृतियों की भाषा सौंदर्यमय विनोयताओं का अधिक विचार नहीं किया गया है क्योंकि कहीं भाषा के ज्ञान के बिना अधिकतर पाठकों के लिए ऐसा विरह्यण निरर्थक और अव्यक्त ही होगा है। इसी से कहीं स अनूदित अंश तो दिये गये हैं किन्तु कहीं में उद्धरण नहीं प्रस्तुत किये गये हैं। कहीं-कहीं कहीं नामों का अनुवाद कर दिया गया है किन्तु जहाँ उनका हिन्दी में कोई मतलब न निकलता वहाँ उनको ज्यों-का-त्यों लिख दिया गया है।

कहीं भाषा में स्वच्छता विवर नहीं है वरन् अत्यन्त अंधक है। यद्यपि इस संबंध में लेखक ने कई कहीं मित्रों से सहायता ली और उन्होने सपूर्ण सहायता ही फिर भी बहुत संभव है कि कहीं नामों के प्रति केवल में बर्न-विन्यास और स्वच्छता की गलतियाँ रह गयी हों। इसका दोष कहीं मित्रों पर न होकर, लेखक पर है।

मास्को विश्वविद्यालय में अध्ययन और अध्यापन करते हुए, प्रस्तुत पुस्तक की रचना लेखक के मास्को के इस आवासशाल के बीच हुई। लेखक को मास्को विश्व-विद्यालय में कहीं भाषा और कहीं साहित्य पर कहीं विद्वानों के संचर सुनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ साथ ही अन्य कहीं मित्रों से भी इस संबंध में सहायता मिली और परामर्श प्राप्त हुआ।

इस अवसर पर अपनी अध्यापिका श्रीमती ईस्टरा मस्विमिस्कि-यानोव्ना पुल्लिना-का मैं बड़ी धन्य और आदर से स्मरण करता हूँ जिन्होंने मुझे कहीं की मित्रा दी और मुझे मास्को विश्वविद्यालय में कहीं भाषा और साहित्य पर संचर सुनने को प्रोत्साहित किया। मैं मास्को विश्व विद्यालय के विदेशियों के लिए कहीं विभाग और उसकी अध्यक्ष श्रीमती यलीना इमनोव्ना ररकोवा का भी अत्यन्त आभारी हूँ जिन्होंने कहीं भाषा के अध्ययन में मेरी हर प्रकार की सहायता की।

मास्को विश्वविद्यालय के मेरे विद्यार्थी जीवन के साथी सीडा विमसेनो और जमातोवी क्वेरेब भी मेरे बहुत बड़े सहायक रहे हैं और ये दोनों मुझे बराबर प्रोत्साहित करते रहे। मैं इन्हें कभी नहीं भूल सकता।

कभी नामों के प्रतिरोधन में रईसा किरिस्कोवा ने मेरी बड़ी सहायता की और प्रस्तुत इतिहास-लेखन में कई परामर्श दिये। उनका सहयोग बड़ा मूल्यवान् रहा है।

इस समय मैं पमेरान्सेव परिवार को नहीं भूल सकता जिनके कारण परा मास्को का आवास बड़ा ही मधुर और सफल रहा। प्रोफेसर पमेरान्सेव बराबर सत्यरामदास बैठे रहे। श्रीमती पमेरान्सेवा (जिनको हम सब भाऊजीय 'मामा' कहते थे) हमारी सुविधा का बराबर ख्याल रखती थीं। और गताता पमेरान्सेवा ने हर कार्य में हम लोगों का हाथ बढ़ाया। प्रस्तुत पुस्तक के लिए उन्होंने कुछ सामग्री भी एकत्रित की और जमाहर्षन भी किया। उनका योगदान मेरे लिए बड़ा बहुमूल्य रहा है।

×

×

×

पुस्तक करीब-करीब साल भर पहले तैयार हो गयी थी। सितम्बर १९६० में जब मैं एक मास के लिए मास्को से भारत आया तो लखनऊ में जल्दबाजी में इसकी पाण्डुलिपि डूब गयी। पुस्तक एक प्रकार से मुझे बोझारा तैयार करनी पड़ी। यह कुछ बठिन काम था।

किन्तु हमसे भी कठिन काम इस डूबी धूमि और मिटी पाण्डुलिपि में प्रेस-बाजी तैयार करना था और जिसे लखनऊ विश्वविद्यालय के मेरे सहयोगी बाबन्तर प्रताप नारायण टंडन ने बड़े उत्साह से संपन्न किया। मैं वा बीच-बीच में निराम भी हो जाता था किन्तु वे बराबर उत्साह की मूर्ति बने काम में लगे रहे और उसे पूरा करके ही छोड़ा। यह पुस्तक जो छप लकी उनका पूरा श्रेय उन्हीं को है।



और सबसे बड़ा सहयोग मुझे श्रीमती सरोजिनी शुक्ल से मिला। यह पुस्तक उनके सामने मास्को में शुरू हो गयी थी। जलप्लावन से पांडुलिपि का उधार उन्होंने ही किया। पांडुलिपि के दोनू कीचड़ से सिपटें एक-एक पक्षों को एकत्रित कर उस सुखा कर, छाड़-पोंछ कर, काम करने योग्य उन्होंने ही बनाया एक प्रकार से उन्होंने मेरा भी उधार किया।

उत्तर प्रदेश सरकार की हिन्दी समिति ने मुझे यह पुस्तक लिखने के लिए आमन्त्रित किया और वही इसे प्रकाशित भी कर रही है। हिन्दी समिति के अधिकारियों के प्रति आभार-महसूसन मेरा कर्तव्य है।

यदि यह पुस्तक हिन्दी के पाठकों में कभी साहित्य के प्रति बोझी भी बिसासा जगा सकी और उन्हें कभी साहित्य के स्वतंत्र अध्ययन की बाड़ी भी प्रेरणा दे सकी तो मेरा परिश्रम सफल होगा।

कैतरी चारायन शुक्ल

# विषय-सूची

भाग १

रूसी-साहित्य

निबन्धन

	७-
	पृ० सं०
१—विषय प्रबन्ध	१
२—उपरोमर्षी शशी से पूर्व का रूसी साहित्य	३
३—रूसी साहित्य (१३वीं स १७वीं शती)	९
४—अगरहर्षी शशी	१३
५—मिखाइल बर्दीस्वैविच समनासाध	१७
६—डेनिम इवानाविच फानशीविच	२०
७—अलेक्साण्डर निकोलाएविच रसीइस्वेच	२५
८—उपरोमर्षी शशी	२८
९—इवान श्रीलोव	३३
१०—शुक्रोमकी	३६
११—अलेक्साण्डर मेर्गेयविच पिचवेदेच	३७
१२—अलेक्साण्डर मेर्गेयविच पुरिचन	४१
१३—मिखाइल यूरेविच सेग्मन्तोव	५३
१४—निकासाई बर्दीस्वैविच गामन	५९
१५—बिमरियन पिगोरेयविच बलिस्की	६९
१६—इवान अलेक्सेविच याकावन्सच(गल्सिन)	७२
१७—इवान अलेक्साण्ड्रोविच पंचराव	७४
१८—नन् १८६०-७० का मामाविच राजनाटिक संघ	७७
१९—इवान सेपेइविच कुर्सेच	८३
२०—निकोलाइ अलेक्सेण्डरविच मैक्रासोव	८९
२१—शुक्रोरे मिखाइलोविच इस्त्रवेन्की	९८

२२—अलेक्सान्द्र निकोलाएविच अस्नोव्स्की	१००
२३—मिसाइल येवप्राफोविच सास्विकोवस्केविच	१०६
२४—निकोलाइ यर्बीकोविच बर्निचेव्स्की	११२
२५—मिच निकोलाएविच तोस्तोय	११७
२६—अन्तोम पावलोविच चेखव	१३३
२७—इपीसबी घटी का अन्त और बीसवीं का आरम्भ	१४२

## भाग २

### सोवियत साहित्य

१ मैक्सिम गार्की	१४९
२ मूडमुड के समय का साहित्य तथा जन-आर्थिक-व्यवस्था का नव-निर्माण (१९१८-१९२५)	२३३
३ क्वासीमिर क्वासीमिरोविच मायाकाव्स्की (१८९३-१९३०)	२६३
४ द्वितीय महायुद्ध के पूर्व की पंचवर्षीय योजनाओं के आभार पर राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था के विकास के युग का साहित्य (१९२६-१९३६)	२९९
५. निकोलाइ अलेक्सेयेविच अस्नोव्स्की (१९ ४-१९३६)	३०७
६ मि० अ० सोलोव्योव (१९०५— )	३१३
७ अलेक्सेइ निकोलाएविच तोस्तोय (१८८३-१९४५)	३२५
८ मुड से पूर्व के वर्षों का साहित्य (१९३७-१९४१)	३३४
९. मुडकासीन साहित्य (१९४१-१९४५)	३४०
१० अलेक्सान्द्र-अलेक्सान्द्रेविच फव्जेव	३६०
११ मुडोत्तर निर्माण के समय का साहित्य (१९४५— )	३७६

भाग २

है। उत्पी साहित्य की सबसे बड़ी विशेषता है जनजीवन के साथ उसका अनिच्छ संबंध। उत्पी साहित्य उत्पी जनता के स्वातन्त्र्य आंदोलन के साथ सदा और अनिच्छ रूप में संबद्ध रहा है। इसलिए उत्पी साहित्य के इतिहास को उत्पी जनता के स्वातन्त्र्य आंदोलन तथा उपर्य के इतिहास से अलग नहीं किया जा सकता। फलतः उस के स्वतन्त्रता आंदोलन के विकास की विभिन्न मंशिका के अनुरूप उत्पी साहित्य का मूप-विभाजन स्वामाधिक ही है।

प्रस्तुत पुस्तक में उत्पी मूप-विभाजन के अनुरूप उत्पी साहित्य के इतिहास की कपरेखा प्रस्तुत की जा रही है।

## २ उन्नीसवीं शती से पूर्व का रूसी साहित्य

### 'ईगर की सेना का गीत'

'ईगर की सेना का गीत' प्राचीन रूसी साहित्य का महत्वपूर्ण ग्रंथ है जो साढ़े छात चौ बर्ष से अधिक पुराना है। इसमें बारहवीं शती के अन्त के रूसी जन-जीवन की कतिपय ऐतिहासिक घटनाओं का काव्यात्मक वर्णन प्रस्तुत किया गया है।

### प्राचीन रूसी राष्ट्र का संघटन

प्राचीन रूसी राष्ट्र का नवीं शताब्दी में संघटन हुआ और बाद की (म्यारहवीं बारहवीं) शताब्दियों में उसकी राजनीतिक शक्ति और संस्कृति का अद्भुत और विकास हुआ। कई जल तथा स्वस्र मार्गों के संमम पर स्थित होने के अमुकूस भौगोलिक परिस्थिति के कारण प्राचीन रूस का पड़ोसी राष्ट्रों के सामे अंतर्राष्ट्रीय संबंध बड़ा और उसकी आर्थिक स्थिति मजबूत हुई। इस प्राचीन रूसी राष्ट्र की सबसे अधिक उन्नति क्लदीमिर स्वितास्काविच और उसके पुत्र 'बुद्रिमाम' यादस्ताव के समय में हुई, जब कि इनकी सीमाएँ आस्ट्रिक तथा दक्षिण समुद्र से काल समुद्र तक और वापेपियन पर्वतमाला से लकर आल्पा के (ऊपर) तक तक फैली हुई थी और कीच का जगर इसके राजनीतिक तथा सांस्कृतिक केंद्र के रूप में विद्यमान था। यह उक्त समय के पुराने का सबसे अधिक शक्तिशाली राष्ट्र था।

क्लदीमिर स्वितास्काविच के समय में ईसाइयत राष्ट्रीय धर्म बन गया। ईसाइयत को स्वीकार कर जन म रूस का संबंध बाइजेंटाइन तथा अन्य ईसाई राष्ट्रों से और भी पविष्ट हुआ तथा उसकी संस्कृति और भी अधिक विकसित हुई।

इस प्राचीन रूसी राष्ट्र के संघटन के युग में साक-साहित्य की पर्याप्त रचना हुई। साक-प्रबंध काव्य 'बिनीना' कथाओं तथा जन-कहानियों

में उस युग की ऐतिहासिक घटनाओं की छाप है और उनमें तत्कालीन रूसी जनजीवन का प्रतिबिम्ब है। मौखिक लोक साहित्य बराबर विकसित होता रहा और वह लिखित साहित्य की आधारशिला बना। ग्यारहवीं-बारहवीं शती में ऐतिहासिक कथाओं तथा अन्य कृतियों की रचना हुई।

### रूसी राष्ट्र की विस्तृतता

प्राचीन रूसी राष्ट्र के विकास-व्यापार के बीच (ग्यारहवीं शती के उत्तरार्द्ध से) कीच के अतिरिक्त नये नये नगर प्रकट होने लगे जो कि बीरे बीरे एक दूसरे से अल्प अंतरांतर और स्वतन्त्र जीवन बिताने लगे। फलतः देश टुकड़ों में विभक्त हो गया और उनके पासक राजकुमार कीच की अधीनता में स्वीकार कर आपस में लड़ने लगने लगे। राजवंशों के इस पारस्परिक कसह से रूस के परंपरागत घनुओं—स्लेप की सुमस्तु फ्लोवित्सी जाठियों ने काम उठाया और उन्होंने आर्गों की अधीनता में सचटित होकर रूस की दक्षिणी सीमा पर आक्रमण कर दिया। इससे रूसी राष्ट्र का अस्तित्व ही अतरे में पड़ गया।

इस समय के विचारशील लोगों ने देश के इन संकट को पहचाना और राजवर्गीय कसहों की समाप्ति तथा राष्ट्रीय एकता की स्थापना में ही सुरक्षा और नस्थाप समझा। यह बात बिलकुल ठीक थी। जब ये राजकुमार एक हाकर खानाबनोप फ्लोवित्सीयों के विरुद्ध सम्मिश्र अभियान करते थे तो सफल और विजयी होते थे और जब इन राजकुमारों के अभियान असम्मिश्र और अल्प अलग-होते थे तो प्रायः असफलता तथा पराजय ही इनके हाथ लगती थी। ईगर की सेना का पीठ एक ऐसे ही असफल अभियान की कथा कहता है। इनके अज्ञात सेवक ने हममें उत्तरी मोसोपोरस के राजकुमार ईगर के फ्लोवित्सीयों के विरुद्ध अभियान थीर उसकी असफलता तथा पराजय का वर्णन किया है।

### काम्य का ऐतिहासिक आधार

काम्य का आधार वास्तविक ऐतिहासिक घटनाएँ हैं। कीच के

प्रायः स्वितोस्साब के नेवृत्त में सन् ११८४ में आयोजित फर्सेवित्सियों के विरुद्ध सम्मिलित अभियान में ईगर भाग न ले सका। फलतः दूसरे वर्ष (११८५) अपन संबधिया को एकत्रित कर और दूसरे राजाओं से बिना सलाह मजबिरा किए ही बह अपनी छोटी सेना के साथ फर्सेवित्सियों के विरुद्ध युद्ध करने के लिए धम पड़ा। ऐतिहास्य बताते हैं कि पहले युद्ध में तो उसकी विजय हुई किन्तु उसके बाद उसकी सेना नष्ट हो गयी और बह बदी बना लिया गया। इसके बाद फर्सेवित्सिया ने आक्रमण कर दिया और वे रूस के अंदर घुस गये। इस प्रकार 'ईगर की सेना का पीत' व मूस में यथार्थ ऐतिहासिक घटनाएं हैं।

फिर भी हमका लेखक अपने का इन ऐतिहासिक युद्धा तत्त्व ही सीमित नहीं रगता। इन ऐतिहासिक घटनाओं के माध्यम से बह जनता के दीम-हीन जीवन का बड़ा व्यापक चित्र प्रस्तुत करता है और यह सकेत करता है कि इस स्थिति का कारण देश का राजनीतिक पार्श्वकम राजवंशीय पारस्परिक कलह और घुमन्तू जातियों का आक्रमण है। शारहवीं शती के रूस की कठिन परिस्थिति लेखक को मन्तूमि के इस अनतिदूर भतीत के समानपूष बुग का स्मरण दिठानी है जब कि रूस का राष्ट्र अत्यन्त दक्षिणगामी था। काव्य में स्पडीमिर स्वितोस्साब से लेकर ईगर के समय तक को डेडू शतावरी के कपी जन जीवन का सचचा चित्र प्रस्तुत किया गया है।

### मुख्य भाष पकता पर्य देशभक्ति

इस काव्य में पात्रा और घटनात्रा का जो चित्रण हुआ है उतना मूल प्ररक भाष बेदानरित है। कीव के दामर स्वितोस्साब को रूस के बहुत बड़ देशघात के रूस में प्रस्तुत किया गया है जो रूसी भूमि की रखा के लिए अन्य राजाओं का आह्वान करना है और पारस्परिक कलह का छाड़कर एक हा जान का मदग देता है। इसमें अन्य राजाओं का जो चित्रण हुआ है उसमें से कपी भूमि के प्रतिनिधि रूप में प्रस्तुत किये गए हैं और लेखक उनही प्रगसा तथा निग्रा इती मूल भाष का दृष्टि में रगकर करता है कि वे देश को रखा और एकता में रितना योगदान



करता है। कवि राजकुमार ईगर के साहस आदि अम्व गुणों की प्रशंसा करते हुए भी उसकी आलोचना इमकिए करता है कि पञ्चोदितिसर्प के विरुद्ध वह सब राजाओं के साथ नहीं सड़ा बरन् सबसे अलग अकेला सड़ने लगा।

कवि ने मातृभूमि की रक्षा और एकता के आह्वान को उस युग के कबीर सामन्ती समाज की नयी एक प्रगतिशील प्रवृत्ति के रूप में वर्णित किया है। बारहवीं सताब्दी के दुकड़ों-दुकड़ा में पूबक होनेवाले इस सामन्ती कबीर राष्ट्र के बीच एकता का पाठ पढ़ानेवाले स्थितोत्थापक का चित्र स्वयं-सैलक की निर्मल और प्रगतिशील दृष्टि का परिचायक बन जाता है।

ईगर की पत्नी माणोस्काया के चित्रण में भी वैद्यभक्ति का यही मूल भाव है। उसके विकास में केवल व्यक्तिगत बुद्धि की ही भ्रमणा नहीं हुई है बरन् उन कबीर सैनिकों के नास पर भी कुछ प्रकट किया गया है जो युद्ध में लत रहे। पारोस्काया का यह विकास इस कृति का अत्यन्त नाभ्यपूर्ण स्वल माना जाता है।

इसमें नायक कवि बयान का भी बचन हुआ है। बयान प्यारहवीं सदी में जीवित था और राजाओं के किर पीठों की रचना किया करता था। उसकी इस काव्य में बड़ी प्रशंसा की गयी है। कवि उसके प्रति समान वर्णित करते हुए भी कहता है कि वह बयान के भावा पर मौढी की रचना नहीं करेगा बरन् इस समय की वास्तविक बटनाओं के अनुसार रचना करेगा।

### प्रबन्ध-रचना

अपनी इस रचना को कवि 'स्त्रीक (छन्द) कहता है और इसमें वह पाठकों की ओर कबीर बचालयक बयान द्वारा और कबीर मौढी द्वारा उन्मुख होता है। वास्तव में इसमें प्रबन्धारम्भकता और भीतारम्भकता एक साथ मिल गयी है तथा ऐतिहासिक बटनाओं के बीच वर्णन के माध्यम से कबीर जनता के प्रतिनिधि के रूप में राजाओं की वीरतापूर्वक विरोधिताओं का बंधन हुआ है। इन प्रकार की प्रतीतारम्भ-प्रबचालयक कृति और-काव्य कहलाती है।

इसकी प्रबंध रचना के तीन प्रधान अंग हैं। प्रथम भाग ईगर का विकल्प समिधान उसका बंधी होना तथा कस्ती नैतिकों की पराजय है।

द्वितीय भाग में क्वीव के सामक स्विक्रौस्ताव का कस्ती मूमि की रक्षा के लिए एकता का आह्वान है।

तीसरे भाग में ईगर का क्रम से निकल भागना और स्वयंदा सोचना है।

### लोक-सर्जना से सम्बन्ध

कवि ने इसकी रचना में लोक-काव्य की कलात्मक युक्तियों का बहुत उपयोग किया है। मौखिक जन-काव्य में अत्यधिक प्रकृतित नकारात्मक तुम्हनाओं का उपयोग हुआ है और मुँह के चित्र उन्ही प्रकार अंकित किये गये हैं जैसे कि 'जन-काव्य किसीना' में होता है। प्रकृति चित्रण में जन-काव्य से इसका संबंध और भी स्पष्ट हो जाता है। लोक-काव्य के समान इसमें भी प्रकृति का भंग पाशों जैसा जीवन है और वह उतने महानुभूति प्रकट करती है उनके साथ दुर्लभित होती है, हर्षित होती है और उनको संकट की सूचना देती है। जब ईगर का समिधान पूरा होना है तो उसे रोकने के लिए सूर्य छिन कर अंधकार द्वारा उसका मार्ग रोकता है। एत बिबसो द्वारा बिस्ताती है और जब ईगर कौद से भागता है तो सूर्य आकाश में खूब चमकता है कठफोड़वा पत्ती नदी की ओर का रास्ता दिखाता है। जान नदी अपनी कहरों पर झुकाती है और बुलबुले आर्नद के गीत गाती है।

छिरे भी 'ईगर की सेना का गीत' जमता द्वारा रचित काव्य-काव्य नहीं है। यह एक व्यक्ति की वृत्ति है और उस युग की सामाजिक साहित्यिक युक्तियों से सम्बन्धित है।

ईगर की सेना का गीत का प्राचीन कस्ती साहित्य के विक्राम पर व्यापक प्रभाव पड़ा और नवीन कस्ती साहित्य चित्र तथा भाषेरा जादि में इसका अंजन किया गया। रवीन्द्रकेव पुकिज, नाटककार अन्नावस्की जादि इनसे बहुत प्रभावित हुए। मणीतकार इरोदिने से 'गाना ईगर' भाषेरा

करते हैं। कवि राजकुमार ईगर के साहस आदि अन्य गुणों की प्रशंसा करते हुए भी उसकी माधोचना इसलिए करता है कि पब्लिसिस्मो के विरुद्ध वह सब राजाओं के साथ नहीं सड़ा बल्कि सबसे अलग अकेला सड़ने गया।

कवि ने मातृभूमि की रक्षा और एकता के माझान को उस युग के कवी सामन्ती सपाज की मदी एव प्रगतिशील प्रकृति के रूप में वर्णित किया है। बारहवीं सताब्दी के टुकड़ों-टुकड़ों में पूषक होनेवाले इस सामन्ती कवी राष्ट्र के बीच एकता का पाठ पढ़ानेवाले स्थितोन्माद का चित्र स्वतः सेवक की निर्मल और प्रगतिशील दृष्टि का परिचायक बन जाता है।

ईगर की पत्नी मारोस्काया के चित्र में भी देशभक्ति का यही मूल भाव है। उसके बिलाप में केवल व्यक्तिगत दुःख की ही व्यंजना नहीं हुई है बल्कि उन कवी लेखिकों के नाश पर भी दुःख प्रकट किया गया है जो युद्ध में शत रहे। मारोस्काया का यह बिलाप इस कृति का अत्यन्त काव्यपूर्ण स्थल माना जाता है।

इसमें नायक कवि बजान का भी अंकन हुआ है। बजान म्यारहवीं सदी में जीवित था और राजाओं के लिए गीतों की रचना किया करता था। उसकी इस काव्य में बड़ी प्रशंसा की गयी है। कवि उसके प्रति संशय प्रकट करते हुए भी कहता है कि वह बजान के भावों पर नीतियों की रचना नहीं करेगा बल्कि इस समय की वास्तविक घटनाओं के अनुसार रचना करेगा।

### प्रसन्न-रचना

अपनी इस रचना को कवि 'स्लोव' (राष्ट्र) कहता है और इसमें वह पाठकों की ओर कवी कपात्मक वर्णन द्वारा और कभी नीता द्वारा सम्बुद्ध होता है। वास्तव में इसमें प्रसन्नता और नीतात्मकता एक साथ मिल गयी है तथा ऐतिहासिक घटनाओं के बीच वर्णन के माध्यम से कवी जनता के प्रतिनिधि के रूप में राजाओं की नीतापूर्ण विधिष्ठताओं का अंकन हुआ है। इस प्रकार की प्रगीतात्मक-सर्वनात्मक कृति नीर-काव्य कहलाती है।

इसकी प्रबंध रचना के तीन प्रदान वर्ग हैं । प्रथम भाग ईगर का विरक्त अभियान, उसका बंदी हाना तथा कवी नैनिहा की पराजय है ।

द्वितीय भाग में कबीर के सासव स्वितोम्काव का कवी मूर्ति की रक्षा के लिए एकता का आह्वान है ।

तीसरे भाग में ईगर का क्रम से निकल भागना और स्वदेश सौंपना है ।

शोक-सर्जना से सम्बन्ध

कवि ने इसकी रचना में शोक-काव्य की कलात्मक युक्तियाँ का बहुत उपयोग किया है । यौक्तिक जन-काव्य में अत्यधिक प्रचलित नकारात्मक तुलनाका उपयोग हुआ है और युद्ध के विषय उन्हीं प्रकार अतिरिक्त किये गये हैं जैसे कि 'जन-काव्य विधीना' में होता है । प्रकृति चित्रण में जन-काव्य से इसका संबंध और भी स्पष्ट हो जाता है । शोक-काव्य के समान इसमें भी प्रकृति का अन्य पात्रों जैसा जीवन है और वह उनसे महानुभूति प्रकट करती है, उनके साथ दुर्बल होती है, ह्वित होती है और उनको संकट की सूचना देती है । जब ईगर का अभियान पूरा होता है तो उसे रोकने के लिए सूर्य छिप कर बंबकार द्वारा उसका मार्ग रोकना है । रात बिजली द्वारा बिस्कारी है और जब ईगर क्रोध से भागता है तो सूर्य आकाश में लुब लमकटा है, कठफोड़वा पत्ती नदी की ओर का रास्ता दिखाता है जान नदी अपनी छहरों पर मुलात्ती है और बृल्लूने जर्मन के नीचे पाती है ।

द्वितीय 'ईगर की सना वा पीठ' अवस्था द्वारा रचित शोक-काव्य नहीं है । यह एक व्यक्ति की कृति है और उस युग की ऐनीगल साहित्यिक युक्तियाँ से सम्बन्धित है ।

ईगर की सेना का पीठ' का प्राचीन कवी साहित्य के विकास पर व्यापक प्रभाव पड़ा और कबीर कवी साहित्य विषय तथा आपेरा आदि में इसका अत्यंत किया गया । रसीदशेव, पुरिकन, नाटककार अश्वमेधस्वी आदि इसमें बहुत प्रभावित हुए । संघीतकार बरोदिन ने 'उमा ईगर' आपेरा

की रचना की और बकाकार वास्तव्योव ने प्रसिद्ध चित्र (ईपरी-हत्या) बनाया।

स्पष्ट भाषा रूसी जनता के जीवन का यथार्थ ऐतिहासिक अर्थन देशभक्ति की भावना—इन सब ने इस कृति को अमर, और लोकप्रिय बना दिया। बाउखी घटी के इस अद्भुत कवि की रूसी भूमि के प्रति गहरे प्रेम से परिपूर्ण यह रचना सोवियत जनता के हृदय के अत्यन्त निकट है। सन् १९३८ में प्राचीन रूसी साहित्य की इस अमर कृति की ७५०वीं वर्षादी मनायी गयी।

## ३ रूसी साहित्य (१३वीं से १७वीं शती)

तेरहवीं से सत्रहवीं शती तक का रूसी साहित्य

प्राचीन रूसी साहित्य की महत्वपूर्ण वृत्तियाँ रूसी जनता के जीवन से अत्यन्त घनिष्ठ रूप से संबंधित हैं। इनमें उस समय के रूसी जीवन की महत्वपूर्ण ऐतिहासिक राजनीतिक तथा सामाजिक घटनाओं की पूरी-पूरी अभिव्यक्ति मिलती है।

तेरहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध और सोलहवीं शताब्दी के शुरुआत में रूस पर तातारों का आक्रमण हुआ। इसी समय उत्तर और पश्चिम से स्वीडिश और जर्मन का आगमन हुआ। रूसियों का इन विदेशी आक्रमणकारियों से जो युद्ध और संघर्ष हुआ उसका साहित्य में पूरा-पूरा प्रतिबिम्बन हुआ है। तेरहवीं तथा सोलहवीं शताब्दी की भौतिक कथाओं में रूसियों के तातारों, स्वीडिश तथा जर्मनों से कीर्तनात्मक युद्धों के आख्यान मिलते हैं। अलेक्साण्डर नोवोवोइकी की कथा में नोवोवोइकी के स्वीडिश तथा जर्मनों से युद्ध और उसकी विजय का वर्णन है। कास्कोवोइ हत्या की कथा में तातारों के साथ प्रथम संघर्ष का अभिव्यंजन हुआ है। 'बाठी (गाँव) की सेना' काहियाइल में आक्रमण की कथा भी इसी प्रकार की सैनिक कथा है। महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाओं का भंडित करनेवाली ये भौतिक कथाएँ इन घटनाओं के घटित होने के बाद ही समय-बाद लिखी गयीं। तातारी आक्रमण से संबंधित तेरहवीं-सोलहवीं शती की साहित्यिक रचनाओं में रूसी भूमि के नाराजों की कथा है। इनमें रूसी भूमि के सौन्दर्य और समृद्धि का अत्यन्त प्राकृतिकपूर्ण वर्णन किया गया है। अदकिचना में (१४वीं शती का अंत) कमिया की तातारों पर प्रथम विजय का वर्णन है जो वर्ष १३८० में कुलीकोवकी के युद्ध में मिली।

अलेक्साण्डर नोवोवोइकी तथा कुलीकोवकी के युद्ध की रूसी विजय ने रूसी जनता की एकता तथा राष्ट्रीयता की भावना को और भी बढ़ाया

रिया । मास्को के राजकुमार इवान तृतीय और उसके पुत्र बसिली तृतीय ने पंद्रहवीं शती के अंत और सोलहवीं के आरम्भ में रूसी प्रांतों का एक में मिलाकर एक रूसी राष्ट्र का संघटन किया । मास्को के बाटे और रूसी भूमि के एकीकरण से देश का आर्थिक तथा सांस्कृतिक स्तर और भी ऊंचा हुआ । फीच का महत्त्व अब कम हो गया और मास्को देश का राजनीतिक तथा सांस्कृतिक केंद्र बन गया । अपनी साम-सम्पदा और सांस्कृतिक उत्कर्ष के कारण मास्को तीसरा रोम कहा जाने लगा ।

रूसी राजकुमारों के एक केंद्रित राष्ट्र में एकीकरण से देश का सांस्कृतिक उत्थान और भी बढ़ा । इवान तृतीय के समय में पुस्तकों का मुद्रण आरम्भ हुआ । पंद्रहवीं-सोलहवीं शती में केंद्रित रूसी राष्ट्र के निर्माण के साथ साथ राष्ट्रीय रूसी भाषा का गठन और विकास शुरू हुआ । राष्ट्रीय भाषा का किञ्चित् रूप सामने आया और विविधभारमक साहित्य की रचना होने लगी ।

पंद्रहवीं और विघ्नपठया सोलहवीं शताब्दी में सैनिक कथामों को अगह पत्रकारिता का साहित्य प्रमुख हुआ जिसमें सरकारी मसविदे संधिपत्र तथा आदेश आदि वे विभिन्न तत्कालीन सामाजिक प्रश्नों पर विचार प्रकट किये गये हैं । इस प्रकार के साहित्य में इवान-अयंकर की कुम्की राजकुमार के साथ 'बातचीत' महत्त्वपूर्ण कृति है ।

इस समय केंद्रित ताकतशाली शासन की स्थापना के लिए इवान अयंकर ने बजारों के विरुद्ध संघर्ष शुरू किया । पीतर और कथोनिया की कथा में बजारों के विरुद्ध प्रवृत्ति के दर्शन होते हैं । इस कथा में मूरम का राजकुमार पीतर एक साधारण स्थिति की लड़की से प्रेम करता है और उनसे शादी कर लेता है । बजार समाज के अत्याचार के कारण कथोनिया मूरम छोड़कर जाती जाती है । पीतर भी उसके साथ शहर छोड़कर चला जाता है । एक ही दिन और एक ही समय में बीता की मृत्यु के भावुकतापूर्ण घनन के साथ कथा समाप्त होती है । बीता को एक ही क्षण में खोजना दिया जाता है ।

सोलहवीं शती में विभिन्न घटाश्रियों की साहित्यिक कृतियों का एक

बहुत बड़ा संकलन तैयार किया गया जिसमें सभी प्राचीन, स्वामीय तथा अधिकांश स्त्रीय 'लेटापिन' (बर्षानुक्रमिक वर्णन) एक में संगृहीत हुए। इन समय 'गृह विज्ञान' निकला जिसमें घरेलू तथा पारिवारिक जीवन के नियमों का उल्लेख था। इनसे तत्कालीन पारिवारिक व्यवस्था तथा उससे संबंधित प्राचीन लोक-दृष्टि पर अच्छा प्रकाश पड़ता है।

इन समय ऐतिहासिक लोक-गीतों की भी रचना हुई। किंगोप रूप में ईशान संघर्षर के युग की घटनाओं की कब्रान पर अधिकार, माइकीरिया की विजय—की छाप इन ऐतिहासिक गीतों में प्रमुख रूप में मिलती है।

मगहवीं शती में कम में अत्यधिक सामाजिक महत्त्व की ऐतिहासिक घटनाएँ घटी। इन घटाएँ के आरम्भ में विमानों की हलचल शुरू हुई जो आगे चलकर (इवान यमाकिनका स्तोपान राइन के नेतृत्व में) किसान युद्ध में परिणित हुई। इसी समय पार्लैण्ट और स्वीडन की सेना ने देश पर आक्रमण किया। इन सब घटनाओं की अभिव्यक्ति ऐतिहासिक गीतों और कथाओं में मिलती है। सुन्दर स्त्री भूमि की मयी कथा 'भारतीय राष्ट्र के नाम पर किसान' आदि एसी ही रचनाएँ हैं।

मगहवीं शती के उत्तरार्द्ध में साहित्य में अत्यधिक प्रकृतिवादी रुचि हान लगती है। साहित्य पीरे-पीरे जब के प्रभाव से मुक्त होकर ऐहिक रूप धारण करने लगता है। साहित्य में नये मायका किमान पाहरी जाम्बी मोबागर आदि के प्रतिनिधियों—का प्रादुर्भाव होने लगता है। स्त्री साहित्य जब पारलौकिक न रहकर ऐहिक बनने लगा।

ऐहिक जीवन से संबंधित ये कथाएँ इन घटाएँ के उत्तरार्द्ध की मुख्य दिशिच्छा हैं। परिवार में व्यक्ति के स्वजीवन-यापन के आरम्भ-निर्णय के अधिकार की समस्या तथा प्राचीन एवं नवीन पीढ़ी के संघर्ष का विषय समाजात्मिकता के लोक और दुःख की कथा है। इनमें संपन्न परिवार के नवयुवक की निरा है, क्योंकि वह पुरानी नीतिधरता को छोड़कर नये ढंग से जीवन बिताना चाहता है और इसलिए दुःख भागता है।

कोमलबचप्य की कथा में एक पुत्र की कथा है जो स्वयं शरीर है



दिया। मास्को के राजकुमार इवान तृतीय और उसने पुत्र बसीसी तृतीय ने पंद्रहवीं शती के अंत और सोलहवीं के आरम्भ में स्त्री प्रांतों को एक में मिलाकर एक स्त्री राष्ट्र का संघटन किया। मास्को के चारों ओर स्त्री भूमि के एकीकरण से देश का आर्थिक तथा सांस्कृतिक स्तर और भी ऊंचा हुआ। जीवन का महत्त्व अब कम हो गया और मास्को देश का राजनीतिक तथा सांस्कृतिक केंद्र बन गया। अपनी साव-सज्जा और सांस्कृतिक उत्कर्ष के कारण मास्को 'तीसरा रोम' कहा जाने लगा।

स्त्री राजकुमारों के एक केंद्रित राष्ट्र में एकीकरण से देश का सांस्कृतिक उत्थान और भी बढ़ा। इवान मयंकर के समय में पुस्तकों का मुद्रण आरम्भ हुआ। पंद्रहवीं-सोलहवीं शती में केंद्रित स्त्री राष्ट्र के निर्माण के साथ साथ राष्ट्रीय स्त्री भाषा का गठन और विकास शुरू हुआ। राष्ट्रीय भाषा का लिखित रूप सामने आया और विविधात्मक साहित्य की रचना होने लगी।

पंद्रहवीं और बियेपतमा सोलहवीं शताब्दी में सैनिक कबानों की जयहू पत्रकारिता का साहित्य प्रमुख हुआ जिसमें सरकारी मसबिदे संविधान तथा आदेश आदि के बिना तत्कालीन सामाजिक प्रथा पर विचार प्रकट किये गये हैं। इस प्रकार के साहित्य में इवान मयंकर की कुम्स्की राजकुमार के साथ 'बातचीत' महत्त्वपूर्ण इति है।

इस समय केंद्रित शक्तिशाली शासन की स्थापना के लिए इवान मयंकर ने 'बयारा' के विद्रोह संघर्ष शुरू किया। पीतर और फेडोनिमा की कथा में बयारों के विद्रोह प्रकृति के दर्शन होते हैं। इस कथा में मूरम का राजकुमार पीतर एक साधारण स्थिति की लड़की से प्रेम करता है और उससे शादी कर लेता है। बयार समाज के ज़रयाचार के कारण फेडोनिमा मूरम छोड़कर चली जाती है। पीतर भी उसके साथ शहर छोड़कर चला जाता है। एक ही दिन और एक ही समय में दोनों की भ्रातृ के माबुकठापुत्र बर्षन के साथ कथा समाप्त होती है। दोनों को एक ही जगह में बहना दिया जाता है।

सोलहवीं शती में विगत शताब्दियों की साहित्यिक श्रुतियों का एक

बहुत बड़ा संकल्प तैयार किया गया जिसमें मनी प्राचीन, स्थानीय तथा अल्पकालीय 'सिगापिम' (बयानुकर्मिक वर्ग) एक में मगूहीत हुए। इन समय 'पूह-विद्यालय' निकला जिसमें परम्पू तथा पारिवारिक जीवन के नियमों का उल्लेख था। इनमें तत्कालीन पारिवारिक व्यवस्था तथा उनमें संबंधित प्राचीन लोक-श्रुति पर अच्छा प्रकाश पड़ता है।

इन समय ऐतिहासिक लोक-गीतों की भी रचना हुई। विशेष रूप में ईवान प्रॉकर के पुत्र की घटनाओं की कबान पर अधिकार, माइबीरिया की विजय—की छोर इन ऐतिहासिक गीतों में प्रमुख रूप में मिलती हैं।

मत्रहरी शती में मन्म में अत्यधिक सामाजिक महत्त्व की ऐतिहासिक चन्दाएँ बनीं। इन गनाओं के आरम्भ में किमाना की हस्तक्षेप शुरू हुई जो प्रायः चल्कर (इवान बकोविनकोव स्वयं राबिन के मन्म में) किमाना यज्ञ में परिचित हुई। इसी समय पात्रेण और म्बीडन की मेना के देव पर आक्रमण किया। इन सब घटनाओं की अतिव्यक्ति ऐतिहासिक गीतों और कथाओं में मिलती हैं। मुन्मर कली मूमि की नयी कथा 'मारबरीय राष्ट्र के माग पर विजय' आदि ऐसी ही रचनाएँ हैं।

मत्रहरी शती के उत्तरार्ध में माहित्य में जनतात्मक प्रवृत्तियाँ अतिव्यक्त होने लगती हैं। माहित्य धीरे-धीरे सब के प्रभाव में मुक्त होकर ऐतिहासिक रूप धारण करने लगता है। माहित्य में नये नायकों किमाना मत्रहरी बारमी वीरापर आदि के प्रतिनिधित्वों—का प्रादुर्भाव होने लगता है। कली माहित्य सब पारम्परिक न रहकर ऐतिहासिक बनने लगा।

ऐतिहासिक जीवन में अतिव्यक्त प कबार्ई इन गनाओं के उत्तरार्ध की मुख्य विशेषता हैं। परिवार में व्यक्ति के स्वजीवन-यापन के आत्म-निर्णय के अधिकार की समस्या तथा प्राचीन एवं नवोन पीढ़ा के संघर्ष का विषय जनोच्चारण के घोस और कुल की कथा है। इसमें नवप्र परिवार के नवयुवक की निहा है, जगति वह पुरानी नीतिधना को छोड़कर नये रूप से जीवन बिताना चाहता है और इसनिम्न कुल मायना है।

'मोन्सबदेव की कथा' में एक पूर्ण की कथा है जो स्वयं उचित है

मीर अमीर बजार की कड़की से घादी करने का पहला रचना है तथा उसमें सफल होता है।

इन दोनों कहानियों का चित्रण मयारबादी है और इसमें कृती समाज के मध्य स्तर के रहम-सहन तथा नैतिकता भाषि का अंकन हुआ है।

शर्म्यारमक कहानियों का बस्तु-विषय और भी अधिक जनारमक है। इसका सबसे सुन्दर निदर्शन 'दशोबिज की कबा' और 'शेम्याकिल की कचहरी की कबा' हैं। पहली कहानी में अन्वोक्ति के रूप में 'अमीरों की बाबली का चित्रण किया गया है जिसके विद्वत् शरीर के लिए न्याय की भाषा करना बुरा है। इसमें मनुष्य मछली के रूप में है। इसका बस्तु विषय मछलियों का मछली-संसार के स्वामी और बेईमान न्यायाधीशों के विद्वत् सपर्व और उन पर शर्म्य है।

'शेम्याकिल की कचहरी' में उस युग के न्यायालयों की बर्हमानी और रिस्वतखोरी की कबा कही गयी है। न्यायालय में एक गरीब लमाल में लिपटा हुआ एक पत्थर न्यायाधीश को दिखाता है। न्यायाधीश इसे अच्छी रकम समझकर उसके पक्ष में फैसला करता है।

सबसे पहली घटी में कृती साहित्य में नाट्य कृतियों का प्रादुर्भाव होता है। इस घटी के उत्तरार्ध में इस में पहला थियेटर स्थापित हुआ।

## ४ अठारहवीं शती

सप्तहत्ती शताब्दी के उत्तरार्द्ध से कृषी साहित्य बीरे-बीर बर्ष तथा ईसाइयत के प्रभाव से मुक्त होन लमा। विद्या प्रसार परिषद के साथ संबंध आतीय संस्कृति क उन्नत भावि, सुबन विरल तथा ब्यक्ति के संबंध म इस साहित्य को नवीन दृष्टि प्रदान की और बर्ष तथा धर्म की प्राचीन एवं मकीब मनोदृष्टि से छुटकारा दिलाया। साहित्य मय मूढन पार्थिव समस्याओं में म उल्लेखर समाज राष्ट्र तथा ब्यक्ति म संबंधित वास्तविक प्रश्ना का संकन करने लगा। कृषी साहित्य अब एहिक साहित्य बन गया। अठारहवीं शती के सन् तीस के वर्षों में साहित्य में 'बलासि-मिरम' या शास्त्रवाद की नयी कलात्मक प्रकृति का प्रादुर्भाव हुआ। इसके साथ ही इस युग के महत्वपूर्ण सिगकों—समनाभाव फानबीजिन देजाकिन रवीरथर आदि की सर्जना में यथार्थवादी प्रकृति भी अंकुरित होती दिखाई पड़ रही है।

सामान्यतया अठारहवीं शती का कृषी साहित्य तीन भाग में बाँटा जाया है या उनक विनास की तीन मंडिसें उलित की जाती हैं। इस शताब्दी का प्रथम तृतीयांग—पीतर प्रथम के मुपारा का समय—कृषी साहित्य के प्राचीन से नवीन साहित्य की मार संभरण का समय है। मध्य का तृतीयांग—सन् साठ के बर्ष—'बलासिमिरम' (शास्त्रवाद) की नयी साहित्यिक प्रकृति के पाम और विकास का युग है और इस शती का अंतिम तृतीयांग बलासिमिरम के मकर तथा साहित्य क बलासिमिरम म माबुनतावाद तथा यथार्थता की मार विरगित होन का समय है।

### प्रथम तृतीयांग का साहित्य

अठारहवीं शती का प्रथम तृतीयांग पीतर प्रथम क कार्यकाल क निर्माण का युग है। इन बर्षों में साहित्य तथा संगृनि दोनों म नये माद्र संशित हुए और साहित्य में अविब्यक्ति के लिए नये बस्तु-विषया को

बुना। साहित्य ने पीठर के मुबारक का समर्पण किया।

इस युग का महत्वपूर्ण लेखक किब्रोफान प्रकोफविच है जो कवि लेखक नाटककार और पीठर के मुबारकों का उत्साही समर्थक है। अपनी ट्रेजडी-कमेडी 'असवीमिर' में वह पीठर की प्रशंसा करता है विरोधियों को हंगी उड़ाता है और बिनाम तथा पिशा का प्रचारक बनता है।

इस घटी के आरम्भ में प्रेम के प्रतीका का अच्छा विकास हुआ। इसके रंघमंघ पर अब न केवल नायिक कथावस्तु वाले नाटकों का अभिनय होता था वरन् ऐसे ऐहिक नाटक प्रस्तुत किये जाने लगे जिनमें राजनीतिक जीवन की घटनाओं का अंकन होता था और सामाजिक रीति-नीति तथा खून-सहन की भी छानक रहती थी।

### कलासिसिज्म की स्थापना

इसी समय कलासिसिज्म का विकास हुआ जो कि मूलतः की कलासिसिज्म की सामान्य विशिष्टताओं से युक्त होने के साथ-साथ कृती विशिष्ट परिस्थिति के फलस्वरूप कतिपय नवी विशिष्टताओं से समन्वित हुआ। अपनी उदात्त तथा भव्य कृती पेटिक नियम और प्रबन्ध की स्थिर-निश्चित और अपरिवर्तनीय रूपयोजना में शास्त्रवाद का साहित्य राजनीति के निरंकुश आधिपत्य के आदर्श के अनुरूप पड़ता है और पूरा मरु जाता है। यूनान तथा रोम की प्राचीन कला के प्रति अत्यधिक प्रेम तथा अनुप्राण ने इस प्रकृति को जन्म दिया जिसने कृति में सुडोठता स्पष्टता सामञ्जस्य तथा नियमनिष्ठता की मांग की। इसके लोक-प्रिय होने का मुख्य कारण यह था कि कर्ष तथा ईसाइयत की मनोदृष्टि की अपेक्षा इसका दृष्टिकोण कृती अधिक प्रकाशपूर्ण आह्लाखपूर्ण और उत्साहपूर्ण था।

कलासिसिज्म का सबसे बड़ा कृती लेखक कम्पेमीर है जिसे कसिस्की ने कृती का सर्वप्रथम ऐहिक कवि कहा और जो कृती का बहुत बड़ा लेखक है। समर्पणोप के काव्य में शास्त्रवाद का सर्वोत्तम अभिव्यक्ति मिली जो कि वैद्य-भक्ति की भावना से ओत-प्रोत है। इसी प्रकार सुमारोकाच इस प्रकृति का बहुत बड़ा प्रतिनिधि माना जाता है। उसके कथय नाटक

बहुत विख्यात हुए। सुमारोकाव का नाम स्त्री रम-संघ के साथ जुड़ गया है।

स्वामिमिरम का चरम उत्थाप इस दातायी व सबसे बड़े बलि देवबिल की सर्वता में देखने का मिश्रता है। उम अपने 'बोडो' में बड़ी स्वाति मिली (महापती एकातरिना के समान व फभिरमा प्रपात मेदधर्मकी की सृष्टु पर)। इसी प्रकार उमम स्वर्गात्मक बाह (बड़ा आदमी नामक और निर्वायन को) लिखे।

इस प्रकार देवबिल के पहलू तक बठारहवीं राती व स्त्री काव्य व प्रगंसात्मक 'बाह प्रतीकमुक्तक प्रसंगीत और स्वर्गात्मक 'बाह' की रचना हुआ मरी बी।

### क्लासिसिज्म से भाबुवतावाद और ययार्थ की ओर संवरण

बठारहवीं राती के उत्तरार्द्ध में नयी साहित्यिक प्रवृत्ति का विराम मलित होन लगा। यह प्रवृत्ति भाबुवतावाद की थी। इस प्रवृत्ति का सबसे बड़ा अतिव्यक्त चरमजीन है (स्त्री यात्री का पत्र प्रतीक लीजा)।

स्वामिमिरम के समान भाबुवतावाद की प्रवृत्ति भी युरानीय प्रवृत्ति थी और यह गाम्भवार के विरुद्ध प्रतिक्रिया रूप में शुरू हुई। इसमें सामान्य मनुष्यों की भावनाभा तथा अनुभूतियों की व्यक्तना हुई। गाम्भवार व तर्क और बीडिबता की जगह भाबुवतावाद के द्वारा भावना तथा भावावेग का समावेश हुआ और साधारण व्यक्तिगत घरेलू जीवन का चित्रण शुरू हुआ।

चरमजीन में त्रिम भाबुवतावाद का प्रतिनिधित्व किया है उममे रिमाना व जीवन की प्रगंसा की मरी है, उम आनन्दपूर्ण बनाया गया है और विमान तथा जर्षाणार व रीच मार्मक्य पूरा संबंध की स्थापना जारी मरी है। उमके मनामसार मर्षा लाग यहाँ तक कि विमान और मान भी प्रम पारिवारिक मुद्द तथा नीतिबता आदि का आनंद उठा मचत है। चरमजीन के विमान प्रमद है और भरने मानिक का 'माथिक-पिता' बट्टर भादर बरत है। चरमजीन की बहानी 'प्रतीक लीजा' भाबुवता

बासी कहानियाँ की प्रतिनिधि है जिसमें किसान की अच्छी लड़की लीजा को उच्च बस का नवमुक्त घोसा देता है। लेखक इस लड़की के प्रति पाठकों की सहानुभूति बसाता है और यह प्रकट करना चाहता है कि किसान भी प्रेम करना जानते हैं।

सामाजिक यथार्थता पर मुकुम्मा बढ़ानेवासे इन लेखका क नाबु-कताबाद के साथ-साथ बेर्जाकिन के ब्यम्प में कोलोव के नाटक और लेखां में फ़ानबीकिन की छवियों में और रबीरभ्येव की सर्जना में अठारहवीं शती के अन्त के रूसी साहित्य में यथार्थवाद की परंपरा का भी सुनपाठ एवम विकास हुआ।

अठारहवीं शती के मध्य से रूसी साहित्य विदधा में प्रसिद्ध होन गया। कल्लेमीर के ब्यम्प और मुमारोकोव के कवन नाटक फ़ास एव इन्सैड में प्रकाशित हुए और बाद में लमनोसोव की कविताएँ भी। उन्नीसवीं शती के आरम्भ में करगज़ीन की बहुतेरी कहानियाँ और उनके इतिहास का अनुवाद हुआ। सन् १८६२ में रूसी कवितात्रा का फ़ेंच समग्र छपा जिसमें कल्लेमीर, बेर्जाकिन और परबर्ती कवियों की छवियाँ थी। इस प्रकार रूसी साहित्य विदध-साहित्य के प्रांगण में पहुँच गया।

## ५ मिखाइल वसील्येविच समनोसोव

[ सन् १७११-१७६५ ]

समनोसोव की गिनती अठारहवीं सदी के महान् व्यक्तित्वा में है। नका तथा विज्ञान के विभिन्न शाखा में प्रकट होनवाली उसकी असाधारण प्रतिभा में स्वयं के सांस्कृतिक इतिहास में नवीन पृष्ठ जोड़ दिया।

समनोसोव का जन्म ८ नवम्बर सन् १७११ में समुद्र-उद के एक साधारण किसान परिवार में हुआ था। उसका बचपन बड़े कष्ट में बीता। आठ वर्ष की अवस्था में वह मातृविहीन हो गया। दस वर्ष की अवस्था में उसने परिवार के कठोर धर्मपूर्ण जीवन में हाथ बटाना शुरू कर दिया।

फिर भी उसमें असाधारण प्रतिभा की धीरे पड़न की छाप थी। इसी ने पिता के विद्वद् होने पर भी वह पर छोड़कर मामूली पढ़न चला गया। पिता ने उसकी मदद करने में इन्कार कर दिया।

वह स्वाभाविक ग्रीक-लैटिन ज्ञानधीन में दानियल हो गया जहाँ उसने विज्ञान दर्शन और साहित्य पढ़ा। अत्यधिक प्रतिभासंपन्न होने के कारण ज्ञानधीन ने उसे पीतम्बुर्ग विश्वविद्यालय में पढ़ने को भेजा और बाद में गणित भौतिक तथा रसायन शास्त्र के बिना अध्ययन के लिए बिस्वा (मारबुर्ग) भेजा। १७४१ में स्वरुप वापस लौटने पर वह विज्ञान ज्ञानधीन के विश्वविद्यालय में पढ़ने प्राकम्पन का सहायक बनाया गया और बाद में प्राकम्पन निपुण हुआ।

विज्ञान के क्षेत्र (भौतिक शास्त्र रसायन ज्यामितिज्ञान मूलब्रह्मशास्त्र चातुर्विज्ञान आदि) में बिना संशय करने पर भी उगत भाषा तथा भाषा-विज्ञान के क्षेत्र में मौलिक तथा महत्त्वपूर्ण कार्य किया। इसने गाय ही उगसी जगदियत्री तथा भाषयित्री प्रतिभा का आगमन किया। उसने कविताएँ लिखीं ग्रीक साहित्य में अनुवाद किया और आरुण तथा छंदों के सिद्ध में महत्त्वपूर्ण विचार प्रकट किये।



मास्को विश्वविद्यालय के संगठन का विचार उसने कागों के समुह रखा। कमोनासोव मास्को विश्वविद्यालय का संस्थापक है।

कृती भाषा तथा साहित्य के क्षेत्र में उनका कार्य अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। कृती छांटों के बारे में उसने लिखा कि कृती भाषा की प्रवृत्ति ऐसी है कि कृती कविता के बरबाद में न केवल अक्षरों की समान संख्या हानी चाहिए बल्कि स्वराभाव मुक्त और स्वरापाठ हीन अक्षरा का ठीक-ठीक अन्त-परिवर्तन होना चाहिए।

सन् १७४४ में उसने 'काम्य-शास्त्र' की पुस्तक लिखी जिसमें ग्रीक तथा लैटिन के अनुवाद के साथ-साथ उसने स्वर्चित उदाहरण भी रखे। यह कृती तथा भाषण कला संबंधित सहायक पुस्तक थी।

आग बसकर (सन् १७५७ में) उसने कृती भाषा में अर्धस्वाभाविक का उपयोग किया जिसमें उसने तीन शैलियों का अपना चिह्नान्त प्रतिपादित किया। उसके मत से बीर नाम्य तथा बदीर 'मोड' उस शैली से संबंधित है और वही अर्धस्वाभाविक व्यंशों का बहुमत्ता से उपयोग हो सकता है।

दूसरी या मध्य शैली के अन्तर्गत टुबेडी व्यंश एसेजी आदि हैं जिनकी भाषा अधिकतर में कृती होती चाहिए किन्तु वही बोझा-भा परन्तु अल्प विक सावधानी से साथ अर्धस्वाभाविक का प्रयोग किया जा सकता है।

तीसरी या निम्न शैली के अन्तर्गत कमेडी एपिग्राम तथा गद्यरमक पत्र आते हैं, जिसमें स्वाभाविक का कदापि व्यवहार न होना चाहिए।

कमर्नसाव की 'तीन शैली' के प्रतिपादन का सबसे महत्त्वपूर्ण परिणाम यह हुआ कि साहित्यिक कृती भाषा खरीब शब्द-बाज की भाषा के निकट जान लयी। अर्धस्वाभाविक व्यंशों का प्रयोग कम हुआ। साहित्यिक कृती धीरे-धीरे स्वाभाविक से मुक्त होने लगी और जनभाषा के संपर्क से उसकी समृद्धि बढ़ी।

कमोनासोव कृती भाषा से विदेशी व्यंशों को दूर करने का सदा आशोक्त करता रहा वह उनकी जगह कृती शब्द रखता था या नये शब्द यज्ञता था।

भाषा विज्ञान के क्षेत्र में उसका 'व्याकरण' अत्यन्त महत्त्वपूर्ण इति है। इसमें उसने जो व्याकरण-सम्बन्धी पारिभाषिक शब्दावली दी है वह इतनी सफ़ल है कि समकालीन व्याकरण में भी उसका उपयोग होता रहा है।

स्त्री भाषा में संबंधित उसकी इतिया तथा कार्यरत्नाया न एक प्रकार से साहित्यिक स्त्री भाषा का जनारम्भता की ओर उन्मुख किया किम बाद में स्त्रीरत्नय फानबीजिन क्रियाव आदि न इन विद्या में आग बढ़ाया। किन्तु यह कार्य पूजन पुश्चिन द्वारा सपन्न हुआ। जनबीजन में मनुष्य कर पुश्चिन न इन पुरा पुरा जनारम्भ रूप र किया।

समनाभाव की वाप्यारम्भ मर्नमा का रूप विविधारम्भ है। उयने शमोर प्रानारम्भ 'आ' शिप। बीर प्रबप्यारम्भ काव्य की मर्नमा की ओर टुबडा। एपिग्राम तथा श्यदा का रचना का। इन सब में वह जनता स्वयं और गिगा के बारे में साक्षता है। उसकी पुष् रचनाएँ देग-भक्ति में परिपू है। इनके साथ बड़ी-बड़ी घटनाएँ, विज्ञान तथा पश्चिम भी उसके काव्य में प्रिय विषय है। इन सबमें उसका सबसे प्रसिद्ध छोड़ साध्यामी एलिजाबेथ पत्राभा के सम्पादिक का निन है किममें कम में विज्ञान कम की प्राकृतिक समृद्धि के उत्पादन तथा अध्ययन के लिए अभिव्य के विद्वानों का बाह्यजन जमभूमि की महत्ता तथा देग के उग्यरस प्रबिष्य का भावना आदि के संकेत मिलत है।

अत्यन्त सावाय्य पश्चिम या यह बाक्य समनाभाव अपनी प्रतिभा अध्ययमाय तथा जन शिक्कारी वायनभाव के कारण अपन देग का सगस्की पुष बन गया। उसकी वाप्यारम्भ इतिया स्त्री साहित्य के इतिहास में प्रथम बार स्त्री राष्ट्रबाश जनता के रूप में प्रकट हुई और उसकी मरना में अभिव्यक्त देगनरित के भाव को अगारहरी मरी के स्त्री साहित्य के स्त्रीरत्नय द्वाजिन जम शष् प्रतिनिधियाँ ने प्रहृग किया और उसे व्यापनता प्रान की।

पुश्चिन न इसे मरना प्रथम विरबिषायय बहा और बनिष्की ने देग स्त्री साहित्य का विद्या तथा स्त्री साहित्य का पीठर मरान् बहा।

## ६ देनिस ह्वानोविच फानवीज़िन

[ १७४५-१७९२ ]

( फलवीज़िन ध्वंष्यकार नाटककार और निबन्ध-लेखक हैं।  
उसकी गिनती अठारहवीं शती के महान् लेखकों में है। )

### बचपन और शिक्षा

फानवीज़िन का जन्म १४ अप्रैल सन् १७४५ में हुआ। नाटक और रंगमंच के प्रति उसका हृदय में आकर्षण मास्को विश्वविद्यालय के 'जिमनेजियम' (पाठशाळा) में पढ़ते हुए ही जाग गया था। सन् १७६० में विश्वविद्यालय का डाइरेक्टर इस 'जिमनेजियम' के सबसे अच्छे विद्यार्थियों को पीएचरबुर्ग क प्रेषित किया। फानवीज़िन भी इन्हीं में था। वहाँ उसे रुमनोसोव से मिलना मिलाया गया। उसे वहाँ न राजप्रासादों को देखने का अवसर मिला तथा उसने राजकीय अभिनय देखा। अभिनय तथा कलाकारों की बातचीत ने रंगमंच तथा नाटको के प्रति उसका बाल-हृदय में बड़ी उत्सुकता तथा रुचि उत्पन्न कर दी।

पाठशाळा के बाद मास्को विश्वविद्यालय में वाकिल होने पर वह अभिनय में भाग लेता रहा। वह विश्वविद्यालय के पत्र 'जामकारी मनोरञ्जन' का संपादक हो गया। पढ़ने के साथ वह साहित्यिक अनुशासकों में भी गया।

ध्वंष्य की प्रवृत्ति उसमें बहुत बस्ती लक्षित हुई। अपनी ध्वंष्यारमक कृतियों में उसने बड़े साहस से अभिजात वर्ग तथा चार्मिक समाज की रीतियों की हँसी उड़ायी है तथा आलोचना की है। उसकी ध्वंष्यारमक कविता 'अपने सेबको शूनीकोव बाग़का और पेद्रुस्का को सुबेरा' बहुत प्रसिद्ध हुई। फानवीज़िन अपने साथ बराबर ज़ूमनेवाले इन सबकों से पूछता है कि 'जीवन कैसा है? ये सेबक जो कि अपने मासिक के धाबे चार के प्रासादों तथा बड़े-बड़े सोपों क बरों को देख चुके हैं क्याव बेटे हैं कि

'सोचो का जीवन निरवकाश तथा पालसा है। सब एक दूसरे को बोसा बैठे हैं और अपनी जड़ें जल की काशिप मं सय हैं। वर्ष का पोष जनता को पाला दता है। दरबार के मीथर सामन्तों को और 'बयार' राजा का पागा देना चाहते हैं। इस उत्तर के माध्यम से फामबीजिन अपने समय क समाज का बड़ा व्यम्पूष चित्र प्रस्तुत करता है।

### कमेडी मिगोडियर

फामबीजिन की सत्रना का महत्वपूर्ण चरण उसकी 'कमेडी विप्रडियर' है। यह पहली स्त्री कमेडी है। इसमें सेवक न पुरानी पीढ़ी की ब्रह्मसता और नवीन पीढ़ी के बाहरी यूरोपीय चर्चे दिखाये तथा मीमहकीमी की तुलना की है। इसका मुख्य पात्र प्रत्येक फामबीजिन वस्तु के मामले में निरनुकृता है और उनकी अपनी उपामना करता है।

इस कमेडी का अभिप्राय हुआ और इस बहुत बड़ी सफलता मिली। अपने अभिप्राय के बाव उसकी पानित छ मित्रता हुई जो कि उस समय का निरवकाश राजनीतिक वायवर्ता था। पानित निरवकाश अभिजात-विरोधी दृष्टि का मता था जो कि काम गंधर्षी अभिकारा तथा निरकुशता का सीमित करता चाहता था। पानित कर्मगत न फामबीजिन में ही उदार राजनीतिक विचारों का विकास हुआ और वह दरबारी रीति-रिवाजों अधिष्ठा आदि की बगलर व्यंग्यात्मक आलोचना करता रहा। पानित क साथ फामबीजिन ने राजनीतिक लेख (कल में हर प्रकार के सामकीय संभाजन का अर्थ) लिखा और उसमें अत्याचार पक्षपात तथा दाम्-प्रका की पूर्णता का विवर्तन कराया।

### विदेश यात्रा

फामबीजिन ने काम जमनी दुःखा आदि यूरोप के कई देशों की यात्रा की और अपनी इस विदेश-यात्रा के बीच जमने जा कुछ देना जमता पत्रों में बखत लिखा। इन पत्रों में उगत उन देशों में जो कुछ अच्छा दगा जमता जम्पेन लिखा और स्त्री जीवन की इन देशों क जीवन क साथ तुलना की। काम ही काम के अभिजात वर्ग द्वारा प्रत्येक विदेशी वस्तु की प्रशंसा और जमने प्रति मानसिक मुफामी की आस्थापना की। इस समय

उसने कई व्यंग्यात्मक सेतु ('रूसी अभिजात वर्ग का अनुभव' 'अभिजात वर्ग का सामान्य व्याकरण' 'प्रश्न') लिखे जिनमें अभिजात वर्ग तथा यकठरीना के प्रिय पत्रों तथा हरबार की व्यंग्यात्मक आलोचना की गयी थी।

उसकी व्यंग्यात्मक कृतियों से साम्राज्ञी यकठेरीना द्वितीय बड़ी क्रुद्ध हुई और उसका आग छपना बन्द करा दिया।

फानवीचिन की सबसे महत्वपूर्ण और विख्यात कृति उसकी 'कमेडी नेदरस्त' है। नेदरस्त का रूसी में अर्थ है जिसका विकास न हुआ हो अर्थात् जो परम 'मूर्ख' है। इसकी रचना में उसने बारह वर्ग सगाये। 'कमेडी नेदरस्त' (मूर्ख)

इस कमेडी में उसने उस युग की अत्यन्त महत्वपूर्ण समस्याओं को उठाया है जिनमें से अत्यन्त विषम समस्याएँ हैं जमींदारों का अपने अधिकारों का दुरुपयोग शासक-विद्वानों पर अत्याचार, अभिजात वर्ग के नव युवकों में उपयुक्त शिक्षा का अभाव जिसके फलस्वरूप उनका जीवन अत्यन्त प्रीति हो रहा है और उनके बच्चे मूर्ख अशिष्ट आत्ममी तथा आनाप हो रहे हैं।

### मित्रोफान

इस कमेडी के पात्र 'मित्रोफानुफा' के रूप में जमींदारों के अशिष्ट तथा अशिष्ट बालकों का चित्रण किया गया है जिनको या तो शिक्षा ही नहीं दी जाती क्योंकि पुराने प्यात्र के लोग जमींदारों के बच्चों के लिए शिक्षा अनावश्यक समझते हैं और यदि शिक्षा का प्रबंध भी किया जाता है तो उनके शिक्षक उपयुक्त नहीं होते और उन बच्चों का ज्ञान विकसित नहीं होता। वे मूर्ख आत्ममी और अशिष्ट बन रहते हैं। मित्रोफान की सीलहू बयें की उम्र है और उसने कुछ भी न सीखा उस बेवस यामे और कबूतरबाजी का पीक है। उसमें बहुत अहमम्यता है और यह स्पष्ट है कि आगे चलकर वह भी अत्याचारी ही बनेगा। मित्रोफान का नाम ठाड़-व्यार में बिगाड़ हुए मूर्ख अशिष्ट बालक का पर्याय बन गया।

### प्रस्ताकोबा

प्रस्ताकोबा और स्कोटीनिन ठेठ जमींदारों का प्रतिनिधि हैं। प्रस्ताकोबा (शाब्दिक अर्थ है बख्तमूर्ती) इन नाटक की मुख्य पात्र हैं। वह स्वयं अविभक्त है और अपने दाम कीमाता का प्रति अत्यन्त कटोर है। वह जमींदारों के बच्चों के लिए गिना अनाबख्त मममती है। फिर भी वह अपने सड़के 'मित्राफान' का बहुत चाहती है और उसके लिए गिना का प्रबंध भी करती है। किन्तु अनुपपन्न गिलक बाताबरन तथा साइ-नुमार में वह कुछ भी न पढ़ सके और पृष्ठ तथा निरुम्मा मूर्त ही बना रहा। अपने दाम कीमाता पर अत्यधिक अत्याचार करने के कारण वह अधिकार-बधिर बन जाती है। इन अगिशा का कुपरिणाम उस स्वयं भोगना पड़ता है। जब तुल्य में अभिमान संस्कृता की आगा में वह अपने पुत्र की आर मुड़नी है किम कि वह वहन चाहती है तो वह उस अगिष्टता में पकड़ा पकर उसमें विमुख हो जाता है।

### स्कोटीनिन

स्कोटीनिन (शाब्दिक अर्थ पगु या डोर) भी इसी प्रकार का जमींदार है जो अत्याचारी और धूर्त दोनों है। उसकी मकम बड़ा विगरता मूमरत में अत्यधिक प्रम है। वह माफिना में गारी इसलिए नहीं करना चाहता है कि वह उसे अच्छी लगती है, बरम् इसलिए कि उसमें गाँव में मूमरत का पालन अच्छी तरह होगा है। इस पात्र का माध्यम में फानवीज़िन यह प्रकट करना चाहता है कि दाम-अधिकार में इन गिनाबिहीन जमींदारों का बिकतुल्य पगु बना दिया है।

### सत्याग्र

एक नाटक में सत्याग्र भी है। यद्यपि उनका चित्रण उनका व्यक्त तथा अटकाता नहीं हुआ है। यह है स्टारादूम (श्रीरु विचार) प्रान्तिन (मन्त्र) मिन्दीन (इगालु) अदम्यान (ईमानदार)। फिर भी इनका माध्यम में युग की समस्याओं पर माटवचार का विचार व्यक्त हुए हैं और उन युग की प्रगतिशील विचारपाठ का मनेन दिया गया है और यह

कताया गया है कि वास्तव में जमींदारों का जीवन कैसा होना चाहिए। उस युग के प्रगतिशील लोगों के बीच शिक्षा के संबंध में जमींदारों के अत्याचार के संबंध में तथा ईमानदारी के साथ वेधसेवा की आवश्यकता के संबंध में 'स्तारोदम' के विचारों को बड़ा समर्पण प्राप्त हुआ। इस प्रकार अजिजात वर्ग के या उच्च समाज के प्रगतिशील वर्ग का विघ्न कर फ़ानबीज़िन ने अमिक्षित अजिजात जमींदार की निरंकुशता के विरुद्ध इसी समाज के प्रगतिशील बंधु द्वारा संचालित सचर्य का आभास दिया और उसका समर्पण किया।

उच्च बंधु की तीखी आलोचना तथा नाटक के दामबिरोपी दृष्टि कोण एवं पत्रिका के कारण फ़ानबीज़िन की इस कमेडी का रूप तब राजनीतिक व्यंग्य का हो गया। स्कोलीनिन के समान जमींदार पार्श्वों के विघ्न में व्यंग्यारम्भक अतिसयोक्ति का उपयोग किया गया है और वास-प्रका की कठोरताओं का व्यापक विघ्न प्रस्तुत किया गया है जिस पर हँसी भी जाती है और (बेदा की मध्य पतित स्थिति का ध्यान कर) कुछ भी होता है।

'नदरस्क' रूप में यथार्थवादी कमेडी के विकास के इतिहास की महत्वपूर्ण मञ्चिका है। रूसी रण-संच के विकास में भी इसका बड़ा महत्व है।

'नदरस्क' जटारूबी शरी की अष्ट कमेडी है। इसी की परंपरा में आम बसकर विषयवस्तु की कमेडी 'चतुराई से हुआ' का विकास हुआ और बाद में गागल का 'इम्पक्टर' लिखा गया और बाद में अस्तोवस्की के नाटक प्रस्तुत किये गये।

वामप्रया अविशा आदि का विरोध करने के कारण तथा प्रगतिशील विचारधारा का पक्ष लेने के कारण पुस्तकन ने उसे स्वतंत्रता का बन्धु कहा है।

## ७ अलेक्सान्द्र निकोलाएविच रदीरच्चेव

[ १७४९-१८०२ ]

एपेनमात्र निकोलाएविच रदीरच्चेव पहला रूसी क्रांतिकारी है जिसने जगता को दासता के अविचार से मुक्त करने के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया और क्रांति का आवाहन किया।

रदीरच्चेव का जन्म ३१ अगस्त १७४९ में हुआ। मातृ कर्प की जन्मदा में वह गिरा पासे के लिए मारका खेद लिया गया। १७९९ में वह कानून की शिक्षा के लिए मारपबिग गया। इसके साथ ही उसने आधुनिक विज्ञान तथा साहित्य का अध्ययन किया।

### साहित्यिक कार्य-रक्षाय

रूस राज्य आने पर वह मनुष्य के शोकाकाश से बच करने लगा। नीतरी करण हुए उस सामन की अरुनी कारंबाइया का निबन्ध में दाने का मोटा किया। उस पठा लगा कि विनाशा का अमन्त्रोय कितनी बढोगता में दबाया जा रहा है। दाम-दामिया को अभीवार कितनी संवना बन है और माघाशा एकातेरामा द्वितीय किस निर्मयता में स्वतंत्रता की भावना का कुचल रही है। इसके साथ ही रदाइच्येव नाविकाव के संगीतमक पत्र में सहयोग देस लगा और स्वतंत्रता के विचारों का प्रचार करने लगा।

रदीरच्चेव की क्रांतिकारी शक्ति-दृष्टि पर पुमाचोव के नेतृत्व में सशक्ति हिमान-विशाह का यद्वा गर्भीर प्रभाव पड़ा। रदीरच्चेव का इस विशाह में संबंधित मारी सामग्री मिल मकी और वह समन गया कि अभीदार मरनी इच्छा में विमाना को दामता में कभी मुक्त में करण और अभीदार तथा निरबुध पावक जगता का पुनर्न और कुचलन में एक है तथा दामता का अविचार कबल जनकानि द्वारा ही कल किया जा सकता है।



सन् अस्मी के बर्षों से रवीश्वर्येव दार्शनिक पत्रकार तथा कसक क रूप में सामने आया और अपनी कृतियाँ में किसान-विद्रोह के विचारों का प्रचार करने लगा। कलात्मक तथा राजनीतिक-सामाजिक दृष्टि से उझड़ी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण तथा विख्यात कृतियाँ 'स्वतन्त्रता' (जोड़) तथा 'पीतरबुर्ग से मास्को की यात्रा' हैं।

### स्वतन्त्रता

'स्वतन्त्रता' कविता में कवि रवीश्वर्येव क्रांति का आवाहन कर रहा है तथा उसकी प्रशंसा कर रहा है। इसमें जार के विरुद्ध जन-विद्रोह का विचार प्रस्तुत किया है। यह 'जोड़' कस की पहली क्रांतिकारी कविता है। 'पीतरबुर्ग से मास्को की यात्रा'

१९१० में रवीश्वर्येव ने 'पीतरबुर्ग से मास्को की यात्रा' छपायी। समाजवादी एकातेरिना द्वितीय ने इसे पढ़कर कहा कि इसका लेखक युवाशोव से भी अधिक उत्तरदायक विद्रोही है। रवीश्वर्येव का पीतर पाश्चात्य के किके से बह कर दिया गया और उस मृत्यु की उम्मीद सुनायी गयी। बाद में जर्मन से जर्मनीत हाकर मृत्युबन्ध साइबरिया-निर्वासित में बदल दिया गया। एकातेरिना ने आदेश दिया कि यह पुस्तक बड़ी भी न बिके जिसमें कि लेखक का नाम विस्मृत हो जाय। किन्तु जर्मन ने उसे और भी दूरे उस्ताइ से अपनाया और केवल इस पुस्तक को पढ़ने के लिए लोग न बहुत अधिक पैसा लार्ब किया।

रवीश्वर्येव जानता था कि यदि वह क्रांतिकारी विचारों में युक्त कोई पुस्तक लिखता तो वह कस में न छप सकेगी। इसलिए उसने अपनी कृति को यात्रा-गुप्तक का रूप दिया और उसके विभिन्न अध्यायों का पीतरबुर्ग से मास्को के बीच पड़तकाले स्टेशनों का नाम दिया। कसकील की यात्रा-पुस्तक 'कमी मार्ची के पत्र' इसके पहल छप चुकी थी।

किन्तु रवीश्वर्येव की यह कृति सामान्य यात्रा विवरण नहीं है जिसमें कि लेखक प्रायः स्पर्शविधेय का प्राकृतिक मीठवर्ष चित्रित किया करते हैं। इसमें जनता के दुःख तथा पीड़न का चित्र है। जर्मनीबारा की घोरपरी का लंका है तथा जार के विरुद्ध सामक की बराबरों का विद्रोह है। इसमें

दास-किसानों के कठोर परिष्कृत वरिष्ठता और भुक्त का तथा साही दरबार में उच्च-अधिकारियों के छल-कपट कुणामय मुठ बईमानी आदि का मूल निवृत्त प्रस्तुत किया गया है। इस प्रकार इस रचना में रबीन्धेव ने कई महत्वपूर्ण प्रश्न—जमींदारों तथा किसानों के पारम्परिक संबंधों तथा जनता के बीच का संबंध नीतिकता विज्ञान आदि की समस्या—उठाए हैं जिन्होंने रूसी समाज के प्रगतिशील लोग का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया। रबीन्धेव की इस हृदि में अठारहवीं शती के उत्तरार्ध के रूसी समाज का जीवन प्रस्तुत किया गया है और उसकी बुद्धि का दिग्दर्शन कराया गया है तथा कम की दुवर्गा व मूल निरंकुश सामन पर निमग्न प्रहार किया गया है। केवल निरंकुशता का यैरकानूनी व्यवस्था बताता है और कहता है कि इसके बीच 'दामता अन्याय पीड़न तथा मार्ग' कलते-कलते हैं। रबीन्धेव का विश्वास है कि ऐसी व्यवस्था अविश्व समय तक नहीं टिक सकती और इसका अन्त करना अत्यावश्यक है। रबीन्धेव इसी से जाति के लिए रूसी जनता का आवाहन करता है।

रबीन्धेव और उनकी कृतियों का समग्र प्रगतिशील रूसी साहित्य पर बड़ा व्यापक प्रभाव पड़ा है। इससे प्रेरणा पाकर शिवयंदन में अपनी विस्मय कमंडी लिखी। रबीन्धेव के विचारों का सीधे-पुष्टि-निरंकुश आदि की सजना पर प्रभाव है और केम्ब्रिजवादी विकासिष्टा के निरंकुश वास्तव को पलटने का प्रयत्न भी इसी में अनुप्राणित था।

दास-श्रमा के बीच तदनुषठी हुई रूसी जनता का जीवन का समार्य अंजन प्रगुण कर रबीन्धेव ने रूसी साहित्य के विकास की नयी दिशा निर्धारित की। यह नयी दिशा आत्मोन्नत-व्यवस्था-समाधुता की है।

एकातेरिना की मृत्यु के बाद उगे निर्वाचन व बापग मीशन की अनुशासनी और बहु नियम गुणार के माधोग (रूसीगत) में नियुक्त किया गया। समाज में काम करने हुए उनमें किसानों की स्थिति सुधारन का प्रयत्न किया, इस कारण जमींदार उनके विरोध में हुए और उगत विरुद्ध कारवाई करने लग। दूसरी बार फिर निर्वाचन की संभावना पर उनमें ११ गिनवर १८०२ में बहुर गा लिया और उनकी मृत्यु हो गयी।

## ८ उन्नीसवीं शती

विकास्त्रिष्टी का आन्दोलन और उन्नीसवीं शती के पुर्नार्थ क बसो साहित्य में उनके विचारों की समिप्यवित ।

प्रमतिपरीक श्मी साहित्य का विकास स्वतन्त्रता आंदोलन क विकास के साथ बड़ बनित रूप से सबवित रहा है । उक्त के स्वतन्त्रता आंदोलन की जो तीन महिष केनिन द्वारा निर्धारित की गयी है, वे हैं प्रथमतः अमिजात बर्ग का आंदोलन (१८५ से १८२७) द्वितीय बुर्जुआ आंदोलन (१८११ से १८१५) और तृतीय प्रोस्तिारियत या सर्वहाय बर्ग का आंदोलन ।

अमिजात बर्ग का आंदोलन स्व के निरंकुस शासन के विरुद्ध प्रथम अतिकारी राजनीतिक सचयं या और इसी में उसका महत्व है । निर कुचता तथा दासप्रथा के विरुद्ध सचाकित इस अतिकारी मबर्ग का मूस श्मी राष्ट्रीय चेतना की जिसे कि सन १८१२ के (नैपोलियन से) युद्ध में जगाया और विकसित किया ।

सन १८१२ के युद्ध में श्मी जनता की राष्ट्रीय भावना को और भी पक्का बना दिया । इस युद्ध में श्मी जनता न केवल विजयिनी हुई बल्कि उमने हमारे देशों की जनता को नैपोलियन की पराधीनता से मुक्त किया । फिर भी सबसे बड़ी कियमता यह थी कि अन्य देशों को नैपोलियन के अधिकार से मुक्ति दिलानेवाली श्मी जनता स्वयं वार के निरंकुस शासन में तड़प रही थी । यह वासता के बचना में जकड़ी हुई थी और राजनीतिक स्वाधीनता से बचित थी ।

जमीदार तथा शासक बर्ग की भावनी तथा दास-कितान-अधिकारों के विरुद्ध जनता का असंतोष नैपोलियन-युद्ध के बाद क्रिमान-बित्रीहों के रूप में प्रकट हुआ किन्तु यह अचेतम विस्फोट के रूप में था । दासाधिकार तथा निरंकुमता के विरुद्ध पहला चेतन सचयं उन शोषों का था जो कि

अभिजात वर्ग के चिन्तनीय तथा प्रगतिशील पक्ष के प्रतिनिधि थे। इस पक्ष को देश के राजनीतिक तथा आर्थिक निम्न स्तर का स्पष्ट ज्ञान था और वह अच्छी तरह समझता था कि दासाधिकार तथा निरंकुशता देश के विकास के सबसे बड़े अवरोध हैं। फलतः उन्होंने शासन की निरंकुशता और सामन्तवादी दामाधिकारी स्तर के विरुद्ध सघर्ष उड़ दिया।

सन् १८१२ के युद्ध द्वारा प्रबुद्ध राष्ट्रीय चेतना के एक उद्भूत वातावरण के बीच कम के स्वतन्त्रता आन्दोलन का जन्म और विकास हुआ।

### दिव्वाहितों की स्त्रुवित्या सभा

अभिजात वर्ग के अधिकारियों ने इस युद्ध के बाद पीछे हटो मुक्तिवा मण्डल शुरू किया। उनका इस पहलू सवदन का नाम पिटू नूमि के मन्थ और बङ्गालर वर्ग का मन्थ था। सन् १८१६ में पीतरबुर्ग में 'रक्षा-मिति' बनी। १८१८ में 'समुद्रि मन्थ' बना। इसका टूटन के बाद तुलुचिना में 'दक्षिणा मन्थ' और पातरबुर्ग में 'उत्तरी सभा' बनी।

दिव्वाहित निरंकुशता तथा दासाधिकार का अन्त करना चाहते थे और उनकी जगह परी प्रगतिशील व्यवस्था स्थापित करना चाहते थे। 'दक्षिणी सभा' कम में रिपब्लिक स्थापित करना चाहती थी किन्तु 'उत्तरी सभा' राजा के अधिकारों का नियम द्वारा गौमित करना चाहती थी। फिर भी ये दिवाहित समता की दामाधिकार-विराधी भावना को प्रतिबिम्बित करण हुए भी जनता से दूर थे। उनका यह मन्थ जन-मांसानन न था इसी में उनकी क्रान्ति में व्यापकता का अभाव था और वह अल्पम सीमित थी।

१४ दिगम्बर १८२५ में दिवाहितों ने पीतरबुर्ग में मण्डल अन्ति मुक्त की प्रिमम नदी पराजय हुई। रीत्येव पन्नेल मुराभ्योन-अपाम्भल कायोग्गी बन्धुगदब न्नुमिम जैम प्रदान दिवाहितों का मृत्यु-वन्द मिठा और मी ने अधिन दिवाहित सादरिया निर्वामित कर दिये गये।

विकाशियों के विचारों की साहित्यकारों की सर्जना में अभिव्यक्ति

यद्यपि विकाशियों की पराजय हुई और आरसाही न उतका कूरता स हमन किया किन्तु उनके विचार किसी भी तरह दबाय न जा सके। ठल्पासीन युग के प्रगतिशील साहित्यकारों ने उनके स्वतन्त्रताप्रेमी और निरकुसता तथा दासता-विरोधी विचारों का स्वागत किया और उनको ककारमक अभिव्यक्ति दी। ऐसे सपका न पुश्किन रीस्वेन पिबयेवक जादि मृत्य है।

पुश्किन यद्यपि विकाशियों की गुप्त समा का सदस्य न था फिर भी उसका उनके साथ बनिष्ठ सम्बन्ध था। पुश्किन के प्रगीत मुक्तकों में विकाशियों के विचारों-कास्तिकारी वेशभक्ति स्वतन्त्रता के आह्वान यासाधिकार तथा अत्याचार के विरोध की पूरी पूरी अभिव्यक्ति मिलती है और उसकी प्रौढ़ इतिया में जन-जीवन के साथ पूरी अनिच्छता है तथा कामपक का अभाव नहीं है जो विकाशियों की सोच-बुद्धि की सबसे बड़ी कमी थी। विकाशियों के विचारों से निम्न पुश्किन की सर्जना न सरमेन्तोव तथा गोमल की लोक-बुद्धि की रचना में बहुत बड़ा हाप है।

पुश्किन न समाज पिबयेवक की भी विकाशियों के साथ बड़ी मित्रता थी। अपने विचारों के प्रचार के लिए विकाशियों ने उसकी बमड़ी 'चतुराई से दुश्म' का व्यापक उपनाय किया क्योंकि पिबयेवक ने इसमें यासाधिकारी स्तर पर व्यक्त किया था और इसने विरुद्ध मर्ग करन का संकेत दिया था। इसका मुख्य नामक चात्की विकाशियों के विचारों का अभिव्यक्ति है।

रीस्वेन 'उत्तरी समा का मता था। निरकुसता पर उसका पहला बुठारापाठ उसका व्यंग्यात्मक जोड 'प्रिय पात्र को' था। इसमें उसने आर के प्रिय पात्र उसके अत्यन्त प्रतिक्रियावादी मत्री सरकयेवक की कटु व्यंग्यपूर्ण आलोचना की थी। रीस्वेन ने एतिहासिक विषयों पर कई कविताएँ लिखी जिनको उसने विचार कहा। इनमें से 'एरमाक की मृत्यु' सोवगीत बन गया और 'इवान मुसानिन' से प्रेरणा पाकर प्लीना ने 'इवान मुसानिन' नाम का नायका बनाया। उसका काव्य 'नास्ति-

बाइको' में विदेशी पराधीनता के विरुद्ध युद्ध के देशभक्त नाटिकाइकों का समर्पण किया गया है। इनके अतिरिक्त नागरिकता की उच्च भाषना से पूरा उनके कई प्रवीत मुक्तक हैं। उसने लोकगीता के माध्य पर कतिपय गीता की भी रचना की।

दिवाङ्मिस्टों के विचारों की सबसे अधिक कठोरतम अभिव्यक्ति उसकी कविता 'नागरिक' में हुई है जिस उसने दिवाङ्मिस्ट क्रांति के अपारम्भ पर लिखा था। उसमें उसने निरङ्कुशता के विरुद्ध तथा व्यक्ति की स्वतन्त्रता के लिए समर्पण का आह्वान किया है। दिवाङ्मिस्टों के विचारानुसार साहित्य का नाम नागरिकों का गीता देना है और उनमें उच्च भावपूर्ण जगाना है। रीत्येव के लिखा मैं कवि नहीं नागरिक हूँ। क्रांतिवारी दण्ड-भक्ति स्वतन्त्रता के आह्वान निरङ्कुशता की आसक्ति आदि की दिवाङ्मिस्टों के गद्य तथा पद्य में पूरी अभिव्यक्ति मिलती है। इसमें उप्रीसर्षी घाती के मनु कीस के पद्यों के उन अग्र्य प्रगतिशील सत्यता को भी प्रस्ता भिन्नी ओ गुप्त समाज के सदस्य में थे।

दिवाङ्मिस्ट सत्यता तथा कविता की सज्जता कृती साहित्य की एक नयी प्रवृत्ति—रोमांटिसिज्म से संबंधित है जिसे निष्क्रिय या स्वनिष्ठ रोमांटिसिज्म के प्रतिपक्ष में प्रगतिशील या क्रान्तिवारी रोमांटिसिज्म कहते हैं। इस प्रगतिशील रोमांटिसिज्म के सत्यता ने क्यामिज्म के स्वच्छन्दता विनाशो नियमों का विरोध किया और साथ ही अभिजात वर्ग और उसकी विचारधारा का भी विरोध किया जिसमें कि क्यामिज्म का समर्पण प्राप्त हुआ था। उन्होंने निष्क्रिय रोमांटिसिज्म का भी विरोध किया जिसके समर्पण (जैसे बुद्धोष्की सदयष्की आदि) जीवन से दूर हटने वाले अपनी व्यक्तिगत अनुभूतियों में सीमित रहनेवाले उदात्त मन के व्यक्तियों का चित्र प्रस्तुत करते थे।

दिवाङ्मिस्टों की पराजय के बाद प्रतिक्रिया और समय का युग शुरू हुआ जिसमें जनता का हृदय निराशा के अंधकार में भर गया। इस समय केवल पुस्तक की गार्हमयी आवाज सूझती रही जिसमें दिवाङ्मिस्टों के विचारों से अनुभावित स्वतन्त्रता के आह्वान का आभास ही स्पष्ट था।

पुस्किन के जीवन के अंतिम चरण में स्वतन्त्रता के सेवानियों की मयी पीड़ी सामन आ गयी। यह पीड़ी क्रांतिकारी 'डिमोक्रटा' की थी जिसे दिकाब्रिस्टा की क्रांतिकारी परंपरा बिरासत में मिली और जिसने इसे व्यापक तथा धर्मोत्तर बनाया। इसका प्रसिद्ध प्रतिनिधि बलिस्की है। पुस्किन के प्रभाव तथा बलिस्की के समर्पण से दिकाब्रिस्ट युग के बाद सेरमन्तोव तथा गोयल की प्रतिमा का विकास हुआ। सेरमन्तोव युवा-वस्था से ही दिकाब्रिस्ट कवियों की कविताशा से परिचित था और बाद में उषे काकेचस में मिला था। मदोयेव्स्की से उसकी मित्रता भी थी। सेरमन्तोव की रचनाओं में दिकाब्रिस्ट भावों की अन्तिम तथा धर्मोत्तर पूर्व निरूपी है। बाद में पुस्किन के समान वह भी क्रांतिकारी रोमांटिक्लिग्म से यथार्थवाद की ओर आया।

इसी प्रकार गोयल ने भी निक्लीस के प्रतिक्रियावादी युग के बीच स्वतंत्रता-समर्प की परंपरा को बनाये रखा। अपनी कहानियों तथा नाटक 'मृत आत्मा' में उसने क्ले के दासनाधिकारी स्तर की अघम्यता तथा धर्मोत्तर और दासनाधिकारियों के सामसिक दोषलेपन का मान चित्र प्रस्तुत किया। उसकी व्यापारमक हुईनी में कम में उल्टी हुई उस नयी प्रगतिशील पीड़ी की शक्ति थी जो कड़िवादी स्तर तथा निरकुशता के समर्पकों का चुनौती प रही थी।

## ९. इवान क्रोलोव

[ १७६९-१८४४ ]

बठारहवीं शती के रूसी साहित्यकारों में श्रीसाब को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। वह विनयवतया अपने नीतिपूज्य अत्यन्त महेतपूर्ण तथा अम्यौक्तिपूर्ण कथारमक वाक्य के लिए प्रसिद्ध है जिस रूसी में 'बास्न्या' कहते हैं। ये ही उसकी प्रसिद्धि के मुख्य आधार हैं किन्तु 'बास्न्या' के पहले लगभग बीस साल तक वह कमेडी अप्यारमक कव्य तथा कविताएँ लिखता रहा जिनके माध्यम से इस युवक लेखक की प्रतिभा न अपने प्रसिद्धिपूर्व जनारमक तथा बगमबिन-युक्त विचारों का बह माह्य के माय प्रकट किया। उसका साहित्यिक कार्यकालाप अठारहवीं शती से शुरू होता है और उन्नीसवीं शती के ( लगभग ) मध्य तक चलता रहता है।

इवान श्रीमोव का जन्म मास्को में एक सामान्य मैनिक अफ्रमर के परिवार में हुआ था जो बर्मीर न था। नौकरी के निम्नलिखे में बराबर स्थान-परिवर्तन के कारण बच्चों की पिता-पिता कीक से न हुआ मकी। इस रूप की अवस्था में उमने पिता की मृत्यु हो गयी और परिवार दीनता में निमग्न हो गया।

बचपन में श्रीमोव अन्तर बाजार तथा मरों में जाया करता था और सामान्य रूसियों के माय घूमा करता था। इस प्रकार इने सामान्य रूसी जीवन में परिचय प्राप्त हुआ और उमने जन माया के ज्ञान-बिनाद लोकहितियों तथा बहावनों को आत्ममान् किया। अपनी माँ के निर्दोषन में उमने निरुत्ता-मदुना मीगा। बाद में आरम-गिया द्वारा वह अत्यन्त उच्च शिक्षित व्यक्ति बन गया। उमका आरमिक जीवन बड़ी ही कठिनायियों के बीच बीता। चार साल तक उमने दो रूसी महीम की नौकरी की। नाटकीय अभिनयों में उमकी आरम्भ से ही बड़ी रुचि थी।



फ्रीलोव तत्कालीन नाटक के अभिनेता विभिन्नियेव्स्की के सम्पर्क में आया और उसने नाटककार बनने का निश्चय किया।

### आरम्भिक कृतियाँ

इस बात की संभावना प्रकट की जाती है कि चौदह वर्ष के फ्रीलोव ने हास्यप्रधान भाषणा 'काफी की चक्की' लिखी जिसमें अधिकारविहीन किसानों का चित्रण तथा दासताविरोधी दृष्टिकोण प्रस्तुत किया गया था। उसकी यह कृति न छपी और न रयमन्ध पर इसका प्रदर्शन हुआ।

इसके बाद उसने क्लासिकल ट्रैजडी 'विलजोपाशा' लिखी जिन्से विभिन्नियेव्स्की द्वारा समर्पित न होने के कारण फ्रीलोव ने स्वयं इस नाटक कर दिया।

फ्रीलोव ने १७८६-८८ में दो कामिक भाषणा 'पागल परिवार' तथा 'अमेरिकन शिबे जिन्से कसात्मक दृष्टि से यह उच्च कोटि के नहीं माने जाते। फिर भी यह समकालीनों के नाटको से बराब नहीं है। फ्रीलोव अपनी 'कमेडियो' में अभिजात वर्ग की बुराईया की—उनकी अज्ञानता फ्रांसीसी वस्तु तथा विचार की गुलामी राष्ट्रीय भावना के अभाव किबूतलर्षी आदि की हुई उदात्ता है। उसमें नीकर भाषिकों से आर्थिक बुद्धिमान् चित्रित किये गये हैं जो कि अपने मूर्ख भाषिकों को बचकूप बनाते रहते हैं।

### पत्रकारिता

बीस वर्ष के इस सबसुबक सेप्टक ने इसके बाद पत्रकारिता आरम्भ की। चार वर्ष तक (१७८९-१७९३) वह व्यंग्यात्मक पत्रों के प्रकाशन में लगा रहा। उसने तीन पत्र 'आरिम्भक डाकखाना' 'प्रसक' 'पीतर बर्द मर्केरी' निकल।

'आरिम्भक डाकखाना' अन्धा का समूह है जो पत्रों के रूप में है। यह पत्र पाठाल पाती और हवा में रहनेवाली आत्माआ के पात्रपर मलिकुम्-मुम्ब' का निकल गये पत्र है जो सब व्ययह जा सकन है और सब कुछ बेवत है। इनमें अग्याकित्पुर्ष हय स तत्कालीन दाम प्रबानुपायी रूप तथा आरगाही का चित्रण हुआ है।

प्रेमक' पत्र में उसकी व्यंग्यारमक प्रतिमा का विकास और भी देखन का भिन्नता है। इस पत्र में उसकी लिखी गयी वृत्तियों में से 'कैब' और 'बाबा का मरगिया' अत्यन्त प्रसिद्ध हैं। 'कैब' में अन्यासिपूष कथा के माध्यम से जार का निर्दुःखता पर बड़ा ही मार्मिक आक्षेप किया गया है और यह दिखाया गया है कि जार अपने बन्दीरा पर निर्भर रहता है और प्रजा इन बन्दीरा के अत्याचार से कराहा करती है। 'बाबा का मरगिया' में सामान्य जमींदारों का व्यंग्यारमक चित्र प्रस्तुत किया गया है। कम क व्यंग्यारमक साहित्य में श्रीलोक की इस वृत्ति का बड़ा उच्च स्थान है।

१७९२ में पुस्तक में उसका प्रेम की उसादी ली। कोई पत्रका सबूत न मिलने क कारण उस पर अभियाय न चलाया गया लेकिन पुस्तक उस पर निगरानी रखने लगा। बाद में यह पत्र बर्न हो गया। यह बर्तन समय था। भारत रक्षा क लिए उनमें राजपानी छोड़ दी और प्रांग में बिना किसी माधन तथा संरक्षण क घूमने लगा। १८०० में उनमें निरादृत राजकुमार सर्गीस्किन के परिवार में गिरक की मीचरी कर ली और उनमें कई नाटक प्रस्तुत किये।

### बास्न्या

१८०६ में वह अन्यासिपूष पद्यारमक सप्तु बचाएँ 'बास्न्या' लिखन लगा। जिनमें पात्र पशु-पक्षी हैं और जिनमें कोई-न कोई नैतिक शिक्षा प्राप्त होती है। श्रीलोक की ये 'बास्न्या' व्यंग्यारमक नैतिक तथा अन्यासिपूष हैं। इनमें उग समय के सामाजिक राजनीतिक साहित्यिक और घरेलू जीवन क सभी वष और कांठि—जार सामसाधिकारी अभिमान बर्न मौदागर विमान आदि—का स्पष्ट चित्रण है। इनमें प्रस्तुत जीवन संवेक्षण जीवन अभिव्यंजना व्यंजन-संघातना भाषा की गहराता और सामान्य जीवन न श्रीलोक की बास्न्या का कथा के उच्च स्तर पर पहुँचा दिया। श्रीलोक क जीवन बाल ही में इनका व्यापक प्रचार हुआ गया और इन्होंने उन विरहस्वादि प्रदान की। यूरान की कई भाषाओं में इनका अनुवाद हुआ।

## १० जुकोव्स्की

[ १७८३-१८५२ ]

जुकोव्स्की तुला प्रान्त के ममीर जमीदार का पुत्र था और इसकी माँ तुर्की लड़ाई की कही थी। जुकोव्स्की मुक्तक गीतों का प्रथम कवी कवि माना जाता है। वह प्रेम तथा व्यक्तिगत भावनाओं का कवि है। अंगरेजी कवि प्रे की एंजेनी के मुद्दर अनुवाद से लोगों का ध्यान उसकी ओर गया। नेपोलियन के रुस पर आक्रमण के समय उसकी देश-भक्ति के गीतों का बड़ा प्रचार रहा।

बाद में वह मुद्रराज का शिक्षक नियुक्त किया गया और उसने देश-विदेश की यात्रा की। अन्त में वह रुस छोड़कर जर्मनी में बस गया। १८५२ में वाहन-आदन में उसकी मृत्यु हो गयी।

जुकोव्स्की की कृपाति का मूल आधार उसके अनुवाद हैं। उसके 'नम्र दमयन्ती' 'इस्तम सोइराब' 'ओडेसी' के अनुवाद बहुत प्रसिद्ध हैं।

जुकोव्स्की मानव की अंतरतम अनुभूतियों का कवि है। वह मनुष्य की अत्यन्त भावनाओं और आत्मा की लोच को अतिव्यक्ति देता है। उसके लिए काव्य और जीवन एक है।

रुसकीन आलोचकों ने उसकी बड़ी प्रशंसा की। बेल्जिस्की ने कहा कि 'जुकोव्स्की के बिना हमें पुरिफन न मिलता।

## ११ अलेक्सान्द्र सेगोयविच प्रिवयेदेव

[ १७९५-१८७९ ]

प्रिवयेदेव नव यवायवासी रूसी साहित्य के संस्थापकों में हैं। पुदिफन यवमनिई अनगिन और प्रिवयेदेव की कमेडी 'बतुराई' में कुग में पहलक हल रूसी जीवन की यथापता का काय्यारमक अभिव्यक्ति प्राप्त हुई।

### विद्यार्थी-जीवन

अमरनाग्र सेगोयविच प्रिवयेदेव का जन्म एक प्राचीन अभिजात परिवार में १५ जनवरी १७९५ को मास्का में हुआ। उसकी माँ ने उसकी शिक्षा दीक्षा को भार विधाय ध्यान दिया। विदेशी गवर्नरों के प्रतिष्ठित उम मास्का विश्वविद्यालय के प्राक्सर पढ़ाते थे। ग्यारह वर्ष की अवस्था में वह मास्का विश्वविद्यालय का विद्यार्थी बन गया। उस समय उसका भाव भविष्य के कई निकटिस्ट भी मास्का विश्वविद्यालय पढ़ते थे जो आपस में राजनीतिक भावित तथा साहित्यिक विषयों पर बात-विबाद भी किया करते थे। फानडीजिन तथा गोंदिकाव के साथ और ग्रीदथ्यव की जल्न पुस्तक 'पीतरबुर्ग' से मास्को की 'माता' गति इन गतिष्ठित में पढ़ी जाती थी तथा इन पर बहस होता थी। इन सबने नूबक प्रिवयेदेव के दाम-विरासो तथा निरंकुमता-विरोधी दृष्टिकान में निर्मित किया। विश्वविद्यालय में उसने विज्ञान गणित तथा म्याय विभाग में शिक्षा प्राप्त की, किंतु मन् १८१२ में युद्ध छिड़ जाने में उसकी विश्वविद्यालय की शिक्षा का क्रम महत्ता टूट गया। अपने दम की सेवा करने के लिए वह स्वयं सबक के रूप में गता में दायित्व हुआ गया।

### पीतरयुग का जीवन

दस मीनिर सेवा के बाद वह पानरबुर्ग चारम लीन आया मना में बरताग से लिया और रिदनी विभाग के बाल्त्र में बना गया जहाँ उसका पुदिफन में परिषय हुआ। पीतरयुग के दस निवाम राम का उसकी काव दृष्टि के निर्माण पर व्यापक प्रभाव पड़ा। यह वह समय था

बाद कि रूस में महिष्य के विक्राडिस्टा की 'गुप्त समारो' शुरू हो गयी थी। यद्यपि वह विक्राडिस्टा की ममाया का सहस्य न था फिर भी उनके दृष्टिकोण और विचारों में उसे महामुमुनि थी। एक व्यक्तिगत रूपमा (इन्द्र यज्ञ में सापी क रूप में विद्यमान रहने के कारण जिसमें एक की मृत्यु हुई) के कारण उस राजनीतिक मिशन का सेक्रेटरी बनाकर ईरान में भेजा गया। पीतरबुर्ग का जीवन समाप्त हो गया। इन्हीं वर्षों में उसने 'बतुरार्स से दुःख' कमेडी लिखने की सोची।

### 'बतुरार्स से दुःख' कमेडी

ईरान में रहते हुए वह निपिलम प्राय माना था। निपिलम में उसने इस कमेडी का दो अंक पूरे किए और उसे अपने माजी विक्राडिस्टा कवि क्यूरवेक बेकर को सुनाया। १८२३ में उसे छुड़ी मिली और उसने दो वर्ष पीतरबुर्ग तथा मास्का में बिताये। इन समय उसने अपनी यह कमेडी पूरी कर ली।

उसने अपनी यह कमेडी अपने मित्र तथा परिचितों को सुनायी। योइ समय में इसकी हस्तलिखित प्रतियाँ गारे देण में फँस गयीं। प्राचीनता के समर्थकों को इसमें अपना व्याप-विष मिलान और उन्होंने इसे खण्ड करने की बात उठायी और विक्राडिस्टा ने उसका समर्थन किया क्योंकि इनमें उन्हें निरंकुणता तथा बामना विरोधी अपने विचारों की सतक मिथी।

किन्तु विषयेदेव अपने जीवनकाल में न इसका मूद्रण और न इसका रंगमंच पर अभिनय ही देख सका। मन् १८३३ में यह पहली बार छपी। इसके पहले ही ईरान में उसकी हत्या कर दी गयी।

१८२३ में उसे विक्राडिस्टा के साथ अभिनय के संदेह में निरप्रणार कर लिया गया। उनका मित्र जेतरल येरमकोव ने उसे निरप्रणारी में पहले ऐसे कानडा को जला डालने का अवसर दिया। कुछ महीने बाद वह मुक्त कर दिया गया और अपनी मौकरी पर चला गया।

रूसी ईरानी युद्ध के बाद वह ईरान में रूस का राजदूत बनाकर भेजा गया। रूस की राजनीति में अत्युत्प्रेरक वेहपान के मुस्ताया ने १८२९

में रुमा राजनीतिक विगन पर हमसा किया । ११ फरवरी १८२९ का हुनाबाम क मनी सदस्य (बबल एक का छाड़कर) मार डाम गम । इन मृतकों में विद्ययदेव मा था । उसका गब विधिकम साया गया और बहा दफनाया गया ।

विद्ययदेव की कमेडी 'बनुराई से हुन रुमा माहिरन का अनुपम रल है । उसका उबब बस्तु तत्व य्क्तिमुपन-विद्यग बुन माया और मन्दर कबिता इन सब म हम रूप में अत्यन्त सात्रिय बना लिया ।

**'बनुराई से दुस' कमेडी का वस्तु तत्व**

इस कमेडी का मूलमूल विचार शर्बीन तथा नवान विचारधारा का मर्ष है । हमने अभिजात बग के उन प्रतिनिधियों पर नीटन करम्य है जो कृषिबादा है जो दामाधिकार का बलाय गनना चाहत हैं और जो गिया प्रगतिगानना मारि क बट्टर बिरापी है ।

**फामुनाब**

इनका मबम बड़ा प्रतिनिधि फामुनाब और उसने मापी स्वासाजूवाब (वांग विन्किटान बामा) मन्बानिन (बुप्पा) हैं । फामुनाब क जोबन का लम्ब रिमी म रिमी तरह अमीरी तथा पन्की प्राप्ति अपने बन्ना का अमीरा म शरी और मानन्मम जोबन है । वह विगन पुम का मर्षक और शर्बीन विचार का बट्टर जाणु है ।

इसी प्रकार स्वासाजब प्रतिक्रियाबादा मत्री अरणबमब का ममयब है, निरंकुगता तथा दामाधिकार का पधनापी है और गिया का बिरापा है ।

कन्बानिन अकमरा की सुगामब कगता रूता है । वह उन साया का प्रतिनिधि है जो नौकरी का मन्बब ईमानदारी में काम करना नहीं बन्नु अट्टगर की ताबशारी मममने है और हम प्रकार ऊन उन्नत है । वह माश्रिया म प्यार नहीं करना बिन्नु प्यार का डाम रपता है बराकि वह अमीर को लड़की है और वह उमम घादी करना चाहता है ।

फामुनाब के प्रतिपक्ष म चास्फी का बिब है जो प्रगतिगान् व्यक्ति और मविष्य क दिवाश्रिट का बिब है । वह अभिजात बग के प्रगतिगान्

नवमुषर्का का प्रतिनिधि है। एक प्रकार से यह शिवयेव का ही जीवन है। यह फामुसोव के समाज का कट्टर व्यालोचक है क्योंकि उस समाज के जीवन का स्तर अत्यन्त निम्न और गिरा हुआ है। इसी प्रकार यह उन सांसाधिकारियों का वर्ग्यविष प्रस्तुत करता है जिन्होंने बास कूपर्का को पशु से भी नीचा और पतित बना दिया है और जिन्हें वे पशु के समान माँ को पिता से और बच्चों को माता-पिता से अलग कर बेचते हैं।

इस प्रकार यह सामाजिक कमेडी है जिसमें न केवल पार्श्वों की व्यक्तिगत विशेषताएँ अंकित की गयी हैं बल्कि युग का सामाजिक राज नीतिक सच भी प्रस्तुत किया गया है। इसमें सन् १८१२ के युद्ध के बाद अमिजात वर्ग के प्रगतिशील विचारों का प्राबुर्भाव और प्राचीनतावादी स्तर के साथ उसकी टक्कर दिखायी गयी है। रिकात्रिस्टा ने बास प्रवा के प्रति विरोध कथित किया और उन्हें इसमें रुढ़िवादी समाज की अन्ध-पतित दसा की वर्ग्यपूर्ण प्रखर आलोचना तथा प्रगतिशील विचारों का प्रतिपादन मिला।

इस कमेडी को सबसे बड़ी विशेषता इसकी समीच जसदी और चुमवी भाषा है। इसके बारे में पुश्किन ने कहा था कि इसका भाषा हिम्मा या शीघ्र ही लोकोक्ति बन जायगा और सचमुच में इसकी बहुत सी उक्तिर्पा का मूहाबिरे ने रूप में प्रयोग होना लगा। इसका सामिक वर्ग्य शक्तिशाली चुन्त बिजमी-स्पर्ध को तरह भाषा स्वच्छन्द तथा मजीब सबाब इसकी खरदार अमिब्यक्ति और जनात्मकता पार्श्वों का अनकायी चित्रण इन सब ने इसे रूसी साहित्य की लोकरिय और अमर कृति बना दिया।

शिवयेव ने अपनी इस कमेडी में जसोसरीं गरी के सन् दस में बीस के वर्षों के रूसी जीवन की सबाबंता का बिच अंकित किया। उसकी बुराद्यों की आमाचना की और नायक के रूप में प्रगतिवादी व्यक्ति का सबाबंकारी एवं कलात्मक बिच प्रस्तुत किया। इस कमेडी ने रूसी आदय साहित्य में एवं रग-मंच पर सबाबकार की प्रतिष्ठित कर दिया।

## १२ घलेमसान्द्र सेर्गेयविच पुरिक्त

[ १७९९-१८३७ ]

पुरिक्त रूसी साहित्य का महान्तम एवं मयस्यठ मयस्य है ।  
रूसी साहित्य क राष्ट्रीय बरि और मयस्यपीन रूसी माया क निर्माता  
क रूप में उमका र्वाति है ।

### बचपन

पुरिक्त का जन्म ६ जून म १७९९ म एक अयम्य प्रार्थीन अनिवात  
विनु अर निधन बंग म हुआ था । उमक पिता न पुत्र का गिया नीला की  
म्वरं बिल्ला न कर हुमता मार मवर्तन तथा दुमरा पर छाड दिया था ।  
बह म्वरं अछा अभिनता था और शीकिया मायकों क अनिमय म हिम्या  
निया करता था ।

उमका शर्ी साहित्य अयस्यमयता र्नीवाल न उमे रूसी लिखता और  
पढ़ता मिलाया । शीक म पुरिक्त क मयस्य लिख उमकी नय अरीना  
रूसीमाया थी विमन इस बरब का बरानिनी मुनाकर उम का  
साहित्य म परिचित कराया ।

पुरिक्त का आरम्भिक गिया घर पर ही और बिलेगी विमरनया  
छांसीनी मवर्तन म दिनी । छांसीनी माया पर बामक पुरिक्त का पुन  
अधिचार था । बह रूसी क समान हा छांसीनी बाल्या था । उमक घर  
म बहन बड़ा पुनबामय था और बह बही घंटी पढ़ा करता था । उम प्रकार  
उम कई मायाका और साहित्य का अछा जाल हुआ । उमक यही  
बहन म लाग आया जाया करने थ । उनम कयस्यीन दिमिबिदक  
बायूदकार अयस्य बस मयस्य थ । उनका बाबा (बे० एम० पुरिक्त)  
म्वरं प्रविद बरि था ।

### स्तोसियम

उम पुरिक्त 'स्तोसियम (बाल्य) म मवीं ब्रमा ता उम मयस्य मक  
कह मयस्यमाय मयस्यीन कयस्यीन उद्योष्यी तथा अउररबी रूसी



मनुष्यको का प्रतिनिधि है। एक प्रकार से वह द्विजदेव का ही जीवन है। वह कामुखेव के समाज का कट्टर आलोचक है क्योंकि उस समाज के जीवन का स्तर अत्यन्त निम्न और गिरा हुआ है। इन्हीं प्रकार वह उन शासक-कारियों का व्यंग्यचित्र प्रस्तुत करता है जिन्होंने राम कृष्णों को पशु से भी नीचा और पतित बना दिया है और जिन्हें वे पशु के समान मा को पिता से और बच्चा का माता-पिता से अलग कर बैठते हैं।

इस प्रकार यह सामाजिक कमेडी है जिसमें न केवल पार्श्वों की व्यक्तिगत विशेषताएँ अंकित की गयी हैं बल्कि युग का सामाजिक राज नीतिक सर्वत्र भी प्रस्तुत किया गया है। इसमें सन् १८१२ के युद्ध के बाद अभिजात वर्ग के प्रयत्नशील विचारों का प्राबुर्भाव और प्राचीनता-वादी स्तर के साथ उसकी टक्कर दिखायी गयी है। दिखाइस्टा ने दास-प्रथा के प्रति विरोध व्यक्त किया और उन्हें इसमें रुढ़िवादी समाज की सब-पतित दशा की व्यंग्यपूर्ण प्रकृति आलोचना तथा प्रयत्नशील विचारों का प्रतिपादन मिला।

इन कमेडी की सबसे बड़ी विशेषता इसको सजीव चरित्रों और चुमटी भाषा है। इसके बारे में पुरिकन ने कहा था कि इनका भाषा हिन्दा या वीथी ही लोकोक्ति बन जायगा और सचमुच में इसकी बहुत सी उक्तियों का मुहाबिरे के रूप में प्रयोग होने लगा। इनका मार्मिक व्यंग्य पक्षिगामी चुस्त विजसो-स्पर्श को तरह भाषा स्वच्छन्द तथा सजीव सवाद इसकी बारबार अभिव्यक्ति और अमारमदता पार्श्वों का अनकांगी चित्रण इन सब ने इसे कवी साहित्य की लोकप्रिय और जमर इति बना दिया।

द्विजदेव न अपनी इन कमेडी में उन्नीसवीं शताब्दी के सन् इस स बीस के वर्षों के कमी जीवन की पचार्थता का चित्र अंकित किया। उसकी बुराईयों की आलोचना की और नायक के रूप में प्रयत्नशील व्यक्ति का पचार्थवादी एवं कलात्मक चित्र प्रस्तुत किया। इन कमेडी ने कवी साहित्य में एवं रम-मन पर मयाचबाध का प्रतिष्ठान कर दिया।

## १२ अलेक्सान्द्र सेर्गेयविच पुश्किन

[ १७९९-१८३७ ]

पुश्किन रूसी साहित्य का महानतम एवं सर्वश्रेष्ठ लेखक है। रूसी साहित्य के राष्ट्रीय कवि और समकालीन रूसी भाषा के निर्माता के रूप में उसकी ख्याति है।

### बचपन

पुश्किन का जन्म ६ जून सन् १७९९ में एक अत्यन्त प्राचीन अभिजात किन्तु अब निपत वंश में हुआ था। उसके पिता ने पुत्र की भिक्षा-खीक्षा की स्वयं विमता न कर हमका भार गवर्नर तथा दूसरा पर छोड़ दिया था। वह स्वयं अच्छा अभिनेता था और शीकिया नाटकों के अभिनय में हिस्सा लिया करता था।

उसकी दादी मारिया अलेक्जेंडरना हनीबास ने उसे रूसी लिखना और पढ़ना सिखाया। रूस में पुश्किन के सबसे निकट उसकी मर्से अरीना गरीब्रायना थी जिसने इस बच्चे को कहानियाँ सुनाकर उसे लोक-साहित्य से परिचित कराया।

पुश्किन को आरम्भिक शिक्षा घर पर ही और बिदेगी विद्येपतया फ्रांसीसी गवर्नरों ने मिली। फ्रांसीसी भाषा पर बालक पुश्किन का पूरा अधिकार था। वह रूसी के समान ही फ्रांसीसी बोलता था। उस पर स बहन बड़ा पुस्तकालय था और वह बहूँ पढ़ते पढ़ा करता था। इस प्रकार उस कई भाषाओं और साहित्यों का अच्छा ज्ञान हो गया। उसने यहाँ बहुत से नाम आया जाया कर्म थे। इनमें कर्मचीन विविधिमक बापूदकाव फाकाव जैसे समय थे। उसका चाचा (बे० एन० पुश्किन) स्वयं प्रसिद्ध कवि था।

### सीसियस

जब पुश्किन सीसियस (कालेज) में गयीं हुआ तो उस समय तक वह समयानुसार, देवकीदिन कर्मचीन उद्योगशील तथा अडाएनी तानी

कं फ्रांसीसी संसदों की रचनाओं से बहुत अच्छी तरह परिचित हो चुका था। सीसियम में उसने छ वर्ष बिताये और इसका उसके जीवन तथा कोश्वृष्टि पर गहरा असर पड़ा। यहीं पर उसका सेना के अधिकारों तथा मरिच्य के 'दिकाब्रिस्टो' और दिकापतया चर्चाएँ से परिचय हुआ और उसने रबीइफ्येब की कृतियाँ को पढ़ा।

सन् १८१४ में पुस्किल ने 'स्यारस्कोवे सेलो' (जार का नाँव) की स्मृति 'कविता क्लिप' जिसे उसने १८१५ में अपनी पब्लिक परीक्षा में सुनाया। दरजाबिन जो परीक्षा में था इसे सुनकर बड़ा प्रभावित हुआ। इसमें नेपोलियन से रूस के साहसपूर्ण युद्ध का वर्णन है। सीसियम में पढ़ते हुए ही वह साहित्यिक गोष्ठी 'अरजामस' का सदस्य बना लिया गया और यहीं उसने अपनी बड़ी कविता 'रूसलान और लुमिला' लिखनी शुरू की।

सीसियम के बाद वह विदेश विभाग के कार्यालय में पढ़ने के लिए पीतरबुर्ग गया था।

### प्रगीत मुक्तक (१८१७-१८१९)

सन् १८१७ में १८१९ के बीच उसने स्वतन्त्रता प्रेम से युक्त कई कविताएँ लिखीं जिनमें 'स्वतन्त्रता' चर्चाएँ को 'गीत' प्रमुख है। राजनीतिक समकालीनता और क्रांतिकारी बेस के कारण उसका प्रगीत 'स्वतन्त्रता' अभिवात वर्ग के नवयुवकों के बीच अत्यन्त लोकप्रिय हुआ।

'चर्चाएँ' प्रगीत में समकालीनों को वेद सेवा के लिए अपनी आत्मा अर्पित कर देने का आह्वान है। कवि का विश्वास है कि निरभ्रता का पतन होगा और रूस में स्वतन्त्रता का प्रभाव होगा। इस समय उसने बहुत से जार विरोधी कमीश भी लिखे जो इतने पुस्तक और तब के कि सारे समाज में वे बड़ी जल्दी व्याप्त हो गये और उन्हें राजनीतिक चेतना को बहुत उभारा। पुस्किल की इन राजनीतिक कविताओं में जार बहुत असंतुष्ट हुआ। जार अलेक्सांद्र प्रथम ने लिखा कि उसने (पुस्किल ने) छाने कम में साम्यवादी कविताओं की भाँड़ सा ही जत जते साइ-बरिया निर्वाण करने का विचार किया गया। किन्तु करमजीन और

बुकासकी के बीच में पड़ने से उसे साइबेरिया में भेजकर दक्षिण भेजा गया। उस पीठरबुग छोड़कर यकातेरिनोस्ताव जान का हुबम दिया गया। इसी समय (१८२०) उसने 'असमान और सुयमिका काव्य पुरा किया।

### दक्षिण का निर्यासन

यकातेरिनोस्ताव में पुस्तिक अधिक समय तक न रहा। पुस्तिक वहाँ पीमार था। जब कि कवि का परिचित जनरेल एएम्की बड़ी आया और उस कवकाइ से जाने की आज्ञा प्राप्त कर ली। कवकाइ तथा फ्रीम के धार्मिक दृष्टियों—समुद्र कीस दक्षिणी प्रकृति आदि—का कवि पर बड़ा प्रभाव पड़ा। फ्रीम ने उसने गिरई ली द्वारा अपनी मूठ बन्नी प्रियतमा की स्मृति में निर्मित आमुत्रों का फम्बारा बेगा जिनके आधार पर उसने बाद में 'बाकशी सराय का फम्बारा' काव्य किया।

इसके बाद उस तीन साल किम्बोनेक में रहना पड़ा जहाँ उसका 'निदाशिनो' की इतिमी सभा के कई अफसरों में विगपतया उसके कता पस्तक में परिचय हुआ। पुस्तिक की क्रांतिकारी मनोबुत्ति का मकल उसकी इस समय की सिर्गी कविता 'सुबर्' से मिलता है जिनके बिना शिष्टों ने बार की हुरया के मकल के रूप में लिया। उसकी 'कवकाइ की बंदी 'हाकू मारद' जिनकी आदि कविताएं भी कवि के क्रांतिकारी भावों का अंशम करती हैं। इनके कवि के बसात्मक बिकाम का भी परिचय मिलता है।

### सपन्यास

सन् १८२३ में किर्गानेक में कवि ने अपना पद्यारम्भ 'बिबगनिई अयेबिम' गुरू किया। इसका पहला अध्याय कवि ने अपने में पुरा किया जहाँ वह किर्गानेक में भजा गया था। इस पूरे समय में पुस्तिक उसके पीछे थी। उसके पत्र पड़े जाने से। उसके एक ऐसे ही पत्र के आधार पर—जिनमें उसने अपनी समाम्भिकता के बारे में लिखा था—उसे गया निर्वासन दिया गया। उसे गार्ह गी दूर निरे देहाग विगाशान-करोणगा में रहने को भेजा गया।

### मिल्लाइलोम्स्कोए का निर्वासन

मिल्लाइलोम्स्कोएसको में पुश्किन का साल रहा। इस समय उसका सारा परिवार यही था किन्तु बाप में उसका अपने पिता से झगड़ा था मया क्योंकि वह अपने पुत्र पर जासूसी करने तथा उसके पत्रों को खुपचाप पढ़ने को तैयार हो गया था। इसके बाद उसका पिता वहाँ से चला गया और वह अपनी नर्म बरीगा रबीबोव्ना के साथ वहाँ बसेछा रह गया। अपने बचपन की इस गर्स को पुश्किन सदा बड़े प्रेम से याद करता रहा और उसकी कई कविताएँ उससे संबंधित हैं। इसी रचनाओं में मिल्लाइलोम्स्कोएसेको में मिलित उसकी कविता 'जाड़े की शाम' है। पुश्किन के कबलानुसार बरीगा रबीबोव्ना उसे शाम को बठि सुन्धर रवी लोच बचाएँ और पीठ सुताया करती थी।

इन बपों में वह अपने दास-बिसानों के निकट गया। वह किसानों की बस्तियों में चूमा करता था उनकी क्वाएँ, मजाक तथा गीत सुना करता था और बाजार तथा मेकों में चूमा करता था। इस प्रकार मिल्लाइलोम्स्कोए में उसे रवी जन जीवन का अत्यन्त निकट से परिचय प्राप्त हुआ और उसके हृदय में रवी जनता के प्रति सच्ची सहानुभूति प्रकट हुई और सच्चा प्रेम जया।

यहाँ रहते हुए उसने लम्बे प्रवीत मुक्तक लिल 'येबमेनिई अम्बेकिन' का तीसरा अध्याय पूरा किया 'बरीसगदूनोव ट्रजडी (सुखान्त नाटक) शुरू की और 'त्रिप्पी कविता पूरी की। त्रिप्पी कविता में कवि का स्वातंत्र्य प्रेम प्रकट हुआ है।

'बरीसगदूनोव (१८२५) में कवि ने इतिहास के बीच जनता के योगदान तथा सामन और जनता के पारस्परिक संबंध के बारे में विचार अभिव्यक्ति किम है। यह कोफ-नुमान्त नाटक है जिसकी घटनाएँ सम्बन्ध समय के बीच चलनी रहती हैं और कई स्थाना पर घटित होती हैं। यह इति स्वच्छन्द संद में लिखी गयी है।

'दिफादिसिंग' की फांसी को लहर दिखने पर कवि ने मगीहा' (१८२६) कविता लिखी। पुश्किन ने इसमें कवि को मगीहा के रूप में

विनिष्ठ किया है या कि अपने का उच्च सामाजिक सेवा के लिए तैयार करने को रीतिरिवाजों में बूमता है। इस कविता में कवि के उच्च कर्तव्य तथा कर्प्यों की व्यक्तता की गयी है और यह बताया गया है कि कवि का काम अपने कर्प्यों द्वारा जनता के हृदय का उद्दीप्त करना है।

### दिकाबिन्दु प्रवृत्ति के बाद

नितम्बर १८२६ में यह मासिक मया और आर के समय उपस्थित हुआ। आर के यह पुछने पर कि यदि १४ दिसम्बर के दिवाह के दिन यह पीनरबुर्ग में होता तो यह क्या करता ? पुदिचन ने साहू के साथ जबाब दिया कि मैं विद्रोहियों को पकित में होना। आर निकोलस ने उसे अपनी आज करने के लिए कहा कि कम में बड़ा मूधार करने की मेरी इच्छा है। अपनी क्या निजाने के लिए आर ने उमम कहा कि अब से मैं तुम्हारा मेमर बनूंगा। शीघ्र ही कवि का मासूम हा मया कि इसका मतस्र हुआ माताम मेमर के माध-आप अब अपनी कृतियाँ पुमिम पीछ बकेनदोर्के को भी देना और माहिम्निक कामकलाप पर उमका नियन्त्रण मानना।

१८२७ में कवि ने माइबीरिया में कविता सिखी और दिकाबिन्दु निजीतामुरास्योब की पत्नी के हाथ भरी जो स्वच्छा से अपने पति के पास रहने के लिए माइबीरिया जा रही थी। इसमें कवि ने कहा कि यह समय गीघ ही आयेगा कि अब हृपकड़ियाँ दूर आवेंगी मंभवार नष्ट हा जामना और स्वापीनता तुम्हारा स्वागत करेगी। पुदिचन के इस उद्वेग पर दिकाबिन्दु अनेशोयम्की ने अपनी कविता में यह विचार प्रकट किया कि दिकाबिन्दु की चित्रगारी ने अन्कामि की भाग भ्रमण उठागी।

१८१८ में कवि ने 'अंधार' कविता सिगी त्रिम मेमर से बचाने के लिए अयोविन का रूप दिया गया। अंधार एक पड़ है या रीतिरिवाज में होता है और त्रिमका मार उहरीला होता है। राजा अपने राज को यह मार जान के लिए भजता है। शरीर राज यह उहरीला गार काता है और नर जाता है। राजा उम बहर से अपन तीर बनाता है और पड़ोसी राष्ट्र को नष्ट करता है। कविता का मुख्य भाग अनुप्य द्वारा अनुप्य के उनीदन का विरोध है।

इस समय उसने पस्ताबा कविता लिखी जिसमें पीठर प्रथम के कार्यकर्ताओं की प्रशंसा की गयी है और उसे राष्ट्र के प्रतिकिरीण दास के रूप में चित्रित किया गया है ।

१८१० में पुब्लिकन तीन महीने बोस्टन में रहा । इस समय वह मास्को की सुन्दरी नताशिया निकोलाएव्ना गमचारोवा की ओर आकृष्ट हुआ और उससे विवाह किया । नाशिनो में उसने 'वेबनेनिया भन्वेपिन' पूरा किया । छोटी-छोटी दुखान्त टूटती लिखी बेस्किन की कहानियाँ लिखी तथा तीस कविताएँ लिखी । इस समय उसने एक की ओर श्री ध्यान दिया और इस भाव में भी उसकी अचञ्चल प्रतिभा का प्रकाश लोगों को मिला ।

बेस्किन की कहानियाँ में प्रांतीय अमिबाठ वर्ग के जीवन के चित्र हैं तथा छोटे छोटे कर्मचारियों और गरीब कारीगरों के जीवन की सत्क विवक्षायी गयी है । इन कहानियों में पहली बार नायक के रूप में 'छोटे आदमियों' के प्रतिनिधि कसी साहित्य में बीच प्रकट होते हैं । कवि ने इसमें बड़ी सहजानुभूति के साथ इन वक्त्र तथा अपमानित व्यक्तियों का चित्र अंकित किया है । इनमें कवि की मानवतावादी साकृष्टि की सत्क मिसली है ।

इन छोटी-छोटी टूटती—कजूस राजा' 'मोल्सार्त और सेनेरी' 'पबरीसा महामा' 'ज्जम के समय बाबत' में कवि ने हृदय पर ईर्ष्या कजूनी आदि अनुभूतियों का विमल किया है । कवि ने इनमें मनोविज्ञान का मभीर परिचय दिया है । इनका विचारारमक अस्तु-तरह कबीर मन-बैज्ञानिक विश्लेषण ककारमक अभिव्यञ्जन तथा मापायत सधिप्लता इन सबने इन छान-छोटे नाटकीय दृश्यों को दिव्य-साहित्य के बीच उच्च स्थान प्रदान किया है ।

उत्तीमकी घटी के सन् तीस के वर्षों में किञ्चन-विग्रोह हुए जिनकी ओर पुब्लिकन का ध्यान गया । तत्कालीन सामाजिक-राजनीतिक प्रका से संबंधित पुब्लिकन की कई कृतियाँ हैं जिनमें किमान-अपीवार संस्था ('बडोप्ली', अष्टाल की सड़की) तथा सामन और जनता के संबंधों

(‘ताब का बुझमबार’) की समस्या का संकेत मिलता है। १८३३ में पुदिबन ने ‘पुगाचोब का इतिहास’ लिखा। पुगाचोब विद्रोह में संबंधित सामग्री एकत्रित करके वं स्थित वह बखान आनेनवर्ग आदि पुगाचोब में संबंधित कई स्थानों में गया तथा मद्रहालय में अध्ययन किया। पुगाचोब विद्रोह में संबंधित ‘कप्तान की सड़की’ पुदिबन के इसी विद्रोह के ऐतिहासिक अध्ययन का ब्यापक परिणाम है।

प्रसिद्ध उपन्यास ‘कप्तान की सड़की’ पुदिबन के मध्य की सर्वोच्च उपसर्पि मानी जाती है। इसमें पुगाचोब विद्रोह के युग की ब्यापक तस्वीर है। प्रांतीय अभिजात परिवार (शिवन) का चित्र है। मागिया इबानाया का चित्रण है और निम्न वं बसाइर कप्तान मिरीनोव का भवन किया गया है। मध्यम महत्त्वपूर्ण इसमें पुगाचोब का चित्रण है या कि क्रिमान-विद्रोह का मता है।

पुदिबन मध्य की सर्वोच्च ब्यापक इतिहास ‘कप्तान की सड़की’ तथा ‘हुनम की बगम’ का कभी मध्य के विभाग पर बना महत्त्वपूर्ण प्रभाव पड़ा।

इसी समय उसने साह-बया वं रूप में मछुपी और मछुआ की बया पारदी और उसका तोडर बान्दा और परिधर्मी क्लार्पी के पीछे किया।

‘ताब का बुझमबार’ पीछर प्रथम में संबंधित पीछरबुर्ग की पद्यात्मक बया है। पीछर प्रथम में संबंधित इसकी अन्य दो इतिहास पीछर प्रथम या मन्नाम और ‘पस्थाबा’ है। ‘ताब का बुझमबार’ रूप की मन्नाम और उसकी प्रगतिशीलता का बाध्य है। इस मन्नाम का प्रतीक राजधानी पीछरबुर्ग है या कि पीछर प्रथम की मन्नाम है और जी बगम के संघर्ष और दमनका के बीच में निरली है। यह इतिहास पुदिबन के उत्तम बाध्या में गिनी जाती है।

### अन्तिम बरों के प्रगीत मुक्तक

पुदिबन के जीवन के अन्तिम बरों के प्रगत मुक्तक का मुख्य विषय राजनीतिक और सामाजिक है। मध्य पीछर के बरों में उसने कई दैर्घ्यपूर्ण रचनाएँ लिखीं। (‘रूप का बदनाम करके बानों को’, ‘पवित्र मन्नाम



के सामने', 'सनापति')। इन वर्षों की कविताओं में उसने अपनी जबानी के दोस्तों को याद किया है और जीवन तथा मृत्यु के बारे में चिन्तन किया गया है।

### पुरिकन की मृत्यु

पुरिकन का अन्तितगत वैवाहिक जीवन कुछ सुखमय न था। पति-पत्नी के मानसिक दृष्टिकोण में साम्यरस्य न था। पत्नी को मामोद-विनोद, नाच-बादि का जीवन पसंद था और कवि के कार्यकलाप में इससे बाधा पड़ती थी। उसकी पत्नी की और धार का ध्यान गया और पुरिकन को दरबार से बाँधने के लिए उसने उसे सबसे छोटा (किचर का) पद दिया जिसे कि कवि ने अपना अपमान समझा। फाँसीसी दान्तेस का उसकी पत्नी से कुछ अनिष्ट परिचय था। उच्च समाज इससे संबंधित कुछ खबरें भी उड़ा रहा था। पुरिकन ने आत्मसमान की रक्षा में दान्तेस का दण्ड युद्ध के लिए आह्वान किया। १८३७ की माठ फरवरी को यह दण्ड-युद्ध हुआ जिसमें पुरिकन बुरी तरह घायल हुआ।

हा विल बाद बस फरवरी (सन् १८३७) को पुरिकन की मृत्यु हो गयी।

जन प्रयसन के डर से पुरिकन ने रात रात उसका सब पीतलबुर्ग से हटा दिया। वह स्थित बोस्की के मठ में बध्नाया गया।

### वेधगेनिई अन्वेगिन

पुरिकन की सबसे महत्त्वपूर्ण दृष्टि उसका पद्यारम्भ उपन्यास 'वेधगेनिई अन्वेगिन' है। यह कृती का बहुधा वचार्यवादी उपन्यास है। इसमें जमीनकी घाटी के सन बीस के कृती जीवन और समाज का अंकन हुआ है।

### अन्वेगिन

अन्वेगिन इस उपन्यास का मुख्य पात्र है और यह जमीनकी घाटी के सन बीस के अमिताभ समाज के प्रगतिशील विचारवृत्तिक पक्ष का प्रतिनिधि है। उसके माध्यम से पुरिकन ने उस व्यक्ति का चित्र प्रस्तुत किया है जिसमें कि बुद्धि और विवेक है किन्तु जो अंध है क्योंकि वह

इसका उपयोग अच्छ जीवन का उपसम्बन्ध के लिए नही कर सकता। इस समाज की आशापना करते हुए भी वह न उम ठीक कर सकता है और न उस छाड़ ही सकता है। इसी से उसकी बुद्धि की प्रसरता उमे और भी पुमनी है। वह इस समाज में सबसे अलग हो जाता है, फलतः वह अकसा पड़ जाता है, उसका जी ऊबता है और वह निरक्षर व्यक्ति बन जाता है। वह ततियाना सिरीना न प्रम-प्रस्ताव का दुबरा यता है। उसका अपने पढ़ानी लस्की में सपना हुआ जाता है और वह अन्त युद्ध में उस मार डालता है। इस अप्रत्यागित हत्या का उम पर बड़ा प्रभाव पड़ता है और वह पीतलचुर्न को छाड़कर रूम की यात्रा पर निकल पड़ता है।

### ततियाना

ततियाना क रूप में पुरिचन में भावुक विनु कलम्यगीमा नारी का चित्र प्रस्तुत किया है। ततियाना अग्नेगिन का चाहती है और वह स्वयं प्रमपत्र मजती है, अग्नेगिन के रूपे उत्तर में उमे जान लगता है फिर भी वह अपने को संभाल लेती है। धीरे-धीरे इस भावक आलिका का पूर्ण विकास होता है और उगना दूसरे में बिबाह हुआ जाता है। अग्नेगिन के लिए उगने हृदय में अब भी स्नह है विनु वह अब पत्नी है अपना बर्तव्य समझती है और अपने पति के प्रति मज्नी रहना चाहती है।

### लेस्की

लेस्की के रूप में बलि में आदर्शवारी स्वप्नदर्शी नक्षत्रक का चित्र अचित्र किया है। वह मनु बीम-नीम के अभिजात वर्ग के स्वप्न देखने वाला नक्षत्रक का प्रतिनिधि है।

इस उपन्यास में यमार्चवानी अंजन के मास-मास प्रमीनारमर अंग भी बड़े भावक है और प्रकृति का चित्रण भी बड़ा सुंदर हुआ है। अमल तथा पनाइ के प्राकृतिक रूप अमल मासिक है।

यह उपन्यास अपनी भाषा तथा रीति के लिए भी महत्वपूर्ण है। इस पढ़ने हुए एमा मासूम होना है कि पाठक बराबर बलि में जान दे रहा है। पुरिचन में गग बातरीन की रीली में लिखा है। बलि इस

सबाबो अपने भाषणों प्रश्नों तथा पत्रों द्वारा अत्यन्त सजीव बनाता हुआ कथा कहता चमत्ता है। इन सबसे इन उपन्यास को वातचीत की अत्यन्त सहज स्वानात्मिक सजीव और चमत्ता हुई शैली प्राप्त हो गयी है।

पुष्किन की सबसे बड़ी सेवा साहित्यिक रूसी (भाषा) की रचना मानी जाती है। तुर्गेनेव के कथनानुसार पुष्किन ने बाहरा काम किया। रूसी भाषा की प्रतिस्थापना और साहित्य की रचना। पुष्किन ने साहित्यिक रूसी भाषा के मूल में जनता की भाषा रखी जिसमें सजीव बोलचाल की भाषा का नी रूप था और प्राचीन रूसी कथा-कथानों और पीतों की भी भाषा थी।

रूसी रसमंच और संगीत के विकास पर भी पुष्किन की प्रतिभा का गभीर प्रभाव पड़ा। उसकी रचनाओं के आधार पर कई आपरा और बीसे बनाये गये। फ़ीनका ने 'रुसलाम' और 'सुइमीला' का आपरा लिखा। बत्सर्गेमोके ने 'रुसास्का' और 'मुनोर्यस्की ने 'बरीवसहुनोव' लिखा। चाइकोव्स्की ने 'वेवमेनिई अर्येगिन' मखोपा तथा 'हुकम की बेमम' का आपरा लिखा। इसी प्रकार ग्लीएर ने 'ताबे का मुइसवार' का बीसेड तैयार किया और असाफ़िबेव ने 'बाइबी सराय का फ़म्बार' और 'कचकाबी कीरी' का बीसे तैयार किया।

अपनी प्रतिभा और काव्य के द्वारा पुष्किन रूस का राष्ट्रीय कवि बन गया। उसके काव्य में रूसी जनता की सारी विधिप्यठाएँ अभिव्यक्ति हो गई है।

## १३ मिखाइल यूरेविच लेरमन्तोव

[ १८१४-१८४१ ]

### बचपन

सरमन्तोव का जन्म १४-१५ अक्टूबर १८१४ में हुआ। मातृपक्ष में वह एक प्राचीन अभिजात वर्ग में आता है। सरमन्तोव तीन ही बचप का था जब कि उसकी माँ का बेहान्त हो गया। उसका पालन नानी के घर में हुआ। माम-दामाद में अष्ट महीने होने के कारण उसे बराबर पितृ विभाग गहना पड़ा जिसका उस बड़ा दुःख रहा।

अभिजात वर्ग की परबलीय प्रथा के अनुसार सरमन्तोव की पिता की किन्हीं मर्तक तथा अभिभावक के मर्तक ही हुई। वह बचपन में फार्मीनी भागा स्वच्छन्दता में बचपन लगा। सरमन्तोव ने इस बात पर कुछ प्रकट किया कि उसका पिता ब विदेशी थे क्योंकि इस कारण वह मर्तक माहिप में परिचित न हो सका।

### विश्वविद्यालय की पाठशाळा

१८०० में सरमन्तोव अपनी नानी के साथ मास्का जा गया और दूसरे वर्ष वह मारका विश्वविद्यालय की पाठशाळा (पेगिता) में दाखिल हुआ। सरमन्तोव का निजी तौर से पढ़ाने के लिए युनिवर्सिटी के कतिपय प्राध्यापक का प्रबन्ध उगायी नानी न कर दिया।

विश्वविद्यालय की पाठशाळा के अपने इस आशामन्तोव में उसने कई कविताएँ और तन्वीर तुल की गिरायत 'स्वयं बचपन किन्हीं विद्वान् उगाए काव्य का शानता-दिगोपी इच्छिमान तथा उसमें गतानुभूति गच्छ है। उस समय उसमें सबसे अधिक कविताएँ किन्हीं तथा कतिपय काव्य 'बचपानी' की 'दंग' का माह्यात भी किन्ने।

सन् १८१०-११ के बीच उसने राजनीति बन्धुओं पर कविताएँ लिगी। सन् १८१० की कविता में उसने वाकिन् विश्राहिया के प्रति गतानुभूति प्रदर्शित की। १८१० में ही काव्य की जुगार्द काव्य पर भी रचना की।

कस की सन् १८३० की किसान-हलचल से संबंधित उसकी कविता 'मविष्यवाणी' है। इसमें कवि ने एने आनेवाले समय की मविष्यवाणी की है जब कि पार का ठाक मिर पड़गा और मोठ ठवा लून ही बहुतों की खूराक होगी।

### मास्को विश्वविद्यालय

सन् १८३० में सेरमन्तोव जब मास्को विश्वविद्यालय में वास्तिक हुआ उस समय इस विश्वविद्यालय में इतिहास के स्तानकेविच येर्सेन गनचारोव आदि भी पढ़ते थे। सेरमन्तोव अपने विद्यार्थी-जीवन के इन वर्षों को बड़ी मादुकता के साथ 'सादका' कविता में याद करता है।

विश्वविद्यालय के इस जीवन-काल में सेरमन्तोव ने छौ से अधिक कविताएँ, कतिपय टूँजेड़ी और काव्य लिखे। इन्हीं वर्षों में 'द्वैत्य' काव्य की प्रथम याचना सामने आई और 'निर्धन' 'द्वन्द्व' 'पाल' जैसी कविताएँ रची गयीं। 'पाल' कविता में कवि की विद्रोही प्रकृति का परिचय मिलता है। इसमें उसका रोमांटिक रूप भी सामने आता है। जिस तरह-कि नाव का पाक छोकर नाविक तट की छाति पुर्या और मुक्त हो छोड़कर तूफान की बार चल देता है, मानो तूफानों में ही छाति हो उसी तरह कवि भी क्रियाशीलता और सचर्चा चाहता है। इस समय वह अंगरेज कवि बायुरन की ओर भी आकृष्ट हुआ और उससे प्रभावित हुआ। विश्वविद्यालय के कतिपय प्रोफ़ेसरों के विरुद्ध भाषण करने के कारण अन्य विद्यार्थियों के साथ उसे भी विश्वविद्यालय से निकाल दिया गया। पीतरबुर्ग विश्वविद्यालय में प्रवेश पाने में वह असफल रहा। इसके बाद वह सैनिक स्कूल में भर्ती हो गया। इस समय उसने हामी मन्नेट काव्य लिखा 'द्वैत्य' काव्य का नया रूप प्रस्तुत किया और 'बाबिम' कथा का आरम्भ किया जो अपूर्ण रही।

### सैनिक स्कूल

'बाबिम' कथा का नायक निर्धन किन्तु अविनाश बंध का व्यक्ति है जिसे यमीर जमींदारों ने मार कर दिया है। वह अपने अपमानकर्ता की ही पीकरी करता है। बाद में वह अपने पिता की मृत्यु का बदला लेने

के लिए मिर्जापुर-विद्रोह के नेता बं स्य में प्रकट हुआ है। केरमन्तोव की यह कथा 'दुबोष्की' में लिखी है और विद्रोह की यादना तथा जमींदारों की निरंकुशता के प्रति युवा में परिपूर्ण है।

सैनिक स्कूल की शिक्षा समाप्त करने के बाद वह छोटी मकदम बन गया और 'कुमार' बन्ध में समाकरोए सेना' भेजा गया। सन् १८३५-३६ में उसने वायव्य बयारिम जमी' नाटक 'छवयेय' और कई कविताएँ लिखीं। इसी समय उसने राजकुमारी मिर्जाबकिया लिया। उसमें म केवल उच्च अभिजात वर्ग का जीवन ही चित्रित किया गया है परन्तु राजधानी के छान-छाट कर्मचारियों का भी जीवन हुआ है।

सन् १८३७ में बकि की महत्त्वपूर्ण रचना 'बरदिना छरी। रूसी देस-भक्ति की यादना में आन-प्राप्त हुए कविता में 'बरदिना के बिकपात युद्ध का सर्वम हुआ है। इसमें रूसी सैनिकों के साहस और दुड़ता का पान है।

पुरिचम की (इन्द्र युद्ध में) मृत्यु पर केरमन्तोव को दास्य छाव और कोष हुआ क्योंकि उसने निरंकुश जाग्राही का जगती हथियार माना। पुरिचम की मृत्यु पर उसने 'बकि की मृत्यु' कविता लिखी जिसमें सारे राष्ट्र के गारु और आव की संजना हुई।

### पहला निर्वासन

'बकि की मृत्यु' कविता बड़ी ही सान प्रिय हुई और जार उनका ही अर्थगुष्ट हुआ। फलतः केरमन्तोव गिरफ्तार किया गया और कश्मीर की एक टकड़ी में भेजा दिया गया। पर कश्मीर में उसका पहला निर्वासन हुआ। कश्मीर के निवास रात में केरमन्तोव ने स्थानीय शासक-माहित्य को भार भारी विचार बकि दिगारी। उसने अखबार-बाल की लाक-नया आगिद विरोध तथा सार स्थानीय कथाओं को चित्रित किया जिसका कि उनके भरने काय देय तथा 'दिलीरी' में उतराया दिया। यहाँ उसने 'गौतमर कथा-निर्वास' का गीत पूरा किया जिस कि उसने पीनगुर्ग में पार किया था।

## पीठरसुर्ग में वापसी

सन् १८३८ के शुरू में सेरमन्टोव को पीठरसुर्ग वापस लौटने का आग्रह मिली। इस समय उसकी प्रतिभा का धीरे धीरे विकास हुआ। इस समय उसकी कविता 'विचार' छपी जिसमें उसने अपनी समकाली पीढ़ी की भीरुता तथा आर्ग की सुधामद पर सोम प्रकट किया।

अपनी कविता 'कवि' में सेरमन्टोव समकालीन कवि की लज से तुलना करता है। खंजर कमी ठी पहाड़ के बुड़सबारा का प्रतिष्ठापुस्तक था किन्तु अब वह सम्मानहीन 'सुनहला सिखीना' मात्र रह गया है। इसी प्रकार आज का कवि भी अपना आघात गँवा चुका है।

धीरे-धीरे इस युग की राजनीतिक घुटन का बातावरण कवि का बन रहा था। न अपना को इस बातावरण के अनुकूल पाकर और न बातावरण को अपने अनुकूल बना सकने के कारण उसमें गहरी उदासी तथा उमर मरती जा रही थी और अकेलापन उसे बसाता जा रहा था। रंग-विरंग भीड़ में बिरा 'ऊब उदासी मही कि जिससे हाथ मिराऊँ' 'बंदी राजा (बंदकार के बीच मीन सिड़की पर बैठा) 'बादल' 'पड़ोसी' आदि कविताओं में उदासी काव तथा विरोध सभी कुछ व्यक्त हुआ है।

इसी समय फ़ीनीसी राजदूत के लड़के बरान्त और सेरमन्टोव के बीच झगड़ा हुआ। बरान्त निदाना चूक गया और सेरमन्टोव न हवा में गोर्ल छोड़ दी। इस मुद्दे में माय लेने के कारण सेरमन्टोव गार्ड कम में बन्द कर दिया गया।

## दूसरा निवासन

सन् १८४० में सेरमन्टोव कबराज भेजा गया। इस नये निर्वासन में जाते समय उसका उपन्यास 'अपने समय का नेता' छपा। कबराज जात हुए वह मास्का रुका। ९ मई को वह गायक के नाम-रिन प उपस्थित था जहाँ उसने अपनी नयी कविता 'मिलीरी मुतायी'।

'मिलीरी' काव्य सेरमन्टोव की श्रेष्ठ रचनाओं में है। इसका नायक पहाड़ी युवक 'मिलीरी' है जो छोटी ही अवस्था से बंदी है और अपने देश से दूर पराधीनता में पड़ा है। वह मठ से निकल कर अपने देश

भाग जाना चाहता है जहाँ कि 'बट्टाने बाइला' में छिरी रहती है और वहाँ लाम बास (बीम) की तरह स्वच्छन्द है। इस काव्य में स्वानन्द प्रेम और श्रेय-प्रेम संघर्ष की उत्कट इच्छा किशोरात्म जीवन की मानस-प्रकृति-प्रेम आदि अनेक भावा की व्यञ्जना हुई है।

वीतरबुर्ग में जाने के समय उसकी एक और भावभूमि रचना 'जग्म भूमि' प्रकाशित हुई जो कि कवि के गहर दण्ड प्रेम में मान-प्राप्त है। इसमें कवि का स्त्री-अनला तथा स्त्री-प्रकृति में गम्भीर प्रेम प्राट हुआ है।

सन् १८३८ में दैत्य काव्य की इम्प्लिमेण्ड प्रतियाँ वीतरबुर्ग में फँक गयीं और पाठक आनन्द में मर गये। पाठक बिचार रूप में दैत्य के गर्दीनि नेत्रस्त्री विशाली रूप में बहुत प्रभावित हुए जो स्वयं आकाश और ईश्वर में मगध करता है। दैत्य के आत्म-नपता में अगोपित अतिकारा की निशान्यता होने का प्रयत्न और किसी के सामने न झुकने वाले माहमा मानवीय व्यक्तित्व का यज्ञागत है। सेरमन्ताव दैत्य को जान और स्वाधीनता का राडा कहता है। दैत्य कबलाड की चाटिया के ऊपर उड़ते हुए लमारा को देखता है। उसका अमापारण मीठपे दैत्य में प्रेम का जग्म देता है और वह आकाश में मुल्ह करने की काशिता करता है। इस काव्य में कबलाड के बड़ मुग्ध चित्र है।

### अंतिम वर्षों के प्रगीत मुक्तक

वीतरबुर्ग में कबलाड जाने हुए 'बिहा रूप' कविता जिसकी त्रिमम उसमें गुलामों के देण माकिका के देण' रूप में बिहा की है। मगन अरदेस्की ने सेरमन्तोब की जाने गयय स्मृतिरूप में बानी की त्रिमम जगम लयी कविताएँ लिखने की प्रार्थना की। सेरमन्ताव की मृत्यु के बाद पर बानी अरदेस्की के पास बनी गयी। इसमें कवि की अन्तिम कविताएँ लिगी हुई हैं त्रिमम 'तर्क', 'म्बलन' 'पड़ की पत्ती' में गय पर लकाकी जाडा, 'बट्टान' जैसी सर्वेच्छ रचनाएँ हैं। इसमें कवि का अकम्पायन और उदासी का भाव बड़ा प्रबल है।

उसकी अन्तिम कविता 'मर्गाहा' है त्रिमम 'कवि मर्गाहा' का अमवादीन लयात्र में दुःखद अन्त दिनाया गया है। समात्र उसमें प्रेम



और सत्य की शिक्षा का आपर नहीं करता बरन् कवि के शब्दों में प्रिय सब मूढ पर पत्थर बरसाते हैं।

एक घाम केरमन्टोव का सैनिक स्कूच के अपने सहपाठी मर्तीन से झगड़ा हो गया। मर्तीनोव ने उसका इन्ट्र-मुड में बाह्यान किया। इन्ट्र-मुड मरक पहाड़ के नीचे २७ जुलाई (१८४१) की शाम हुआ। मर्तीनोव की शोकी से केरमन्टोव की मृत्यु हो गयी। हमों कहना है कि यह इन्ट्र मुड भी आरघाही तथा अभिजात वर्ग के केरमन्टोव के अग्य सन्तुषों की साखिता का ही परिणाम था जो कि मर्तीनोव केरमन्टोव क विद्वद बराबर मड़का रहे थे।

### ‘हमारे युग का नेता’

‘हमारे युग का नेता’ केरमन्टोव की सर्वोच्च कृति है। इस उपन्यास का रूसी गद्य क विकास पर बड़ा प्रभाव पड़ा।

इसकी भूमिका में इस उपन्यास के नेता पेशोरिन के बारे में केरमन्टोव ने लिखा कि हमारी पीढ़ी को सारी बुराइयों का बहु संकलित चित्र है। पेशोरिन की ऊब अपने चारों ओर के बातावरण से समझीये की अनिष्ट सत्कालीन परिस्थिति के प्रति उसके विरोधाभिध्वंजन का ही एक चित्र है। इस उपन्यास क द्वारा केरमन्टोव ने यह प्रदर्शित किया है कि मर्तीनोव के प्रतिक्रियावादी शर्षों न ऐसे लोगों को भी निश्चिन्त बना दिए जायें जिनमें बुद्धि और प्रतिभा थी। व्यर्थता तथा विफलता की भावना पेशोरिन जैसे बुद्धिवादी व्यक्ति को बर्बाद बनाये रहती है।

### प्रबन्धनशक्तता

मुख्य पात्र के अन्तर्ग का दिग्दर्शन कराने के लिए इतका अधिक पेशोरिन की शायरी के रूप में लिखा गया है। फिर भी पेशोरिन के बाकी का परिचय देने के लिए केरमन्टोव ने शायरी में दो अध्याय भूमिका में जोड़े हैं जिनमें यह पात्रक के बारे में अपने विचार व्यक्त करता है। उसमें माघ मैक्सिम मन्तोविच बला आदि के सङ्घों की व्याख्या करता है। यद्यपि इस उपन्यास में पाँच अलग-अलग कथाएँ हैं फिर भी

मन उपस्थास के मूर्च्छन भाव मे घनिष्ठ रूप मे मन्त्रपिन है।

### वेधोस्ति

इसम पञ्चानिन का बिभ्र अनेक-रूपारमभ है। उमके बिचित्र म अत्यन्त मे नायक का हर पल बलात्मरता तथा मर्दाई के गाय प्रस्तुत किया है। उपस्थास में प्रस्तुत उमकी डाबरी उमकी अपनी मारी दुर्बलता तथा बुद्धियों का स्वीकरण है। बुद्धि और प्रतिभा के हुंलो हुए उमे इसके सम्यक् उपशाम का अक्षर नहीं मिलता यही उमकी बर्षनी का मूल कारण है। अपनी प्रतिभा के सम्यक् प्रयोग के अक्षर के अभाव म बहु निरर्थक कामो म अपनी पक्षि का अपभ्रम करता है और इपर-उपर मटकता है। बहु असली जीवन स बनिन रह जाता है और उस शांति नहीं मिलती। बहु गमाव की आशाबना करता है उमके योगसेपन तथा तुच्छता का समझता है। निमी की महानुभूति न प्राप्त कर सकने के कारण बहु अनेकापन का अनुभव करता है और मध्यविहीन जीवन के कारण उमका अस्तित्व ही निर्गमन हो जाता है। इनी स बहु अगांत भटकता रहता है। बहु दूर ईगन की यात्रा पर जा रहा है परंतु क्या वेष्ट उमे नहीं मालूम। अपनी अनुभूति के कारण बहु अलग समाज के अम लोगों मे नहीं बैठा ऊपर उठा गया है।

स्त्री पामों म यका का बिभ्र अत्यन्त भावुक है। वह उन लोगों में से है जिनके लिए प्रेम ही सब कुछ और उनका एक मात्र जीवन है। वह केवल एक पार हा प्रेम कर सकती है किन्तु फिर वह प्रेम जीवन भर चलता है।

उपस्थास म उम वर्षीगरा के परिवारों तथा राजधानी के प्रतिनिधियों का धर्म्य पूरा बिभ्र प्रस्तुत किया गया है जो पानी द्वारा बने इलाक के लिए बचनाइ नहीं आते परन्तु अपना कारणों ठीक करने का या रिक्तबलाव के लिए आते हैं। इसी प्रकारमेना के अक्षर मे वे श्री ऊरने ही गिरायन किया करते हैं और नाग माला करते हैं। उपस्थास एक बार म दर्शपूर्ण वस्त्रों में बहता है कि 'गिराव के माने में आना पूरा मरा गिरायन हाफरन से बह ठान म गड़ जाने है।

‘बच्चा’ की कथा में रूसी साहित्य में पहली बार इन पहलुओं के रहने वालों का चित्र बिना किसी अतिशयोक्ति के प्रस्तुत किया गया है और उनके रीति-रिवाज तथा उनके स्वच्छन्द जमनी जीवन का अंकन हुआ है। इसके साथ ही उपन्यास में कबकाव की प्रकृति के बड़े सुन्दर चित्र मिलते हैं। ये प्राकृतिक दृश्य उपन्यास की प्रतीतात्मकता तथा भावुकता को और भी बढ़ाते हैं। प्रकृति का यथार्थवादी बाह्य अंकन अन्तर की प्रतीतात्मकता के साथ सेरमन्तोव द्वारा बड़ी ही कलात्मकता से उद्योजित कर दिया गया है।

उसकी भाषा अत्यधिक स्पष्ट और साछ है और संवाच चुस्त तथा गठ हुए हैं। उसकी कलात्मकता बोधनात्मक की भाषा के अत्यन्त निकट है। सेरमन्तोव अपने गद्य में अत्यधिक अभिव्यञ्जना जाने का प्रयत्न करता है और ध्वरा का बड़ा ही मूलित-मुक्त प्रयोग करता है। फिर पुरुषिकण की तुलना में सेरमन्तोव का गद्य अधिक भारप्रबल है। उसकी तुलनाएँ तथा उसके विशेषण बड़े ही व्यञ्जनापूर्ण होते हैं। फलतः इस उपन्यास की भाषा अन्य लेखकों का आदर्श बन गयी है।

सेरमन्तोव के गद्य में तुर्मनेव तीम्स्तोय तथा बालक की सर्जना को प्रभावित किया। उसके काव्य की नागरिकता तथा बेसमक्ति की भावना से नेक्रासोव को प्रेरणा मिली।

सेरमन्तोव की रचनाओं के आधार पर प्रसिद्ध समीक्षकारों में कई रोमांस अपने-आपे की रचना की।

रूसी साहित्य में सेरमन्तोव का स्थान पुरुषिकण के समकक्ष है।

## १४ निकोलाई वसीलिविच गोगल

[ १८०९-१८५२ ]

निकोलाई वसीलिविच गोगल का जन्म अप्रैल १८०९ में युक्रेन के एक खेतीदार बंस में हुआ था। उसका पिता विभिन्न व्यक्ति या और उसने कबिताएँ तथा कम्पोजी लिखी थी तथा बड़े समय पर अभिनय किया करता था। इसने गोगल के हृदय में बचपन में ही रंगमंच के प्रति रुचि जग दी। त्रिमनेडियम में माटका का अभिनय भी हुआ करता था। इनमें गोगल बड़ा अच्छा अभिनय करता था।

त्रिमनेडियम में गोगल की गिरा के बर्ष (१८२१-१८२८) तक में दिनादिना की पुस्तक ममाप्रा के संपन्न तथा अभिजात बर्ष के बीच प्रगतिशील स्वच्छन्दतावादी विचारों के प्रचार के बर्ष थे।

त्रिमनेडियम में प्रगतिशील विचारों का भी एक दल था त्रिमना केना बनाऊया था। १८२० में जार सरकार ने इन पर 'स्वच्छन्द विचारों' का अभियोग लगाया। इस निष्पत्ति में विद्यार्थी भी युद्ध में गये। गोगल ने बनाऊया के प्रति महानुभूति प्रकट की और उसके पक्ष में प्रमाण दिए। बनाऊया के लेखक पुकिन, रीन्डर तथा अन्य प्रगतिवादीयों की रचनाओं में गोगल के प्रगतिशील दृष्टिकोण के निर्माण में बड़ा योग दिया। १८२८ में त्रिमनेडियम की गिरा ममाप्रा के गोगल की तरफ से बना मया।

### पीतरयुग का आरम्भिक जीवन

पीतरयुग आत हुए योग्य अपना सामाजिक वाक्य 'गाम बुरान् चार्नेन' द्वारा शुरू से गया, यह उस पर पुकिन की सम्मति चाहता था किन्तु गमा में ही मया। यह इतिहासी ता इसकी बड़ी आलोचना हुई। बुरान योग्य ने उसकी गारी प्रिया बना ली।

पीतरयुग में शुरू में उसे कोई सम्मानता में मिली। वह अल्पसंख्यक विदेश में अभिनेता बनना चाहता था किन्तु सम्मानता नहीं। बड़ा

के स्रोत में धीरे-धीरे उसकी प्रतिमा का ह्रास हो जाता है। 'पागल की टिप्पणियाँ' में उस समाज के बीच सामान्य व्यक्ति के जीवन की कठक स्थिति दिखायी गयी है जहाँ से-जल मनी तथा उच्च कर्मचारियों का ही आश्रय होता है और सामान्य व्यक्ति मात्र धुआ का पात्र है। जहानी का मायका इस स्थिति को न सह सका और पागल हुआ गया। 'भोवरकाट' कहानी में एक गरीब कर्मचारी की कथा है जो किसी तरह पैसे जोड़-जाड़ कर नया भोवरकाट सिलवाता है और जो मीठ ही खोरी चला जाता है। पुत्रमार तथा ठडक से इस कर्मचारी की मृत्यु हो जाती है। यह कहानी बड़ी प्रसिद्ध हुई। गोगल कर्मचारी की कठक बीनता का चित्र खींचता हुआ उच्च शासक वर्ग की हृदयहीनता पर व्यंग्य करता है। 'भोवरकाट' कहानी द्वारा गोगल ने साहित्य में विस्तृत तथा निम्न स्थिति के लोगों की रक्षा और सामाजिक अत्याय के विरोध की परंपरा को जीव डाली।

इन कहानियाँ से गोगल की प्रीति कलात्मकता का पूर्ण परिचय मिल जाता है। उसकी सबसे बड़ी विशेषता उसका सूक्ष्म व्यंग्य है जो पाठक को हँसाता है और उषाम बनाता है तथा साथ ही यह साधने को भी बाध्य करता है कि मैं पात्र सर्वथा हास्यास्पद नहीं है किन्तु परिस्थिति में इनका यों दयनीय बना दिया है। कलिस्त्री में इसी से गोगल के व्यंग्य को जानुर्मा के बीच हँगी' कहा है।

सन् १८३५-३६ में गोगल और पुश्कल की वनिष्ठता बड़ी। पुश्कल द्वारा प्रकाशित पत्र 'ममजामीन' में गोगल सहयोग देन गया। इसी वर्ष (१८३५) गोगल ने अपनी कमेडी 'इन्स्पेक्टर' लिखी और 'मृत आत्माएँ' का संकलन शुरू किया। इन दोनों कृतियों का वस्तु विषय गोगल का पुश्कल से प्राप्त हुआ।

### इन्स्पेक्टर

'इन्स्पेक्टर' के बारे में गोगल ने कहा कि उसमें मैंने कथ की सारी बुराइयों को जिनमें कि मैं अबमत हूँ एक जगह एक-विध करने का निश्चय किया है तथा उन मारे अत्याय का जो कि उन जगहों और स्थितियों में किय जाते हैं जहाँ मनुष्य से बचने अधिक

न्याय की माँग की जाती है और इन सब पर एक साथ हमने का निरूपण किया है।

इसमें निकोलाय के यश का जीवन तथा उपरीमची शर्मा के सन् तीस और चाकीस के बच्चों का ठेठ गहर चित्रित किया गया है। उस गहर का अध्यक्ष गामकीय कमपागिया का सावधान रहने की सूचना देता है क्योंकि इंस्पेक्टर जीव बरन के किए आ रहा है। कमठी का सारा कामकाय इसी के आगे मोर करित है।

इस कमठी में रिश्ततगारी सबसे गामकीय अस्थाचार कर्म चागिया की दुराश्रितिम इन सब पर मार्मिक बरग्य है। गोगल में घाम-प्रया और दुराश्रितिम की व्यवस्था का भग्न चित्र प्रस्तुत किया है, जिसमें कमचारी न्यायापीग सभी रिश्ततगार बईमान और पनी व्यक्ति का पश सहर मामाम्य व्यक्ति का गमान बाल है। सबसे बड़ी बात यह है कि यह साग चित्र गोगल में मूठम एव गर्भीर हास्य तथा बरग्य से भरित है। तीरग एव अनिपायानिपूर्व चित्रण पात्रा का हास्यास्पद बनाता हुआ भी तत्कालीन जीवन के सत्य का अत्यन्त क्लारसक रंग में प्रस्तुत करता है।

इस कमठी के अभिनय में प्रगतिशील का प्रसन्न हुए पर प्रतिक्रियाकारी बड़ दृष्ट हुए और इस कर्मचागिया पर आक्षेप कहा और इस नाटक का पालन करने की माँग करने में। इन सब में गोगल बड़ा परेमान हुआ। इस समय उसका स्वास्थ्य भी गराब हुआ गया। फलतः गोगल में थोड़े समय के लिए बिगघाया या निरूपण किया जिसमें कि बहुत पादा आराम कर गत और 'मृत आत्मार' के लेखन कार्य में लग गया।

### विदेश-यात्रा

फरव १८३६ में गोगल विदेश चला गया। कुछ समय तक पेरिस में उनके क बाल बरत राम में बस गया। 'मृत आत्मार' के प्रकाशन के संबंध में बड़ कभी-कभी काम जाता था।

सन् १८४१ में गोगल के 'मृत आत्मार' का पत्रका नाम पूरा किया और प्रकाशन के लिए उस काम भजा। मारका के सहर ने इससे प्रकाशन

साथ वह पात्र उस परिस्थिति का भी विमर्शन करता है जिसने कि उनको ऐसा बना दिया है। इसमें जमींदारों का विकास रहित आत्मतुष्ट एवं पशुतापूर्ण जीवन का अभिव्यंजन हुआ है। गोपक की व्यंग्यपूर्ण हंसी उनके तथाकथित सांस्कृतिक बाने को उबार देती है और उनका पाश्चिक रूप हमारे सामने प्रस्तुत कर देती है।

### मानिसोव

इस उपन्यास के पात्रों में मानिसोव का कोई व्यक्तित्व नहीं है। वास प्रजा के बातावरण ने उसकी भावनाओं को कठित कर दिया है और उसे खोसला बना दिया है। यथार्थ जीवन से असंबद्ध मोबनाएँ बनाता आत्मप्रदर्शन और खाली बातें बोलना उसकी विशेषता है।

### करोवोचका

इसके विपरीत करोवोचका (डिबिया) पूरे धंधालन में अत्यन्त पटु है। उसने पास बपए रखने के बहुत से बटुए हैं। वह प्रत्येक पाई का मुख्य समसती है और उसे बचाकर रखती है। इस तरह पैसा बचाने की आदत उसे सूज बना देती है। उसकी सारी भावनाएँ सूज जाती हैं और वह स्वयं मूठ आरमा' हो जाती है। वह प्रत्येक नयी चीज को संशय की दृष्टि से देखती है। वह अकेली नहीं है बरन् वह उस समय के प्रांतीय अधिवात वर्ग के अज्ञानपूर्ण कृद्विवादी जमींदारों की प्रतिनिधि है।

### नग्नेव

नग्नेव उन लोगों का प्रतिनिधि है जिनकी प्रपंच और जपड़ में बड़ी बचि है जो मर्ने हाँकते हैं और धूसी बघारते हैं और जो बिना मतलब के झूठ बोलना करते हैं। वह धोर-मुक मचाने वाला आदमी है।

### सवाकेविच

सवाकेविच (कले का पिस्का) 'कुलक' और घोनक है। उसके यहाँ जा किसान जीवित थे वह इसलिए कि वह उसकी आयबाद थे और उनको एकदम भार डालना कायदेमंद न था। जब वह चकला था तो अवश्य किसी न किसी का पैर कुचल जाता था। उसका बोलना मानो नू कना

का । वह दास प्रजा का बट्टर समर्कक है और प्रत्येक प्रकार की गरीबीता तथा मुषार का घोर शत्रु ।

### प्यूरिकन

प्यूरिकन अभिजात वर्ग के नैमित्त पतन की चरम सीमा का प्रतीक है । यह बहुर कंजूम है और सब बह मनुष्य नहीं रह गया । उसकी मारी मावनाएं मूय मयी हैं । प्यूरिकन का एसा चित्र प्रस्तुत करते हुए पागल जीवन की उन परिस्थितियों का भी निदर्शन करता है जिहान कि उसका ऐसा बना दिया । प्यूरिकन कला में सामन न उभोदारों का काम-किमाना पर घोर अत्याचार प्रदर्शन किया है । प्यूरिकन अपने काम-किमानों को मूया मारता है । प्यूरिकन के माध्यम न योगस ने अभिजात वर्ग के नैमित्त अय पतन का बड़ा जोरदार चित्र प्रस्तुत किया है ।

### चिचिकोव

चिचिकोव भी अभिजात वर्ग का है किन्तु वह प्रखर बुद्धिवाला है और नयी पूंजीवादी परिस्थिति का समप्रता है जिसने कि प्राचीन वर्माचार वर्ग मट्ट हा रहा है । उसमें प्रत्येक व्यक्ति तथा परिस्थिति म काम उठाने की क्षमता है । स्कूल की गिना पूरी कर उसने जीवरी की । मूय मे ता उम बड़ी मरुणा मिला लकिन बाद म उसको चामबारी मून पर और बह मोरग मे निराल दिना गया और बह मारी घन होलठ र्थका बैठा । उसने फिर काम मूय लिया । खुंगी बस्त्रम मे बह ठिगाकर माल ल जाने वाला मे दिव गया और उम बड़ा प्रायण हान मगा । किन्तु अतन एव मायी बयचारा म लागड़ा ही जाने व कारण साग भडा कू गया और सब कुछ मट्ट हा गया । इसने बाद उसका बुद्धि न उस फिर अमीर बनन का गाना गिनाया और उसने मून व्यक्तिना को गरीब कर गाम अमीर बनन की पात्रना बनाई । उमे इसमें मरुणा मिवी किन्तु मरमा भ मूय जाने मे उम जान बचारा उम महर न भागता पटना है । इसमें माय ही उन्नाम ममाय हाता है ।

### भारा

पुनित की परंपरा का अनुसरन करन हुए मायन भी माहिगिक



रूसी का बोलचाल की भाषा के अत्यधिक निकट आया। अपनी भाषा का अत्यधिक सजीव बनाने के लिए और उसमें विभिन्न वर्गों की बोली का पुट देने के लिए उसमें कर्मचारियों, कारीगरों तथा किसानों आदि की भाषा बड़े ध्यान से सुनी और उनके साथ मुहाबिरें, विविध सम्भावनी तथा कहावतों आदि को इकट्ठा किया। उसकी यह सजीव बोलचाल की सटीक भाषा मूलम हास्य और व्यंग्य से संयुक्त है। बोलचाल तथा दैनिक जीवन की जन-भाषा का साहित्यिक भाषा में झलने का मोमल का यह प्रयत्न बढ़ा सकल रहा और इसका परबर्ती लेखकों पर बड़ा प्रभाव पड़ा। नेक्रासोव सांस्थिकोवश्चेविन तुर्गेनेव अन्त्रोवस्की जैसे बाद के लेखकों ने मोमल की इसी भाषा-परंपरा को अपनाया और जाये बढ़ाया।

भाषला तथा प्रबन्धात्मकता दोनों की दृष्टि से 'मृत आत्माएँ, बड़ी उच्च स्तर की कलात्मक कृति है। रूसानीय युग के रूसी जीवन तथा सामाजिक विचारा की इसमें बड़ी यथार्थ और गहरी अभिव्यक्ति हुई है। मोमल को इसी कारण यथार्थ जीवन का कवि कहा गया है।

मोमल की भाषा में कठोर मर्मस्पर्शी व्यंग्य है। सत्य तथा उच्च भावनावादी आदर्शों की शिक्षा में ही मोमल के यथार्थवाद की शक्ति है और विश्व साहित्य में उसका महत्व है।

## १५ वेत्सुकी

[ १८११-१८४८ ]

रुमी समाजोपना के लक्ष्य में वेत्सुकी का महत्त्वपूर्ण स्थान है। उसने  
नया तथा माहित्य की प्रगतिशील सामाजिक तथा जनारमक व्याख्या प्रस्तुत  
की जिसमें रूमी माहित्य में सपर्यर्षवाण प्रवृत्ति का और भी बढ़ावा।  
समाजोपना के लक्ष्य में वेत्सुकी का तरकालीन माहित्यिक गति-विधि में  
महत्त्वपूर्ण योगदान है।

मास्को विश्वविद्यालय में पढ़ने हुए उसने सेंसर के पास एक 'नाटकीय'  
कहानी (१८१३) भेजा जिसमें सत्ता-शक्ति का अत्याचार की विषय और  
दाम प्रथा की बुराई का चित्रण किया गया। यह विश्वविद्यालय में  
निरास किया गया। १८३४ में उसका प्रथम महत्त्वपूर्ण लक्ष्य माहित्यिक  
भारताएँ उसी जिसमें सत्ता का स्थान उसकी धार साहस्य किया।

उसकी आविर्भाव स्पष्टि ठाकुर म थी। इसलिये उस गर्भार सत्य और  
विमल के माय-माय जीवन-साधन के लिए पुस्तक सत्य तथा 'टपुगन'  
की कल्पना पढ़ना या और बल में यह 'निम्न' मूल्य समाचार में काम  
करने लगा।

उसके सामाजिक विमल न उस भावनावाद में भौतिकवाद तथा  
सपर्यर्षवाण की धार उन्मुख किया और उसने सुदृढता का कल्पना क  
विषय के विद्वान् का अत्याचार का कल्पना को जनमुखा तथा समाजमुखा  
का साधन माना। उसका कल्पना का प्रगतिशील सामाजिक कल्पना उसकी  
गौरवपूर्ण आविर्भाव भारत तथा उसका जन उदारता गति में विस्थापन का  
और यह कल्पना का स्वतन्त्रता तथा उसके सामाजिक उद्देश्यों के लिए  
आह्वान करता था। उसका कल्पना है कि 'कल्पना सामाजिकता की सत्यता  
में अभिव्यक्ति है। माहित्य होगा समाज की सत्यता दिखाना है। उसे  
सामाजिक सत्ता के अविचार में समर्थ करता कल्पना को ऊँचा उठाना

नहीं प्रत्युत नीच गिराना है। क्योंकि वह हमेशा हमसे अपनी जीवन शक्ति अर्थात् विचार से वंचित हो आयी थी और स्वैच्छता तथा विश्वास की पीढ़ हो आयी।

बेल्सुकी रूसी साहित्य की यथार्थवाद की मार बरती हुई प्रवृत्ति के महत्व को ठीक-ठीक समझ सका और उसका प्रस्तावना किया। उस प्रवृत्तिवादी 'गोयस स्कूल' की रचनाओं में प्रगतिवादी सामाजिक आदर्श तथा रूसी जीवन के यथार्थ अंकन की शक्ति मिलती है। फसत सन् १८४० में आस पाम नगर तथा ग्राम जीवन से संबंधित यथार्थवादी रसा-विज्ञान को उसने उत्कामीन रूसी जीवन की वास्तविकताओं तथा आवश्यकताओं को अनुरूप अभिव्यक्ति के रूप में स्वीकार किया और उनका स्वागत किया। बेल्सुकी ने सामान्य जनता वर्क कारीगर किसान के जीवन की कुरूपता और बीमत्सता के मित्रका का स्वागत और समर्थन किया क्योंकि वे मत्ताधीनों के द्वारा समर्पित सुख सौन्दर्य के आदर्श के प्रतिपक्ष जीवन की कटु वास्तविकताओं की सामने लाकर जन-जतना को जगा कर बहुत बड़ी सेवा कर रहे थे। ऐसे प्रवृत्तिवादी विपरीत के अंकन में बेल्सुकी को अत्यन्त महत्वपूर्ण सामाजिक आलोचना की शक्ति मिली। साहित्य में नीच इसी प्रवृत्तिवादी यथार्थवाद की आकांक्षा बेल्सुकी का सबसे महत्वपूर्ण योगदान है। अपनी साहित्यिक आलोचनाओं के द्वारा वह बराबर निरंकुश आरणाही के विरुद्ध जनता को पक्ष में मुद्र कर रहा।

१८४६ में वह 'यमकामीन' पत्र में काम करने लगा। इसी पत्र में उसने गोयस के 'मिर्चों' में पत्र व्यवहार की तीव्र आलोचना की जिसमें गोयस ने अपनी कान्तिकारी कृतियों का निराकरण किया था। बेल्सुकी के इन पत्र से गोयस बड़ा दुःखी हुआ और उसने बेल्सुकी का पत्र लिखा। बेल्सुकी ने इसका जो उत्तर दिया वह उस समय में छप सका। किन्तु वह साहित्य की अत्यन्त प्रसिद्ध एवं महत्वपूर्ण वृत्ति बन गयी। यह पत्र सामान्य आलोचना, नैतिक पत्र की तीव्र एवं कलात्मक लिखा है। इसमें उसने लिखा कि रूसी जनता को रूसी सेनकों ही में निरंकुशता से रखा करनेवाले दिवारी पड़ते हैं। उन्हीं में जनता की आशा है। इसलिए जनता

लेखक के कलाहीन पुस्तक के लिए दामा बर मजनी है किन्तु कुछ पुस्तक के लिए कदापि नहीं। हमारे साल पत्राचारकी गोष्ठी के माया की बलिम्की के इस पत्र का प्रचार करने के कारण कड़ी ईद की मजा दी गयी।

१८४७ में बलिम्की ने 'कमी साहित्य पर विचार' के नाम से एक मित्रा प्रियका फलामक निदान्त के विकास में महत्वपूर्ण स्थान है। बलिम्की लपेटिका का रागी हा गया था। उनके मित्रा ने उन आदिवा महायता बकर विचित्रता के लिए विद्वान भजा। १८४८ में उनकी मृत्यु हा गयी। मौन ने उन्हें धारितित घातना और जल की संभावना दाना से छुटकारा दिला दिया।

बलिम्की ने सबसे साहित्य के अतिरिक्त सभी तत्कालीन विषयों पर संवर्ष प्रतिहार दान्त साक्ष्यकी काग विदेशी साहित्य—अनन आतिरारी एव जनबादी विचार प्रस्तुत किये।

उनके पास उमे साहित्यिक विशाही' कहा करते थे। बलिम्की के बारे में तुयेंनव लिखता है कि 'बहु सुन्दरता और अनुपयुक्त दाना का पहचान सता था। और सब को झूठ में अलग कर निर्भक्ता और साहन से अपना निर्णय देता था। बहु सगका की प्रतिभा का तुरत पहचान सता था और उनको प्रस्ताहित करता था। उनका बड़ा प्रभाव था और यद्यपि उनके निजी मित्रां में तुयेंनव नकागाव जीव प्रसिद्ध सगक पत्रि भी बहु अदसिद्ध और अज्ञात सगका का बराबर प्रस्ताहित सता था। प्रसिद्ध की सगका के सईप में बलिम्की के निरा गये सग की आलोचना की सधौतम वृत्ति के रूप में माग्य है।

## १६ इवान अलेक्सेविच थाकोव्स्केव (गिर्त्सेन)

[ १८१२-१८७० ]

यह मास्को के एक सौदागर का जर्मन सड़की से गैरकानूनी पुत्र था। माता पिता ने उसे बहर्जेन (रूसी में नेर्त्सेन) कहते थे और बाद में यह इसी नाम से विख्यात हुआ।

उसकी शिक्षा बीधा, बिबबविद्यालय के मित्रों के बाठावरण में उसे प्रगतिशील विचारवाला व्यक्ति बना दिया। उसके मित्रों शिक्षकों में से एक ने फ्रांस की राज्यक्रान्ति में भाग लिया था और बूसरे ने उसे पुरिफन तथा रीश्मव की गैरकानूनी कविता से परिचित कराया था। ग्रेजुएट होने के एक वर्ष बाद गिर्त्सेन और उसके दोस्त गिरफ्तार कर किये गये और मास्को से निर्वासित कर दिए गये।

पाँच वर्ष के निर्वासन के बाद उसने पीतरबुर्ग में लौकरी कर ली। वहाँ पर बर्मिस्की के निकट आया और उसके पत्र में लिखने लगा। थोड़े समय के बाद उसने सरकारी लौकरी छोड़ दी और सामाजिक साहित्यिक कार्य में लग गया। यह समय पारचात्यवादी तथा स्लावोफिल की परमाणरम बहुस गोंगल की क्वाति तथा बर्मिस्की के प्रभाव का था। गिर्त्सेन प्रगतिवादियों का नेता बन गया था।

गिर्त्सेन की रुचि दर्शन विज्ञान इतिहास तथा समाजवादी साहित्य सभी की ओर थी। उसमें बहुत अधिक लिखा। उसकी कृतियों में विज्ञान में स्लाविकवाद प्रकृति के अध्ययन पर पत्र डाक्टर कुबोव किसका अपराध विषय रून से उत्सवनीय थी।

गिर्त्सेन का उपन्यास 'किसका अपराध' उसकी बहुत प्रसिद्ध कृति है। यह साधारण स्थिति के पति-माली के गार्हस्थ्य जीवन की कहानी है। इसका मुख्य उद्देश्य यह बताया है कि विवाहित जीवन और व्यक्तिगत आनन्द ही सब कुछ नहीं है एवं उसे जीवन की पूरता मान लेना बहुत बड़ी त्रुटि है। यद्यपि बहुत से व्यक्ति ऐसे भ्रान्त चारवा में पड़े

हैं। गेर्सेन का कहना है कि उसका दान व्यक्तिपरा पर नहीं है। वास्तव में 'अपराध' समाज का है और उस व्यक्तिसत्ता का है जो ऐसी भ्रान्त धारणा फैलाता है, जिसके फलस्वरूप छोटे मंदकक्षित व्यक्तिगत जीवन में सीमित रहते हैं और सामाजिक कार्यों में विमुक्त रह कर अपने जीवन के पूरे विकास से वंचित रह जाते हैं। इस उपम्यास का महत्त्व गार्हस्थ्य जीवन के कठिन अन्त में न होकर उस छाट पाया व जीवन के कालक विचित्रण में है जिनके द्वारा गेर्सेन विचार रूप में मुस्लिम प्रथा पर अपना विचार प्रकट करता है। बलिस्की ने इस उपम्यास की बड़ी प्रशंसा की। यह उपम्यास यथार्थवादी गद्य का उत्कृष्ट प्रय है।

गेर्सेन १८४७ में परिणत गया और वहाँ में इन्की और फिर निवृत्तब्रह्मण्ड। जार निर्यासम प्रथम की आत्मा पर बाधन में लौटने के कारण उस मर जावन प्रथा में विजाता पड़ा। इन वर्षों के अनुभवों का अन्त उगकी पुस्तक 'दुमरे मट म म हुआ है जिसने ल्की तथा विन्की मधी कागा का ध्यान भयना मार आहृष्ट किया। १८५२ में बतु ल्कन भाया और उमके प्रगतिशील जांशानन व पक्ष में बर्दे पत्र 'मुबतारा' तथा 'पटा बलाए'। यह पत्र कानिकारी विचारों व कम्पन बन गये। इस प्रकार रोग में दूर रहते हुए भी वह कम रोग की मवा करना रहा। उमकी मच्छी-मच्छी राजनीतिक इतिहास इन पत्रों में लनी।

बार में प्रगतिशीलता के बीज दा बल हा गए और धीरे धीरे उसका प्रभाव पटन लगा ठिग भी बह बगबर लिंगना रहा। १८७२ में उमकी मृत्यु हा मर् ।

गेर्सेन की इतिहास म म १९०५ तक उल्लेख नहीं। उमके प्रथा का प्रथम पुत्र गेर्सेन मच्छीवर की ममात्रवादी क्रांति के बाद प्रकाशित हुआ। उमकी मच्छीवर इति बीनी बीने और विचार है जो उमके जीवन व विविध प्रथा के अनुभवों और विचारों में पूर्ण हैं और जिसमें उनका व्यक्तिगत जीवन की मच्छी भी है। यह मच्छी ल्की व्यंग्यमय आदर्श पूर्ण तथा वैयक्तिक वीगी का अत्यन्त समारमक प्रय है।

## १७ इवान मलेक्सान्द्रोयीय गंचरोव

[ १८१२-१८९१ ]

गंचरोव का जन्म सिम्बिर्स्क नगर के व्यापारी परिवार में हुआ था। परिवार संपन्न था और उसकी पिछा बीछा अच्छी तरह हुई थी। मास्को विश्वविद्यालय में पढ़ते हुए उसकी बसिन्की गर्लोन स्टातकेविच खादि प्रगतिशीलों से मित्रता थी किन्तु वह किसी दल में शामिल न हुआ तथा राजनीति से अलग ही रहा।

उसकी पहली महत्वपूर्ण कृति 'सामान्य इतिहास १८४७ में समझावनी' पत्र में छपी और उसमें लोगों का ध्यान आकृष्ट किया। १८४९ में उठने अपने घुमरे उपन्यास के आरम्भिक अध्याय उभी पत्र में 'अम्मोमोव के स्वप्न' नाम से छपाने शुरू किए किन्तु यह इस समय अचूरा ही रह गया। यह कृति १८५७ में पूरी हुई और १८५९ में छपी। उसकी तीसरी प्रसिद्ध कृति 'कपार' है। १८५२ में वह एडमिरल के सेक्रेटरी की हैसियत से बिस्व-यात्रा पर निकला और उसे अमेरिका और जापान क तट की यात्रा का हास किसने का आदम दिया गया। फलतः १८५८ में दो भागों में गंचरोव की यात्रा का ग्रन्थ 'पल्लडा जहाज' के शीर्षक से निकला।

सामान्य इतिहास में मनु चालीस के युग के सभी जीवन का चित्र प्रस्तुत किया गया है और पितृसत्ता के तथा बुर्जुआ मन्कृति के बीच का संघर्ष दिनाया गया है। अन्तक में इस उपन्यास में प्रगतिशील मध्यम वर्ग का समर्पन किया और दूसरे परा की मुटिया का उद्घाटन किया।

'कपार' उपन्यास धनु साठ की बीज है। इस समय तक पितृसत्तात्मक जीवन समाप्त हो चुका था और बुर्जुआ शक्ति बृह हो गई थी। किन्तु इनके साथ ही अन्तिकारी अनात्मक शक्ति भी विकसित हो रही थी और पृथीवाद का बुनीनी दे रही थी जिससे कि बुर्जुआ परा चिन्तित हो उठा

या । गंचरोव अब अनुहार और अपरिवर्तनकारी बन गया था । उसने ब्रज्जा परा का उच्च परा का समसन किया और गयी प्रगतिमार बनारमक पक्ति से विमुक्त रहा ।

उमकी सब स प्रमिद्ध हति अइकामोब' है । इस उपग्राम स मन् पचाम के जमान का तीव्र संघर्ष प्रस्तुत किया गया है । इस प्रमा का प्रान इस समय की उच्चतम समस्या थी । गंचरोव इसम प्रगतिशील लेखक क रूप स जाना है । वह प्राचीन व्यवस्था की आकाशना करता है यद्यपि उमके मन क एक काने स दमके प्रति थोड़ी महानुभूति भी है ।

इस उपग्राम का मायक अइकामोब साहित्यिक समार स बड़ा प्रमिद्ध हुआ और स्त्री स आत्मकी व्यक्ति का प्रतीक बन गया । अइकामोब भाबुक गुणगूत और बुद्धिमान पुरुष है बिन्तु वह कौरा स्वप्नदर्शी ही बना रहता है और धीरे धीरे क्रियामुय बन जाता है । उमस सपने स पदम की स रक्ति रह जाती है और स इच्छा ही हानी है और वह सामाजिक जीवन स विरुद्ध अलग हो जाता है । 'माफ़' पर सिटा हुआ वह कचल भावनाओं क स्वप्निक समार स हुआ रहता है और उमके स्वप्न कोर स्वप्न रह जात है । आरम्भ स उगटे मित्र उम सुधारने का प्रयत्न करत है बिन्तु स भी निष्फल रहत है और उमका भाव छाड़ देत है । अइकामोब अब किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं चाहता क्योंकि जीवन की स्थिर गतिविधि स बाधा पड़त का भय है । वह अब पड़ता भी छाड़ देता है और जमीनारी की संभाल भी नहीं करता । उमका जीवन अब मकपा क्रियामुय हो जाता है । वह पढ़ा-लिखा बानर आत्मी है ।

गंचरोव बजाना है कि मायक की दम अजागति का मूल कारण जमीनारी तथा दाम प्रया है । अब मया के लिए बनगितन दाम है और नियामा की आपत्ती पर जीवन बिना किसी आशका के सुगपुरुष बिनाया जा सकता है तो कार् संपर स बरा पद । फलत दम जमादारी तथा दाम प्रया से जमीनारी को बंदोबस्ती बना लिया और गाने गीने क मिरा उनका कार् उच्च पय स रहा । दम जागदारी प्रया और बाधाकरण से उन्हे किसी दाम का न रता । अइकामोब प्रय बनता भी छोड़ देता है ।



इस सामाजिक संघर्ष ने नये प्रकार के बुद्धिवाधियों को जन्म दिया। अब राजनीतिक सामाजिक संघर्ष में वे बिमोकाट बुद्धिजीवी सामने आये जो उच्च वर्ग में नहीं सम्मिलित थे बरन् जनता के बीच में आये थे। स्वयं अभाव और निर्धनता के बीच जीवन बिता चुकने के कारण ये (राज्यो-चिन्तनी) उच्च वर्ग से अमर्बुद्ध बुद्धिजीवी अच्छी तरह जानते थे कि निरकुस्र शासन तथा जमींदार और कर्मचारियों के अत्याचार के बीच जनता का जीवन कितना बयनीम तथा असह्य हो रहा है।

### राज्योचिन्तनी

इस प्रकार कृषी साहित्य के क्षेत्र में अब नये बुद्धिजीवी 'राज्यो-चिन्तनी' लेखक—गम्याकांम्की (१८१५-१८६३) उर्म्येस्की (१८४७-१८८९) रिनेलिफोव (१८४१-१८७१) तथा अन्य आये जिनकी रचनाएँ सताई हुई जनता के प्रति सहरी महानुमति में परिपूर्ण थी और जिनकी रचनाओं में सामाजिक असमानता और शोचन के विरुद्ध उग्र प्रतिवाद था। इन सब लेखकों में एक स्वर में जमींदार-कर्मचारियों तथा बुर्जुआ व्यवस्था की कड़ी आलोचना की।

### क्रान्तिकारी बिमोकाट

सन साठ के कृषी समाज के प्रगतिशील पक्ष का महासम यही क्रान्तिकारी बिमोकाट कर रहे थे जिनके नेता बेनिग्नेस्की और बोत्रोस्युबाव थे। इन लोगों ने बड़े साहस और बुद्धता के साथ किसानों का पक्ष लिया और जनता में क्रान्तिकारी विचारों का प्रचार किया। इन लोगों में मन् १८६१ के मुबारों की आकाशना की। उनकी व्यर्थता का दिग्दर्शन कराया और जनता में यह विचार फैलाया कि मुबारों में नहीं बरन् केवल क्रान्ति द्वारा ही जनता का जीवन ऊपर उठाया जा सकता है।

इन लोगों ने क्रान्तिकारी प्रचार को बड़ा महत्त्व दिया और कला तथा साहित्य को इसका प्रधान माध्यम बनाया। इन्होंने कहा कि 'कला का जनता की सेवा अवश्यमेव करनी चाहिए और उसका लक्ष्य क्रान्ति के योद्धाओं को तैयार करना है। बेनिग्नेस्की ने इन विचारों का प्रतिपादन किया कि

कला जीवन को प्रतिबिम्बित करती है और साहित्य का जीवन की पाठ्य पुस्तक बनाना चाहिए। सचरू का प्रथम वर्तमान जनता का उद्धारक बनना और अत्याचार से मुक्ति दिलाना है। इसी प्रकार दोहोस्वभाव न साहित्य से सत्य तथा जीवन के आलाचनारमक अभिध्वजन और विमर्श की मांग की।

निम्नामक ने दादोस्वभाव के बारे में लिखा कि गरीबी और कठोरता से भरा बाल्य-काल भूख से भरे स्कूल के दिन फिर चार घास का अल्प परिश्रम और बाद में अपनी मृत्यु का आभास—यह दादोस्वभाव के जीवन का पूरी कहानी है। दादोस्वभाव पच्चीस वर्ष की अवस्था में मर गया था। फिर भी उसके समकालीन तथा बाद की पीढ़ियाँ पर बड़ा व्यापक प्रभाव पड़ा। वेदामागिक इंस्टीट्यूट में पढ़ने हुए उसका १८५९ में पहला लेख 'समकालीन में छपा था और इस तरह वह 'समकालीन' के मपक में आया। १८५७ में उसने इंस्टीट्यूट छोड़ दिया और 'समकालीन' पत्र में काम करना लगा।

दादोस्वभाव ने समाजबन्ना के स्तर को ऊँचा उठाया। उसने अपनी आलोचना की सपासपादी आलोचना कहा। उसके मतानुसार आलोचना का काम बलाकार के योगदान की ध्याना और कृति के बलात्मक और सामाजिक मूल्य के निर्धारण में पाठ्य की सहायता करना है और कभी कभी बलाकार की हानि में छिड़ हुए मन्थ्य को समझाना है। प्रगतिवादी परंपरा का भाग बढ़ाने वाले उसके सपने ने उन सामान्य वर्ग के लोगों का पैना बना दिया। साम्यवादी चेतना अन्धोबन्की गंधरोव मुर्गेनेर आदि पर उसके आलोचनात्मक सत्य कपी साहित्य को स्थायी निधि मान जाते हैं।

दोहोस्वभाव ने बिनार रूप से साहित्य के आधारकों के समय बढ़ा ऊँचा आत्म रण्य और बनाया कि आलोचन को वर्तमान युक्तियुक्त मपीगा द्वारा पाठकों में साहित्यिक हृदिया में सामाजिक तथा बलात्मक तर्कों के चयन और प्रण की क्षमता उत्पन्न करना है। बलाकार तथा हानि के मर्न और मूखम विचारों की ध्याना है और कृति

के मूल विचार की अभिव्यक्ति और उसका सामाजिक महत्त्व तथा मूल्य निर्धारित है।

दोब्रोल्सुवोव ने कहा कि जीवन साहित्य के मानदण्डों के अनुसार नहीं चलता वरन् साहित्य जीवन की गतिविधियों का अनुसरण करता है। उसके अनुरूप बनता है। उसने साहित्य में यथार्थवाद और जलजल के मिश्रणों का खोरदार प्रचार और समर्थन किया और कहा कि यथार्थता ही सर्वथा का मूल त्थ है और हमारी सामाजिक चेतना के निर्माण में योग देने के कारण कला का सामाजिक जीवन में बहुमूल्य स्थान है। उसने कहा कि कला का काम समाज सेवा है और उद्योग के महत्त्वपूर्ण प्रश्नों का उत्तर देना ही होना और व्यवस्थित देना चाहिए।

इन क्रान्तिकारी डिमोक्राटों का विश्वास था कि जनता में न केवल निरक्षरता घासन को उलट देना ही शक्ति है वरन् उसमें नई सामाजिक व्यवस्था की रचना की भी क्षमता है। उन्होंने जनता में क्रान्ति की अनिश्चयता की चेतना मरी और अपनी साहित्यिक आलोचनात्मक कृतिवों द्वारा जीवन के क्रान्तिकारी तथा सर्वथा नव-निर्माण के विचार का प्रचार किया। इन क्रान्तिकारी डिमोक्राटिक विचारों तथा प्रयत्नशील यथार्थवादी रूसी साहित्य के प्रभावशील एवं साठ के वर्षों में विश्वकला तथा संघीत का भी विकास हुआ। इस समय क्रान्तीयपरोक्ष सघासोव तथा अन्य कलाकारों द्वारा यथार्थवादी विश्वकला की अभिवृद्धि हुई। बलाकिरेव मुखोर्मस्की बरोदिन तथा अन्य संगीतकारों ने रूसी राष्ट्रीय संगीत की जन-भावना के अनुरूप अपनी कृतिवा प्रस्तुत की।

क्रान्तिकारी डिमोक्राटों ने यथार्थवादी साहित्य को बढ़ावा दिया और तुर्बतेव पंचरोव मर्याम्स्की तोस्तोय आदि की कृतिवों का स्वागत किया और उनका प्रचार किया। अपने आलोचनात्मक लेखों में उन्होंने इन लेखकों के उच्च कला-कौशल तथा उनकी उच्च विचारारम्भकता का महत्त्व प्रशिक्षित किया और अपने क्रान्तिकारी प्रचार कार्य में इनका उपयोग किया। इसके साथ ही उन्होंने इन लेखकों की अभिजात वर्गीय

विचारधारा की आलोचना भी की और उसकी सक्षीर्णता का सिद्धार्थन कराया।

### ‘समकालीन पत्र’

सन् साठ के वर्षों का सबसे अधिक प्रगतिशील पत्र ‘समकालीन’ था। इस हिमाचलिक विचारधारा के प्रचार को महत्वपूर्ण योग प्राप्त हुआ। इसके संचालन और संपादन में बेनिसेम्प्ली बोब्रोस्वोव और मैकलाड वे और कुछ समय बाद इसमें सांस्तिकाय इमेडिन आये। १८६१ के मुबार के समय और उसके बाद भी यह पत्र इन मुबारों का सौजन्यपूर्ण प्रवर्धित करते हुए बराबर किमान क्रान्ति के पत्र में प्रचार करता रहा। यह पत्र बड़ा लोकप्रिय रहा। बिरोध रूप से बेनिसेम्प्ली तथा बोब्रोस्वोव के क्रान्तिकारी लेखों में पाठकों का ध्यान अपनी ओर सबसे अधिक आकर्षित किया।

फिरत इस पर सामन की कुदृष्टि पड़ी और सेंसर का समय बरक बसा। सन् साठ के युग का पूर्वार्ध इसके लिए विरोध मकट का समय था। १८६१ में बोब्रोस्वोव की मृत्यु हो गयी और १८६२ में बेनिसेम्प्ली विरसुतार कर लिया गया। सन १८६२ में यह पत्र आठ महीने के लिए बंद कर दिया गया। इस उष्णी के बाद जब इसका पहला संक निकला तो स्पष्ट हो गया कि यह पत्र पूर्ववत् लोकप्रिय है और प्रगतिशील है। इस को बार और बेताबनी ही गई और १८६६ में जब अलेक्सांद्र द्वितीय की शखा का प्रयत्न हुआ तो यह पत्र एकदम बन्द कर दिया गया।

१८६१ के मुबार के ताब बुद्धिजीवियों के बीच कला के संबंध में दो विचारधाराओं का संघर्ष छिड़ गया। उनमें एक सभ (फ्येत, स्पूचेव बुडीविन आदि) तो ‘मुद्र कला’ का समर्थक था। उनका कहना था कि नव कुछ परिवर्तनशील है। मानवता का केवल माय, मित्र और सुखर का विचार सतह है। इसलिए उन्होंने अरिर्वर्तनशील समय तथा वेग से परे ‘मुद्र कला’ का सर्वन की धार नहीं और उसे जीवन तथा बनता में अलग कर दिया। उनकी दृष्टि में काव्य सामान्य जनता के लिए न होकर केवल कठिनम बूने हुए विशिष्ट जनों के लिए है।

इसके विपरीत क्रान्तिकारी डिमोक्राट बेनिसेव्स्की रीबोल्स्युओन आदि का पक्ष था जो कि 'बृद्ध कला' के सिद्धान्त का विरोधी था। वह कला को सामाजिक अनिश्चित मानता था और उसे अनिश्चित का साधन कहता था तथा उसका अर्थ ही राजनीतिक सामाजिक स्वतन्त्रता के लिए उपयोग करता था। इस बात का रूसी साहित्य पर बड़ा प्रभाव पड़ा और फलतः रूसी साहित्य की यथार्थवादी विचारधारा इसमें और पुष्ट हुई। मार्क्स चलकर रूसी साहित्य प्रदानतया समाजोन्मुख बन गया और उसने अनिश्चित का पक्ष लिमा जिसकी परिच्छिन्न अवतार ही समाजवादी क्रान्ति थी। रूसी साहित्य के क्रान्तिकारी डिमोक्राटों का सबसे महत्वपूर्ण योगदान इस क्रान्ति की भावना का संवर्द्धन गठन और पोषण है।

## १९ इवान सेर्गेइविच तुर्गेनेव

[ १८१८-१८८३ ]

इवान सेर्गेइविच तुर्गेनेव का जन्म सन् १८१८ में एक जमींदार परिवार में हुआ। इस परिवार में बानों व साब बड़ा कठोरतापूर्ण व्यवहार होता था। तुर्गेनेव की माता बड़ी ही कठोर थी और तुर्गेनेव को अत्यन्त सजा मिला करती थी। तुर्गेनेव के हृदय में बचपन में ही दाम अधिकांश के प्रति प्रेम पैदा हो गया।

### शिक्षा

तुर्गेनेव पहले तो मास्को विश्वविद्यालय में दाखिल हुआ और बाद में पीतरबुर्ग विश्वविद्यालय में प्रवेश लगा। यहाँ की शिक्षा समाप्त कर वह वर्तन की पढ़ाई पूरी करने के लिए बर्लिन विश्वविद्यालय चला गया। वह वर्तन का प्राक्तर बनना चाहता था किन्तु उसकी यह इच्छा पूरी न हो सकी क्योंकि बाद सरकार ने पश्चिम तथा रुम में स्वतन्त्रता आंदोलन की लहर में डरकर विश्वविद्याल्यों में वर्तन की पढ़ाई बंद कर दी। इसका बाद तुर्गेनेव ने जर्मन का पूर्ण रूप में आह्वय वर्तन में समा दिया।

सन् १८४३ में उसका पहला नाट्य 'परागा' छपा। इसी समय के जर्मन-भाष उमकी कहानी 'अग्रह कापीगोव' और नाटक 'पनाभाव' प्रसिद्ध हुए।

### शिकारी की दायरी

इस समय की उमकी महत्त्वपूर्ण हृदि उमकी कहानियाँ और टिप्पणियाँ हैं जो कि बाद में गिरादी की दायरी में संकलित हुईं। सन् १८४७ में 'गमारादीन' पत्र में उमकी कहानी 'गोर और बनीनिच' छपी जिसमें शान-विमातों का चित्रण किया गया है। गोर अनुभवी है और अपने कार्य में बड़ा बुद्धिमान है। बनीनिच भावुक और नाट्य प्रेमी है। स्वभाव में अत्यन्त हानि करने वाली मिन है और एक दूसरे का पूरक है। इस कहानी में सामान्य विमातों के चित्रण द्वारा विमातों का आह्वय

सौम्यर्ष्य पहुँची बार प्रस्तुत किया गया। बसिस्की ने इस कहानी का उष्ण मूल्यांकन करते हुए कहा कि तुर्मेनेव जगत के पास उस ओर से पहुँचा जिस ओर से उसके पास तुगमेव को छोड़कर इसके पहले कोई न पहुँचा था। इसके बाद किसानों के जीवन से संबंधित उसकी अन्य कहानियाँ ('एरेमोवाइ' और 'पनचक्की वाले की स्त्री' स्लोक 'मायक' आदि) छपीं जो बाद में 'शिकारी की डायरी' में संकलित हो गईं। इस पुस्तक पर तुर्मेनेव ने कई वर्ष तक परिश्रम किया और वह बराबर इसमें नयी कहानियाँ तथा टिप्पणियाँ जोड़ता रहा। इनमें से प्रत्येक कहानी महत्त्वपूर्ण साहित्यिक घटना बन गयी। प्रत्येक नयी कहानी में कर्सी किसान का जीवन अधिकाधिक व्यापकता के साथ चित्रित किया गया है। सामान्य कर्सी व्यक्ति की आत्मिक समृद्धि का चित्रण करते हुए तुर्मेनेव ने बास-रूपक के जीवन की कठिन और असह्य परिस्थितियों पर कठोर आक्रमण किया है। इन कहानियों में जमींदारों द्वारा विगष्ट शर्तों का चित्र भी मिलता है। 'शिकारी की डायरी' बास प्रथा के विरुद्ध अभियोग है और इसमें उनको मुक्त करने का आह्वान है।

१८५२ में गोगल की मृत्यु पर तुर्मेनेव ने उसके बारे में कुछ लिखा जिसे पीटरबुर्ग के सेंसर ने छापने की आज्ञा नहीं दी। तुर्मेनेव ने इसे मास्को भेजा और वहाँ यह कुछ छपा। इसी वर्ष में सेंसर के किसी नियम-ग्रंथ के अपराध में उसे गिरफ्तार कर लिया गया। गिरफ्तारी की इस अवधि में उसने अपनी प्रसिद्ध कहानी 'मूमू' लिखी जिसका बस्तु विषय बास प्रथा विरोधी है। इसके बाद वह स्वास्कोये-नितोस्निन्सो निर्वासित कर दिया गया। यह निर्वासन डेढ़ वर्ष का था।

**रविन**

१८५५ में उसने 'रविन' उपन्यास लिखा। इसका प्रधान नायक रविन छार चाठीस के बनों के कर्सी बुद्धिजीवियों का ठेठ प्रतिनिधि है। यह उष्ण विचारों का प्रचारक है किन्तु प्रतिक्रियावादी परिस्थिति के बीच यह स्वयं निष्क्रिय बना रहता है। जीवन के अनुकूल अपने को हासने की क्षमता का अभाव और दृढ़ इच्छाशक्ति की कमी तथा संघर्ष

की अममर्यता उस अनाबन्धक व्यक्ति बना देते हैं और वह बराबर असफल रहता है। फलतः कई गुणा के होते हुए भी दरिद्र अपने युग की बलि चढ़ जाता है। स्वयं के ममकाप्सीनों से हम हृदि का स्वागत किया और इसका उच्च मूर्त्यांकन किया। हम हृदि में उगड़े युग के पबलन्त प्रस्ता की झलक मिली और व्यक्तिगत जीवन में अपने को सीमित न कर इन प्रस्ता को मुमजाने का आह्वान मिला।

### अभिजात वर्ग का नीड़

दरिद्र' उपन्यास के बाद 'अभिजात वर्ग का नीड़ (१८५९) और 'उपारम्भ पर' (१८६०) उपन्यास निबन्धे जिनमें लेखक ने उद्गीमबी घाटी के मध्य के कनी जीवन में संबंधित प्रश्नों का प्रस्तुत किया।

'अभिजात वर्ग का नीड़' उपन्यास में अभिजात वर्ग के नीड़ को विस्तृत रूप से दिखाया गया है। इसका नायक एडवर्ड की सुमंस्कृत विस्तृत पश्चिम के लिए अग्रम व्यक्ति है। उसे लीडा से हाबिच प्यार है। लीडा भी उस चाहती है। विस्तृत उनका विवाह न हुआ मकरा बरोंवि साइलन्की का पत्नी की पुराने की गबर फलत निवली। भाग्य के इन आघात को न सह सकने से कारण लीडा मरु में मर्यामिनी बन जाती है और पानी के रहने हुए भी साइलन्की का जीवन एकाकी ही रहता है। यह उपन्यास उस समय भी बहुत कारप्रिय था और आज भी है। लीडा का कलम्यनील और आत्मबलिगानी रूप बड़ा ही आकर्षक है।

### उपारम्भ पर

'उपारम्भ पर' उपन्यास का नायक इमारोब बलपारिया का रहने वाला है और एडिन तथा साइलन्की के विदरीत बर्मेड व्यक्ति है। उमरा जीवन का लक्ष्य अपने देश की जनता का सुखों की अधीनता में मुक्त करना है और वह इसका निरा करने की पूरी तरह से तैयार करता है।

उमरा का जीवन मंगिनी लगी सड़की फलत स्तारबोरा है। इस दरिद्र के साथ अपने को संशक्तिन बन वह अपने पिता द्वारा आने लिए निर्णीत व्यक्ति की अधीनता कर रही है और इमारोब के साथ उमरी



सहायता के लिए बुसगारिया जाने को तैयार है। ईसरोव की रास्ते में मृत्यु हो जाती है किन्तु यह लड़की अपन मित्र के इस साहसपूर्ण कार्य को भाग बढ़ाती है।

तुर्गेनेव के इस उपन्यास में क्रांतिकारी नायक के रूप में रूसी की जगह बुसगारिया के निवासी को प्रस्तुत करने का मुख्य कारण यह था कि उसके द्वारा तुर्गेनेव यह प्रदर्शित करना चाहता था कि रूसी यशार्थता के बीच अभी क्रांतिकारी भावना का आविर्भाव नहीं हुआ है। तुर्गेनेव के समकालीनों ने इसे रूसी वास्तविकता की ही अभिव्यक्ति मानी और इसरोव के रूप में उन्हें अपने शैसनक्यों के प्रयत्नों की ही मसख मिसी।

दोब्रोस्यूदोव ने इस उपन्यास की मासोचना की और अपना क्रांतिकारी दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। तुर्गेनेव इससे सहमत न था क्योंकि उसका अभी तक 'सुधारों' में विश्वास था और वह सोचता था कि वास्तविकताओं को बिना क्रांति के मुक्त किया जा सकता है। फलतः दोनों में मतभेद बढ़ गया और तुर्गेनेव 'समकाळीन' पत्र के सहाय्यी मद्रस से अलग हो गया। फिर भी वह प्रतिक्रियावादियों की धरती में नहीं गया।

सन् १८९२ में तुर्गेनेव की सर्वोत्तम कृति उसका उपन्यास 'पिता और पुत्र' निकला। जिसमें उसने किबरल अभिजात वर्ग की आलोचना की और जनवादी बुद्धिजीवियों के प्रतिनिधि का बड़ी सहानुभूति के साथ चित्रण किया।

### पिता और पुत्र

उपन्यास में केवल 'पिताओं' जवान् पुरानी पीढ़ी तथा 'पुत्र' यववा नवीन पीढ़ी की ही चर्चा नहीं है बरन् पुरानी पीढ़ी से लेकर का आद्य प्राचीन कृषिवादी दृष्टिकोण से है और नई पीढ़ी में उनका मतभेद उस जनवादी 'राज्योचित्सी' या बुद्धिजीवी वर्ग से है जो मरी सामाजिक शक्ति के रूप में अभिजात वर्ग की प्राचीन विचारधारा के विरुद्ध संघर्ष कर रहा है। 'पिता और पुत्र' की मुख्य विषय-वस्तु इन दो सामाजिक वर्गों की विचारधारा एवं दृष्टिकोण का संघर्ष है। प्राचीन दृष्टिकोण का प्रतिनिधि पाबेस् पेत्रोविच है और नवीन का वेवयनिई बजागोव है।

बजारोब प्रत्येक वस्तु का निराकरण करता है और तुयेंनेब उसे 'निहिलिस्' (नास्तिकवादी) कहता है। वह अभिजात वर्ग की संस्कृति जीवन पद्धति भावार्थवादी दर्शन तथा रोमांटिक प्रेम आदि सभी का निराकरण करता है। अपनी प्रखर बुद्धि तथा तीव्र चर्च में सबको पराजित करता है।

ऐसी प्रतिभा में संयुक्त बजारोब बहुत कुछ कर सकता था किन्तु वह बिना कुछ किए ही मर जाता है। लोगों ने इसका अर्थ यह लिया कि तुयेंनेब का विश्वास यह है कि 'रूनी इंगारोब' तो वा गवे किन्तु अभी उनका कार्य समय शुरू नहीं हुआ है। बजारोब के प्रति सहानुभूति प्रदर्शित करते हुए भी लोग उनके बुद्धिवादी से महमत नहीं है और इसी से उनमें इन पाप व चर्च की बेचल विषमता ही प्रदर्शित की है। बजारोब बड़े कामों की बात करता है फिर भी कुछ कर नहीं पाता। प्रेम का निराकरण करता है और फिर भी प्रेम करता है। इन विषमताओं को प्रदर्शित करते हुए भी लोग के उसे प्राचीन पीढ़ी के 'पिताओं' से उच्चतर ही चिन्तित किया है।

अपनी कठोरमन विनिष्ठाओं के कारण 'पिता और पुत्र' की मिलनी रूनी माहिर्य की सम्बन्ध कृतिया के बीच की जाती है। यह उपन्यास बहुत बड़ा नहीं है फिर भी इसमें तात्कालीन रूनी समाज के पक्षक प्रवृत्तियों का बड़ा व्यापक समावेश है। तुयेंनेब व अन्य उपन्यासों की तरह इसमें भी ऐसे अनेक स्थल हैं जहाँ कई प्रवृत्तियाँ और समस्याओं पर आत्म-विचार प्रस्तुत किया गया है जिसमें पात्रों की विनिष्ठा और उनके चर्च की सारक मिलती है।

तुयेंनेब रूनी प्रवृत्ति के चित्रण के लिए प्रसिद्ध है। प्रवृत्ति व वह चित्रण पात्रों की अनुभूतियों से उनके आन्द और दुःख व चिन्तना में संक्षिप्त हैं। उपन्यास का अन्तिम दृश्य तीन और प्रतीकारमयता में आत्म-प्राप्त है और वह तुयेंनेब की उच्च कठोरमनता का संकेत है।

जीवन के अन्तिम वर्ष

तुयेंनेब की अन्तिम प्रौढ़ बुद्धि उमरा उपन्यास आरूनी उमीन है

विद्यमें रूसी बुद्धिवादियों की जनता के बीच 'यात्रा' दिखाई गयी है।

सन् ७० के वर्षों में तुर्गेनेव ने 'बघ मे काव्य' और 'साहित्यिक तथा वैज्ञानिक संस्मरण' लिखे।

तीन सितम्बर १८८३ में तुर्गेनेव की मृत्यु हो गयी।

तुर्गेनेव की कथाएँ कहानियाँ और उपन्यास अभीसर्बों कठी के सन् चाळीस से लेकर सन् सत्तर तक के वर्षों के रूसी जीवन का व्यापक चित्र प्रस्तुत करते हैं।

सामाजिक चेतना के बीच उमरते हुए युव के मये विचारों और नयी आवश्यकताओं की बहू तुरन्त समझ गया और अपनी कृतियों में उसने उन प्रश्नों को प्रस्तुत किया जो कि समस्त को मगने लगे थे।

तुर्गेनेव ने रूसी साहित्य को विश्व साहित्य के प्रामाण्य में उच्च एवं सम्मानित स्थान पर प्रतिष्ठित कर दिया।

## २० निकोलाइ अलेक्सेन्ड्रेविच नेक्रासोव [ १८५१-१८७८ ]

नेक्रामोव के नाम के माब रूसी काव्य के विकास का उत्तरीमर्षी शक्ती के मनु चाण्डीय म लेबर मनु मत्तर तक का पूरा युग जुड़ा हुआ है। वह रूसी क्रांतिकारी जनवादी प्रतिमागाली कवि है। वह बलिस्की का अनुगायी और क्रांतिकारी जनवादी अतिगोष्ठी और दोब्रोस्तुबोव का सहयोगी है।

निकोलाइ अलेक्सेन्ड्रेविच नेक्रामोव का जन्म १० दिसम्बर १८२१ में हुआ। उसका बचपन अपने पिता की जमींदारी में बीता जहाँ वह प्रथम बार राम-श्रृपकों के बजार जीवन में परिचित हुआ। उसके पिता का अपने राम-श्रृपकों के प्रति बड़ा ही बगोर व्यवहार था। बीसा पर उसने नाब-रीचनेवाला को दया और उनका गीत सुने और इन्दीमिर की मङ्क पर उसने बड़ियों में जकड़ मादकरिया भेज जाते हुए राजनीतिक बड़ियों के समूहों को देगा। इन सबके बालक नेक्रामोव के हृदय में घोषकों और अत्याचारियों के प्रति घृणा और काव भर दिया।

**साहित्यिक कार्यक्षेत्र का आरम्भ**

नेक्रामोव का पिता चाहता था कि उसका पुत्र पीतरबुर्ग जाकर मना का अग्रसर बने। नेक्रामोव पीतरबुर्ग तो आया किन्तु मना में न जाकर पीतरबुर्ग विश्वविद्यालय में दाखिल होने की अमकम कागिरी की। वह कवि और लेखक बनना चाहता था। परन्तु पिता ने एक हजार उसकी आर्थिक सहायता बंद कर दी। बिना हजार नेक्रामोव का रोगी के लिए नाम की गौर म भटवना पड़ा।

उसने अपना पता नाम 'ब्रह्म और स्वर' के नाम से छपाया, अगली बड़ी बड़ी आराधना हुई। अमकमताओं के बावजूद नेक्रामोव बगदर व्यापारिक कविताएँ, टींगी कथावियाँ तथा टिप्पणियाँ आदि पत्रा में लिखता रहा। उसकी सबसे अधिक सहायता कविता की ने

की तथा बोलिस्की के प्रभाव में ही उसका साहित्यिक मार्ग प्रशस्त हुआ।

**सम् आस्तीस और पचास के वर्षों में नेक्रासोव की सर्जना**

१८४५ में नेक्रासोव का संग्रह 'पीतरबुर्ग का रूप रंग' निकला। उसमें उसका केस 'पीतरबुर्ग के कोन' भी था। उसने इसमें शहर के दूर के हिस्सों का चित्र प्रस्तुत किया था जिसमें गढ़े घर और उनके आस-पड़ोस-विहीन उल्लेखों का जीवन चित्राया था। बोलिस्की ने इस केसक की असाधारण पर्यवेक्षण शक्ति और चित्रण की शक्ति को बड़ा प्रशंसा की।

इसके बाद नेक्रासोव ने कई कविताएँ मिली जिनमें लोगों की निर्धनता का बड़ा व्यापक चित्र था और जीवन के ऐसे दृश्यों का अंकन था जिनकी अभिव्यक्ति उसके पहले किसी कवि ने न की थी। अपनी कविता 'जहाँ रात है' वह दम्पति के दोष का चित्रण कर रहा है। घर में दरिद्रता और अभाव है। बच्चे का ताबूत खरीदने को भी पैसा नहीं है। बच्चे के अंतिम मस्कार के लिए और भूल पति को भोजन देने के लिए पत्नी अपना शरीर बचाने का निश्चय करती है। उस कविता का मार्मिक प्रभाव की चर्चा तुर्गेनेव और साख्तिकोवचक्रिन ने भी की।

शहर वालों की दरिद्रता का चित्रण नेक्रासोव की 'सड़क पर' तथा 'मौसम के बारे में' कविताओं में भी हुआ है। इन कविताओं में जन-जीवन की विरूपता तथा सामान्य जनता के अभाव है। और सबसे बड़ी बात यह कि नेक्रासोव पूर्ववर्ती कवियों के विपरीत दरिद्रता का बड़ा व्यापक चित्रण प्रस्तुत करता है। वह कुछ भी नहीं छिपाता और पाठकों के सामने कटु-सत्य प्रस्तुत कर देता है।

नेक्रासोव की इन समय की कविताओं में शहरी जीवन के वस्तु-विषय के साथ किमानों के जीवन का वस्तु-विषय भी प्रमुख है। बोलिस्की ने प्रभावित होकर ही नेक्रासोव ने इन विषयों को चुना था। किमान जीवन से संबंधित नेक्रासोव की प्रथम प्रभावपूर्ण कविता 'सड़क में' है। इसमें कभी दास लड़की की दुःख-भरी कथा है जिसका तास्वकेदार की लड़की के साथ ही तास्व-यात्रण हुआ है किन्तु जिसे नये तास्वकेदार ने घर से

निकाक दिया है। विमान के कठिन परिपक्वी जीवन से अनम्यस्त हो जाने के कारण उम लड़की का जीवन सब बड़ा राखण हो जाता है।

मकामोव द्वारा वाक्य में प्रस्तुत विमान जीवन की विषय-वस्तु भी इस समय के लिए नयी थी। इसका प्रयत्नोष्ण पक्ष से हार्दिक स्वागत किया।

इस समय विमान जीवम से संबंधित मेकामोव की कई कबिताएँ निजकी जिनम मातृभूमि गाँव में 'विस्मृत गाँव' आदि बड़ी प्रभाव पूरक रचमाएँ हैं। मातृ-भूमि में बहि बुग्य और अमृतोप के भाप अपने पिता के गौणल जीवन और उसकी निरकुमठा की याद करता है। इसमें बर्मादारों के अत्याचार और उत्पीड़न के मार्मिक चित्र हैं।

'विस्मृत गाँव' में विमानों के अनावा और उनकी अपिवाएहीमठा का चित्र है। तात्कुकैदार गाँव से बड़ी दूर रहता है और उमके कारिन्दे विमानों पर मनबानी करते रहते हैं। गाँव वालों को माया है कि 'मालिक' आएगा और सब ठीक करेगा किन्तु मालिक नहीं आया नहीं आया। एक दिन रातने में लोणा ने भीड़ देगो और ऊँची गाड़ी पर ताबूत देगा। ताबूत के अन्दर मालिक का और ताबूत में पीछे गया मालिक। पुराने मालिक के लिए शार्चना पड़ी गई। नये मालिक से अमी पोंछ माड़ी में बैठा और ठिठ बारम महूर बना गया। यह कबिता एन प्रकार से गारे क्रम से दाम-दुपकों की दयनीय अबरया का मार्मिक चित्र प्रस्तुत करती है।

प्रधान अवेग द्वार पर विचार विमर्ग (१८५८) कबिता में प्रतीक विमान अपने मालिक से भेंट करने के लिए मुख्य द्वार पर दृढ़तार करते रहते हैं किन्तु मालिक उनमें नहीं मिलता और उनका निरमया बना है। कबिता में यह बनाया गया है कि त्रिनके हाप में अपिवाए है व जनता की ओर आंग उगाकर देगना भी नहीं चाहते। प्रतीक विमान निरगम द्वार पर मुख्य द्वार में गायी हाप बागम नौटने हैं।

१८५९ में मेकामोव का पहला वाक्य महूर निरमा। यह महूर अपनी ताबूती मारम तथा मुञ्जीग प्रभुनि व बारम बड़ा ही लोचनिय हुआ। इनमें जनता की लड़पन अवार के बन्दि परिषय दाम अपिवाए की

शासकता तथा जमीर उत्पीड़कों के प्रति युवा का अभिर्भ्रंजन हुआ। इसके प्रकाशन से पाठक वर्ग में बड़ी हलचल हुई और इसके छपने की आज्ञा देने वाले सेंसर को डीट पड़ी।

विद्यय रूप से इस संग्रह की कविता 'कवि और नागरिक' से पाठक वर्ग बड़ा असंतुष्ट हुआ। इसमें कवि ने 'धुल कमा' पर आक्षेप किया और बताया कि कवि कोई हो या न हो उसे नागरिक अवश्य होना चाहिए। कवि को भी नागरिक होना चाहिए और देश के प्रति अपना कर्तव्य निभाना चाहिए। उन्होंने कहा कि शोक के बरों में आकाश, समुद्र और घाटियों की सुन्दरता और प्रेम का गान अत्यन्त सञ्जाजनक है। उन्होंने कहा कि 'तु चाहे कवि न हो सके किन्तु नागरिक होना तो तेरे लिए अत्यावश्यक है और नागरिक क्या है?—मातृ-भूमि का सुयोग्य पुत्र होना। पुत्र अपनी माँ के दुख को धाम्निपूर्वक नहीं देख सकता। उसी तरह योग्य नागरिक देश के प्रति उदासीन नहीं हो सकता। मन्नासोब की ये पक्तिमाँ देश के कोने-कोने में छँक गयी और प्रगतिशील युवक वर्ग ने इस कष्टस्व कर लिया तथा इसे अपने नारे के रूप में ग्रहण किया।

### प्रकाशन और सम्पादन कार्य

अपने साहित्यिक कार्यक्रमों के साथ-साथ नेक़ासोब प्रकाशन और संपादन कार्य भी करता जाता था। सन् १८४७ में वह 'समकालीन' पत्र के संपादन और प्रकाशन में लग गया। पुरिकन्त की मृत्यु के बाद इन पत्र की स्थिति बड़ी खराब हो गई थी किन्तु नेक़ासोब के हाथ में पड़कर यह पत्र चमक उठा। करीब बीस वर्ष तक उसने इसका प्रकाशन किया। इसमें उस समय के सभी प्रमुख कवी सम्मिलित थे—बेनिसेम्की, प्रोबोस्पूब, सुयेनेब, वास्त्याय, गंधरोब आदि की रचनाएँ थीं। क्रान्तिकारी जनवादी राजनीतिक पत्र होने के कारण इस पर शासकों की बराबर कोप वृष्टि रही। उसे कई बार बंदवानी मिली। कई बार बड़े समय के लिए बंद किया गया और फिर १८६६ में हुमेगा के लिए बन्द कर दिया गया। सन् ६० और सन् ७० के वर्षों में नेक़ासोब की सर्जना

'समकालीन' पत्र के बन्द होने पर वह हताश न हुआ और नये

जायन के लिए प्रयास करने लया। सन् १८६८ में 'पितृभूमि विप्लविया'  
ज निकाला। इस पत्र में सांस्तिकोबचप्रतिन अस्त्रावकी गृहहस्वस्की  
द्विमे सांस्तिकामी लेखकों ने सहयोग दिया। इस पत्र का दस्तावीन  
सामाजिक राजनीतिक जीवन में बड़ा महत्त्वपूर्ण स्थान था।

सन् १८६८ और सन् १८७० के वर्षों में भी कृती पाँच और रूमी जन  
जीवन ही नकामीय के काव्य की मुख्य विषय-वस्तु है। अपनी कविता  
'ऐम्मी (माऊ गीत) में अपने राजनीतिक सुधारों के बाद की जन  
स्विति का चित्रण किया है और यह संकेत किया कि जनता की हालत  
सुधारी नहीं गई वरन् पूर्ववत् बड़ी बयनीय है। नेचयसोव ने इसे अपनी  
प्रिय कविता कहा है।

अपनी कविता 'मैतिक की माँ अरीना में सना के सामान्य  
मैतिकों का अमल्य जीवन चित्रित किया गया है और अपने मैतिक पुत्र  
की मृत्यु पर दुःख स्त्री के लोके का वर्णन किया गया है। निकोलाइ प्रथम  
के समय में सना में सामान्य मैतिकों पर बड़ी मरती होनी थी। मैतिक  
नियम भंग करने पर कोड़ों की मार पड़ती थी और कभी-कभी काड़ा द्वारा  
मृत्यु संद दिया जाता था। समयत एसा ही संद पाकर अरीना का पुत्र  
मेना में बायन घर लौगा। मेना में जाने के पहले वह बड़ा सांस्तिकामी  
और हृष्ट-मुष्ट था और अब बायन लौगा तो रासी। ती दिन वह लड़पना  
रहा और उसके निर मर गया। लेंमर इस कविता के आत्मोचमाम्यक  
प्रभाव को बखी तरह समझता था और उसके समय छान की इजाजत  
नहीं दी। नेचयसोव अपनी चतुरता में ही किसी प्रकार बड़ी मुदितक में  
यह कविता छपा गया।

'पामा-पामा माऊ' कविता में कवि का रूमी जनता के प्रति अनीय  
प्रथ ध्यान हुआ है और रूमी स्त्रियों की शक्ति और मौंस्य का मृग-मान  
किया गया है। इस कविता में एक परिवार की दुःखद कथा है। प्रोवक  
परिधर्मी और ईमानदार व्यक्ति है। समय के फर में उस की बचान बनना  
पड़ता है। एक यात्रा में उसे मर्ी लग जाती है और बह मर जाता है।  
उसकी रूमी बानी बड़ी ही हिम्मती है और उस में अचल मड में मूर्ति लाने



जाती है जिससे कि उसका पति अच्छा हो जाय। वह बीच-बीच का शासन पुनः चहती है। जंगल में वह ठिठुर कर मर जाती है। कविता का अन्त दुःख है किन्तु उसमें सामान्य रूसी स्त्री और पुरुष के आरिथक जीवन का वर्णन किया गया है।

१८९८ में सिस्ती उसकी छोटी-सी कविता आबावी बानंद के बिना बड़ी घुटन है। मे लूके रूप में कान्ति का आह्वान है।

नेकासोव ने कान्तिकारी विमोचन नेताओं के काम्य-चित्र भी प्रस्तुत किए हैं। १८५५ में उसने 'बेलिस्की' लिखा दो कविताएँ १२ नवम्बर १८९१ ई० और 'बोत्रोस्पूबोव की स्मृति' उसने बोत्रोस्पूबोव को समर्पित की और 'मविष्यवाणी' में बेनिगन्स्की का चित्र प्रस्तुत किया।

रूसी स्त्रियाँ में रिकाहिरिस्टों की उन पत्नियों का वर्णन किया गया है जो कि अपने निर्वासित पतियों का सान देने के लिए अनेक संकट होते हुए उनके पास स्वेच्छा से साहसीरिया आदि कठिन स्वार्थों में पहुँचती हैं। इसमें सामान्य जनता की इन और नारियों के प्रति सहानुभूति प्रदर्शित की गयी है। नेकासोव की इस कविता के संबंध में सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उसने अतीत की विषय-वस्तु को लेकर भी उसे वर्तमान की कान्तिकारी अनुभूति से प्राणान्वित कर दिया।

'कौन रूस में आनन्द से रहता है ?'

इन्हीं वर्षों में उसने अपना प्रसिद्ध और प्रबल काव्य 'कौन रूस में आनन्द से रहता है' लिखा। नेकासोव ने इसे अपने जीवन का प्रबल कार्य माना।

इसमें कवि ने १८९१ के सुधार के बाद के किसान जीवन का व्यापक चित्र प्रस्तुत किया है। आरम्भ में वह 'मुक्त किसानों' की आसिधा निर्भरता आदि को अपने काव्य का मुख्य विषय बनाता चाहता था जिससे कि वह प्रदर्शित कर सके कि इन सुधारों से किसानों का कुछ भी भला न हुआ। बाद में उसका मुकाब कान्तिकारी आंदोलन और उन युवकों की ओर हुआ जो जनसेवा को अपना लक्ष्य बनाकर निर्दुःखता और अत्याचार

के विरुद्ध सचर्य कर रहे थे। प्रीमा दात्रास्वकोनाब इन्हीं का प्रति-  
निधि है।

मकामोव ने अपने काम्य को जन मुक्त बनाने के लिए सोव-काम्य  
की मुक्तियों और मीली का बहुत उपयोग किया। इसमें अद्भुत पसी तथा  
प्रादु वाले मकामोव आदि साधकियों का समावेश है तथा साक  
बहावनी बुझोवत साकासित आदि का प्रयोग हुआ है।

काम्य का आरम्भ भी साक-बयाभा के उग पर हुआ है। मात  
क्रियाओं में हम बात पर बहम हती है कि कम में कीन आनन्द में रहता  
है? इस प्रश्न का तय करने के लिए और मकाम सुखी व्यक्ति का बुझने के  
लिए वे सारी विमान देव की यात्रा पर निरत पड़ते हैं। इस यात्रा के  
साध्य में मेकामों के मनी जीवन के विविध पना की प्रस्तुत किया है  
और मनी प्रकार के साकासित गुलाम विमान आदि को विहित  
किया है। फिर भी स्पष्ट है कि मकामोव की महामुक्ति क्रियाओं के  
उप पक्ष के साथ है या जमीनदारा में मकाम करने का इच्छुक है।

इस युद्धीत विमान पक्ष के प्रतिनिधि मकामोव यात्री मगाय  
एरमिन् गीरिन आदि हैं। मकामोव ने बहुत समय तक पहल मसाग-  
निकाव का और फिर जमन फगल का अध्याचार महा। अन्त में जब  
जमका धीरे-धीरे टूट गया तो अपने कुछ साधियों की महापता में उम जर्मन  
का विना ही जर्मन में गाड़ दिया। मीम बर्ष की मत्रा काट कर वह अरम  
लिए बहता है कि 'मकामोव है विन्तु गुलाम नहीं है'।

दूसरी प्रकार मारीम मगाय विमानों की मस्तु-मिपिन की अभिव्यक्ति  
बड़े साधकियत पक्षों में बहता है। उमका बहता है कि विमान के  
परिधि में पर तीन लोग जीरिन रहते हैं— ईरक आर और जमीनदारा।

वेरमिन् गीरिन को विमानों के हिता का मत्रा विहित किया गया  
है। विमान उगाने इच्छुक बहते हैं और उमका समर्थन करते हैं। उमका  
जम में जम हुआ है। मेकामोव के मत्रा में ममता का मत्रा है कि उग  
जमीनदारा के विरुद्ध क्रियाओं के मकामोव के कारण निरन्तर विना गया  
और उम में उग दिया पना।

मात्रेवना तिमोफ़ेवना के रूप में मेकासोव ने स्त्री कृष्क स्त्री का जीवन भी प्रस्तुत किया है। लौबी किसानों को किस्ती ने बताया कि इस स्त्री का जीवन आत्मदुर्लभ है लेकिन पता चमस्ता है कि वस्तुस्थिति इससे उस्ती है। बचपन से ही इसका जीवन बड़ा कठोर परिष्म का था। घाबी होने पर वह पति की मार और सास समुर की खरी-खोटी सहती रही। उसके पहले बच्चे को सुबर ने मार डाला और पति को गैरकानूनन प्रीज में रंगकृत बना किया गया। रिश्वों के संबंध में वह कहती है कि 'नारी के सुख और स्वतन्त्रता की कुंजी तो फेक दी गयी है खर गयी है।

सतावनिफोव फेगेस बादि को कठोर बरवाचारी के रूप में चिहित किया गया है। एक दूसरा जमींदार अबोस्त अबोस्मयेन कहता है कि 'जिसे चाहूँ उस पर हृपा करूँ, जिसे चाहूँ उसे सडा दूँ। मेरी इच्छा कानून है, मेरा पूसा पुनिष्ठ है।

स्त्री जीवन का चित्रण करते हुए भी स्वयं कवि का बुद्धिकोण आन्तिवादी था। वह अपने काव्य से स्पष्ट कर देता है कि किसान तक तक सुखी नहीं हो सकता जब तक कि जमींदार है। केवल आन्ति ही किसानों का मुक्ति द्वार है और काव्य में इसी आन्ति के लिए आह्वान है।

घीषा के रूप में कवि की इन्हीं भावनाओं की अभिव्यक्ति हुई है। घीषा को जनता के नेता और उसके आन्तर्ग मार्ग को प्रचस्त करने वाले के रूप में चिहित किया गया है। घीषा ही इन काव्य में प्रमुख व्यक्ति है क्योंकि उसने सामने जीवन का सक्षय और मार्ग स्पष्ट है और वह यह भी जानता है कि उसका मार्ग बड़ा कँटीला है, माग्य ने उसके लिए सम्मान का मार्ग तैयार किया है, जनरलक का नाम तैयार किया है, अय और साइबीरिया तैयार किया है। घीषा निर्भय इस रास्ते पर चमस्ता है। कवि का यह संकेत है कि यदि यह छात्र किमान इस जनरलक घीषा के बारे में जानते होते तो उनको सच्चा सुखी आशनी मिल जाता।

मेकासोव के इस काव्य को 'स्त्री जीवन की इंचाश्कौरीबिया' कहा जाता है।

बड़ी परिश्रम के कारण उसका स्वास्थ्य बड़ा ख़तरा हुआ गया था। कम्बी और ब्रमाध्य बीमारी के बीच ८ जनवरी १८७८ में उसकी मृत्यु हो गयी। हजारों बादमियों ने उसे अंतिम धर्याजलि समर्पित की।

मेकासोव रूसी साहित्य में क्रान्तिवादी हिमोक्रान्ति काव्य का सर्व प्रथम प्रतिनिधि माना जाता है। उसकी कृतियों ने युवक वर्ग में क्रान्ति की प्रेरणा और स्फूर्ति भर दी।

अपनी सभ्यता के द्वारा उसने रूसी जीवन के एक लम्बे युग (मनुष्यता के सन् नक्षत्र तक) की अभिव्यक्ति की और उसका एका महीन वर्णन किया कि अतीत की जनता के उत्पीड़न की और उसके तपस्य की स्पष्ट तस्वीर हमारे सामने आ जाती है। मेकासोव की यही सबसे बड़ी सभा है और इसी में उसके काव्य का महत्त्व है।

## २१ फ्योदोर मिखाइलोविच दस्तयेत्स्की

[ १८९१-१८८१ ]

विश्व के महान् लेखकों में गिने जानेवाले इस कलाकार का सर्जनारम्भ बार्द उनीसवीं शती के सन् बाबीस में शुरू हुआ। उसकी प्रतिभा का विकास 'गरीब' (१८४५-१८४६) नामक पुस्तक में मिलने लगता है जिसकी शैली गभीर और मनोवैज्ञानिक है तथा इसमें एक नवयुवक के आत्मगीर्ष का चित्रण है। बेस्किने ने उसकी प्रतिभा को पहचाना और उसकी ख्याति को अभिव्यवधानी की। दस्तयेत्स्की पेत्रा-घोम्स्की गोष्ठी का सदस्य था। १८४९ में इसके सदस्य मिरज़ार कर किये गये और १८४० में अन्य सदस्यों के साथ दस्तयेत्स्की को काँपी की सजा मिली। फौजी के ठकते पर वह और उसके साथी लड़े किये गये किन्तु उसी मिनट एक अफ़्जर ने आकर मुक्ति की घोषणा सुनाई। जब वे कोम ठकते से उतारे गये तो वह पामल हो गया और दस्तयेत्स्की ने चार बर्ष की कड़ी कैद साइबीरिया में बिताई। और फिर पाँच बर्ष सेना की एक बटाकियन के साथ रहा। निर्वासन से लौटने के बाद उसका दृष्टिकोण बदल गया और प्रगतिशील मोठियाँ से उसका संबंध न रहा और वह रहस्यवादी बन गया। विपमताओं को मूलज्ञाने के लिए सामाजिक क्रांति की जगह वह पारस्परिक सामन्स्य और नैतिक मुबार की आवश्यकता बताने लगा। १८५९ में 'स्तेपान चिकीकी का पाँच' छपा। १८६१ में उसने 'समय' और 'मृग' पत्र चलाये। इन पत्रों के कारण उस पर बड़ा दर्द हो गया। कर्जदारों से बचने के लिए वह कई वर्षों तक विदेश में घूमता रहा। उसकी महत्वपूर्ण पुस्तकें 'मेरे बर के समाचार' और 'जुर्म और सजा' १८६६ में छपीं।

एकक के निर्वासन के बाद के विचार 'जुर्म और सजा' में बड़ी कसारमवता के साथ व्यक्त हुए हैं। इसका नायक यह समझता है कि

सबक व्यक्ति सब कुछ कर सकता है और उसने किए सब कुछ लभ्य है। वह कई दिनेवाली एक स्त्री की इरया कर देता है। बाब म अपने गुनाह के बाम मे दबकर वह अपने मन मे अपने का अधिकारिया का मीप देता है और अपरिपम कारावास स्वीकार करता है। इसम नायक की विद्रोही वैयधिकता की निदा और ईसाइया की मन्नता और दुःख सहन का प्रचार है। मनाईनामिक पित्रम की गहराई तथा तत्कालीन युव के दक्षिणाती व्यक्त के कारण इस्तवेस्की की यह कृति बिरब-साहित्य की महान् रचना बन गयी है। यह उपन्यास इस्तवेस्की की अपूर्व कलात्मकता का अन्यतम उदाहरण है।

उसने 'बेबकूठ' और 'दीतान' उपन्यास लिखे। इस दूसरे उपन्यास मे इस्तवेस्की ने अपने ममकामीना पत्रापोस्की तुर्गेनेब आदि के विषय प्रस्तुत किए हैं। स्त्रीयों ने इसे अदृष्ट व्यक्तिगत आक्रमण माना। इस पुस्तक से लेखक की प्रतिक्रियावाणी प्रवृत्ति स्पष्ट हो जाती है। उसने दो और महत्वपूर्ण उपन्यास 'कपमाबोब भाई' और 'बवान' लिखे जिनमे लेखक की कलात्मक शक्ति और उसकी दुर्बलता दोनों प्रकट होती हैं।

## २२ अलेक्सान्द्र निकोलाएविच अस्त्रोव्स्की

[ १८२३-१८८६ ]

अलेक्सान्द्र निकोलाएविच अस्त्रोव्स्की रूस के बड़े नाटककारों में गिना जाता है और रूसी राष्ट्रीय रंगमंच का संस्थापक माना जाता है।

अस्त्रोव्स्की का जन्म सन् १८२३ में मास्को में हुआ। नाटकों की ओर उसकी रुचि बचपन से ही थी और उसे पढ़ने का बड़ा शौक था। मास्को विश्वविद्यालय की शिक्षा समाप्त करने के बाद उसने मास्को की कचहरी में नौकरी कर ली जहाँ बालकों और माता-पिता के बीच के झगड़े निबटाने जाते थे। इसके बाद वह व्यापारियों की अबास्त में काम करने लगा। न्यायालय के इस अनुभव ने उसे मास्को के व्यापारियों के पारिवारिक जीवन के भूमिक पक्ष से पुरंचतया परिचित करा दिया और उसे सर्जना के लिए प्रवृत्त सामग्री दी।

सन् १८४६ में उसने अपनी पहली कमेडी 'अपने लोगों का स्वागत करने के लुक के दृश्य' लिखी। इसमें अस्त्रोव्स्की ने रूसी व्यापारियों की बर्बरता कठोरता का उद्घाटन किया और यह दिखाया कि वे व्यापारी जल्दी से जल्दी जमीर बनने के लिए सब कुछ करने को तैयार हैं और मृत्नाफासोरी इनको मनुष्य नहीं बने रहने देती।

यह कमेडी बहुत सफल रही। इसके बाद उसने 'ठगीब बहू' तथा 'अपनी माँ में न बैठो' लिखी। इस अन्तिम नाटक का १८५३ में मास्की थियेटर में अभिनय हुआ। इसके साथ ही नाटककार के रूप में अस्त्रोव्स्की की स्थापि बड़ यपी।

सन् ५० से ६० के बीच की अस्त्रोव्स्की की सर्जना

सन् पचास-साठ के बीच के वर्षों में अस्त्रोव्स्की स्लव्प्यानोफिन्स या स्लाव्बार्शियों के निकट आया। इन घोषी में येलनिकोवपोव्स्की प्रबु-नोव तुर्गनेव पीमेव्स्की वतीकिमिचोव सरोव्स्की जैसे सेवक और

कहाकार से। इन लोगों को कम के अतीत से बड़ा इम या और के पया-  
 र्थना न दूर से और प्रार्थनाता का आह्वानित रूप प्रस्तुत करते थे। वे  
 परंपरा तथा परिवार के कुल-ज्येष्ठ द्वारा संचालन की परंपरा का आक-  
 र्षण तथा आदर्श विषय प्रस्तुत करते थे। अस्त्रोक्तव्यो पर भी इन वर्गों  
 का प्रभाव पड़ा और वह इन वर्गों के अपरिवर्तनवादिनों को सहयोग देने  
 लगा। वह थोड़े समय के लिए मातृक की आलोचनात्मक परंपरा से  
 दूर चला गया और उसका ध्यान नैतिक समस्याओं की ओर गया।  
 'परीची होय नहीं है'

व्यापारियों के रत्न-महल का आदर्शित रूप 'परीची होय नहीं  
 है' कमेडी में और स्पष्टता से प्रकट हुआ है। इसमें परिवार के कुल-  
 ज्येष्ठ के अधिकारों को स्वीकार किया गया है और यह दिखाया गया  
 है कि वह परिवार का संचालन करता है और परिवार के अन्य तत्त्व  
 उनकी आज्ञा का वर्तमान रूप में स्वीकार करते हैं।

अपरिवर्तनवादी स्थावकवादिता में इस कमेडी में बहुत प्रमत्तता प्राप्त  
 की, क्योंकि इसमें रत्न-महलों को बहालमक रूप मिला। किन्तु बेनि-  
 गम्बी ने इसकी 'समस्यात्मक' पक्ष में आलोचना की और कहा कि  
 नाटककार ने उस परंपरा का ऐसा लम्बावना और आकर्षक रूप दिया है  
 जो कि न लम्बावनी है और न बिसे ऐसा सुभावना हीना चाहिए।  
 बेनिगम्बी ने अस्त्रोक्तव्यो में मरव और विवेक मान्यता के अपने  
 पूर्णपरिचित करने पर चमत्कार का कहा। बेनिगम्बी की आलोचना  
 गहराई में सामाजिक तथा अन्य कारणों का उस पर प्रभाव पड़ा और वह  
 स्थावकवादियों से अलग हो गया। १८५५ में वह उस युग के प्रयोगात्मक  
 पक्ष सफलतापूर्वक में महसूस होने लगा।

'श्राव्ये की जगह'

सन् १८५७ में अस्त्रोक्तव्यो में 'श्राव्ये की जगह' नाटक मिला जिसमें  
 अपने पारंपरिकता का आलोचनात्मक अर्थ प्रस्तुत किया। इसमें विभिन्न  
 सामाजिक वर्गों में आरंभ हुए किन्तु समाज दृष्टि काटिवाण कमेडियों  
 का समाज जीवन दिखाया गया है। यह वा लक्ष्य है सभी जगह पर्युक्त



या ऐसे पक्ष पर पहुँचना जो कायबेरम हो जहाँ अधिक से अधिक रिक्त मिल सके। नाटकों में बहुत से रिक्तखोर कर्मचारियों के बीच एक पात्र ऐसा तो है जो ईमानदारी का जीवन व्यतीत करना चाहता है और जाबोब ऐसे ही नये ईमानदार और विद्रिप्त लोगों का प्रतिनिधि है।

सन १८५६ में अल्ब्रोम्की ने मद्रासों के जीवन से परिचित होने के लिए बोस्मा की यात्रा की। इस यात्रा ने उस बोस्मा की प्रकृति और उसके घट के निवासियों के जीवन का गहरा परिचय दिया और इसका उनके ऊपर प्रभाव भी बहुत पड़ा। वह 'बोस्मा पर घने' नाम से एक नाटक माका प्रस्तुत करना चाहता था। यद्यपि नाटककार की यह इच्छा पूरी न हुई फिर भी बोस्मा यात्रा के प्रभावों की छाप उसके नई नाटकों में मिलती है।

### 'विजली तुकान'

'विजली तुकान' अल्ब्रोम्की की सर्वोत्तम कृति है जिसमें नाटककार की बोस्मा यात्रा की छाप है। इसकी घटनाएँ एक छोटे-से प्रांतीय शहर में होती हैं जहाँ आधुनिक कूरता से कुछ ही जाती है और जहाँ स्वेच्छा का जीवन दूर है तथा जहाँ यमी का शासन चलता है।

वीक्रीय ऐसा ही यमी हठी व्यापारी है। उसकी शक्ति का भेद उसका मन है। वह साबुनी और महामय है। ज्ञानदे के लिए वह हर प्रकार का कपट आक रचने को तैयार है। वह घट उपवास तथा अन्य धार्मिक कर्मकांड बराबर करता है फिर भी इससे उसके घोपण तथा अत्याचार में कोई कमी नहीं जाती। वह कूरता से अपने भतीज बरीम को सहृदीरिया भ्रम बेगा है। वीक्रीय के रूप में व्यापारियों का ठग रहन बहुत दिखाया गया है।

कुलीगिन का बिज इसके विपरीत है। वह इन लोगों की हठबर्मी और अत्याचार की आत्माचना और विरोध करता है और वह उन लोगों के प्रति सहानुभूति प्रदर्शित करता है जो कि इन अत्याचार के पिन्कार हैं।

कुर्मीगिन के समान केरिना भी मूठ तथा मूठी पैतिकता से कोई समझौता नहीं कर सकती। केरिना का पति उसे नहीं समझ पाता और उसकी माम उस पर अपनी इच्छाएं कादवी है। उसका परोपु जीवन अत्यन्त कठिन हो जाता है। पहले तो वह बरीम से त्रिमे कि वह चाहती है नहीं मिलनी परन्तु फिर उससे खुशकर मिलती है। इस प्रकार वह सामाजिक परिस्थितियों से अपना विरोध प्रकट करती है। अन्त में अपने परोपु जीवन की परिस्थितियों से ऊबकर वह बोस्सा में बुर कर अपनी जान दे दर्ना है। इस प्रकार जान देकर वह अपना विरोध प्रकट करती है पर आत्म समर्पण नहीं करती।

बिबका 'सूक्ष्म' नाटक उम ममम (१८५१) प्रकाशित हुआ जब कि स्त्री जीवन का मुख्य प्रश्न बाम-किनायी की भूमि और मानवीय व्यक्तित्व की स्वतन्त्रता थी। इस नाटक में उबग्दस्ती और निरहुता के प्रति जो विरोध प्रकट किया गया है और नये जीवन की प्रकृष्टा का जो प्रयत्न किया गया है उसका वाशोन्मुखी ने हादिक स्वागत किया। नबीम का प्राचीन से सपने ही इस नाटक का मूल्मूल इष्ट है।

इसकी भाषा बड़ी ही बलारमक समृद्ध मरीक तथा जनारमक है। प्रत्येक पात्र की अपनी विविध भाषा है त्रिममे उसकी अपनी विशेषता प्रकट हो जाती है। एंगर बड़ा हा बलारमकता के साथ प्रत्येक व्यक्तित्व का मनोवैधानिक चित्र प्रस्तुत कर देता है।

खन् ६० म सम् ८० के वर्षों में अस्तोम्फी की सर्जना

अन्वीर्षी अपने आरम्भ के नाटकों में व्यापारियों के जीवन और रजन-महान के व्याख्याता तथा आलाचक के रूप में सामने आता है। किन्तु वना उसका अनुभव बढ़ना गया उसकी साहसुष्म व्यापक हीनी गयी। अन्त उमर बाद के नाटकों में जोबन बिबरन की व्यापकता तथा महान् अपिवाधित मिलनी आनी है। नाटककार का ध्यान मूर्त स्त्री जीवन की भार आता है और वह स्त्री समाज के विभिन्न वर्ग तथा विभिन्न सामाजिक स्तरों का निरूपण करता है। बान्ना भाषा के बाद उमने पवित्रावित किया पर भी नाटक तिरा फिर भी उमकी रवि लम्बायीन यथाप्यज

के चित्रण की ओर अधिक है। पूंजीवादी नये घोषक और अभिजात वर्ग के नाथ का वस्तु-विषय अब उनके माटकों में प्रधानता प्राप्त करता है। इस दृष्टि से उसके सब से महत्वपूर्ण नाटक है—'जंगल 'मैं और भड़िये' तथा 'बिना रहैज की लड़की'।

'जंगल कमेडी में अभिजात वर्ग के नैतिक ह्रास का चित्रण है। इसमें अभिजात वर्ग से संबंधित एक लड़की का चित्रण है जिसकी राशी बनामाज के कारण बनी ब्यापारी के लड़के से नहीं हो पाती। यद्यपि उसकी बहू चाहती है। ब्यापारी बहूज चाहता है। इसमें सभी बनी व्यक्ति होगी है और सहाय देने का स्वार्थ रखत है। इस यंगे जंगल में सभी पसु है सहृदय मनुष्य कोई नहीं। केवल एक अभिनेता इस लड़की के प्रति सहानुभूति प्रदर्शित करता है और अपनी आत्मीय पार्श्व तक उसकी मदद में है देता है। इसी प्रकार 'मैं और भड़िये' में भी अभिजात वर्ग के नैतिक ह्रास का चित्रण प्रस्तुत किया गया है।

'बिना रहैज की लड़की' में मनुष्य को विक्रय को वस्तु बना देने वाले समाज की आलोचना की गयी है। इसमें एक लड़की शरीमा का भाष्य विनाया गया है जो कि उच्चवर्ग के पराधीन से प्रेम करती है और जो अन्त में उसे धोखा देता है। जो अन्य ब्यापारी उसे अपनी बमशक्ति द्वारा खरीदना चाहते हैं। लौकिक आरामगुं गुंती करती और अन्त में आत्महत्या कर लेती है।

अस्त्रोवस्की स्त्री नाटकों का जनक कहलाता है । इसके पहले स्त्री रंगमंच पर प्रेक्षक न अनुदित कमडिया ट्रेडिडिया आदि का ही प्रदर्शन होता था । पुस्किन और शिवयदोव ने नाटक इस समय तक रंगमंच पर अनिगीत नहीं हुये थे । मुद्रग का बहुत समय बाद उनका अनिगीत हुआ । इस प्रकार अस्त्रोवस्की के नाटक ही सबसे पहले रंगमंच पर प्रस्तुत किए गए । अस्त्रोवस्की ने बावन नाटक लिखे । छ नाटक उनमें सबसे नाटककारों के सहयोग से लिखे ।

बाबायुवोव ने उनके नाटकों को 'जीवन के नाटक' की संज्ञा दी । उनकी सर्वोत्तम कृतिमा में जन-श्रीम और जन प्रयत्न का चित्रण हुआ है और उनमें मूलभूत सामाजिक संघर्ष का उद्घाटन है । स्त्री साहित्य की पारम्परिक परंपरा को अस्त्रोवस्की के नाटकों से बड़ा धम मिला ।

के चित्रण की ओर अधिक है। पूँजीवादी नये शोषक और अमिजात वर्ग के नाट्य का वस्तु-विषय जब उसके नाटकों में प्रधानता प्राप्त करता है। इस दृष्टि से उसके सब से महत्त्वपूर्ण नाटक है—'जंगल' मई और मेड़िने' तथा 'बिना दहेज की लड़की'।

'जंगल' कमेडी में अमिजात वर्ग के नैतिक ह्रास का विषय है। इसमें अमिजात वर्ग से संबंधित एक लड़की का चित्रण है जिसकी माँजी वनाभाव के कारण अपनी व्यापारी के लड़के से नहीं हो पाती। यद्यपि उसको बहु चाहती है। व्यापारी दहेज चाहता है। इसमें सभी अपनी व्यक्ति बोंबी है और सहारा देने का स्वांग रखते हैं। इस बने जंगल में सभी पशु हैं सहृदय मनुष्य कोई नहीं। केवल एक अमिनेता इस लड़की के प्रति सहानुभूति प्रदर्शित करता है और अपनी आखिरी पाई तक उसकी मदद में दे बैठा है। इसी प्रकार 'मेड़ें और मेड़िने' में भी अमिजात वर्ग के नैतिक ह्रास का चित्रण प्रस्तुत किया गया है।

'बिना दहेज की लड़की' से मनुष्य की विषय की वस्तु बना देने वाले समाज की आत्माचना की गयी है। इसमें एक लड़की मरीसा का नाम दिखाया गया है जो कि उच्चवर्ग के पराधीन से प्रेम करती है और जो अन्त में उस धास्ता बंटा है। जो अन्य व्यापारी उसे अपनी धनवस्ति द्वारा खरीबना चाहते हैं। मरीसा आत्मसमर्पण नहीं करती और अन्त में आत्महत्या कर लेती है।

अस्तोवस्की ने सामाजिक जीवन के विकास में भी सक्रिय योग दिया। उसने कई साहित्यिक ककार्यक संस्थाओं की स्थापना के लिए बड़ा प्रयत्न किया। वह कसी राष्ट्रीय संमंत्र की स्थापना करना चाहता था। यद्यपि वह इसमें कृतकार्य न हुआ फिर भी बाह में उसने बिबेटर स्कूल की स्थापना की जिसमें अमिनेता टीयाग किए जाते थे। इसके अतिरिक्त उसने विद्वानों तथा साहित्यिकों की महायत्ता गमा 'कलात्मक बोधो' तथा कत्ती नाटककारों और अपेरा संगीतकारों की समा स्थापित की।

२ जून मन् १८८९ में अस्तावस्की की मृत्यु हो गई।

अस्त्रोप्स्की रूसी नाटक का जनक कहलाता है। इसके पहले रूसी रंगमंच पर फ्रेंच से अनूदित कमेडियाँ ट्रिजिनिया आदि का ही प्रदर्शन होता था। पुश्किन और द्विज्योगोव के नाटक इस समय तक रंगमंच पर अभिनीत नहीं हुए थे। मु'ग के बहुत समय बाद उनका अभिनय हुआ। इस प्रकार अस्त्रोप्स्की के नाटक ही सबसे पहले रंगमंच पर प्रस्तुत किए गये। अस्त्रोप्स्की ने बाबल नाटक लिखे। छ नाटक उमने अन्य नाटककारों के सहयोग से लिखे।

दाब्रोस्पुबोव ने उनके नाटकों को 'जीवन के नाटक' की उता दी। उनकी सर्वोत्तम कृतियाँ हैं 'जन-जीवन और जन-प्रयत्न का चित्रण' हुआ है और उनमें मूलभूत सामाजिक मरप का उद्घाटन है। रूसी साहित्य की परम्परा परंपरा का अस्त्रोप्स्की के नाटकों से बड़ा बल मिला।

## २३ मिखाइल येवग्राफोविच सास्तिकोवरेत्रिन

[ १८६-१८८९ ]

विश्व के प्रसिद्ध व्यप्यकारी में गिने जाने वाले इस लेखक का जन्म २७ जनवरी सन् १८२६ में हुआ। इसका बचपन सास प्रया वाली ठेठ जमींदारी में बीता और इसने जमींदारों के निरंकुश अत्याचार और सास-हृदयकों की घमनीय स्थिति के अनेक दारुण दृश्य देखे। स्वयं सास्तिकोवरेत्रिन के मर्दा ये बहु हास्यविचार की गोद में बड़ा हुआ।

आरंभिक शिक्षा उसे घर में मिली। उसके बाद अभिजात वर्ग के इन्स्टिट्यूट में भेजा गया और फिर बहुत अच्छा विद्यार्थी होने के कारण उसे एहारकोएतेजो के स्कूल में भेजा गया वहाँ वहाँ कि कभी पुरिस्कन ले सिखा पाई थी। वहाँ की शिक्षा समाप्त करने पर उसे युद्ध मंत्री के विभाग में नौकरी मिली किन्तु यह उस परतब न आयी। वह सैखन बनना चाहता था।

### साहित्यिक कार्यरूप का आरम्भ

पीतरबुर्ग में बेवालेम्स्की की गोष्ठी भी जिसमें सास्तिकावरेत्रिन जाया करता था। वह इस गोष्ठी के निरंकुशता विरोधी और सास प्रया विरोधी स्व से बड़ा प्रभावित हुआ। इसी गोष्ठी से प्रभावित होकर उसने अपनी पहली कहानियाँ 'विपमताए' (१८४०) 'पड़पड़ चाटाला' (१८४८) लिखी और उनमें समाजवाद के विचार का प्रचार दिया।

रूस की राज्यशास्त्रि ने जार सुल्कार कर ली थी और उसने स्व में अन्धकारियों की विरुद्धापी शुरू कर दी। इन कहानियों के कारण सास्तिकोवरेत्रिन पर भी धक हुआ और उसे मई १८४८ में मिरज़ार कर ब्यात्का निर्वासित कर दिया गया। सात वर्ष उसने निर्वासन में बिताये और प्रांतीय विभाग में बाज करता रहा। १८५५ में उसे

पीठरुपं बापस माने की माझा मिळा थीर वह साहित्यिक बाप म लम गया।

### प्रान्तीय रत्नाचित्र

इस निर्वाचन के बीच प्रान्तीय विभाग म उभ जा अनुभव प्राप्त हुआ उसके आधार पर उसन अपनी पुस्तक 'प्रान्तीय रेखाचित्र' रचदिन नाम मे छाई। इस पुस्तक मे निरकुण्ठा गौरवजाही की घोषणा रिखनगोरी तथा मुबन का नमन चित्र प्रस्तुत किया। पुस्तक बर्षी ही मच्छ और लाकृत्रिय हुई। १८५५म उसे रखाजन का उगवर्नर नियुक्त किया गया और दा बाप बाद खेर में उभ यही पं दिया गया।

### पत्रकारिता

वह १८६० में 'ममकामीन' पत्र का सहयोगी बन गया और मरकारी नौकरी छोड़ दी तथा सब पूरी तरह मे साहित्यिक कार्य में लग गया। 'ममकामीन' में उसके नय रेखा चित्र 'गठ मं खग्य छन।

'ममकामीन' पत्र के बंद कर दिए जाने पर उसने 'विभूमि नवाचार' पत्र बनाया जिसका मध्य ममकामीन की प्रगतिशील परंपरा पर आग बढ़ना और प्रगतिशील मरवा को एतित्त करना था।

### एक नगर का इतिहास

मालिकावरचरित्र की वेनी खग्य प्रतिमा का परिचायक उसकी विख्यात पुस्तक 'एक नगर का इतिहास' है। इसमें राजनीतिर खग्य है और अगारही मानी के जीवन क चित्रन की आइ म मकामीन मनी जीवन की साम्प्रदिकता का व्यप्यारमक चित्र प्रस्तुत किया गया है। इस चित्रों में गवर्नर क चित्र मे विगय प्यान आट्ट किया। गवर्नर के पाग मार्ग दिख म एक छात्रा या विममे वेचन ही लख दिखन था। नहीं बरदान कर्षण और नष्ट कर दूगा।

मनु ७०-८० के बरों म जब कि मगरनिही बहन य वि लम मे पूजीवार अभी न होगा मालिकोरचरित्र मे बरहा वि पूत्र बाद जा गया और जम गया। बूर्जुवाई घोषका बूला और पूजीवादिया को उसके



गर्भ मूँहबासा कहा। बेस्नोव एस्वाएव कम्पाएव के माध्यम से ऐश्वर्य ने बमीदारों के स्वानापन्न विद्वन्नी के नये मार्मिकों के घोषक रूप का व्यंग्य चित्र प्रस्तुत किया है। बेस्नोव धीरे-धीरे बड़ा धनी बन जाता है। वह कुछ भी नहीं छोड़ता और सब चीजों का व्यापार करता है। चारों ओर से उसके पास खया आ रहा है। पाठक जानते हैं कि वह बनता का सट कर धनी बन रहा है। लेखक ने इन पात्रों पर मार्मिक व्यंग्य किया है।

१८७५ में सात्तिकोवचिनिन बीमार पड़ा और उसे दवा के लिए विशेष जाना पड़ा। स्वदेश लौटने पर उसने नये रेखाचित्र 'विदेश से' लिखे जिसमें उसने बड़े खोखार शब्दों में यूरोपीय पूर्वजीवाव के नमन सत्य का उद्घाटन किया।

### भीमान् मलवयेव

सन् सत्तर के बर्षों में उसने रूसी बमीदारों के बारे में बड़ा उपन्यास लिखने का विचार किया। इसके आरम्भिक अध्याय अल्प-अल्प रेखाचित्र के रूप में 'शुभविस्तव बाणी' पुस्तक में छन। कुछ उपन्यास सन् १८८० में भीमान् मलवयेव के नाम से छन। इस उपन्यास के मुख्य नायक इवदुस्का मलवयेव के माध्यम से आरकाजाल घोषक बर्ष की कठोरता, उत्सीहन दम तथा उसके लोग का बड़ा ही व्यस्वार्थक चित्रण किया गया है। बास प्रया के जीवन पर जो कुप्रभाव और संस्कार पड़ गए हैं इवदुस्का उनका मूर्त कर है और घोषण, उत्सीहन प्रवचन तथा मानवता के प्रति चूना का प्रतीक है।

अपने जीवन के अन्तिम बर्षों में उठन नये रेखाचित्र प्रस्तुत किए और प्लेकोव्स्कोवेगमय लिखा जिसमें बास प्रया के बचपनों का मार्मिक व्यंग्य था।

इन्हीं बर्षों में वह एक और केवभासा विस्तृत उपन्यास प्रस्तुत चाहता था जिसमें वह कान्तिकारी डिमोक्राट बर्षों का प्रस्तुत करना चाहता था। किन्तु अगली मृत्यु हो गई।

कार्यान्वित न हो सना । मई १८८९ की १० तारीख का माम्बिकोष-चेन्नै का मृत्यु हो गई ।

इन्ही वर्षों में उनसे अर्थात्कृतपुत्र कथाएँ भी लिखी जो बड़ी प्रसिद्ध हुईं ।

### कथाएँ

सन् ८० के अन्तर्गत प्रतिश्रियावादी युग में भी माम्बिकोष-चेन्नै निरङ्कुश सामन लिबरल तथा गायब मठों पर व्यस्य करना रहा । किन्तु मैत्र के बचने के लिए अब वह ईसाय क इप की अर्थात्कृतपुत्र कथाएँ लिखन तथा जिनके पात्र सन् पत्नी तथा मछली आदि होने से किन्तु जिनका मकल स्वच्छता व्यक्तियों का भार होता था । सन्-पत्निया का यह बगन वास्तव में छिने रूप में उस समय के व्यक्तिया पर ही आशय और व्यस्य था । इन कथाओं के द्वारा अत्य पर मर्माघात भी होता था और कैमक मॅकर की पकड़ से बाहर और सुरक्षित भी रहना था । इनमें से अधिकतर कथाएँ सन् १८८४-८५ में लिखीं । सब मिखाइल रचयिता ने तीस से अधिक कथाएँ लिखीं । कैमक का साहित्यिक सुबेना की अन्तिम इति होन के कारण उनमें उसके आलीम वर्ष के साहित्यिक अनुभव तथा प्रौढ़ता का निचोड़ है । इनमें आरकार्थीन रूप के सामक वर्ष पर (मेनापति बालू की मछिया ) लौगली बात करने वाले बिके हुए और वापर 'लिबरल' (उदार बल वाले) पर लिबरल आदर्शवादी कार्य (मछली) पर, जनता के चोरों और उर्लीइकों पर (जगनी उमीदार) तथा अन्य लामा पर तीव्र व्यस्य है ।

'लड्डु पोड़ा' कथा में उम पोड़ का बगन है जिसे बहुत परिपम करना पड़ता है किन्तु जिसे मर वेट मोजन ही मर्दा मिलता । परिपम के बात से वह बचा पा रहा है । पोड़ा विमान का प्रतीक है और वैश्व मानवी मान करने वाले लिबरल स्वाधीन तथा मर्यादिका के प्रतिनिधि हैं । इनमें से प्रत्येक पात्र के अन्तिम जीवन पर बाद-बिहार करना है किन्तु इनमें से कोई भी मरभुव उमती मरना मर्दा करना चाहता । कैमक करता है कि बीरों को तो अच्छा भोजन किन्तु पोड़ को पास भी

नहीं। इन शब्दों के द्वारा चारकासीन रूप में किसान के सोपव का व्यंग्य बिना और भी स्पष्ट हो जाता है।

सेवापति चालू में तृतीयगिन प्रथम एतवपाठ द्वारा ही इतिहास में अमरता प्राप्त करना संभव समझता है। इससे यह भेड़ों को और छोपेछाने को मष्ट करता है।

अपने पिता के अनुभव पर तृतीयगिन द्वितीय किसान के भेड़ों को तथा भेड़ और मुँगर को मार डालता है। किन्तु वह इनको नहीं से जा पाता कि छोपे जा जाते हैं और उसे मार डालता है।

इतिहास के इस अनुभव से चतुर बनकर तृतीयगिन तृतीय बड़ी सावधानी से काम करता है और वह खिन्नरक नीति चलाता है। कई वर्षों तक उसे किसानों से सुभर, मुँग घड़व आदि मिलता रहा किन्तु अन्त में उसका भी बही हाल हुआ जो कि सभी लम्बे बाल वाले धानबरो का होता है। लोगों ने उसे मार डाला।

तृतीयगिनों की कथा द्वारा व्यंग्यकार ने चारकासी के जनबिरोधी रूप का और उसके अनिकार्य नाश का उक्ति दिया है।

इसी प्रकार ज्ञानी मछली में उस लोभों पर व्यंग्य है जो भय से अपने में संकुचित रहते हैं और सामाजिक जीवन में हिंसा नहीं लेते। राजनीतिक प्रतिहिमा के युग में इस कथा का बड़ा महत्त्व था। अपने पिता के इच्छानुसार दुनिया की सब चीजों से मछली डरती रही वह जीवित रही और कोपती रही—वस जीवन में यही उसने किया। यौ वर्ष से अधिक वह अपनी लंबेरी ठंडी बरह में जीती रही न उसमें किमी को पामा और न किमी ने उसको आना। वह माचती है कि ईश्वर का मंग्यबाह (किमी न मुँगको नहीं मारा) में अपनी मृत्यु से ही मर रही हूँ जैसे कि मरे माता पिता मरे। इस व्यंग्योक्ति ने लोभों की राजनीतिक चेतना जगाई और उनमें संशय की भावना मरी।

भारतवादी (कार्य) मछली कथा का विमय महत्त्व है। इसमें स्वयंसेवक कल्पनात्मक समाजवाद पर व्यंग्य है जिसकी ओर जनता में श्रद्धा केन्द्रक जाड़ू हुआ था।

इन कपात्रों की उच्च विचारारम्भता राजनीतिक तीक्ष्णता तथा विषय-वस्तु की सामयिकता का प्रभाव इसलिये और भी बढ़ गया कि यह एमे रूप में (कथा) प्रस्तुत की गयी कि वह जनता के अत्यधिक निकट जा गयी और उसका लिये अत्यन्त सुबोप थी। इसमें उसे श्रीकोब की व्यंग्यात्मक सपु कथाओं में बड़ी प्ररणा और शिखा मिली।

व्यंग्यकार के रूप में मास्त्रिकोबबेडिन श्रीकोब विबदेबाब और योगस की परंपरा में आता है। उसकी तीव्र पर्यवेक्षण तथा विरसेप चारमक मविन और यमीर देगमकित उसकी मर्जना की बहुत बड़ी बिगपताएँ हैं। उसकी व्यंग्य की प्रतिभा उसे देशकाल की सीमा से ऊपर उठाकर बिब-माहित्य के प्रांगण में प्रतिष्ठित कर दती है।

## २४ निकोलाइ गर्वीनोविच बेनिरोव्स्की

[ १८२८-१८८९ ]

कान्तिकारी किमोकाट दार्शनिक तथा आलोचक बेनिरोव्स्की का स्त्री साहित्य के बीच बड़ा ऊँचा एवं संमानित स्थान है। साहित्य-शास्त्र एवं भाषाशास्त्र के क्षेत्र में उसका कार्य बड़ा विख्यात और महत्त्वपूर्ण है। बाद की पीढ़ियों के लेखकों पर उसका बड़ा नगरीय प्रभाव पड़ा।

### शिक्षा

बेनिरोव्स्की का जन्म २४ जुलाई सन् १८२८ में एक पुरोहित के परिवार में हुआ। बचपन से ही उसे पढ़ने का व्यसन था। साठहू वर्ष की अवस्था में ही उसे माटीपी ग्रीक फ्लूज जर्मन और डेनरेकी भाषा का ज्ञान हो गया। पिता के इच्छानुसार उसने आरम्भ में धार्मिक पाठशाला में शिक्षा पाई किन्तु उसकी पुरोहित बनने की इच्छा न थी। उस पाठशाला को छोड़कर वह पीटरबुर्ग गया और वहाँ के विश्वविद्यालय की परीक्षाएँ बड़ी सफलता के साथ दीं। विश्वविद्यालय में उसने स्वतन्त्र रूप से अठारहवीं शती के जर्मन आदर्शवादी एवं भौतिकवादी वर्तन तथा बीगरेज जर्मसाहित्यियों और समाजशास्त्रियों के ग्रंथों का अध्ययन किया। उसने स्त्री जीवन की पहली विषयताओं को मलिन किया और इन विषयों पर पहुँचा कि कान्ति जमिदार्य है और आवश्यक है। यह कान्ति उसके जीवन का लक्ष्य बन गयी और इने पठित एवं अभियन्त करने के लिए उसने अपना सारा जीवन इसकी सेवा में लगा दिया।

विश्वविद्यालय की शिक्षा समाप्त कर वह अपने माँह मराठोक वापस लौटा और वहाँ के 'शिमनेशियम' में साहित्य का अध्यापक हो गया। उसने अध्यापन का कार्य बड़े अनुराग से किया। उसके व्याख्यात कान्तिकारी विचारों से परिपूर्ण रहते थे और उनका विचारियों पर बड़ा नगरीय प्रभाव पड़ा।

प्रबन्ध

कला, साहित्य आदि के विषय में उसने अपने विचार एवं दृष्टिकोण अपने प्रबन्ध (शीतल) कला का यथार्थता से सौन्दर्यवादी मर्मण' से प्रस्तुत किए, जिसे उसने पीतरबुर्न बिन्बविद्यालय की उच्च उपाधि के लिए लिखा था। इसमें उसने अपने इस विचार की प्रतिष्ठा की कि जीवन कला से नहीं रखा ठंडा है और उष्ण कलाकार अपनी शक्ति द्वारा समाज की सेवा करता है। कला में सामाजिक जीवन का अनात्मक दृष्टिकोण से मन्वा अभिप्रेयन हाहा ही चाहिये। जीवन का अभिप्रेयन करती हुई कला उसकी स्थापना करती है और पाठकों का ठीक-ठीक चयन एवं मूल्यांकन में महामता देती है और इस प्रकार जीवन की पाठ्य पुस्तक बन जाती है। 'साहित्य को एक या दूसरे प्रकार के विचारों की प्रतिबिम्बि का मेकन बनना ही पड़ेगा। अनिउम्की के ये विचार कला की आकाशी भाषना, 'मुझ कला' या कला बना के लिये' के विरुद्ध थे।

उसने अपने इस निबन्ध का बड़ी सरलता से प्रतिपादन किया। क्ल के प्रगतिशील पक्ष न इसका स्वागत किया किन्तु बिन्बविद्यालय के प्रतिस्थापकी अधिकारियों और प्राइमर ने इसमें बाधा डाली और वा गाल तद् उसे उपाधि न मिली।

**आलोचनात्मक एवं प्रचारत्मक कार्य**

इसने अनिउम्की इलाहा न हुआ और उसका साहित्यिक एवं शक्तिशाली कार्यकलाप चलता रहा। वह आलोचना और प्रचार कार्य में लगा रहा। वह 'ममवापीन' पत्र के सहयोगी संकल में हो गया किमका गवारन मंत्रागाव था। इसमें काम करन हुए उसने कई महत्वपूर्ण साहित्यिक एवं आलोचनात्मक लेख लिखे जिसमें उसने अपने प्रबन्ध के निदानों की स्थापना की।

आलोचनात्मक विमोचक के रूप में उनका उन की शक्तियों का स्थापना किया आ दन मरिच के बाद से परिपूर्ण थी और जिसमें निरनुप दान प्रया का विराप था। उसने सोवियत की प्रतिभा को ली लत किया। घरने लण द्वारा (प्रतीरी दान नहीं है) अन्धकार की महामता की उपा

सांख्यिकोपदेशिका की व्यंग्य प्रतिमा की भीर लोगों का ध्यान बाक्युष्ट किया। उद्यने प्रगतिशील लेखकों की कृतियों का आन्तिकारी प्रचार में उपयोग किया। वह प्रगतिशील मुद्रक वर्ग का अत्यन्त लोकप्रिय सेवक बन गया।

किन्तु ज्यों-ज्यों उसकी लोकप्रियता बढ़ती गयी वह जार सरकार की मर्दों में लटकने लगा। उसका आन्तिक का कार्य बग़ावत चल रहा था और वह कई पुस्तक आन्तिकारी सभाओं का संचालन करता था तथा आन्तिक का आह्वान करते हुए सेंट और मैग्निफ़ेस्टो लिखा करता था।

### गिरफ्तारी

सन् १८६२ में वह गिरफ्तार कर लिया गया। प्रमाण के अभाव में भी उस पर दो वर्ष तक मुकदमा चलता रहा और उसे बीसह छान का कठिन परिश्रम और साइबेरिया-निर्वासन का दण्ड मिला। निर्वासन के पहले उसे आम बग़ह पर सजा सुनायी गई और नागरिक अधिकारों से वंचित करके रूस भेजा गया। उसे एक तम्बे पर सजा किया गया। तम्बे से बाँधा गया और गले में लकड़ी लटकवाई परी बिस पर सिखा था 'सरकारी अपराधी'। बेनिचोव्स्की को जुने नाम बचील करने के लिए जार सरकार ने यह स्वायत्त रखा और यह सब किया। किन्तु जनता ने अपने प्रिय व्यक्ति को अत्याचारों से बचाने की भीर उस पर चारों ओर से फूलों की वर्षा होने लगी। लकड़ा फूलों से भर गया और पुकिन ने बेनिचोव्स्की को जस्टी से वहाँ से हटा दिया।

### निर्वासन का जीवन

ताना में उद्यने परिश्रम के कठिन सात वर्ष बिताए। कठोर परिस्थिति के बीच भी उसका साहित्यिक कार्यकलाप चलता रहा। गिरफ्तार होने पर उसने अपना उपन्यास 'व्या किया जाय' चार महीने में समाप्त किया। उद्यने सज़ेरे बाल से कहानियाँ 'उपीइपाठ' और 'सावी' लिखा। उसका सब कृतियाँ लोगों की न प्राप्त हो सकी क्योंकि तानापी के मय से उद्यने स्वयं कई कृतियों की नष्ट कर दिया।

कठिन परिश्रम के बाद भी अरबि समाप्त होने पर भी उसे सच में

जाने की आशा न मिली और उस यात्रायात्रे में दिया गया। प्रतिकूल जलवायु और परिस्थितियों में उसका स्वास्थ्य नष्ट कर दिया। अन्त में जन १८८० में उसे मंगलाचरण नाम लोहन की आशा मिली। अक्टूबर १८८९ में उसकी मृत्यु हो गयी।

क्या किया जाय

उसका उत्थान क्या किया जाय बड़ा ही लोकप्रिय हुआ और सब में बहुत 'समझौत' कर म मन् १८९१ में छटा। इसे प्रतिपत्स्की के अरनी पिग्गारी के बीच चार महीने में लिग बाता। इस उपन्यास में लेखक ने बताया कि देग और जनता की सेवा करते हुए लोगों को कैसे जीना चाहिए। इसमें नये लोगों की आशा और आशावादी का चित्र है और जीवन के नये आदर्शों के लिए सपर्य है।

नये लोगों का चित्रण क्रिमानाथ लक्ष्मण और वेरापाप्पान्ना के माध्यम से हुआ है। ये लोग मन् १० के उमाने के स्वतंत्र विचारों के संवाहक और नयी सामाजिक शक्ति के प्रतिनिधि हैं। इन सामान्य लोगों का बोध अन्तिकारी मुद्रक वर्ग के नेता गगमनाथ का विनिष्ट स्थापन है। इसके माय ही इस उपन्यास में पुराने विचारवादाओं का भी चित्रण हुआ है।

क्रिमानाथ और लक्ष्मण सामान्य जनता के व्यक्ति हैं जो ईमानदार हैं और अपने स्वयंसाधन के लिए नहीं बरन् जनता की सेवा के लिए परिश्रम करते हैं। लखन का कहना है कि 'नये लोग को ऐसा ही होना चाहिए।

इसकी मायिका वेरापाप्पान्ना भी नये लोगों में है। वह बुद्ध और राजा है। अपनी माता द्वारा निर्मित व्यक्ति का न स्वीकार कर वह लक्ष्मण से प्रेम करती है। वह श्रिया की शिखा और मुयाग का नाम करती है और श्रियों की श्रमश्रमा और समानाधिकार के लिए सपर्य करती है। वह परिश्रमातीला है और बाड़ी सम्य समान्य सेवा में लगती है।

प्रतिपत्स्की का कहना है कि सब लोगों में युक्त होते हुए भी ये



‘नये ज्ञान’ अन्तर्धारण व्यक्ति न होकर सामान्य व्यक्ति ही हैं और जो चाहे वही ऐसा बन सकता है।

कान्तिकारी रसमेतोज का चित्र चित्रित है। बेनिरोव्स्की कहता है कि भविष्य का मार्ग कान्ति के बीच से ही गया है और कान्तिकारी को नेता रूप में जीवन का सर्व-निर्माता बनना होगा। रसमेतोज के जीवन का लक्ष्य कान्ति है और वह बुद्धता के साथ कान्ति द्वारा कान्ति हस्तगत करने के लिए अपने को तैयार करता है। ‘भये लोपों’ और रसमेतोज के चित्रण द्वारा बेनिरोव्स्की ने प्रयत्नशील स्त्री बुद्धको को कान्तिकारी बनना सिखाया।

‘बेटापाण्डोना’ के स्वप्न क माध्यम से क्लेशक भविष्य के समाज और जीवन का चित्र प्रस्तुत करता है जिसमें सभी लोग प्रसन्न हैं और उनके समानाधिकार हैं। बेनिरोव्स्की कहता है कि ‘भविष्य सुन्दर है और उज्ज्वल है। इससे प्यार करो। इसकी ओर बढ़ो। इसे निकट लाओ और हममें से बिलना वर्तमान में आ सकते हो के जाओ। भविष्य के आकषक चित्रण ने लोपों को कान्ति के लिए संघर्ष करने को प्रेरित किया और समाज के कान्तिकारी पुनर्निर्माण की प्रेरणा दी।

इस उपन्यास में चित्रण के विशेषतया स्थावर वस्तु के प्रयत्नशील सीमों को बहुत प्रभावित किया। अपनी ओर से बहुत कुछ कहने के साथ साथ लेखक संसार में बचने के लिए अयोक्तृत्वपूर्ण माया और सांकेतिक माया का भी प्रयोग करता है। उपन्यास में व्यंग्य की भी कमी नहीं है।

स्त्री साहित्य में कान्तिकारी विचारों के व्यापकात् रूप में बेनिरोव्स्की का बहुत बड़ा महत्त्व है। उसकी कलात्मक कृतियों तथा साहित्यिक आलोचनात्मक कर्मों ने स्त्री कला विशेषतया चित्रकला के विकास को बहुत अधिक प्रभावित किया।

बेटा हित बेनिरोव्स्की के जीवन का सर्वोच्च आदर्श था। उसने सिखा अपने देश की शक्ति नहीं बनूँ, धारणत प्रतिष्ठा में और मानवता के कल्याण में सहायता देने से ऊँचा और स्पृहणीय नाम धीर क्या हो सकता है? कान्ति और बेटा हित के लिए बेनिरोव्स्की ने अपनी पूरी प्रतिभा, सारी शक्ति और अपना सारा जीवन समर्पित कर दिया।

## ५. सेव निकेलाएविच तोल्स्तोय

[ १८२८-१९१० ]

### बचपन

तोल्स्तोय का जन्म मई १८२८ में ९ दिगम्बर की घासघासस्थाना में एक अग्रिवाण परिवार में हुआ। वह दा बर्ग का मीम हुआ था कि उसके माँ की मृत्यु हो गई और गो पर्य की व्यवस्था में उसके रिवा परमाह भिषारे। इसके परधान् पूरा तोल्स्तोय परिवार बचान बना गया।

मानहु बर्ग का तोल्स्तोय आरम्भ में बचान बिबदियालय के प्राप्य प्राया बिबान में दाखिल हुआ। बिन्दु पढ़ाई कुछ अरिब पमंद न जाने के कारण इतनु के बिभाग में पढ़ने लगा। इमो समय में तोल्स्तोय जीवन के सबीर प्रता का मनन करने लगा है और मैनिव पूर्णता का जीवन की बिबिवाय आवरचना मानकर बचन को बिगल जीवन तथा उच्च परिवार की परंपरा नु मबया ज्ञान कर मबया मये रास्ते पर चलन की बागिना करने लगा।

### आरम्भिक जीवन

१८४७ में उमने बचान बिबदियालय छोड़ा। उमी समय भारपों क बीब रायणा का बीबारा हुआ और घासघासस्थाना का इलाहा उमके हिम्मे में आया। बिबदियालय छाडकर वह अरती उमीगरी म मा गया और बचान मबामन तथा इतानु उमीदार बनन का मय बनन मापनर रगा। घासघासस्थाना में जाने हुए वह मय इतिहास मुपेन रिनेनी मायार्ड, इति इतम्पा मपेन आदि के मध्यन म लगा। उमने बणा के मबय में लग लिग। उमयम रचना का बिचार रिना। इतनु का मयन रिना और रिमाता की दणा मुयानन की योजना बनायी।

उसके इन सब कार्यों का आरम्भ तो हो गया किन्तु इनका अन्त तक निर्वाह न हो सका।

इसके बाद वह कबकाब चला गया और कबार्का के बीच रहने लगा। इनके बीच उसकी आर्थिक स्थिति मिठी और उमने साहित्यिक कार्य शुरू करने का निश्चय किया। शीघ्र ही वह सैनिक कारखाने के तोपखाने में नौकरी करने लगा। कबकाब के जीवन और सैनिक नौकरी में उसे और भी जनता के अधिक निकट का दिया जिससे उसे साहित्यिक सर्वनाम के लिए बड़ी सामग्री मिली।

### सम पचास के वर्षों की साहित्यिक सर्वनाम

उसका पहला साहित्यिक कार्य उसकी आरम्भवा 'वचन' है जो 'समकाशीन' पत्र में सन् १८५२ में छपी और जिसकी काफ़ी प्रशंसा हुई। उस कफ़लता में प्रेरणा पाकर उसने 'कीमार्यावल्या' तथा 'जबानी' लिखी जो एक प्रकार से प्रथम कृति का ही क्रमिक विकास है।

### आरम्भकारमक वर्षी

इस वर्षी का मुख्य पात्र निकोलेका इस्तेनियेव है जो एक प्रकार से तोस्तोय का ही अन्तर्गत है। तोस्तोय के समान इस भी मनुष्य की मार्बकता जीवन के लक्ष्य सैथिक कर्तव्य आदि के प्रथम जीवन के आरम्भ में ही उद्दिष्ट करने लमते हैं। सैथिक पुण्यता की प्राप्ति का प्रयत्न जो कि निकोलेका की विनिष्टता है, तोस्तोय की आगामी कृतियों में और भी व्यापकता में अभिव्यजित हुआ है। निकोलेका अभिजात वर्ग की शिला शीघ्रा और बातावरण में पलकर भी तोस्तोय के समान ही अभिजात वर्ग से दूर चला जाता है।

वह 'वर्षी' हमें अभिजात वर्ग के रहन-सहन से परिचित कराती है और हमें तोस्तोय के आर्थिक विकास का समझने में सहायता देती है। कलरमक कृति के रूप में रूसी साहित्य के बीच इस 'वर्षी' का महत्वपूर्ण स्थान है।

कबकाब के निवास में उसे सैनिक जीवन के चित्रण का अवसर प्रदान

दिया। 'आक्रमण' तथा 'जंगल का बाटना' एसी ही कहानियाँ हैं। १८५३ में क्रोमिया के युद्ध के युद्ध हाने पर उसने इस युद्ध में सक्रिय भाग लेने का निश्चय किया और मेवास्तारोल भेजा गया जो कि युद्ध के समाप्त होने से के एक था। मेवास्तारोल के युद्ध के अनुभव के आधार पर उसने १८५५ में 'दिप्रिन्सिपल म प्रिन्सिपल' 'मई म मेवास्तारोल' और अगस्त में मेवास्तारोल कहानियाँ लिखीं।

'मेवास्तारोल' कहानियाँ कभी तथा ब्रिटिश-साहित्य में बड़ी महत्त्वपूर्ण हैं क्योंकि तोम्प्लाय ने पहल युद्ध का एसा मध्या वर्णन किया ने नहीं प्रस्तुत किया था। तोम्प्लाय ने सबसे पहल इन कहानियाँ में युद्ध की चरित्रना बीमम्पला तथा उसके कष्टों का उपानय्य बचन प्रस्तुत किया। उन कहानियों में मेवास्तारोल की रणों के माहमयुग द्वारा का बचन है जिनमें कि बीरों ने स्थिति रला के लिए अपने प्राणों का आर्पण दी।

सन् १८५६ में तोम्प्लाय की प्राथमिक कृति 'बचन' और 'बीमार्यावस्था' तथा 'युद्ध की कहानियाँ' के अलग-अलग संस्करण प्रकाशित हुए। बेनिगम्प्लाय के इन कृति का स्वागत किया और तोम्प्लाय की प्रतिभा की विनेयता बताने हुए अपने मन में लिखा कि 'हम अविष्यवानी करत हैं कि अथ तब जा पात्र तोम्प्लाय ने हमारे साहित्य की दिया है यह उमरा बचाना मात्र है जो कि बहुत बाद में मारत करेगा। सिता समुद्र और सिता मुम्पल यद् बचाना है। बेनिगम्प्लाय की यह अविष्यवानी एतदम मथ निरकी।

### 'जमींदार का सचरा'

सन् १८५६ में उसने 'जमींदार का सचरा' लिखा। इसमें मेम्प्लाय के मन में अथ तोम्प्लाय का ही जोरत है जब कि यह सिता-सिधान्त छाटकर सास्वतारोल्याना में बच गया था। मेम्प्लाय सिमाना का जीवन सुधारने के लिए अविष्यवानी करत थे प्रयत्न करना है और उनसे लिए रहल तथा अम्पला बचाना है सिन्धु सिमाना की महानुक्ति उमे प्राप्त नहीं होती और ब उमरा बचाना करी करने। यह कहानी में

कृषक जीवन के प्रति सेसक की सहृदय रीति और किसानों के मानस का यथातथ्य चित्रण है।

### अध्यापन कार्य

सन् १८५७ में तोस्तोय ने बिसेस की यात्रा की जिसका उस पर बड़ा गंभीर प्रभाव पड़ा। वहाँ से लौटकर वह किसानों के सर्वाधिक निकट जाने का प्रयत्न किया है। उसका यह विश्वास था कि किसानों के जीवन के सुधारने का सर्वोत्तम साधन शिक्षा है और इस उद्देश्य से १८५९ में वास्नवापास्वाना में किसानों के बच्चों के लिए स्कूल स्थापित करता है और स्वयं अध्यापन कार्य करता है।

सन् १८६१ के सुधार के पहले ही तोस्तोय ने अपने किसानों को मुक्त करने की योजना बना ली थी। १८६१ के सुधार के बाद किसानों के काम के लिए वह जमींदारों और किसानों के बीच के झगड़ों को तय कर देनेवाली कमेटी का निर्णायक बन गया। निर्णायक के रूप में तोस्तोय ने किसानों का पक्ष लिया जिससे जमींदार उसने बहुत असंतुष्ट हो गये।

स्कूल तथा निर्णायक के कार्य-कलाप ने तोस्तोय को जनता के और भी निकट ला दिया और उसे जनहित को समझने में बड़ी सहायता दी। कदाकी

सन् साठ के वर्षों में उड़ने कबाकी' और 'पोलिन्सका कथाएँ' पूरी की और बुद्ध और शांति उपन्यास की रचना म ल्या। 'कबाकी' कहानी में कबाकों के जीवन का चित्रण हुआ है। ये कबाक बड़े सारे माल हैं और इनके जीवन और मन में कोई अटिक्ला नहीं है। उच्च समाज का ओज्जेनिन घोरपुत्र की दुनियाँ से बक कर कबाक आता है, वहाँ के किसानों से मिलता-जुलता है वहाँ की प्रकृति से मानसित होता है फिर भी उस शांति नहीं मिलती। तोस्तोय हमके द्वारा यह प्रकट करता पाहता है कि अज्ञानि के माहर्ष्य द्वारा उन व्यक्ति में मजजीवन का संचार नहीं किया जा सकता जो कि उच्चिम समाज द्वारा बिगड़ चुका है।

## युद्ध और शांति

१८६३-१८६९ में तोस्तोय ने बिदब-साहित्य की अत्यन्त वृद्धि 'युद्ध और शांति' प्रस्तुत की।

'युद्ध और शांति' उपन्यास में उन्नीसवीं शती के प्रथम दो दशकों के रूसी जीवन का अत्यन्त बिदब बिच प्रस्तुत किया गया है। यद्यपि उपन्यास के आरम्भिक अध्यायों में आर के यूरोपीय (१८०५-१८०७) युद्ध का बिस्तार से वर्णन किया गया है फिर भी उपन्यास का मुख्य आकषण केन्द्र सन् १८१२ का निपोलियन का आक्रमण और रूसी युद्ध है। युद्ध के दुःखों के माप-माप इसमें शांतिमय जीवन के भी अनेक बिच हैं जिनका बिधान तोस्तोय द्वारा संपूर्ण बिदब ऐतिहासिक सामग्री के आधार पर और मास्कोपोल्याना के लेणक के जीवन तथा आताबरण के आधार पर तथा मास्को और पीतरबुर्ग के राजधानी के जीवन के आधार पर किया गया है।

## सामान्य जनता

इस उपन्यास में सामान्य जनता का ऐतिहासिक घटनाओं की प्रधान तथा निष्पक्षपरमक बिच के रूप में बिबित किया गया है। इसमें प्रकृत क्रिया गया है कि निपोलियन ने युद्ध के बीच रूसी जनता में रोग भक्ति का बिग प्रकार उभार हुआ और उनमें अनेक अपूर्व माहम एवं दुःखों का परिचय दिया। राजकुंरी का कष्ट करने के लिए जनता ने छापाकार टॉलिया बनाई। लेणक ने इस उपन्यास में इन छापाकार टॉलिया के बाय-आभाय का जनता के स्वरूप रखा के जन-आन्दोलन के रूप में बिबित किया है। इस प्रकार सामान्य जनता का बिचन करने हुए लेणक ने उनके माहम दुःखों के भक्ति आदि सामान्य बिबिष्टताओं का बराबर बिचन किया है।

## कुतुम्सोव

गैनागि कुतुमोव इस युद्ध का मुख्य मंचालता है। लेणक ने उसे बहुत बड़ रोग भक्त और बुद्धिमान मंचा के रूप में बिबित किया है। यह घटनाओं की गतिबिधि को ठीक-ठीक मंचालता है और तदनुसार अनेक नये रूपों के मंचालन करने की गति रचता है। यह जानता है कि वह मंचालता

कृषक जीवन के प्रति लेखक की पहली रचि और किताबों के मातल का यथातम्य बंकरन है।

### अध्यापन कार्य

सन् १८५७ में तोस्तोय ने बिदेस की यात्रा की जिसका पल पर बड़ा गमीर प्रभाव पड़ा। वहाँ से लौटकर वह किसानों के अधिकाधिक निकट जाने का प्रयत्न किया है। उसका यह विश्वास था कि किसानों के जीवन के सुधारने का सर्वोत्तम साधन शिक्षा है और इस उद्देश्य से १८५९ में यास्नवापोस्त्राना में किसानों के बच्चों के लिए स्कूल स्थापित करता है और स्वयं अध्यापन कार्य करता है।

सन् १८६१ के सुधार के पहले ही तोस्तोय ने अपने किसानों को मुक्त करने की योजना बना ली थी। १८६१ के सुधार के बाद किसानों के लाभ के लिए वह जमींदारों और किसानों के बीच के जनता को लय करानेवासी कमेटी का निर्वाहक बन गया। निर्वाहक के रूप में तोस्तोय ने किसानों का पल लिया जिससे जमींदार समझे बहुत असंतुष्ट हो गये।

स्कूल तथा निगमिक के कार्य-कलाप ने तोस्तोय की जनता के और भी निकट ला दिया और उसे जनहित को समझने में बड़ी सहायता दी।

सन् १८६४ के वर्षों में उसने 'कजाकी' और 'पोलिस्त्रका कबाएँ' पूरी की और 'सुद और घाति' उपन्यास की रचना म लया। 'कजाकी' कहानी में कजाकी के जीवन का चित्रण हुआ है। ये कजाक बड़े धारे लोग हैं और इनके जीवन और मन में कोई अटिस्ता नहीं है। उच्च समाज का ओलेनिन घोरबुल की दुनियाँ से बकर कर कबकाज खाता है वहाँ के किसानों से मिलता-जुलता है वहाँ की प्रकृति से भाग्यित होता है फिर भी उसे घाति नहीं मिलती। तोस्तोय इनके द्वारा यह प्रकट करता चाहता है कि प्रकृति के माहुर्य द्वारा उस व्यक्ति में नवजीवन का संचार नहीं किया जा सकता जो कि दुर्भिम नमाज द्वारा बिगड़ जाता है।

## युद्ध और शांति

१८६३-१८६९ में तोस्तोय ने विश्व-साहित्य की अन्यतम इति 'युद्ध और शांति' प्रस्तुत की।

'युद्ध और शांति' उपन्यास में उन्नीसवीं शती के प्रथम दो दशकों के रूसी जीवन का अत्यन्त विद्युत् चित्र प्रस्तुत किया गया है। यद्यपि उपन्यास के आरम्भिक अध्यायों में पार के यूरोपीय (१८०५-१८०७) युद्ध का विस्तार से वर्णन किया गया है फिर भी उपन्यास का मुख्य आकर्षण केन्द्र सन् १८१२ का नेपोलियन का आक्रमण और रूसी युद्ध है। युद्ध के दृश्यों के साथ-साथ इसमें शांतिमय जीवन का भी अनेक चित्र हैं जिनका विधान तोस्तोय द्वारा संपूर्ण विद्यालय ऐतिहासिक सामग्री के आधार पर और यास्नयापोल्याना के सेवक के जीवन तथा बाताबरग के आधार पर तथा मास्को और पीतरबुर्ग के राजधानी के जीवन के आधार पर किया गया है।

### सामान्य जनता

इस उपन्यास में सामान्य जनता को ऐतिहासिक घटनाओं की प्रभाव तथा निरक्षरताएँ चित्रित के रूप में चित्रित किया गया है। इसमें प्रदर्शित किया गया है कि नेपोलियन से युद्ध के बीच रूसी जनता में देश-भक्ति का किस प्रकार उदय हुआ और उसने अपने अपूर्व साहस एवं दृढ़ता का परिचय दिया सत्रुओं को मष्ट करने के लिए जनता ने छापामार टोलियाँ बनाईं। केवल ने इस उपन्यास में इन छापामार टोलियों के कार्य-रूप को जनता के स्वदेश रक्षा के जन-आन्दोलन के रूप में चित्रित किया है। इस प्रकार सामान्य जनता का चित्रण करते हुए सेवक ने उसके साहस वृद्धता देना भक्ति भाँति सामान्य विशिष्टताओं का बराबर चित्रण किया है।

### कुतुम्बोव

सेनापति कुतुम्बोव इस युद्ध का मुख्य संभाषक है। सेवक ने उसे बहुत बड़े पैमाने पर और बुद्धिमान नेता के रूप में चित्रित किया है। वह घटनाओं की गतिविधि को ठीक-ठीक समझता है और तदनुसार अपने को इसके अनुकूल बनाने की शक्ति रखता है। वह जानता है कि कब लड़ना



चाहिए और सब हट जाना चाहिए। और हटने में अपनी मान-हानि नहीं समझता। ठोन्स्टाय ने उसे युद्ध-कला के आचार्य के रूप में चिन्हित किया है। युद्ध-मन्त्रियों के बखतर पर मास्की छोड़ देने और सेना को पीछे हटने की आज्ञा देने की शक्ति उसी में है जब कि सब सेनानी उसके इस मत के विरुद्ध हैं। वह निर्भीक है और बार के सामने अपनी सम्पत्ति निस्संकोच प्रकट करता है। युद्ध के ब्याप्तक क्षणों में भी वह सैनिकों से हँसकर बोलता है और उनको प्रोत्साहित करता है। कुतूहल की शक्ति सेना तथा जनता के साथ उसकी एकता में है। इसीलिए एक ओर वहाँ वह सेना का संभालन करता है वहाँ जनता की छापामार टोसियों का भी समर्पन करता है।

बमिजात बर्ग के चित्रण में वह बसीबी कुरीगिन जैसे अचरबाचियों का गण रूप भी प्रस्तुत करता है जिनमें रैम शक्ति का मेरमान भी नहीं है और उच्च बिचारवाले रस्तोव तथा बलकोन्स्की-परिवार का भी अंकन करता है जो विभिन्न मिष्ट और सिद्धान्तवादी हैं। बमिजात बर्ग के दो व्यक्ति—अर्न्स्ट बलकोन्स्की और रिपोर बबूबाब—का उपन्यास में विशेष रूप से चित्रण हुआ है।

### अर्न्स्ट बलकोन्स्की

अर्न्स्ट बलकोन्स्की उच्च बिचारों का व्यक्ति है। तत्कालित उच्च समाज में उसे भ्रमण और शर्म ही दिखाई पड़ता है और वह हम समाज के जीवन से कूटकारा चाहता है, किन्तु बमिजात बर्ग के संस्कारों के कारण इससे मुक्त नहीं हो पाता। उसका जीवन सौम्य का जीवन है और उत्पन्न पतन तथा किस बहुमात्र और निराशा का जीवन है। पहले वह यश और कीर्ति का इच्छुक था किन्तु आस्टरलिन के मूख ने हम यश का गण रूप उसके सामने प्रस्तुत कर दिया और अब उसे इनकी भी इच्छा न रही। निराशा उसके जीवन में घर कर गई है और उसे अपने जीवन में आनंद की कोई भाँगा नहीं है। वह किसी के काम में बिना व्याबाध जाने किसी प्रकार जीवन के दिग् बिताना चाहता है, किन्तु सहानुभूति रस्तोवा के प्रति प्रेम जग पड़ने के कारण उसके लिए जीवन में फिर आकर्षण आ

जाता है, किन्तु यह आश्चर्यजनक अधिक समय तक न रह सका क्योंकि नताशा दूसरे व्यक्ति यनातोषी के प्रति आकृष्ट हो गयी। अब युद्ध की घटनाएँ उसमें जीवन आगती हैं। सामान्य रूपी संनिकों के साथ रहने पर अन्त में उसकी समझ में आता है कि जीवन की सार्थकता बनता की सेवा और उसने प्रेम करने में ही है। बोरोदिनों के युद्ध में अन्दीह बुरी तरह घायल हुआ। मृत्यु से कुछ दिन पहले वह इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि जीवन की सार्थकता प्रेम में है—अपने निकट के लोगों से प्रेम करने में और अपने शत्रुओं से भी प्रेम करने में। इस समय उसके हृदय में उस यनातोषी के प्रति भी विरोध न था जिसने कि उसके जीवन के व्यक्तिगत आनन्द को नष्ट कर दिया था।

अन्दीह बस्कोन्स्की के माध्यम से तोस्तोय ने क्षमा अहिंसा और आत्मिक प्रेम के अपने आदर्श की अभिव्यंजना की है। अन्दीह बस्कोन्स्की तोस्तोय के ही क्षमा क्षमा अहिंसा और प्रेम के आदर्शों का अनुयायी बन जाता है।

### पियोर बेजूखोव

उपन्यास का एक अन्य पात्र पियोर बेजूखोव का भी इन्हीं सिद्धान्तों में विश्वास है। इस आरम्भ में वह उच्च वर्ग के राम रंग के जीवन में व्यस्त रहता है किन्तु बाद में वह इनसे ऊब जाता है और उपकार, धर्म रोमांटिक प्रेम आदि में जीवन का सच्चा अर्थ ढूँढता है। युद्ध की घटनाएँ उसके जीवन में भी परिवर्तन लाती हैं। यह युद्ध के बाद नेपोलियन की हत्या करने के लिए मास्को में ही रह जाता है। वह बाद में बंदी हो जाता है और सामान्य रूपी प्लेन कराराठायेश के संघर्ष में जाता है। उसके सहवास में धीरे-धीरे उसकी आत्मा से सदेह का बोझ हटता है और उसे स्पष्ट हो जाता है कि जीवन की सार्थकता प्रेम हिंसा द्वारा बुराई के विरोध न करने और अपने ही भाग्य के अधीन कर देने में है।

अपने एक पत्र में तोस्तोय ने लिखा 'अत्यन्त चिन्ता परिधम, संघर्ष त्याग—ये अनिवार्य परिस्थितियाँ हैं। जिनसे एक सेकेंड के लिए भी एक भी आदमी को छूटकारा पाने की बात न सोचनी चाहिए।'

अग्नि गत्यारम्भता के बीच तथा विकासशील दिखाया गया है।

प्रकृति का विचलन भी पाशों के अनुक्रम हुआ और उपन्यास के प्राकृतिक दृश्य पाशों के मनोभाव और अनुभूतियों के संप्रदाय में सहामता करते हैं। उबाहरणतः बसन्त का विचलन अन्दीह केरस्तोवो के यहाँ जाने के समय को बार हुआ है। पहली बार तो उससे उनकी निराशा बिखरती है और दूसरी बार बसन्त का विचलन अन्दीह की आभावादिता पर और देता है।

तोस्तोय का उपन्यास अपनी समाधिष्ट विषय वस्तु की व्यापकता और विशिष्टता के कारण सर्वदा नया साहित्यिक रूप प्राप्त करता है जिसे 'उपन्यास महाकाव्य' कहते हैं जिसमें ऐतिहासिक शरीर की अनेक सामाजिक अभिव्यक्तियाँ का संकीर्ण उद्घाटन हुआ है और जिसने रूसी जीवन का अनेक रूपारम्भ तथा बहुपक्षी विचलन उच्च नैतिकता तथा वातावरण के साथ समन्वित है। इसी से 'युद्ध और शांति' का जातीय तथा विश्वारम्भक महत्त्व है। युद्ध और शांति रूस की जातीय साहित्यिक कृति है।

सन् ७०-९० के वर्षों में उसकी सर्जना

सन् सत्तर के वर्षों में उसकी सर्जना में उसके दुष्टिकोम की विषमता और भी तीव्र तथा स्पष्ट हो जाती है। उसने स्पष्टतया जान लिया था कि इस के सामाजिक जीवन में अब अभिजात वर्ग की प्रभुता और प्रभुता मष्ट हो रही है और बुर्जुआ वर्ग सामाजिक उत्तराधिकारी के रूप में सामने आ रहा है। अभिजात वर्ग के जीवन में अब उसे सार्थकता नहीं दिखाई पड़ती थी क्योंकि इस वर्ग का जीवन नैतिक सामाजिक हूर दृष्टि काच से ह्वानर्पात था। इसके साथ ही उस बुर्जुआ विकास में भी रूस के लिए कोई अन्धकार नहीं दिखाई पड़ रहा था। वह तो बुर्जुआ विकास को सामान्य जनता के लिए बहुत बड़ा खतरा समझता था। क्योंकि उसकी दृष्टि में वह मानवीय व्यक्तित्व को नैतिक ह्वाम की ओर ल जा रहा है। इसलिए वह अभिजात वर्ग और बुर्जुआ वर्ग दोनों की आत्माचना करता है। तीस्तोय नैतिक आरम्भिक विकास की निगा देता है और किसानों के विनूत्तारम्भक व्यक्तित्व को आदर्श जीवन के रूप में प्रह्वन करता है। और

इन्हीं के द्वारा बहु अपने मुग की बुराइयों का निराकरण संभव समझता है। परियम में बहु मनुष्य का भाग बखता है और परोपकारियों प्रमुखता पावन तथा पावन के सबक रूप में अधिकृत चर्च की आलोचना करता है। तोस्तोय परियमहीन जनता के बीरमी निकट आने का प्रयत्न करता है और उनके जीवन में घुल-मिल जाना चाहता है।

### भ्रमा करनिना

भ्रमा करनिना' उपन्यास में इन्हीं विषयसामग्रियों का चित्रण हुआ है। इसमें एक क मनु को उद्वेगित करनेवाके समकालीनता के सभी प्रदल प्रस्तुत किये गए हैं। इस उपन्यास के लेखन में उसे पाँच बय लगे।

इस उपन्यास की प्रथम पायिका भ्रमा करनिना है जिसका उम अनिवाह बर्ग के बातावरण में असामंजस्य हो जाता है जिनमें कि उमका पन्म हुआ है और जिनमें बहु पत्नी है। भ्रमा को अपने पति से प्यार नहीं है और वह जोन्की से प्यार करता है और उसी में उसे जीवन की खुशी प्राप्त होती है। उच्च समाज द्वारा परित्यक्ता और अपने प्रिय पुत्र से पबररस्ती भ्रम की हुई भ्रमा अत्यन्त व्यथित है और उदात्त की कोणित करती है। हर प्रकार स तिरस्कृत और असफल हान के कारण तथा किसी से सहानुभूति न प्राप्त कर सकन के कारण वह नारमहत्या कर लती है।

गृहीत जीवन और बर्कूमा मस्तिष्क की आलोचना करते हुए तोस्तोय ने इस उपन्यास में बड़ी सहानुभूति के साथ पितृसत्तात्मक जीवन का चित्रण किया है क्योंकि उसमें उमका विरहाम वा और उमका बही आशय वा तथा बहु इसी का जनता की रखा और सुभार का साधन समझता वा। इसी से उमने भ्रमा करनिना के समाज के लोगों का जीवन विच्छन्न और मोलका दिनाया है और उनके परिवारों को विश्रुंखलन चिभित किया है और इसके विपरीत लेखन का जीवन आनन्दमय दिनाया है। उसे जनन पारिवारिक जीवन में आनन्द की प्राप्ति होती है यद्यपि उसकी आत्मा जीवन की सार्वकता की लोभ में व्यस्त है। किसानों के अधिकारिक निकट आते हुए और उनके परिपत्रपूर्ण जीवन में हिस्सा लेते हुए बहु

वित्पुस्तकार्थक रूपक व्यवस्था से संयुक्त हो जाता है और इसमें आर्थिक शक्ति प्राप्त करता है।

तोस्तोय अभिजात वर्ष और बुर्जुआ दोनों की आलोचना करता है किन्तु जानता है कि सामाजिक शक्ति के रूप में अब बुर्जुआ प्रबल हो रहा है और अब वही जीवन का मार्गिक है। रिबोनिन के रूप में तोस्तोय ने जीवन के इसी नवीन मार्गिक की प्रस्तुत किया है। लेखक के मतानुसार रिबोनिन और उसके साथी परिश्रमशील रूपकों की और भी लक्ष्य कर रहे हैं।

१८८१ में तोस्तोय परिवार के साथ मास्को आ गया। मास्को की जन जनता में हिस्सा लेते हुए उसने परिश्रमशील जनता की ओर घृणी की ओर ललित किया किन्तु शक्तिकारी सभ्यता की जगह उसने नैतिक आत्म-सुधार की ही इस न्याय के निराकरण का साधन माना।

इन वर्षों में उसकी कृतियों में 'हिंसा द्वारा बुराई के अन्वेषण का मार्ग' और भी प्रबल हो जाता है और न्यायपूर्ण सामाजिक व्यवस्था के निर्माण के लिए सभ्यता का रास्ता न जाननेवाली जनता की निराशा की भावना और भी तीव्र तथा गहरी हो जाती है। तोस्तोय समझता है कि मुद्रा बर्तीत में वित्पुस्तकार्थक जीवन की परिस्थितियों में सामान्य जनता का जीवन बुर्जुआ समाज के बीच पनपते हुए उसके जीवन से कहीं अधिक अच्छा था। इसी से समाजशास्त्रीय समस्याओं के समाधान के रूप में बराबर नैतिक पूर्णता या नैतिक आत्मसुधार और वित्पुस्तकार्थक जीवन की आशा व्यवस्था पर और देता रहा और उसने अपने समय के शक्तिकारी विचारों को नहीं छोड़ा किया। उसकी मूर्तना के आरम्भ में उसकी कृतियों में बुद्धिबोध का जो वैयर्थ्य ललित होता है वह इन वर्षों में और भी तीव्र तथा तीव्र हो जाता है।

### पुनर्जन्म

उसकी बुर्जुआ व्यवस्था की आलोचना का निरर्थक उमका उप मास 'पुनर्जन्म' है जिसे कि उसने १८८९ में शुरू किया और कई व्यवधानों के बीच इस वर्ष में पूरा किया। तोस्तोय की यह कृति उसीसही घटी

के शब्द के आलोचनात्मक समीक्षावाद की श्रेष्ठ कृति मानी जाती है। इसमें स्त्री समाज के विभिन्न स्तरों और वर्गों के जीवन का चित्र प्रस्तुत किया गया है।

अपभ्रंस के क्षेत्र में राजकुमार मेस्स्यूबोध और कल्पूषा मास्कोवा (सामान्य लड़की) हैं। स्वायालय में वह अग्निपुत्र के रूप में लड़ी कल्पूषा की पहचानता है जो कि उसके दिलबहाव का विकार बन चुकी है और उसकी आत्मा पश्चात्ताप करने लगती है। इस अग्रणी स्त्री के प्रति किये गये अपने पाप के प्रभासन का प्रयत्न करता हुआ उसका 'पुनर्जन्म' होता है। वह अपने सामाजिक निषेधाधिकारों का छोड़ देता है अपनी अमीन किरानों की पट्टे पर उठा देता है और बाद में इस अमीन से अपना अधिकार त्याग देता है। इस प्रकार वह इस निष्कर्ष पर पहुँचती है कि यशुधर का मानस निकटवर्तियों से प्रेम में है। सब को क्षमा करने में है, तथा ईश्वरीय इच्छा के अविरोध में है।

कल्पूषा में भी लड़ी मानसिक इतलपल है। मेस्स्यूबोध द्वारा प्रवर्धित होकर वह इस निष्कर्ष पर पहुँचती है कि ईश्वर के द्वारे में जो कुछ कहा जाता है वह सब केवल इसलिए कि लोगों को बोझ दिया जाय। उसका 'अच्छाई' या 'मसाई' से विश्वास उठ जाता है। थोड़े समय के अन्दर उसकी आत्मा कुटिल हो जाती है किन्तु फिर धर्म-धर्म उसके अन्तर में जो कुछ 'अच्छा' कहा है उसका पुनर्जन्म होता है और वह उसे आत्मिक 'पुनर्जन्म' की ओर ले जाता है।

इन पात्रों की देखेबी का मूल जोय मेसक के मत में स्वयं के अग्निबाह्य बन और बुर्जुवा वर्गों की कुटिल सामाजिक तथा धार्मिक व्यवस्था है। अस्त-तोस्तोय सत्ताधीन लोगों की अवसरवादिता तथा डॉग की, स्वायालय की बेहोशानी की और सोसा इने वाले साधन के सहायक बने हुए चर्च के निष्मात्य की लड़ी आलोचना करता है। उसे प्रत्येक व्यक्ति की आत्मवृद्धि में तथा नैतिक पूर्णता में ही सबसे बड़ा कारक दिखाई देता है। ईश्वरीय (साधन) आरसाही (साधन) हमारे भीतर है ऐसा वह जोर देकर कहता है।

इन सब के होते हुए भी आलोचनात्मक यथार्थवादी दृष्टि के रूप में 'पुनर्जागृत' उपन्यास का बड़ा महत्त्व है। इसमें उसीसर्वी कृषी के रूप के निरंकुश घासन के बीच कृषी जनता की कठिन परिस्थिति का यथार्थ चित्रण हुआ है।

### जीवन के अन्तिम वर्ष

घासन और चर्च दोनों का लक्ष्य रूप प्रस्तुत करने के कारण और उनकी कटु आलोचना करने के कारण दोनों ही उनके विरुद्ध थे। किन्तु लेखक की व्यापक लोकप्रियता तथा प्रभाव के कारण घासन उसके दमन में डरता था। चर्च ने फलवा पत्र और तोस्तोम का चर्च में निकाल दिया। इसी का फल यह हुआ कि तोस्तोम जनता में और भी लोकप्रिय हो गया।

जीवन के अन्तिम वर्षों में तोस्तोम किसानों की तरह रहने लगा। वह जमीन जोतता था मकड़ी काटता था जूतें सीता था पानी पीचता था और किसानों की तरह कपड़े पहनता था।

१८९१ १८९३ १८९८ में उसने सकारण पीड़ित किसानों के लिए सहायता का आयोजन किया। मन् १९०१ की क्रांति के दिनों में उसने लिखा कि वह कराई किसानों के पास में है और जब क्रांति के बाद उसने कठोर दमन असह्य मृत्यु वृद्ध तथा निर्वाण का बुर्य देखा तो वह विचलित हो उठा और 'मैं मौन नहीं रह सकता' कैद लिखा। इसके बाद उसे अहिंसात्मक धर्म के अपने विषयानुसार धीरे धीरे बोझ मालूम पड़ने लगे। १० नवम्बर १९१ की मुंबई तोस्तोम अपने डाक्टर मित्र (डॉ० मकाविस्की) के साथ वास्नायापस्वाना छोड़कर इतिहास की ओर चल पड़ा। रास्ते में उसे निर्माणा ही गया और २० नवम्बर को अस्वोपवा स्टेज पर स्टेज मास्टर के घर में उसकी मृत्यु ही गई। वास्नायापस्वाना में इस महान् लेखक की अत्यन्त साधारण कब्र है जिनमें उसकी आत्मा की महानता और भी प्रकट होगी है।

रूस के इस महान् लेखक की मर्जना का रूप के अग्य महान् व्यक्ति लेनिन ने मुक्त कंड न बाहर किया। तोस्तोम के दिवस में लेनिन ने कई

लेख ('रूसी क्रांति का दर्पण लेख तोस्तोय 'लेख निकाएबिच तोस्तोय' 'तोस्तोय और उमका युग तोस्तोय और समकालीन अन्ध्र आन्दोलन' 'तोस्तोय और प्रोम्प्टिगियत मपर' आदि) मिले जिनमें उसने तोस्तोय की महत्ता और उमकी सजना की विपमता का बिदम्बन किया था। उमकी प्रगतिशीलता और उमको प्रतिक्रियावादिता को स्पष्ट किया और उसकी समकालीनता तथा उसकी प्राचीनवादिता के कारण बताया। उमन लिखा कि तोस्तोय न कक्षात्मक हृदियों की ऐसी मात्ता की जिमने उमे संसार क उच्च लेखकों के बीच प्रतिष्ठित कर दिया। बिमन बड़ा दक्षिण बिदबास और ईमानदारी के साथ समकालीन राजनीतिक और सामाजिक व्यवस्था की मूलभूत बिशिष्टताओं से संबंधित प्रश्नों की एक पूर्ण टंछना प्रस्तुत की।

सेनिल भावे लिखता है कि 'तोस्तोय की हृदियों बुद्धिकोषों गिजाओं और 'स्ूस' की विपमताएँ बड़ी मुखर हैं। एक ओर ता बहु मीरिच कलाकार है जिमन न केवल रूसी जीवन का अतुलनीय चित्र प्रस्तुत किया बरन् बिद्व-साहित्य की प्रथम कोटि की रचनाएँ प्रस्तुत कीं डूमरी ओर जमीदार और ईमा में बिदवास करनेवाला सनकी। एक ओर तो सामाजिक मिम्यास और डाग का बीरदार, सीमा और ईमानदारी ने पूर्ण बिरोध है—और डूमरी ओर तोम्प्टोयवादी सर्पात् समय से पिछडा हुआ बिस्वानवाला मूर्ख कवित (रूसी 'इंटलिजेंट' बुद्धिमान) पब्लिक में मपनी छाती ठोंकता हुआ कहता है कि मैं बराब हूँ मैं कुदियत हूँ किन्तु मैं नैतिक आरमपूर्णता में लगा हुआ हूँ मैं सब मांस नहीं खाता हूँ और चाबक क कन्सेटों पर बीबित रहता हूँ। एक ओर तो पुँजीवादी घोरण की जरी आलोचना घासकीय जबरपस्ती म्यायालय तथा सरकारी संभासना के नाटक का परकिषण बड्डी समृद्धि तथा सांस्टदिक सम्प्राप्तियाँ की बुद्धि और गरीबी बवरता तथा जनता क उद्वपन की बुद्धि के बीच की विपमता का गंभीर उद्घाटन और डूमरी ओर 'बुराई के सबिरोप' की कुल्यापूर्ण दिशा। एक ओर तो गंभीर मपार्बवाद हर प्रकार के बेहर्तों को उदार फँकना और, डूमरी ओर पुनिया की



अत्यन्त कुशलित वस्तुओं में से एक की शिक्षा—अर्थात् धर्म की शिक्षा धर्म के पुरोहितों की जगह—नैतिक विश्वास के पुरोहितों को स्थापित करने का प्रयत्न अर्थात् अत्यन्त सूक्ष्म और फसल अत्यन्त मूलित पुरोहिती की स्थापना।

मानवता के नाम का नया मुस्ता प्रस्तुत करने वाले मसीहा के रूप में तोस्तोय हास्यास्पद है किन्तु उन विचारों और मनोभावों के अभिष्पन्धक के रूप में वह महान् है जो कि स्वयं के बुर्जवा आन्दोलन के आरम्भ के समय तक करोड़ों स्त्री किसानों में प्रादुर्भूत हो पय थे। तोस्तोय विश्व का अत्यन्त लोकप्रिय लेखक और बहुत से योरोपीय साहित्यकारों को प्रेरणा देनेवाला सिद्ध हुआ।

## २६ अन्तोन पाव्लोविच खेखव

[ १८६०-१९०४ ]

### आरम्भिक जीवन

रूस के प्रसिद्ध कहानीकार और नाटककार अन्तोन पाव्लोविच खेखव का जन्म २९ जनवरी १८६० में तगतराग के शहर में एक छाटने व्यापारिक परिवार में हुआ।

उसके बचपन के दिन स्वच्छन्दता और सुख के दिन न थे। उसका पिता अपने बच्चों पर कठोरता से शासन करता था। बच्चों का भट्टों वर्ष में सजा रहना पड़ता था। वर्ष-योग सीघ्रता पड़ता था और दूकान का हिमाब जोड़ना पड़ता था। भाशा भय करने पर उनका कोड़ों की सजा मिलती थी। आग बख्तर अपने बचपन की याद करते हुए खेखव ने लिखा है कि 'बचपन की मैंने बचपन ही न जाना।

### बिद्यार्थी जीवन

पञ्चव की पहले अपनी माँ से शिक्षा मिली। फिर वह स्थानीय (ग्रीक) स्कूल में भेजा गया और बाद में 'बिमनेशियम' में दाखिल हुआ। पिता के कारणार के नष्ट हान पर उनका परिवार मास्का बसा गया। इस समय खेखव का न कबल अपने किए आशय बुझना पड़ा बरन् परिवार की भी सहायता करनी पड़ी। वह लोगों को पढ़ाकर किमी तरह अपना जीवन बसा रहा था।

'बिमनेशियम' की शिक्षा पूरी कर खेखव यूनिवर्सिटी की लामुबेद फैकल्टी में भर्ती हुआ। बिद्यार्थी जीवन में ही वह हास्परस के पत्रों में सहाय्य देने लगा। उनकी पहली प्रकाशित इति 'वान के जमींदार स्नेपान अकदीमिराविच का बिडान् पड़ोमी डाक्टर फ्रिड्रिच का पत्र' (१८८०)।

खेखव ने अपने समय की बबलन्त समस्याओं पर लिखा। उसकी

छोटी कहानियों की विषय वस्तु बड़ी ही व्यापक और सारगर्भित होती थी। इन कृतियों में रूसी जीवन के विविध पक्ष प्रतिबिम्बित हैं। पीरे पीरे बेल्लव की इन कहानियों में मनोवैज्ञानिक संकलन के साथ-साथ सामाजिक विषय वस्तु भी अधिकारिक व्यापक होनी लगी। और एकल-चमुकी मार्क्सिक रचनाओं में 'मोटा बीर पुवला' 'बेहुता' 'गिरगिटान' 'प्रिसिबेयेव' जैसी महत्त्वपूर्ण कहानियाँ भी हैं। जिनमें अत्याय घोषण भासन को निरंकुशता जनता पर अत्याचार, मानवीय व्यक्तित्व की बचपानता आदि तत्कालीन सामयिक प्रश्नों की ओर संकेत किया गया है।

### गिरगिटान

'गिरगिटान' कहानी में तत्कालीन कर्मचारियों को अपन से बड़े अफसर की अनुमति बिना ही गई है और जनता के प्रति उनका उरोका पूर्व संबंध बिनाया गया है। यह कर्मचारी साधारण जनता की शिकायतों की ओर फाई ध्यान नहीं देते।

### प्रिसिबेयेव

'प्रिसिबेयेव' में बेल्लव मनु अस्मी के जमाने के पुष्टिध शासन का उन्पाटन कर रहा है। प्रिसिबेयेव इन पुष्टिध शासन का मूर्त का है। वह हर एक के व्यक्तिगत जीवन में रणम होता है और किंगी को शांति से नहीं बैठने देता। वह लोगों को आम सड़क पर एकत्रित होने में भी मना करता है। पुष्टिध शासन पर व्यर्थ के कारण सेमर ने इनके छाने की आज्ञा नहीं दी।

### कर्मचारी की मृत्यु

'कर्मचारी की मृत्यु' में सामान्य कर्मियों का तुलनाधी प्रकृति तथा अफसरों से मरवा धारणित रहने की स्थिति का चित्रण किया गया है। मापूसी कर्म केर्माकाव डिपेन्टर में सीने बैठे हुए जेनरल के गिर पर छोड़ देता है। कर्मीर इतकी भाषण उमकी शांति मध्य कर देती है। कई बार उतने जेनरल से समा-भाषना की कोशिश की

सेकिन उसे सतोप न हुआ । अन्त में भय से उसकी मृत्यु हो जाती है ।

सन् नब्बे के वर्षों में वैभव की सर्जना

सन् अस्ती के युग के अन्त से वैभव की प्रौढ रचनाएँ सामने आती हैं । 'स्टेप' कहानी एसी ही है जिसमें मनमोहक प्राकृतिक पृष्ठ-भूमि में उस समय का अरोचक स्त्री जीवन प्रस्तुत किया गया है ।

सत्साम्निन टापू

स्त्री जीवन का व्यापक परिचय प्राप्त करने की इच्छा से वैभव १८९० में सुदूर पूर गया । उसका ध्यान विशेष रूप से सत्साम्निन ने आकृष्ट किया जो कि उस समय के स्वयं से निर्वासितों और दंडितों की बस्ती थी । निर्वासितों पर जिसे पानवाले अत्याचारों से बहु काँप उठा और क्रम सौट कर उसने सत्साम्निन टापू पुस्तक लिखी । यद्यपि पुस्तक निर्वासितों की बसा मुबारने के अपने स्वयं में सफल न हुई क्योंकि सत्साम्निन निर्वासितों का पूरबन् गरक बना रहा फिर भी पुस्तक एक दृष्टि से कृतकार्य हुई । पुस्तक ने आरशाही के विरुद्ध जनता के हृदय में बुजा जयायी ।

बाई मन्बर ६

१८९२ में उसकी प्रसिद्ध कहानी 'बाई मन्बर छ' छपी जिसमें अस्पताल के मानसिक रोगियों के बाई का चित्र प्रस्तुत किया गया है । इसमें तोस्तोव के 'बुराई के बबिरोब' के सिद्धान्त की आलोचना की गई है । डाक्टर रोगी मनुष्य का प्राय आत्मपूजता में देखता है और मानसिक रोगी शोमोब से उसका मतमेव है जो कि 'बुराई के बबिरोब' का विरोधी है । तोस्तोव के सिद्धान्तों का यह समर्थक डाक्टर निष्क्रिय रहता है और अस्पताल में कैली हुई बुराईयों को रोकने की कोशिश नहीं करता है फलतः वहाँ अस्पताल में असानियत नहीं है और रोगी पीट जाते हैं । अन्त में डाक्टर स्वयं बीमार होकर रोगी के क्रम में इस बाई में जाता है और अब बाई के मौकरों द्वारा वहाँ की परिस्थितियों का विरोध करने पर पीटा जाता है तो उसे 'बुराई के बबिरोब' के सिद्धान्त की पकड़ी का अनुभव होता है । मार खाने के बाद डाक्टर उस दिन से एक

रुम्बर भी न बोला और न उसने जाना ही चुमा। थोड़े दिन बाद वह मर गया। पाठकों ने इस कहानी को समकालीन कृषी जीवन की आलोचना के रूप में ग्रहण किया।

### जनसेवा

बेन्सन जनसेवा के बारे में बराबर सोचा करता था। १८९२ में उसने मध्य बोस्ना के अक्रान्त पीड़ित किसानों के लिए धन एकत्रित किया। उसी साल उसने मेसिबोवो में मास्को के बाहर के अपने निवास स्थान पर सामाजिक कार्य का आयोजन किया। उसने हुआ स्टेपान बोला और बर्डी की जनता को मुफ्त दवा दी। अपने साधनों के बल पर उसने मेसिबोवो और पास के गाँवों में स्कूल खोले तथा गरीबों को कपड़ों आदि से सहायता की।

### किसान

गाँवों के जीवन का चित्रण में जो पर्यवेक्षण किया उसके आधार पर उसने 'किसान' कहानी लिखी जिसमें पुँबीवाद द्वारा नष्ट किये गये किसानों के अभाव-ग्रस्त अंधकारपूर्ण जीवन का चित्र है।

सन् अस्ती और मम्बे के अमाने के कृषी जीवन के अपने पर्यवेक्षण में बेन्सन ने उस 'इपूरोक्रेमी' को भी देखा जो कि जीवन की स्वच्छन्द गति का रोकथाम है और इस प्रकार जारमाही का अचलन्य बनी हुई है। वह प्रत्यक्ष प्रकार की नवीनता और प्रगति का विरोधी है। बेन्सन ने इसे केवल तीव्रमाही के ही बीच नहीं ललित किया बरन् जीवन के मध्य क्षेत्रों में भी इसके पोषकों को बचा।

### आवेष्टित व्यक्ति

'आवेष्टित व्यक्ति' में बेन्सन ने इसी प्रकार के व्यक्ति का चित्रण किया है। इस कहानी का नायक स्कूल में चौक भाया का शिक्षक है जो कि सरकारी वायदे कानून पर चलने वाला व्यक्ति है और हर प्रकार की नवीनता और स्वतंत्रता का कट्टर गन्धु है। वह अपने को बराबर ठँके रहता है कि उसे हवा भी न चलने पाए। हर मौसम में वह मम्बे बूट

छाता और कई बाले औररखे से आवेच्छिठ रहता है। इसी प्रकार उसका व्यक्तिगत जीवन भी बंधा हुआ है और दूसरों से छिपा हुआ है। स्कूल के बच्चे उससे डरते हैं और उसके बवाब में स्कूल के शिक्षक विद्यार्थियों के अंक घटा देते हैं और हफ्ती परारत्यों पर भी उनको स्कूल से निकाल देते हैं। स्कूल के अतिरिक्त वह पहर के लोगों के लिए भी मयागण है। उसके कारण साग और से बाध करते हुए भी डरते हैं। इस कहानी के द्वारा बेखब ने मानवीय व्यक्तित्व के विकास और स्फुरण को रोकनेवाले प्रतिश्रियावादी वासन तथा बाधाकरण के नष्टकारी प्रभाव का संकेत दिया है। इस कहानी में दूसरे शिक्षक भी हैं जो कबल 'सर्वरूसर' के आधार पर ही नहीं जीवित रहना चाहते जो गतिहीनता के विरोधी हैं और जो नव संचार चाहते हैं। जीवन को बदलना ही होगा—यह कहानी का संकेत है।

### इओनिच

इसी वर्ष (१८९८) बेखब की कहानी 'इओनिच' प्रकाशित हुई जिसमें क्वी बुद्धिजीवियों की संकीर्ण आराम पसंद विद्वधी का अंकन और उसकी आलोचना है। इसमें डाक्टर स्त्रारल्लेब की कथन कहानी है जो समाज के लिए उपयोगी बनना चाहता है लेकिन धीरे-धीरे आत्मसेवी बन जाता है और उसके आरम्भ के उच्च आदर्श लुप्त हो जाते हैं।

मिलनसार जीवन के उत्साह और जनता के प्रति प्रेम से पूर्ण युवक डाक्टर प्रान्त के एक छोटे नगर में जाता है। नगर के पास के अस्पताल में वह बड़े आरमत्याग के माध्यम काम करता है। किन्तु अधिक समय तक वह ऐसा न बना रह सका। धीरे-धीरे वह स्वयं आत्मसेवी बन जाता है। अब उसका अल्प समस्त समाज सेवा नहीं बनू आत्मसेवा है और जन प्राणित मात्र उसके जीवन का उद्देश्य रह जाता है। अब वह समाज और जनता के बीच बहुत कम दिलाई पड़ता है। अब वह लोगों के यहाँ इगलिए नहीं जाता कि राबियों की चिकित्सा करे बल्कि उन लोगों का घर देखकर अपने लिए घर खरीदने की इच्छा से। समाज सेवा के उसने स्वयं अब सेवा के लिए लुप्त हो गये।

राष्ट्र भी न बोला और न उसने धागा ही कुंआ। बोड़े दिन बाद वह भर गया। पाठकों ने इस कहानी को समझासीन स्त्री जीवन की आलोचना के रूप में ग्रहण किया।

### अनसंधा

बंशव बनसेवा के बारे में बराबर सोचा करता था। १८९२ में उसने मध्य बोस्वा के अकाल पीड़ित किसानों के लिए धन एकत्रित किया। उसी साल उसने मेक्सिको में मास्को के बाहर के अपने निवास स्थान पर सामाजिक कार्य का आयोजन किया। उसने हुआ स्टेशन बोसा और वहाँ की जनता को मुक्त बना ही। अपने साधनों के चल पर उसने मेक्सिको और पाठ के गाँवों में स्कूल चोके तथा गरीबों को कपड़ों आदि से सहायता की।

### किसान

गाँवों के जीवन का चित्रण ने भी पर्यवेक्षण किया उसके आधार पर उसने 'किसान' कहानी लिखी जिसमें पूँजीवाद द्वारा लूट किये गये किसानों के अभाव-रस्त अयकारपूर्ण जीवन का चित्र है।

सन् अस्सी और पच्चे के दशमाने के स्त्री जीवन के अपने पर्यवेक्षण में चित्रण ने उस 'अधुरोक्ष्मी' को भी देखा जो कि जीवन की स्वच्छन्द गति को रोकती है और इस प्रकार आग्वाही वा अचलम्ब बनी हुई है। वह प्रत्येक प्रकार की पचीनता और प्रमति का विरोधी है। चित्रण ने इनके कम नीचरग्वाही के ही बीच नहीं ललित किया बल्कि जीवन के अग्य क्षेत्रों में भी इसके पोषकों का देखा।

### आवेष्टित व्यक्ति

'आवेष्टित व्यक्ति' में बंशव ने इसी प्रकार के व्यक्ति का चित्रण किया है। इस कहानी का नायक स्कूल में प्रीट नाया का पिताक है जो कि नरकाली कायदे क्रामून बर चलने वाला व्यक्ति है और हर प्रकार की नचीनता और स्वगचना का कट्टर पक्ष है। वह अपने को बराबर ठेके रखता है कि उसे हवा भी न लपने पाए। हर मौसम में वह लम्बे कुट

ता और कई बाते अँसरने से आबेच्छित रहता है। इसी प्रकार उसका स्त्रिगत जीवन भी डंका हुआ है और दूमरा से छिया हुआ है। स्कूल के लिये उससे डरत है और उसके दबाव में स्कूल न गिदाव विद्याभियोगों के लिये घटा बैठ है और हुस्की पारारतों पर भी उनको स्कूल से निकाल डेते हैं। स्कूल के अतिरिक्त वह शहर के सागा क सिए भी भयानक है। इसके कारण अँग और स बात करते हुए भी डरत है। इस कहानी के अंत में चेतव ने मानवीय व्यक्तित्व के विकास और स्फुरण को रोझनेवाले विस्मयावादी भागन तथा आतावरण के नष्टकारी प्रभाव का संकेत दिया है। इस कहानी में दूमरे जिसक भी है जो केवल 'सकर्मकर' के आचार से ही नहीं जीवित रहना चाहत जो गतिहीनता न विरोधी है और जो नव संसार चाहते हैं। जीवन का बरकना ही होया—वह कहानी का अंत है।

### इभोलिच

इसी रूप (१८९८) चेतव की कहानी 'इभोलिच' प्रकाशित हुई जिसमें स्त्री बुद्धिजीवियों की मकीर्ण आराम पसंद जिदमी का अक्षय और उसकी आलोचना है। इसमें डाक्टर स्टारत्सेव की कठन कहानी है जो समाज के लिये उपयोगी बनना चाहता है लेकिन धीरे-धीरे आत्मसेवी बन जाता है और उसके आरम्भ के उच्च आदर्श लुप्त हो जाते हैं।

मिसनरी जीवन के उत्साह और जनता के प्रति प्रेम से पूर्व मुबक डाक्टर प्रान्त के एक छोटे से शहर में जाता है। शहर के पास के अस्पताल में वह बड़े आत्मत्याग के साथ काम करता है। किन्तु अधिक समय तक वह ऐसा न बना रह सका। धीरे-धीरे वह स्वयं आत्मसेवी बन जाता है। अब उसका लक्ष्य समस्त समाज सेवा नहीं बरन् आत्मसेवा है और जन प्राप्ति मात्र उसका जीवन का उद्देश्य रह जाता है। अब वह समाज और जनता के बीच बहुत कम दिलाई पड़ता है। अब वह लोगों के मही इयलिये नहीं जाता कि रायियों की चिकित्सा करे बरन् उन लोगों का पर देखकर अनेक लिये बर करौपने की इच्छा से। समाज सेवा के उसके स्वप्न अब सेवा के लिये लुप्त हो गये।



शेखर की कहानियों में उसके समकालीनों को केवल पूंजीवाद का ही उन्माद न मिला बल्कि किसानों की सहकारिता की आशा जगाए हुए 'बरोपनिकी' क आंदोलन का भी आभाषना दिखाई पड़ी। उसकी कहानियों में सोवियत क 'बुर्जुआ के विरोध' क सिद्धान्त और 'बुर्जुआई' ठाटे कामों के सिद्धान्त का भी विरोध था।

'मराव्नित्री सोवियत तथा बुर्जुआ सिद्धान्तों को आभाषना करते हुए भी शेखर के पास अपना कोई जीवन-दर्शन या सामाजिक दर्शन न था न वह अपने देश को द मरुता और अज्ञानता को किसी एक निश्चित रास्ते पर चला सकता। क्योंकि वह सामाजिक व्यवस्था के पुनर्निर्माण के अनिश्चारी माध्यम से व्यवस्था न था तथा उससे दूर था ठिठ में। उसकी कृतियों में आत्म-वादिता का सूत्र है। जिसे उसके उग्रमनस मस्तिष्क में बिंबास है और वह जानता है कि महान् क्रम/अज्ञानता का सर्वनाम्न परियम निश्चय मस्तिष्क में इस देश का पुष्पित उद्योग में परिणत कर देगा। उसकी अन्तिम कहानियों में 'दुःखित' हम के उग्रमनस मस्तिष्क क विरहास से ओग-ओग है। इनमें अभिजात वर्ग की अज्ञानता का चित्र है जो इन वर्ग की परीक्षाओं वि-द्वेषी को छोड़कर मस्तिष्क में विरहास रखती हुई संघर्ष के रास्ते पर चल पड़ती है। जीवन का निरीक्षण करके हुए अज्ञान के पास अनुभव की प्रभुता सामग्री एकत्रित होती दिखाई दी जिसकी विन्मूढ अभि-व्यक्ति कहानी की अनु-मीमा में उगों की लपो-पूरी संभव न थी। इसी न पुन के दृष्ट और मध्य के मज्जीक अज्ञान के लिए अपने साहित्य के एक अन्त का मास्क को चुना। मनु मध्ये क वर्गों और उन्नतियों की के अन्त में शेखर की नाटकीय प्रतिभा का अन्त प्रतिकर रूपत का मिला है। मास्ककार के अन्त में उगें प्रथम महत्त्वपूर्ण मठचना बाइका (मधुर्जी पर्वी) (१८९६) मास्क में दिखी। उसके मध्य प्रसिद्ध मास्क 'पाषा बाष्पा (१८९७) 'मीन वद्वे' (१९०१) 'वेदी की बगिया' (१९०३) है। सामाजिकता इन मास्क में पुन का पुन-पुन विन उतर आया है। इन नाटकों में अभिजात वर्ग के बुर्जुआ परिवार के प्रादुर्भाव विचारणीयों की निर्याता न कि बड़ी-बड़ी योजनाएँ बताते हैं किन्तु

प्रतिक्रियावादी प्रवृत्तियों से प्रभूत बाधाओं के सामने मित्र मुका देने हैं और युवकों की आभावादिना का बड़ा नाबिक प्रतिक्रमण हुआ है।

'बेरी का बगिया' चेखव की नाटकाय कला का उच्चतम निरूपण है। इसका मूल कथावस्तु अमिजात बग और उयर्बी मम्हनि का हाम है। पूँजीवाद के विकास के माण-माय अमिजात बग का आयदाव धारे धारे लप हा र्छा है और बड़-बड़ व्यापारिया और कारागारिया के हाय मं जा रहा है। अमिजात बग म्म-मम म ह्म रहा है और कुर्मुभा धस्ति उयर्बी स्वानागम होकर कायणीलता के प्रायम म आ रही है। यहा इन नाटक का एतिहासिक सामाजिक परा है। इन नाटक का व्यक्तितव पर यह है कि रानेस्कया और गायब को अमीशारी म बेरी की बगिया है। अमिजात बग के इन व्यक्तितवा की अमीशारा की बग बड़ी साधनीय है। आयदाव बग स लरी है और यदि इनका बग म दिवा गया ता आयदाव नीलाम कर दी जायगी। इन परिवार का मित्र व्यापार लाराबिन इन परिवार को उदार का रास्ता बताता है कि इन अमीन का टुकड़ो में बाटकर किराए पर उठा लो। इनमे कर्मी मा चुकता हों आयगा और आमदनी भी हार्गी। कारागिन की सगह अलठी है अकिन पुरानी भावनाओं स धस्त गनेस्कया और गायब महमन नहीं हात। वे बज्ने हैं कि सारे इसाके में बेरी की बगिया प्रसिद्ध है और स्थान की मुम्हता का कारण है। अस्त में बगिया नीलाम हा जाती है और उन कारागिन के हाय में जा जाती है जिसके पूज्य हर्मी अमिजात परिवार के धाम रूपक प। वह इन बगिया का काट कर मकान बमायगा त्रिमये कि पूँजी तथा पक्ति भी बज्नी। नाटक का अउ इन वृत्त मे हाता है कि एक और ता परिवार इन आयदाव को छाड़कर हवेसा के सिए जा रहा है और उयर् उयर् के पहाँ के काट जाने की आभाय मुनाई पड़ रही है। बेरी की बगिया अमिजात बग का प्रतीक है। इपर अमिजात बग सामाजिक र्पमंभ से ह्म रहा है और उयर् बेरी का बगिया कट रही है।

यह नाटक समाजगम्य के सिद्धान्तों का प्रबलन नहीं है बरन् यह

परेन्स तथा पारिवारिक जीवन का व्यक्तिगत नाटक है जिसके बीच से यह लक्ष्य अपने आप प्रस्फुटित होते हैं। इसके पान अत्यन्त सजीव हैं। उनकी अपनी व्यक्तिगत विधिप्यताएं हैं और उनमें मानव सुन्दर सभी भावनाएं हैं।

गामेश बातूनी है और उसमें कर्मवीरता नहीं है। वह हमेशा यही सोचता है कि कितना अच्छा होता यदि कहीं से बिरासत मिल जाती। कितना अच्छा होता यदि माया की शादी किसी बमीर से हो जाती।

उसकी बहन स्नेहक्या का चरित्र अत्यन्त भावुक है। उसका पुत्र इसी जमींदारी के तामाक में खेलता हुआ बूढ़ गया। बाद में पति की भी मृत्यु हुआ गई। पुत्र और पति को छोड़कर शोक बिलुप्ता यह भारी परिस्र खड़ी जाती है और वहाँ एक व्यक्ति से प्रेम करने लगती है और वह भी अंत में उसे धांसा देता है। सब और से खुली यह भारी जब अपने जीवन के अंतिम दिन बिताने स्वदेश लौटती है। इस आकाश का एक स्थान उसके लिए अनेक स्मृतियों से समन्वित है। यहीं उसका बचपन बीता और यहीं उसके पुत्र की मृत्यु हुई। अनेक स्मृतियों में लिपटी हुई बेटी की बगिया को छोड़ने में इन लोगों को बड़ा कष्ट हो रहा है। केशव ने इस मानवीय पक्ष का बड़ा ही स्वाभाविक एवं भावपूर्ण अंकन किया है। अभिजात वर्ग का यह परिवार बुरा नहीं है। उनमें दया कृपा सब कुछ है। केवल यह कार्यकृपास और कर्मठ नहीं है।

लोपाखिन इन लोगों में सर्वथा विद्रोही है। लोपाखिन के पूर्वज इसी परिवार के दाम हुपक थे जो अपने परिश्रम से ही अपनी मुक्ति प्राप्त कर सके हैं। लोपाखिन इसी परिश्रम और सक्ति का मूल रूप है। वह बिना काम के रह ही नहीं सकता। व्यापारी होने के कारण वह हर चीज का हिसाब-किताब जोड़कर उस काम में लगता है। चरी की बगिया वह इसलिए नहीं छोड़ता कि वह बड़ी सुन्दर है बल्कि इसलिए कि वह आमदनी बढ़ाने का जरिया है। वह इस बगिया के मूलपूर्व मालिकों के चले जाने तक भी नहीं रुकता और वेदों को कटामा चुक कर देता है। लोपाखिन सभी बढ़ती हुई सामाजिक चरित्र का प्रतीक है।

फिर भी बेखव की सहानुमति सोवाकिन के प्रति नहीं है।

बेखव की सहानुमति मुबक पात्र फफीनोव और आग्या के साथ है जो बेरी की बगिया की प्राचीन स्क्रिप्ट्स समाप्तप्राय जीवन की प्रतीक मानते हैं और जो उसे छाड़कर इसके बंधना से अपने को मुक्त कर बड़े जग्गाह के साथ जीवन के नये मार्ग पर चलना चाहते हैं। इसी से बेखव ने छांगानिन को सच्चा नायक के रूप में नहीं प्रस्तुत किया। नाटक का सच्चा नायक प्रयत्नशील परिष्कृत नये जीवन का नया राही मुबक वर्ग है जिसके प्रतिनिधि फफीनोव और आग्या हैं। यद्यपि नाटक में इनकी अभिव्यक्ति कुछ भुंभसी ही हुई है।

फफीनोव और आग्या अतीत की ओर न देखकर भविष्य की ओर सम्मुख और प्रयत्नशील हैं। उनमें परिश्रम का सक्त्प है। अमीम जग्गाह है और सज्जस भविष्य का बड़ विश्वास है।

फफीनोव तथा आग्या की यह आशावादिता स्वयं बेखव की आना वादिता है जिसकी सलज उसकी अनक कृतियों में मिलती है। प्रति क्रिया के बंधकार के बीच बेखव की अपने देश के प्रकाशमान सज्जस भविष्य के विश्वास से आत्माकित कृतियाँ अनेक हृदयों को आशा और उत्साह से बीप्ट करती रहीं।

बेखव को बहुत पहले उपेदिक हो गया था। सन् नब्बे के अन्त में उसकी बीमारी बढ़ गई और उसे मास्ता जाना पड़ा। १९०४ में उसकी मृत्यु हो गयी।

रूसी साहित्य के इतिहास में बेखव आठोचनार्थक यथार्थवाद का बहुत बड़ा प्रतिनिधि माना जाता है। उसका नाम 'रूसी साहित्य के अन्ततम बेखवों—पुस्किन गोगल केरमन्तोव तुर्गेनेव तोन्स्तोव—के साथ बड़े आदर के साथ दिया जाता है। बर्नईया ने बेखव के बारे में लिखा कि 'योरुपीय नाटककारों के मसल मंडल में बेखव अत्यन्त प्रकाशमान तारे के सञ्चत चमक रहा है।

## २७ उन्नीसवीं शती का अन्त और बीसवीं का आरम्भ

उन्नीसवीं शती के अन्त और बीसवीं के आरम्भ के अन्त में अनेक नए-नए आन्दोलन के तूतीबूती (प्रोक्लामेटोरिय) युग का आरम्भ काल कहा है। इस समय देश में बिचरी हुई अल्प-अल्प प्रगतिशील पार्टियों को एक में मिलाकर कमी सोशल डिमोक्रेटिक मजदूर पार्टी की स्थापना हुई (जो बाद में कम्युनिस्ट पार्टी के नाम से विख्यात हुई) और जिसने जाने-बूझ कर बीसवीं शताब्दी में अक्टूबर १९१७ में सफल अगति की और जिसके फलस्वरूप देश में सोशियल समाजवादी शासन की स्थापना हुई। समाजवादी सोशियल शासन के साथ ही समाजवादी संस्कृति और समाजवादी साहित्य का भी विकास शुरू हुआ।

बीसवीं शताब्दी की अक्टूबर समाजवादी अगति द्वारा जिस प्रोक्लामेटोरिय या मर्चन्टारा बर्ग के शासन साहित्य और संस्कृति का सोशियल सभ्य मूल्यांकन हुआ उस संघर्षारा बर्ग का प्रादुर्भाव उन्नीसवीं शती के अन्त में ही हुआ गया था। इन नये बर्ग के प्रादुर्भाव और पोषण में उन्नीसवीं शती के साहित्य का बहुत बड़ा हाथ है और इसका अर्थ इस शती की समाजवादी और मानवतावादी परंपरा को देना चाहिए। जीवन का पदार्थ अल्प-अल्प सेवा की जनता की सेवा स्वतन्त्रता और प्रजातन्त्रवाद का प्रचार और उच्च ब्रह्मात्मकता उन्नीसवीं शती के अन्त में साहित्य की बिसयताएँ हैं। इस युग में बहुत से उच्च कोटि के मानवतावादी लेखक हुए जो अपने बर्ग के सर्वांगीण हितों में ऊपर उठे ज्ञान-भजन समय की सामाजिक सुराहता को कसई लौली—जिन्होंने जनमता की अधिभाषा में अनेक निर्वाणन गरीबी निरामता और मृत्यु तक को भगनाया।

उन्नीसवीं शती के अन्त और बीसवीं शती के आरम्भ के इस संक्रांति काल के अन्त में साहित्य में बिचरि स्थािति के कई बड़े संपन्न क्षेत्रों का मिलने

हैं और कई प्रवृत्तियाँ सजित हुई हैं। आत्मोन्नतारत्मक यथार्थवाद और प्रतीकवाद की प्रवृत्तियाँ विनय रूप से उन्नेलनीय हैं। इन्हीं वर्षों में सोवियत और वेल्श जैसे उच्च कलाकारों की प्रतिभा का विकास हुआ और प्रगतिशील पाठकों के बीच मार्क्सिनि विविधार्थक कारोम्पेकी बरेमायेव कुभिन अन्त्येव बुनिन आदि प्रसिद्ध कृतकों की कृतियों को स्वीकृतिपना प्राप्त हुई। य अन्तक आत्मोन्नतारत्मक यथार्थवाद के बहुत बड़े प्रतिनिधि हैं और इनमें न कुछ याइ समय तक प्रगतिशील भी थे।

आत्मोन्नतारत्मक यथार्थवाद के इन प्रतिनिधियों की मजना के प्रगतिशील महत्त्व को स्वीकार करते हुए भी यह कहना आवश्यक है कि ये लेखक यथार्थता का संकीर और व्यापक विस्लेषण करने छगत तक गये और आग न बढ़ सके। इन लेखकों ने जीवन का विस्लेषण ता प्रस्तुत किया किन्तु उन प्रश्नों और समस्याओं का उत्तर न दिया जिनको कि युग और जीवन प्रस्तुत कर रहा था। इन्होंने स्त्री मजदूर वर्ग के कार्यकलाप की अस्तित्व कागिता नहीं दिखाई और न ये उस वर्गीय स्थिति में छुटकारे का कोई रास्ता ही दिखा सके जिसमें कि स्त्री जनता अकनूबर कागिति ने पहले तक पड़ी रही।

आत्मोन्नतारत्मक यथार्थवाद के समान ही 'प्रतीकवाद' भी इन मन्त्रान्तिकाल की विशेष प्रवृत्ति थी। प्रतीकवाद यथार्थवाद से विमुख था और इनके लेखक व्यक्तिवादिता रहस्यवादिता और गुड कला के पक्ष पार्थी थे। आगे चलकर इन प्रवृत्ति के दो प्रमुख कृतक इन्सोव और आसाक इनसे अलग हो गए और उन्होंने अकनूबर अस्तित्व का स्थापन किया।

फिर भी आत्मोन्नतारत्मक यथार्थवाद और प्रतीकवाद अन्त-जावन की प्रमुख धारा न तन्म ही रहा। प्रतीकवाद न युग की हस्त-जड और जीवन के समय से आँख मूँड सी और आत्मोन्नतारत्मक यथार्थवाद इनके बीच दूर तक न देव सका और न समझ सका कि जनता का यह अस्तित्वकारी आंदोलन १९०५ में आरे देग को हिंसा देया और १९१७ में विजयी होगा। फलतः इन साहित्यकारों में न तो युग के अन्तत प्रश्नों का ही उत्तर दिया जा सका न अन्त-जीवन को ही पय-प्रदान निक सका।

यह काम मैक्सिम गार्डी ने किया। उसने युग की आवश्यकताओं को समझा और साहित्य का क्रांतिकारी प्रतिबिम्ब प्रदान की। उसने लिखा कि 'हमारे चारों ओर जीवन में सड़ककाहट है। नयी घाबलाएँ बन रही हैं, नयी साहसपूर्ण मांग सामने आ रही हैं, नये मनुष्य का जन्म हो रहा—यह नया मनुष्य बीबन और मात्या के अत्यन्त महत्त्वपूर्ण प्रश्नों का बनाव मागता है। यह जानना चाहता है कि सत्य और न्याय कहीं हैं, कहीं बोल्शेविक और कौन बुधमन है।

मैक्सिम गार्डी ने इन नये मनुष्य का पथ दिखाया और साक्षात्कार या तटस्थता का ढाग न रख कर बताया कि कहीं दास्त मिर्जेय और कौन बुधमन है। उसने नयी माँबा का समझा और फलतः साहित्य के नये कर्तव्यकर्तव्य का प्रतिपादन किया। उसने साहित्य को इन नये मनुष्य को क्रांतिकारी प्रोत्साहित करने की आवश्यकताओं और आकांक्षायों का अभिव्यक्ति ही न बताया बरन् उसे इनका बचप्रसर्ग भी बना दिया। उसने कुछ कला या 'तटस्थ साहित्य' को अस्वीकार कर साहित्य को सर्वहारा वर्ग का समर्पक बना दिया और समाजवादी संस्कृति का निर्माण तथा पोषण साहित्य का लक्ष्य बताया।

इस काम में उसे लेनिन ने बड़ी प्रेरणा मिली। इस क्षेत्र में लेनिन के लेख 'पार्टीबारी समझन और पार्टीबारी साहित्य' का बड़ा प्रभाव और महत्त्व है। इन लेख में लेनिन ने प्रोत्साहित साहित्य के प्रति कम्युनिस्ट पार्टी का दृष्टि निश्चित कर दिया और साहित्य का जनता के हित के साथ संबन्धित और समन्वित कर दिया। उसने वर्ग विभक्त समाज में 'कुछ कला के सिद्धान्त' को वर्गबन्ध ठहराते हुए लिखा कि 'समाज में रहने हुए समाज से स्वतन्त्र हो जाना वर्गभ्रम है। इसलिए उसने साहित्य और कला को प्रोत्साहित करने के लिए कम्युनिज्म की स्थापना के लिए सदैव नवाम के सामान्य लक्ष्य का एक बंध बताया और फलतः साहित्य में क्रांतिकारी दृष्टिकोण से सामाजिक राजनीतिक बहनाओं के मूल्यांकन की माँग की। उसने लिखा कि साहित्य को अवश्यमेव पार्टीबारी होना चाहिए।

फलतः बल्खर क्रांति के बाद वह देश में लोचिपत साठन की

स्वतंत्रता हुई और शासन सूत्र कम्युनिस्ट पार्टी के हाथ में आ गया तो इस नये युग में रूसी साहित्य के निर्माण और विकास को अपूर्ण अवसर मिला और वह सर्वथा नयी दिशा की ओर प्रवृत्त हुआ। अक्टूबर क्रान्ति के बाद का रूसी साहित्य 'सोवियत साहित्य' कहलाता है जिसका संस्थापक मैक्सिम गोर्की है और जिसका मूल प्रेरक लेनिन है, जिसका रूस पार्टीवादी है जो प्रोत्साहित्यहीन समाजवादी संस्कृति का पोषक है और जो कम्युनिस्ट पार्टी के निर्देशन में समाजवाद के निर्माण के बीच निर्मित हुआ है। आगे के पृष्ठों में इसी 'सोवियत साहित्य' की रूपरेखा प्रस्तुत की जायगी।

-----



यह काम मैक्सिम गोर्की ने किया। उसने युग की आवश्यकताओं को समझा और साहित्य को क्रांतिकारी गतिविधि प्रदान की। उसने लिखा कि 'हमारे चारों ओर जीवन में कठबकाहट है। नयी भावनाएँ जन रही हैं नयी माहमपूर्ण माने सामने आ रही हैं, नये मनुष्य का काम हो रहा—यह नया मनुष्य जीवन और मारपी के अत्यन्त महत्त्वपूर्ण प्रश्नों का जवाब माँगता है। वह जानना चाहता है कि मर्य और न्याय कहाँ है, कहाँ होस्त मिलेंगे और कौन दुरमन है।

मैक्सिम गोर्की ने इस नये मनुष्य का पक्ष लिया और बाह्यार्थता या छटस्वता का ढोंग न रच कर बताया कि कहाँ होस्त मिलेंगे और कौन दुरमन है। उसने नयी मानों को समझा और फलतः साहित्य के नये कर्तव्याकर्तव्य का प्रतिपादन किया। उसने साहित्य को इस नये मनुष्य की क्रांतिकारी प्रोत्तिहारियत की आवश्यकताओं और आकांक्षाओं का अभिव्यक्त ही न बताया बरन् उसे इसका पत्रप्रवर्तक भी बना दिया। उसने युद्ध कला या 'छटस्य साहित्य' को मस्वीकार कर साहित्य को सर्वहारा वर्ग का समर्थक बना दिया और समाजवादी सस्कृति का निर्माण तथा पोषण साहित्य का कर्तव्य बताया।

इस काम में उस लेनिन से बड़ी प्रेरणा मिली। इस क्षेत्र में लेनिन के लेख 'पार्टीवादी संग्रह और पार्टीवादी साहित्य' का बड़ा प्रभाव और महत्त्व है। इस लेख में लेनिन ने प्रोत्तिहारियत साहित्य के प्रति कम्युनिस्ट पार्टी का दृष्टि निरिक्त कर दिया और साहित्य को जनता के हित के साथ संबंधित और समन्वित कर दिया। उसने बड़े विभक्त समाज में युद्ध कला के सिद्धान्त को अर्थमय ठहराते हुए लिखा कि 'समाज में रहत हुए समाज में स्वतन्त्र हो जाना अर्थमय है। इसलिए उनसे साहित्य और कला को प्रोत्तिहारियत द्वारा कम्युनिज्म की स्थापना के लिये छोड़े गये लगान के सामान्य कर्तव्य का एक अंग बताया और फलतः साहित्य में क्रांतिकारी बुद्धिकोष से सामाजिक राजनीतिक घटनाओं के मूल्यांकन की माँग की। उसने लिखा कि साहित्य का आवश्यकता पार्टीवादी होना चाहिए।

फलतः यक़ुबर क्रांति के बाद जब देश में सोवियत साम्य की

स्थापना हुई और साधन सूत्र कम्युनिस्ट पार्टी के हाथ में आ गया तो इस नये युग में रूसी साहित्य के निर्माण और विकास को अपूर्व लक्ष्यर मिता और बहु शर्तका नयी विधा की ओर प्रवृत्त हुआ । अस्तुत्तर अन्ति के बाद का रूसी साहित्य सोवियत साहित्य कहलाता है जिसका संस्थापक मैक्सिम गोर्की है और जिसका मूख प्रेरक लेनिन है, जिसका रूस पार्टीबादी है, जो प्रोखिवारियदीय समाजबादी संस्कृति का शीपक है और जो कम्युनिस्ट पार्टी के निर्देशन में समाजबाद के निर्माण के बीच निर्मित हुआ है । मागे के पृष्ठों में इसी 'सोवियत साहित्य' की स्मरेखा प्रस्तुत की जायगी ।





भाग २



## १ मैक्सिम गोर्की

### जीवन

मस्कोवर क्रांति के साथ रूसी साहित्य ने जो समाजवादी पक्ष अपनाया उस पर मैक्सिम गोर्की प्रकाश-स्तम्भ के समान स्थित है। कलात्मक क्षेत्र में मैक्सिम गोर्की सर्वहारा-साहित्य का प्रस्थापक और समाजवादी न्यायवादिता का कलाकार तथा व्याख्याता माना जाता है। क्रांतिकारी आंदोलन तथा गोर्की ने एक दूसरे को विकसित तथा पुष्ट किया। अतएव सोवियत साहित्य के उत्कर्ष के नारम्भ में मैक्सिम गोर्की के जीवन और उसके साहित्य का उल्लेख अत्यावश्यक है।

### आधिर्भावकाव्य की परिस्थिति

उपरीसर्ती शक्ती के अंत में गोर्की का निर्माण या मज्ज होना है और यही समय है जब कि स्वाधीनता या स्वतंत्रता आंदोलन का नया युग शुरू होता है जिसमें मज्जूर वर्ग सबसे आगे हैं। इस संबंध में सन् १९१४ में सेनिन ने लिखा कि 'रूसी स्वाधीनता आंदोलन की तीन मंडलियाँ हैं जो कि रूसी समाज के तीन मुख्य वर्गों के अनुकूल हैं। इन वर्गों की इस आम्हो सन पर अपनी छाप है

(१) सन् १८२५ से १८६१ तक—रबारी युग।

(२) १८६१-१८९५ तक—बुर्जुआ डिमाक्रेटिक युग।

(३) १८९५—वर्तमान समय तक—सर्वहारा या प्रोलेटारियत् युग।

१८८४ से १८९४ के समय को सेनिन रूस में क्रांतिकारी भावसंवादी विद्रोह की रचना का युग मानता है और १/९४ से १८९८ के समय को जनव्यापी क्रांतिकारी आन्दोलन में इन विद्रोहों के समावेश का समय समझता है।

<sup>१</sup> रूसक्या साबोत्स्वया सिवैरतुरा ख० इ० विमोफेयेव पृ० २८।

१८७५ में 'मजदूरों का रूसी संघ' स्थापित होता है। १८७८ में पीतरबुर्ग में 'रूसी मजदूरों का उत्तरी संघ' बनाया जाता है। १८८३ में प्लेखानोव ने जेनेवा में 'श्रम की स्वाधीनता' की स्थापना की। सन् १८९० के आसपास मास्को तथा अन्य नगरों में मजदूरों के विभिन्न क्रान्तिकारी संगठन बन जाते हैं। १८९३ में लेनिन पीतरबुर्ग जाता है और अखण्ड क्रान्तिकारी समुदायों को एक में मिलाकर १८९५ में "मजदूर वर्ग की स्वाधीनता युद्ध का संघ" की रचना करता है। १८९८ में "रूसी-सांशक-डिमोक्रेटिक मजदूर पार्टी" का प्रथम अधिवेशन होता है। दिसम्बर १९०० में लेनिन विदेश के प्रसिद्ध पत्र 'विमर्गाटी' (इस्का) का प्रकाशन करता है जिसका क्रान्तिकारी आंदोलन के संगठन में बड़ा हाथ रहा है। जुलाई १९०३ के रूसी-सांशक-डिमोक्रेटिक पार्टी के द्वितीय अधिवेशन (ब्रुसेल्स-संवेन) ने श्रमिक क्रान्तिवादी आंदोलन में मार्क्सवाद को और भी पुष्ट बनाया और पार्टी के अधिनियम और कार्यक्रम को निश्चित किया।

इस प्रकार मार्क्सवाद ने सुमिश्रित और सन्नद्ध मजदूर या श्रमिक वर्ग स्थापना आंदोलन में सबसे आगे आया जिसने लेनिन तथा स्तालिन के नेतृत्व में हम आंदोलन का रूप ही बदल दिया और उसे नयी दिशा की ओर उन्मुख किया। देश में अब हड़तालों की महूरें उठने लगीं जिसने शासन का प उठा और जिससे प्रोत्साहित आसर्बहारा की बढ़नी हुई शक्ति का परिचय मिला। इन हड़तालों में लाखों मजदूरों ने शामिल होकर अपनी हड़ता और एघठा का प्रदर्शन किया।

सन् १९०० से क्रान्तिकारी आंदोलन का नया रूप समने आया जो सन्नद्ध विद्रोह का रूप था। १९०१ में पीतरबुर्ग के अखण्डरूसी कारखाने में पहली मर्द की मजदूरों की हड़ताल में निपाहियों का शस्त्रों के साथ मुकाबिला किया गया। क्रान्तिकारी विचार तथा आंदोलन अब चौक तथा नौसेना में भी फैलने लगा। १९०५ की शक्ति ने सारे देश को हिला दिया। क्रान्तिकारी आंदोलन की व्यापकता का आभास या संवाह रानी से मिस उफता है कि इन शक्ति की पराजय के बाद जो समन-वक

बल्का उसमें आंदोलन में भाग लेने के अपराध में तीन साल व्यक्ति पिछे फिर भी क्रांतिकारी-आंदोलन नष्ट न हुआ और निरंकुश शासन के अत्याचारों को झेलते हुए मजदूर या सबहारा बर्ग मजबूत तथा सुदृढ़ होकर सामन आया। इसने स्पष्टतया प्रदर्शित कर दिया कि वह प्राचीन व्यवस्था को मिटाने तथा शासन की बागडोर अपन हाथ में ले लेने में पूर्वतया सख्त तथा समर्थ है। आगे चलकर मेनिन ने इसी सर्वहारा बर्ग को संगठित कर बारखाही का उस्ता उभट दिया और देश में सोवियत शासन की स्थापना की।

### जन्म, बचपन तथा खबानी

स्वाधीनता आंदोलन के नये युग का यह अत्यन्त संश्लिष्ट बिन्दु है जो कि सन् मध्ये (१८९०) से शुरू होता है। इसी समय अमेकनेइ मेक्सी-मोविच गोर्की का कार्यलय में प्रवेश होता है। अमेकनेइ मेक्सीमोविच वेस्कोव (मैक्सिम गोर्की) का जन्म १६ (२८) मार्च सन् १८६८ में निज्नी नोबोमोरद में हुआ। उसके जन्म के चार वर्ष बाद ही उसके पिता की हूँसे से मृत्यु हो गई और उसकी माँ (मारिया बगीत्येन्ना) अपने पिता के परिवार में रहने लगी जहाँ रंससाबी का काम होता था।

गोर्की की माँ परिवार में बहुत कम रही गोर्की का पालन-पोषण प्रधानतया उसकी नानी अकुसीना इवानोव्ना क्सीरीमा ने किया। यह बुद्धिमती तथा अत्यन्त सख्त थी। इसका कमी भाषा पर बड़ा अच्छा अधिकार था। यह बहुत ही कर्भाएँ और पीछे जानती थी और यिसु गोर्की को यह कर्भाएँ तथा पीछे सुनाया करती थी।

गोर्की का बचपन बड़ा कष्टपूर्ण बीता। उसे ठीक मिला भी न मिला सही क्योंकि माना का परिवार निर्धन हो गया था। उन स्कूल से तीसरे हूँसे से ही हटा लिया गया। बचपन में उसे सभी प्रकार के काम करने पड़े। परिवार की सहायता करने के लिए वह बरबाड़े-बरबाड़े चिपड़े कामन रही आदि इकट्ठा किया करता था और उसे दो चार पैसों में बेच दिया करता था। एक बार काम करते हुए उसके हाथ में जल गये। वह एक 'ड्राप्ट्स मैन' के यहाँ भी पिला पाने के लिए भेजा गया किंतु वहाँ



उसे बचकर बर्तन बोलने पड़ते थे और छल्यं साध करनी पड़ती थी। गोर्की यहाँ से भाग गया।

यहाँ से भाग कर वह घर न गया और बोल्शा गरी पर बोला होने वालों की सहायता करने लगा। इस समय उसकी उम्र कुछ ग्यारह वर्ष की थी। उसने एक स्टीमर पर नौकरी कर ली जहाँ मुबम् से घाम तक उसे बर्तन बोलने पड़ते थे। इस तरह उसका बचपन बीत गया और वह यह न जान पाया कि बचपन कैसा होता है। अब 'जगत के बीच' उसके जीवन का आरम्भ हुआ।

कई वर्षों तक गोर्की एक जगह से दूसरी जगह घूमता-बटकता रहा और हर पेसे का काम करता रहा। उसने मानबाई की नौकरी की जेल पर सामान चौकता रहा तथा रात का पहरेदार बना। निम्नी से वह कबान पहुँचा और कबान से कैस्पियन सागर के तट पर मस्की पकड़ने वालों के बीच जा पहुँचा। फिर भी वह बचकर पड़ता रहा और परिश्रम द्वारा लिखने पढ़ने में पूर्ण मग्न हो गया। ऐसे कठिन जीवन के बीच गोर्की का चरित्र दृढ़ हुआ उसका अनुभव बढ़ा और जगत के साथ उसका संबंध अनिच्छा से बढ़ा।

### साहित्यिक कार्य-कलाप की तैयारी

मानी के मीठों और कबानों से गोर्की के हृदय में कलात्मकता का बीज अंकुरित हुआ। फिर स्टीमर पर बर्तन बोलने की नौकरी करते समय जब उसका परिचय स्टीमर के रमाइये से हुआ तो वह उससे विकासका दूमरा महत्वपूर्ण क्षण सिद्ध हुआ क्योंकि इस रमाइये (स्पूरी) की पढ़ने का व्यसन था और वह पार्सी से खोर-खोर से पढ़वा कर सुनता था। इन रमाइये का सम्बन्ध मानो एक छोटा सा पुस्तकालय था जिसमें गोर्की को ओपल नेफ्रसोच स्पेक जस्पेन्सकी आदि की पुस्तकें पढ़ने को मिली।

१८८४ में कबान में आकर वह बुद्धिजीवियों तथा लक्षण अभिकारियों के सम्पर्क में आया और उसका गम्भीर अभिकारी साहित्य से परिचय हुआ। गोर्की ने इस समय पार्स्य का ग्रंथ 'पूबी' (करितास) पढ़ा। इस समय वह बड़े परिश्रम के साथ आत्म-विश्रान में लगा और उसने कुछ

तथा बिदेसी 'कलासिक' पढ़। १८८९ तक वह इतना पढ़ गया था कि इस सन् में वह मिजनी नगर बाबर एक वकील का मुँदी बन गया। इसी समय उसका साहित्यिक कायकलाप शुरू हुआ। उसने एक बड़ी कविता (आख्यानक) 'पुराने वृत्त का पीठ लिखी और बहुत सी दूसरी कविताएँ रहीं।

गोरकी ने यह बड़ी कविता कोरोस्पेन्को को दिखाई। कोरोस्पेन्को की आलोचना इतनी तीधी थी कि गोरकी ने आगे न लिखने का निश्चय कर लिया और सन्मूष दो साल तक उसने कुछ न लिखा।

१८९१ में गोरकी ने रूस की पहली रूसी भाषा पुरी की। इसमें वह बोल्गा वान यूकन बसाराबिया अरेसा फीम, कुवान बावि की पैसल यात्रा करते हुए विफिसस तक पहुंचा। उसने में किसी किसान के यहाँ काम करते हुए या बोला होनेवाले का काम करते हुए वह खराब आगे चकता गया। इस यात्रा में गोरकी को अमूस्य सजनात्मक सामग्री प्रदान की। 'मकार बुद्रा' 'अ्यककस' 'बुकिना इजरपिल' आदि गोरकी की कृतियाँ इसी यात्रा के अनुभवों पर आधारित हैं। इस यात्रा में उसे देस से, किसानों की जिन्दगी से सहर के मजदूर, आशारा तथा मिस बंगों वगैरे से अच्छी तरह परिचित करा दिया।

गोरकी के 'बचपन', 'जनता के बीधा', 'मेरे, विश्वविद्यालय' का आत्मकथात्मक महत्त्व

गोरकी का व्यक्तित्व अब परिपुष्ट हो गया था। गोरकी ने अपने जीवन तथा बचानी की जो 'बीधा' कथा लिखी है वह उसकी महत्त्वपूर्ण रचनाओं में मानी जाती है। उसकी इन कृतियाँ—'बचपन' (१९१२ में लिखित) 'जनता के बीधा' (१९१४-१९१५) 'मेरे विश्वविद्यालय' (१९२३) का आत्मकथात्मक महत्त्व है। इन कथाओं से पता चलता है कि उसका गोरकी का किस प्रकार निर्माण हुआ तथा उसके विचारों तथा आदर्शों में उसे किस और प्रेरित किया उसने इनमें न केवल अपने बचपन की ही छाँट ली है बल्कि उसीसँ उसी के अन्त के

कृती जीवन का व्यापक चित्र भी प्रस्तुत किया है जिसमें कृती जनता के अनेक रोषक रूप एवं पक्ष संकट किये गये हैं।

कृती साहित्य में जीवन से संबंधित अनेक महत्त्वपूर्ण कलाकृतियाँ हैं और यह नवी ऐसे जीवन का चित्रण करती हैं जिसे 'सर्वसाधारण जीवन' कहा जा सकता है, जहाँ सिद्ध प्रेमपूर्ण परिवार में बड़ा होता है, जहाँ उसकी शिशु आत्मा का शक्ति विकास होता है जहाँ उसके मानवीय चरित्र का निर्माण होता है और जिसकी याद लोग बाब में बड़ी कामकला के साथ किया करते हैं। गोर्की जीवन के संस्मरण के रूप में ऐसी सर्वथा नवी विषय वस्तु का प्रस्तुत करता है जिसमें सामाजिक जीवन की ऐसी परिस्थितियों का चित्रण किया गया है जिसमें निम्न सामाजिक स्तर के बच्चों का बचपन बीतता है, जो निर्बलता के बीच बड़े होते हैं और जहाँ उनकी मच्छी-बच्छी शक्ति शक्तियों का सम झूट जाता है।

किन्तु इससे साथ ही इन आत्मचरित्यात्मक कथाओं का मूल आधारभूत वस्तु-विषय गोर्की का व्यक्ति में विश्वास है—इस बात का विश्वास कि कृती व्यक्ति आत्ममय या कुदहाक जीवन के रास्ते की जितनी कठिनायें और कठिनाइयाँ हैं उनको दूर हटाने में पूर्णतया सक्षम है। उसने 'बचपन' में लिखा<sup>१</sup>

कृती जीवन की इन बीमस्थानों तथा कुस्पताओं की याद करता हुआ मैं हर क्षण अपने से पूछता हूँ कि क्या इनकी चर्चा करने से कोई लाभ है? और बड़े विश्वास के साथ जवाब देता हूँ कि 'हाँ लाभ है'।—यह वह मध्य है कि जिसकी उमकी लड़ या बड़ तक जानना अनिवार्य है, जिससे कि जने स्मृति से मनुष्य को आत्मा से, और अपनी कुस्पद तथा शर्मनाक जिन्दगी से बड़ में सहाय कर पकें हैं।

एक दूसरा कारण भी है जिसने मुझे इन कुस्पताओं के चित्रण के लिए बाध्य किया, यद्यपि ये कुस्पताएँ अबचिह्नर हैं और हमारा

<sup>१</sup>—रुस्क्या मनेत्क्या तिउेरानुरा से० तिमोडेवेव १० ३२।

बम बोट रही है—किर भी स्त्री व्यक्ति की आत्मा इतनी स्वस्थ तथा अक्षम है कि वह इन पर विजय पा रहा है और इन पर विजय पाएगा।

इन तीनों कमाओं के बीच अस्वोषा (अलेक्जेंडर) का चरित्र प्रस्तुत किया गया है जो वास्तव में गीर्की ही है। कज़ीरिन परिवार में जीवन स्टीमर पर काम नानबाई की मीनटी बौल्ला की यात्रा किशाना के बीच क्रांतिकारी काम उद्यम गीर्की के जीवन के यह सभी महत्वपूर्ण क्षण इन कमाओं में विहित हैं। अस्वोषा के माध्यम से पार्की स्त्री जीवन की विविधता प्रदर्शित करने वाले विभिन्न मामलों तथा विभिन्न घटनाओं का विवरण करता है। किंतु लोगो तथा घटनाओं का जो मूल्यांकन किया गया है वह अस्वोषा का ही दृष्टिकोण है। उसकी मुख्य विविधताएँ हैं—आभयिता अस्वाभारी के प्रति युवा आत्मविकास के लिए अथक परिश्रम तथा सूक्ष्म पर्यवेक्षण शक्ति।

साहित्य की महत्ता विद्यपत्तया स्त्री साहित्य का महत्त्व यह इन आत्मकथनों के मूलभूत विषय-वस्तुओं में से एक है। गीर्की यह चित्रित करता है कि अस्वोषा को साहित्य में वह आत्मिक शक्ति मिलती है जिससे कि वह पशुता के विरुद्ध व्यक्ति में अपना विश्वास बोधित करता है, धार्मिक प्राप्त करता है, और अपने चारों ओर के लोगों को ऊपर उठाता है।

सन् नवम् (१८९०) के स्त्री जीवन की हीनता का जो चित्र गीर्की कटु तथा निष्पक्ष सत्यता के साथ अंकित करता है वह एकापी ही रह जाता यदि गीर्की अपने को कबल इस सकारात्मक जीवन तक ही सीमित रखता। ऐसे जीवन के प्रतिफल में—जो कि लोगों को बचाता और नीचे गिराता है—गीर्की उस आत्मिक शक्ति को चित्रित करता है जो कि स्त्री जनता में है—और यह है स्त्री जनता की प्रतिमा तथा उसकी सहायता। स्टीमर पर अस्वोषा की मदद समीक्षया स्मृति करता है। इण्डसपीन के यहाँ काम करते हुए बहादुर तथा प्रमत्तचित्त बोधिन नतास्या कज़ीरिनकाया उसका पस लेती है इसी प्रकार उसे हर

क्रांतिकारी नवयुवक मण्डलों के सम्पर्क में आया। १८८८ में उसने वास्तु पर रहने वाले किसानों के बीच क्रांतिकारी प्रचार किया। १८८९ में मोर्फी पहली बार गिरफ्तार किया गया किन्तु महीने भर में ही छोड़ दिया गया। इसके बाद वह कई बार गिरफ्तार किया गया। १९०५ में मोर्फी ने एक घोषणा-पत्र तैयार किया जिसमें निकोलाई द्वितीय की सरकार को उलट देने के लिए कहा गया था क्योंकि ९ जनवरी को उसने जनता के प्रतिपक्ष प्रदर्शन पर गाली चलाने का हुनम दिया था।

दिसम्बर १९०५ में बिद्रोह के दिनों में मास्को में मोर्फी ने बड़ा काम किया। उसके घर में बम तैयार किये जाते थे। हुबिहार लौटने के लिए उसने बहुत स्यामा इकट्ठा किया उसने बोस्योविक समाचार पत्र 'मुज' (बर्वा) के संगठन में योग दिया जो क्रांति के समय १९०५ में निरसता था इसी समय पीनगर्बुव में नेनिन और मोर्फी की पहली बार भेंट हुई। मास्को क्रांति के समय के बाद १९०६ में मोर्फी पार्टी की आज्ञा से देश छोड़कर बाहर चला गया। वह इटली में कैरी टापू पर रहने लगा। इहीं वर्षों में (१९०६) 'मा' उपन्यास लिखा गया।

### विदेश में मोर्फी

विदेश में रहते हुए मोर्फी बराबर साहित्यिक और सामाजिक कार्य करता रहा। इन वर्षों में (१९०८-१९१३) उसने अनावाक्यत आबनी का जीवन 'मलेइ कर्जेन्वाकिन का जीवन' 'बचपन गर्मी' 'इटली' की बहालियाँ आदि लिखी। स्त्री क्रांतिकारियों के लिए उसने स्कूल का संगठन किया जहाँ वह स्वयं स्त्री साहित्य के इतिहास पर लेख करता था। १९०७ में वह 'स्त्री-सोशल-डिमोक्रेटिक पार्टी' के अधिवेशन में संलग्न गया। इन समय वह एनिन के निकट आया और फिर दोनों के बीच बड़ा प्रेमपूर्ण संबंध रहा।

### रूस में मोर्फी का पुनरागमन

मोर्फी १९१३ में स्वदेश वापस लौटा। उसकी माँठि इन समय

भी वह तब तक कमी लेखकों से संबंध बनाए रहा। सधन आरम्भ करने बाद तब प्रोत्साहित कृतकों की सहायता करना वह अत्यन्त महत्वपूर्ण समझता था। १९१४ में उसने 'प्रोत्साहित कृतकों की रचनाओं का संकलन प्रकाशित किया। १९१५-१६ में 'सेनापति' पत्र के संगठन में उसने योग दिया जिसमें कि उसने मायकास्की की कविता 'युद्ध और शान्ति' छापी। इसी समय पार्सी का मामकोव्स्की से परिचय हुआ। 'जनता के बीच' इसी समय की शीर्षक है। १९१७ में उसने 'प्रोत्साहित कृतकों' का दूसरा संकलन निकाला। १९१७ में पार्सी पेशवाइ में था वही वह बारगाही के विरुद्ध बराबर (सेनापति पत्र में) प्रचार करता रहा।

आरम्भ में पार्सी १९१७ की अधिकारी कृतकों के महत्व को ठीक तरह से नहीं समझ सका। लेकिन तथा स्तानिन न पार्सी की कृतकों की आलोचना की जिससे कि वह फिर ठीक रास्ते पर आ गया और वह बोलचालों से भाव हो गया। पार्सी ने अपने कुछ 'लेखन' में अपनी इस समय की कृतकों की प्रशंसा की है।

### अनुभव शक्ति के बाद पार्सी का जीवन

अनुभव शक्ति के आरम्भिक दिनों में ही पार्सी सोवियत शासन की समाजवादी सहायता की स्थापना में सहायता देना लगा। विद्वानों की सहायता के लिए उसने कमीशन की स्थापना की और 'अखिल विश्वसाहित्य' प्रकाशन की व्यवस्था की। १९१९ में उसने सियो तोलस्तोय के मरण में अपने संस्मरण लिखे।

कार्यालय के कारण पार्सी की उपरिष्ठ की बीमारी बढ़ गई और लेकिन के अत्यधिक आग्रह पर उसे इलाज के लिए विदेश जाना पड़ा। विदेश में उसने 'मिरे विश्वविद्यालय' आन्टोनोवोवाचों का कर्म तथा कोरास्कोका ब्लाक एमेरिगल अन्वेषण लेकिन के संबंध में अपने संस्मरण लिखे और 'संक्षिप्त समग्र का जीवन का आरम्भ किया।

१९२८ में पार्सी स्वदेश वापस आया। मास्को में बोलास्की स्टेशन पर उसका अन्त्य स्थापित किया गया और वह 'सुन्दर इत्यन्तही लेखनी

क्रांतिकारी नवयुवक मण्डलों के सम्पर्क में आया। १८८८ में उसने पोस्ना पर रहने वाले किसानों के बीच क्रांतिकारी प्रचार किया। १८८९ में योर्की पहली बार गिरफ्तार किया गया किन्तु महीने भर में ही छोड़ दिया गया। इसके बाद वह कई बार गिरफ्तार किया गया। १९०५ में योर्की ने एक बोपचा-वच तय्यार किया जिसमें निकालाई द्वितीय की सरकार का उलट देने के लिए कहा गया था क्योंकि ९ जनवरी को उसने प्रमता के घातिपूष प्रदर्शन पर मास्की चलाने का हुजम दिया था।

दिसम्बर १९०५ में बिग्रोह के दिनों में मास्को में गोर्की ने बड़ा काम किया। उसके घर में बम तय्यार किये जाते थे। हुबियार खरीदन के लिए उमने बहुत शय्या इकट्ठा किया उमने बोल्शेविक समाचार पत्र 'सुद्ध' (बर्दी) के संगठन में योग दिया जो क्रांति के समय १९१५ में निवसता था इन्ही समय पीतरबुर्ग में मनिन और मार्की की पहली बार मेट हुई। मास्को क्रांति के समय के बाद १९०६ में योर्की पार्टी की मात्ता से बैग छोड़कर बाहर चला गया। वह इटली में कैरी टापू पर रहने लगा। इन्ही वर्षों में (१९०६) 'मा' उपन्यास लिखा गया।

### विदेश में गोर्की

विदेश में रहते हुए गोर्की बराबर साहित्यिक और सामाजिक कार्य करता रहा। इन वर्षों में (१९०८-१९१३) उमने 'जनाबयक मादमी का जीवन' मस्बेइ कबेन्माकिन का जीवन' 'बचपन गर्मी' 'इटली की कहानियाँ' जारि सिग्रीं। स्त्री क्रांतिकारियों के लिए उसने स्वल्प का संगठन किया जहाँ वह स्वयं स्त्री साहित्य के इतिहास पर लेखन करता था। १९०७ में वह 'स्त्री-सोसाय-डिमोक्रटिक पार्टी' के मन्विषेण में लइन गया। इस समय वह बेनिन के निकट आया और फिर दोनों के बीच बड़ा प्रेमपूर्ण संबंध रहा।

### रूस में गोर्की का पुनरागमन

मार्ची १९१३ में स्वदेश वापस लौटा। लडा की मांति इस समय

मी वह तस्य क्मी सेवकों मे सबब बनाए रहा । सभन बारम्भ करन वाले तरुण प्रोत्साहित्यत सत्तकों की सहायता करना वह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण समझता था । १९१४ में उसने 'प्रालिनागियत सत्तकों' की रचनाओं का संकलन प्रकाशित किया । १९१५-१६ में 'कतोपिस' पत्र के संपादन में उसने योग लिया जिसमें कि उसन मायकोष्की की कविता 'युद्ध और शान्ति' छपा । इसी समय गीर्दी का मायकोष्की से परिचय हुआ । 'जगत क बीच' इसी समय की बीच है । १९१७ में उसन 'प्रालिनागियत सेवकों' का दूसरा संकलन निकाला । १९१७ म गीर्दी वेनापाद में था वही वह बारमाही क बिन्दु बरबर ( कतोपिस पत्र में) प्रचार करता रहा ।

बारम्भ में गीर्दी १९१७ की क्रांतिकारी बटनाओं के महत्त्व का ठीक तरह से नहीं समझ सका । कनिज तथा स्टाकिन न गीर्दी की प्रसिधियों की आलोचना की जिससे कि वह डिग ठीक रात्म पर आ गया और वह बोल्शेविकों क साथ हा गया । गीर्दी म कवन कल 'कनिज' में अपनी इस समय की प्रसिधियों की चर्चा की है ।

### अक्तूबर क्रांति के बाद गीर्दी का जीवन

अक्तूबर क्रांति के आरम्भिक दिनों में ही गीर्दी माबियत पासन की धनाबकारी संस्थापि की स्थापना में सहायता देन लगा । विद्वानों की सहायता के लिए उसने कर्मीपम की स्थापना की और अखिल विश्वसाहित्य प्रकाशन की व्यवस्था की । १९१९ में उसन कियो टोल्स्टाय के संबंध में अपने मस्मरण लिखे ।

कार्यान्वय के कारण गीर्दी की उपद्रिक की बीमारी बढ़ गई और केनिल के आर्थिक आग्रह पर उस इलाज के लिए विदेश जाना पड़ा । विदेश में उसने 'दरे विश्वविद्यालय' 'आरगानाताओं का काम' तथा 'कोराम्बेका व्याक एवेनिल क्सेयब कनिज क संक्षेप में अपने सुस्मरण लिख और 'विस्म समयित का जीवन का आरम्भ किया ।

१९२८ में गीर्दी स्वदेश वापस आया । मास्को में बेटाकोष्की स्टेगम पर उसका मध्य स्थापन किया गया और वह 'सिन्दूर इत्यस्यी तुस्यी



क्रांतिकारी नवयुवक मण्डलों के सम्पर्क में आया । १८८८ में उसने पोल्या पर रहने वाले किसानों के बीच क्रांतिकारी प्रचार किया । १८८९ में योर्की पहली बार गिरफ्तार किया गया किन्तु महीने भर में ही छोड़ दिया गया । इसके बाद वह कई बार गिरफ्तार किया गया । १९०५ में योर्की ने एक घोषणा-पत्र तय्यार किया जिसमें निकालाई द्वितीय की सरकार को उखट देने के लिए कहा गया था क्योंकि ९ जनवरी को उमन जनता के साक्षिपूर्ण प्रदर्शन पर गोली चमकाने का हुक्म दिया था ।

दिसम्बर १९०५ में बिरोह के दिनों में मास्को में गोर्की ने बड़ा काम किया । उसके घर में बम तय्यार किए जाते थे । हथियार खरीदने के लिए उसने बहुत खया इकट्ठा किया उसने बोल्शेविक समाचार पत्र 'सुड' ( बुद्ध ) के संगठन में योग दिया जो क्रान्ति के समय १९०५ में निकलता था इसी समय पीटरबुर्ग में लेनिन और गोर्की की पहली बार भेंट हुई । मास्को क्रान्ति के समय के बाद १९०६ में योर्की पार्टी की आजा से देष छोड़कर बाहर चला गया । वह इटली में कैरी टापू पर रहने लगा । इन्हीं वर्षों में ( १९०६ ) 'मा' उपन्यास लिखा गया ।

### बिरोह में गोर्की

बिरोह में रहते हुए योर्की बराबर साहित्यिक और सामाजिक कार्य करता रहा । इन वर्षों में ( १९०८-१९१३ ) उसने 'अनाथवयस्क आदमी का जीवन' मल्बेइ कर्बेम्पाकिन का जीवन' 'बचपन गर्मी' 'इटली' की कहानियाँ आदि लिगी । स्त्री क्रांतिकारियों के लिए उन्हने स्कूल का संयोजन किया जहाँ वह स्वयं स्त्री साहित्य के इतिहास पर लेखर देता था । १९०७ में वह 'स्त्री-सोशल-डिमोक्रेटिक पार्टी' के अधिवेशन में बंदन गया । इस समय वह लेनिन के निकट आया और फिर दोनों के बीच बड़ा प्रेमपूर्ण संबंध रहा ।

### रूस में गोर्की का पुनरागमन

यार्की १९१३ में स्वदेस वापस आया । मद्रा की भाँति इस समय

इस समय की उनकी रचनाएँ हैं—'मकार बुत्रा' (१८९२) 'एमेरियान विस्वाइ' (१८९३) 'बाबा अर्मीय और स्योन्का' (१८९४) 'बाब का पीठ' (१८९५) 'बुनिया इजरगिक' (१८९६) 'अपमकन' (१८९६) 'कनवाणाव' (१८९७) 'ऊँच के कारण' (१८९८) 'बारेन्का अमेमोवा' (१८९८) तथा अन्य ।

इन वर्षों की गोर्की की कलात्मक मर्जना की मुख्य विशेषता यह है कि उसे मनुष्य के मनी कार्यों से दिसवन्धी है और मानवता की तड़पन से उसके हृदय का स्पन्दन मिल जाता है। इसके माथ ही गोर्की केवल मानवता की तड़पन का ही चित्र नहीं खींचता बल्कि उसका मनुष्य की पक्षि में विश्वास है, और सबसे अधिक उसे स्त्री जनता की पक्षि में विश्वास है। उसने लिखा कि "मैं देखना हूँ कि स्त्री जनता अमाचारण तथा प्रणिमागामी है। लया को आश्चर्य में डालनबामी यह जनता कीरता की अनाखी विश्वासी विताएपी और बहुता को मिलाएगी।"<sup>१</sup> गोर्की इसी मानवता व मुख तथा स्वाधीनता का माग कर रहा है। गोर्की की इसी मानवता ने उसे मार संसार का प्रिय सेवक बना दिया।

अन्य लेखन की इस प्रथम अवस्था में गोर्की एक बार तो स्त्री कलात्मिक साहित्य के कर्तों और मुक्तिनों के उत्तराधिकारी के रूप में सामने आता है और दूसरी बार नये युग की मनी विषय बन्धुओं का इनमें समावेश करता है।

### गोर्की के आरम्भिक युग का क्रांतिकारी रोमांटिसिज्म या स्वच्छंदतावाद

गोर्की की पहली कहानी 'मकार बुत्रा' रोमांटिक या स्वच्छंदतावादी रचना है जो पुश्तान्तरमनत्रोत्र गोमस की प्रपठिनीस रोमांटिसिज्म के निरुक्त है।

इसके मध्य में एक पात्र—काइवा अवार और राहा है जो अपन विचार तथा विद्वानों की रला के सिद्ध सर्वैव तन्त्र रहने हैं जैसे

<sup>१</sup> स्त्रिया सबेत्कना शिउेरापुरा क इ० तिमोकेवेव ५० ४१।

कमेटी" का सबसे पुना बना। १८१२ में उसके साहित्यिक कार्यक्रमों की चासीस वर्षीय बुझिनी मनाई गरी। योकी के सम्मान में निम्नी मोमोमोरक (बहाँ बह वैदा हुमा बा) का नाम बरस कर योकी रस दिया गया तथा बहुत सी सस्थाओं का नाम योकी के नाम पर रखा गया।

योकी के घबू उसकी हुरवा के प्रमल में ब। १९१४ में उम्होंने उसके पूब (म० म० पेरकोष) की हुरवा कर ही। योकी ने इस आबाल को बीरठापूर्वक सहा बीर बह अपने काम में लया रहा। इसी समय बह सोबियत सैयकों के संब का सभापति बना गया। अपने जीवन के अन्तिम वर्षों तक योकी साहित्यिक तथा प्रचारारमक कार्य में लया रहा। इन अन्तिम वर्षों में उसने जो कहानियाँ लिखीं उम्हें उसने 'बहादुरों की कहानियाँ' नाम दिया। इन कहानियों में उसने उन मजदूरों तथा अन्य काम करने वालों का चित्र लीखा है जो समाजवादी समाज की रचना कर रहे हैं।

धीरे-धीरे योकी का राग बढ़ता गया बीर (१८ जून) १९१९ में उसका शरीरान्त हो गया।

योकी सोबियत-संस्कृति का केन्द्र बिन्दु बन गया था। इसके साथ ही बह बिस्व-साहित्य का सपना भी था। इसी से उसका व्यक्तिगत तथा जनकी कृठियाँ विभिन्न देशों तथा विभिन्न सभियों के सैयकों को सदा स्फूर्त और प्रेरणा देती रहीं। फ्रांसीसी लेखक हेनरी बारथुम ने कहा कि 'वर्तमान समय में योकी संसार को प्रकाशित करने वाला महान प्रदान है।'

उसकी मृत्यु पर मोकोलाब ने कहा कि "हमारे देश तथा मानवता के लिए योकी की मृत्यु सैनिक की मृत्यु के बाद सबसे बड़ी हासि है।"

योकी के लेखन की पहली अबस्था

योकी की कलात्मक कर्जना का पहला युग १८९२ से १८९९ तक माना जाता है।

इस समय की उसकी रचनाएं हैं—'मकार बुश' (१८९२) 'एमेसियान पिस्याइ' (१८९३) 'बाबा अरस्तीप और स्पोन्का' (१८९४) 'बाब का गीत' (१८९५) बुडिया इजगमिल' (१८९५) 'श्वेत्स्वय' (१८९५) कनबालाब' (१८९७) 'ऊब के कारण' (१८९८) 'बारेन्का अलेयोबा' (१८९८) तथा अन्य ।

इन वर्षों की गोर्की की कलात्मक मर्जना की मुख्य विशेषता यह है कि उसे मनुष्य के सभी भावों से दिसखसी है और मानवता की तड़पन से उसके हृदय का स्पन्दन मिल जाता है। इसके माय ही गोर्की केवल मानवता की तड़पन का ही चित्र नहीं खींचता बल्कि उसका मनुष्य की शक्ति में विस्वाम है, और सबसे अधिक उसे स्त्री जनता की शक्ति में विश्वास है। उसने लिखा कि "मैं इतना हूँ कि स्त्री जनता समाधारण तथा प्रतिमासाही है। लोगों को आदर्श में बाँधनेवासी यह जनता बीरता की अनाखी चिन्मयी बिठाएगी और बहनों को मिन्वाएगी। 'गोर्की इसी मानवता के मुख तथा स्वाधीनता का मार्ग इँडे रहा है। गोर्की की इसी मानवता ने उस सार संगार का प्रिय लक्षक बना दिया।

अपने लेखन की इस प्रथम अवस्था में गोर्की एक ओर तो स्त्री कलात्मक साहित्य के कर्तव्य और मुक्तियों के उत्तराधिकारी के रूप में सामने आता है और दूसरी ओर नये युग की नयी विषय वस्तुओं का इनमें समावेश करता है।

### गोर्की के आरम्भिक युग का क्रांतिकारी रोमांटिसिज्म या स्वच्छन्दतावाद

गोर्की की पहली कहानी 'मकार बुश' रोमांटिक या स्वच्छन्दतावादी रचना है या पुरिचन अरसनत्रोष गायल की प्रगतिर्धीन रोमांटिसिज्म के चित्र है।

इसके मध्य में ऐसे पात्र—साहक पदार और राजा हैं जो अपने विचार तथा विश्वासों की रक्षा के लिए मर्दब तयार रहते हैं, जैसे

<sup>१</sup>इस्क्या अवेत्स्क्या सितेरानुरा अ० इ० तिमोडेयव पृ० ४१ ।

मिलनी और तारत बुझा। उनके लिए जीवन की सबसे महत्वपूर्ण वस्तु है स्वतंत्रता और वे उसकी रक्षा में सब कुछ होम कर देने को तैयार हैं।

रोमांटिक चित्र या चित्रण की प्रधान विशेषता यह है कि इसमें सेलक मानवीय चरित्र की ऐसी विचित्रताओं को प्रदर्शित करता है जिसको वह जीवन के लिए अनसुख्य मानता है और उनको ऐसी परिस्थितियों के बीच बिभित करता है जो कि वास्तविक जीवन की परिस्थितियों से भिन्न नहीं जाती। रोमांटिक चित्र की शक्ति सेलक के माध्यम के स्पष्ट एवं सबसे अभिव्यंजन में है और उसकी सीमा इस बात में है कि माध्यम स्वतः सिद्ध रूप में प्रदर्शित किया जाता है, और वास्तविक जीवन की परिस्थितियाँ कहीं नहीं जहाँ कि उसकी पूरी-पूरी परीक्षा हो सके।

स्वतंत्रता का भाव भरने माध्यम के लिए मौल्य तक के लिए तैयार रहना—मानव व्यक्तित्व की इस शक्ति और साहस की तथा मार्गी करनी पहली कहानी में पाठकों को मिला रहा है। उसने बाठकों में प्रतिबाह और बुझता को वह भावना भरी जा कि माने बाक क्रांतिकारी युद्ध के लिए तैयार माध्यमक की। इसी से गोर्की का स्वच्छरतावादी क्रांतिकारी स्वच्छरतावादी है। उसका नायक योद्धा है जो साहसपूर्ण कार्यों के लिए तैयार है, और जनता के किये स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए मृत्यु की भी परवाह नहीं करता।

‘महार युद्ध’ कहानी स्वच्छरतावादी रचनाओं की विचित्रताओं से युक्त है। इसकी बटनाएँ वास्तविक जीवन की घटनाओं से दूर अभाषात्मक रूप में होती हैं। भाषा भाषावैश की है जो कि कहानी के प्रति सेलक के लयाव या आभारव की प्रकट करती है।

‘बाह का मौल’ ‘बुझिया इजरगिस’ ‘गाम और उमका बटा’ ‘लड़की और मौल’ तथा ‘गोर्की की अन्य रचनाएँ तथा मौल आदि के रूप में मिली पर्य है जो जीवन को पुष्ट करने वाले रोमांटिकिज्म से पूर्ण है। गोर्की का क्रांतिकारी रोमांटिक नायक

गोर्की की रोमांटिक रचनाओं में मुख्य चित्र और पुत्र का उभरता

है जो जनता के हित के लिए निस्वार्थ कार्य करने को तैयार है। ऐसे पक्ष के उद्घाटन में बुद्धिया इजरगिस कहानी का विशेष महत्व है। कहानी का मुख्य भाग यह है कि "यदि मैं अपने लिए नहीं तो कौन मेरे लिए? किन्तु "यदि मैं केवल अपने ही लिए तो फिर मैं किमलिए?" इनमें वह ही कर्पाए बना है जिसमें बाका तया मार के दो बिना एक दूसरे के प्रतिस्व उभरते हैं। दोनों ही व्यक्तिवादी व्यक्ति हैं किन्तु मार की सारी शक्ति कबल अपने लिए है। उसका कोई उच्च लक्ष्य नहीं है, जो उसका अंत प्रतिष्ठाहीन होता है। उसके मन में गार्की बुद्धिमा व्यक्तिवादिता की आकांक्षा करता है।

इस व्यक्तिवादिता के विरुद्ध पोर्की व्यक्ति के संबंध में ऐसी मानवता-वादी मानना की प्रतिष्ठा करता है जिसमें व्यक्ति अपनी सारी शक्ति जनहित में लगा देता है। बाकी एसा ही व्यक्ति है। वह अपनी जाति के मुक्त के लिए अपनी बलि चढ़ा देता है। रानाटिक रूप में पोर्की इस बिना में ऐसे व्यक्ति का उद्घाटन करता है जो जनहित के साहसपूर्ण कार्यों में आनंद प्राप्त करता है।

इस कथा में बुद्धि इजरगिस के यथार्थ बिना का भी विशेष महत्व है। इजरगिस बड़ी विचारविन है। वह अपनी स्वतन्त्रता को सब से अधिक मूल्यवान समझती है। उसमें साहस भी है। वह 'जरकावक' की रक्षा भी करती है किन्तु वह उसके पास से चली जाती है जब उसे यह सामुह्य होता है कि वह उसे प्यार नहीं करता। उसका जीवन आनंदहीन हो जाता है। गार्की इसके आश्रय से यह कठोरता चाहता है कि उसकी सारी शक्ति हीन हो गई क्योंकि वह कबल अपने लिए जी रही थी। उसके सामने कोई उच्च आदर्श नहीं था जिसके साथ वह बड़ सज्जरी और व्यक्तिगत जीवन में विफल होन पर भी उसकी आत्मा उठती उठी रहती।

यही साहस और उल्लस की मानना 'बाब का पीन' में है। पोर्की लिखता है— 'प्रवर साहस-व्यय यही जीवन का मान है। योइ 'साहसी बाब! सज्जरी में मुझ में तुने अपना जून बहाया। समय आयेगा और तेरे जून की पर्ये बूब जिहरी के बंधेरे में चिनगातियों की तरह भटक उठेगी

और बहुत से हृदय स्वतंत्रता और प्रकाश की साक्ष्या से दीप्त हो उठेंगे ।

“कोई बात नहीं कि तू मर गया । बहानुरों और ताकतवरों के पीछों के लिए तू तबीय उदाहरण है और स्वाधीनता तथा प्रकाश का सर्वपूर्व साक्ष्या है ।”

गोर्की ने जनता की इन विषय-वस्तुओं तथा प्रतीकों का भाषार लेते हुए इनका साक साहित्य रूपों से समोचित कर दिया । उतन पीछों तथा कबाकों बादि लोक साहित्य-रूपों का उपयोग किया अपनी रचनाओं में वह प्रायः जनसामान्य या जनकथा मुमानेबाका का समावेश करता है और जन-कथाओं की बिभ्रिप्टाताओं को सुरक्षित रखता है । सबसे बड़ी बात यह है कि उसके भाषकों का रूप लोक मर्मना पर आधारित है । बाक का परम्परा प्राप्त लोक-प्रतीक उसकी रचना 'बाक का पीठ' के मूल में है । गोर्की की आरम्भिक रचनाओं में जन उदात्क (या स्वतंत्रता दिनामे वाले) नामक का लोक-स्वयं कथा रूप प्राप्त करता है ।

कसी रचनात्मक की प्रमतिपीक रोमांटिक परम्पराका का निबोह करने के साथ-साथ गोर्की ने उसमें अपनी ओर से कुछ नया (विषय-वस्तु) भी जोड़ा । उसकी रोमांटिक रचनाका का महत्व इस बात में है कि जनता के उठते हुए अतिकारी भाव की उन विषयताओं का उनकी तीव्र दृष्टि ने पहचान लिया और कलाकार गोर्की ने उनको अंकित किया यद्यपि ने अभी तक स्वतः जीवन में पूर्णतया स्थिर या निश्चित नहीं हुई थी ।

किमान तथा मखनुरा का पुनिष्ठ तथा फ्रीड के साथ मर्ष उभीमपी पतासी के धन में बेचल गुरु ही हुआ था । किन्तु जनता में अति का साथ इनमें बहने ही परिपक्व हो जाता था । गोर्की की रोमांटिक रचनाओं ने मखनुर तथा किनामी के इमी बहने हुए अतिकारी आंदोलन के उचार को व्यक्त किया । गोर्की के रोमांटिक युग की रचनाओं का यही व्यापक भाव है और इमी में जनता लोक महत्व है ।

गोर्की के आरम्भिक युग की सज्जना में यथार्थवाद

रोमांटिक विधा के साथ साथ गोर्की इन्हीं बरों में ऐनी मवार्यवादी रचनाएं भी प्रस्तुत करता है जिनमें उसने आभोजनात्मक मवार्यवाद की

कसी कलासिकस परम्पराओं को विहसित किया। ऐसी रचनाओं में 'एमेसपान पिकाइ' 'बाबा मारसीप और स्योन्का' 'निष्कर्ष कनबाओव' आदि हैं।

हस की माता के बीच गोर्दी ने जो कुछ देखा-सुना उठी की कदु अनुभूति कुल सेकते हुए और उड़पते हुए आदमी क बिचन में व्यक्त हुई है जो जीवन की परिस्थितियों की बलि बन जाता है। गोर्दी की आरम्भिक यवार्थ रचनाएं ऐसे व्यक्ति के प्रति केवना से परिपूर्ण हैं जो जीवन के निर्धम प्रहारों से मीचे गिर जाता है। फिर भी हसम उसका कोई दोष नहीं है कि जियमी ऐसी हो गयी। कोई दूसरी निर्धम मक्ति उसे कुल और नाश की आर इकोल बेती है और वह इसकी बलि चढ़ जाता है। इसी बलि-यगु वा अस्यायपूर्व जीवन की बलि चढ़े हुए व्यक्ति का बिच आरम्भिक यवार्थ बादी गोर्दी को विशिष्टता है। 'बाबा मारसीप और स्योन्का' में बाबा और पाठा अकास पीड़ित क्षेत्र से बरिज रोमी और उन्हीं लोगों के कुल पात्र बनकर निकलते हैं जिन्होंने उन्हें भीख मांगने को छोड़ दिया। बच्चे में अब भी योड़ी जीवन शक्ति अवशिष्ट है किन्तु उसके लिए भी कोई रास्ता नहीं है। मरते हुए बाबा के पास से मारे डर के घावठा हुआ रात में बिकली कड़कने पर वह करार से गिर कर बूब जाता है और मर जाता है। 'निष्कर्ष' में औरत शराबी जगली पति की बलि बन जाती है जो उसका भजाक बनाता रहता है। गोर्दी ऐसे निरपराध उड़पते हुये व्यक्तियों के अनेक बिच प्रस्तुत करता है।

उड़पते हुये व्यक्ति के बिच के साथ प्रश्न उठता है कि अपराधी कौन है? कौन इनका उड़पने के लिए बाध्य करता है और उड़पने को छोड़ देता है? इसके उत्तर में गोर्दी उड़पनेवालों के बिचों के साथ उन तबीन बिचों की संर्बन्ध करता है जो दूसरों को उड़पते हैं, जो अपने नाम के लिए पणित से श्रुपित काम करने को तय्यार है। इन कार्यकर्मार्थों के मूल में आपाधिक अवमानता है और रुपए का मोह है जिससे इस समाज में सब कुछ पाया जा सकता है और व्यक्ति निर्धम रह सकता है। स्योन्का एक रोती हुई उड़पी को देखता है और उसे घात करता है। किन्तु जब वह



उसको उसके घर तक पहुँचाना चाहता है तो वह कहती है कि नहीं तुम मन बन्धो। मैं बख्तों को नहीं चाहती। सामाजिक असमानता इस प्रकार छोटी बच्चों की आत्मा को मलिन करन लगती है और वह मानवीय संबंधों का अनुभव नहीं कर पाती। इसी प्रकार 'चेल्सकप' कहानी में पोड़े कबला के लिए हत्या की तम्बारी भी बिलाई जाती है, और गबरीला बोड़े कबला के लिए अपनी आत्मा को नष्ट करने को तम्बार है।

गोर्की स्पष्ट रूप से रखाता है कि बर्मीय समाज दो टुकड़ों में बँट जाता है—बकि चढ़े हुए या सटाए हुए लोगों की दुनियाँ और सतानेवालों की दुनियाँ सामाजिक असमानता दुनियाँ को नष्ट कर रही है और स्वयं या मुतहला कीड़ा मानवीय आत्मा को जा रहा है। गोर्की ने वास्तविक संसार की मयानकता के प्रतिपक्ष में ऐसे नामक की रोमांटिक कल्पना का प्रस्तुत किया जो मनुष्य के मुख या आमर प्राप्ति के रास्ते को बाधाभा पर बिजयी हो सकेपा और जब सही बनता ही सक्ति आपत हो पयी और वह मुझ के लिए तम्बार हो पयी तो गोर्की की रोमांटिक कल्पना पूर्बता के साथ अनिश्चयन हुई तथा और ही अधिक वास्तविक कारिकारी विषय वस्तु से मयोजित हुई। जीवन की परिस्थिति में जितना ही अधिक तनाव आया और वह जितनी ही अधिक बयनीय हुई उतनी ही उसके साथ लड़ने की तीव्र भावना जागी।

### पुस्तकालय नायक में विश्वास

आरम्भ में यह नायक वास्तविक जीवन की परिस्थिति के बाह्य विहित किया गया है किन्तु फिर गोर्की धीरे-धीरे—और यह उमकी लचीलता या मीलितता है—जीवन में ही व्यक्ति में ही उन मलिन का अनुभव करता है जो कि जीवन की ब्यवस्था में बर्गिर्जन प्रस्तुत कर सकती है। धीरे धीरे उनके नायक साहित्य में सामाजिक माध्यम के गवाहक बन आते हैं।

जीवन बाह्य विचारा ही कटाव क्यों न हो गया हो फिर भी गोर्की का मनुष्य में और उनमें जो मनु-बंध है उनमें तथा विश्वास बना रहा।

मानवीय आत्मा को इस उदात्तता में गोर्डी ने सबसे पहले उन्नत शक्ति को देखा जो कि मनुष्य की जीवन की बहिर्जाहियों के विरुद्ध बल कर लड़ने में सहायता देती ।

जीवन से ठुकराया हुआ एमेस्मान पिनाह हाथ में लाहा लिए पुस पर व्यापारी बर्दाशोष की बात में है । वह हर प्रकार का अपराध करने को तय्यार है । किंतु जब कुछ से पागल लड़की मरी में डूबने के लिए पुस पर आती है तो इसी व्यक्ति में ऐसी अनुभूति और ऐसे शब्द बगते हैं जा इस लड़की में शक्ति और जीवन में विश्वास का छिद्र से सफा कर देते हैं और लड़की हंसने लगती है ।

गोर्डी का इस बात में बड़ा विश्वास है कि मानवीय आत्मा को यह शक्ति (और शौन्दर्य) जीवन के सम्प्राप्त से बनी समझौता नहीं करने देती चाहे आपसी किठना ही नीचे क्यों न गिर गया हो । और गोर्डी स्वतः जीवन में प्रतिवाद प्रतिपक्ष की उत्पत्ति और दुकृष्ण की उन विविधताओं को देखा है जिनको कि उठने सामान्य रूप में अपने रोमांटिक चित्रों में प्राप्त कर लिया था ।

मरीमा ('ऊर्जके कारण') ने जीवन में कभी सुख न पाया । सहसा उसके हृदय में मनामोह के प्रति प्रेम जग पड़ा । सञ्चारक उमकी इस अनिच्छता को जानकर उन पर ध्येय करवा है । बरीना इतनी असहाय है कि मवाने वालों के प्रति उसके मन में न तो लड़ने को और न प्रतिबाध की ही भावना उठती है । फिर भी वह इस बात का अज्ञात तथा अचेतन रूप में अनुभव करती है कि इस प्रकार की विन्दयी वह और नहीं बिता सकती । रात में वह फेंग लमा कर मर जाती है । यद्यपि बरीना ने कोई प्रतिबाध न किया फिर भी उसकी मौत स्वतः अत्याचार के विरुद्ध बहुत बड़ा प्रतिकार है । आगे इस प्रकार बीना असंभव था । जीवन त्याग के द्वारा यह स्पष्ट हो गया कि वह अत्याचार के साथ कोई समझौता करने का तय्यार नहीं है ।

अपने साहित्यिक कार्यकलाप के आरम्भ में ही गोर्डी इसी प्रतिबाध की पोज में व्यस्त है (चाहे इस प्रतिबाध का रूप किठना ही सामान्य

बर्षों में रहा हो)। वह फलस्वरूप स्वतः जीवन में ही इस शक्ति की शोधा करता है जिसे जीवन की बुराइयों के विरोध में प्रस्तुत किया जा सकता है।

### समाज में निम्नस्तर का चित्रण

यह ध्यान गोर्की को उन सर्वथा नये पात्रों की ओर के गयी जिन्होंने विशेष रूप से समाज का ध्यान आकृष्ट किया और जिनके चित्रण के कारण समाज का ध्यान गोर्की की ओर गया। यह वह—'आबारा' (व्येत्कण)।

इस आर शोभा का ध्यान इसलिये गया कि सन् १० के बर्षों में माँसों में निर्बलता बहुत बढ़ गई थी। लाखों आबामी गाँव छोड़कर बेकारी की हाथ में घाहरोँ की ओर गये और वहाँ की बेकारी और भी बढ़ गयी। ये बेरोजगार छाग बिना घरबार के सारे देश में घूम रहे थे। 'आबारा' की समस्या पर इस समय के समाचारपत्रों में काफ़ी लिखा गया। इन पर लेख लिखे गये और कहानियाँ लिखी गईं।

### गोर्की के 'आबारा' की नबीनता

गोर्की की 'आबारा' की कहानियों के विषय में लोगों का जो ध्यान गया वह इसलिये नहीं कि उनमें 'आबारा' के बारे में लिखा वरन् इस लिये कि उनमें उनमें वह देखा जो कि दूसरा ने नहीं देखा। उसका मनुष्य में विरबास था और उसमें यह दिखाने की कोशिश की कि समाज के निम्नतम स्तर के आबामी में भी आत्मा सुरक्षित है और सबसे बड़ी बात यह कि वह 'आबारे' गोर्की का ध्यान इसलिए आकृष्ट कर सके क्योंकि वह उनमें प्रतिबास की वह शक्ति देल सका जिसमें मनुष्य आयाचार का पदाव से सज्जता है।

गोर्की की रचनाओं में समाज के निम्न स्तर पर इकेन्द्र दिये गये यह आबारे उन लोगो की अवेला जबकि मनुष्य है या उनमें उन लोगों ने जबकि मनुष्यता है, जो कि घामक बर्ष में हैं और इनकी पृथा की बुद्धि से देखते हैं।

अनजान शहर में आया हुआ नवमुबक बिना पीने और महारे के है। उसे किसी से न महापना मिलनी है और न महानुभूति। अन्त में उसे ये

भीजें उस दु-खी 'बूमनेवासी' लड़की से मिलनी है जिसके साथ वह रात में पकड़ी हुई नाव के नीचे छिन्नकर अपने को पानी से बचाता है। जब वह मारे दु-ख के फूट कर रो पड़ता है तो यह लड़की उसे साम्त्वना देती है (एक बार विश्विर में)।

केवल यह मानबता ही गोरकी के (समाज के) निचले तले के लोगों को विधिष्ट नहीं बनाती बरन् मुख्यतया उनकी प्रतिभाव की शक्ति और आन्तरिक स्वच्छता जिसे उन्होंने सामान्य जीवन के घरे से बाहर निकल कर प्राप्त की। वे अब उन दु-खों की परबाह नहीं करते जिसकी सामा इस स्तर पर बराबर बनी रहती है। अरस्तीय कुवास्वा न मन की शक्ति से बरता है (और इसी से व्यापारी पेट्रुमिकोव का विरोध करता है) और न शासन की शक्ति से। यह साहस और सामान्य जीवन की उन सीमानो से परे जान की शक्ति—जो कि सामान्य व्यक्ति को अपरानेय प्रतीत होती है—गोरकी के इन आचारों को अपने चारों ओर के लोगों से अलग करती है।

### निम्न स्तर के लोगों का दुर्बल पक्ष

इसके साथ ही गोरकी उनकी दुर्बलताओं का प्रदर्शन भी बरता है। कुवास्वा तथा 'ब्येसकस' जैसे व्यक्तियों की दुर्बलता इसमें है कि उनके सामने कोई स्वीकारात्मक या प्रेरक उद्देश्य नहीं है जिसके लिए वह लड़ सके। वह जो कुछ करते हैं उसका रूप नकारात्मक है। वे केवल अपने लिए लड़ते हैं और इस लड़ाई में भी यह किसी नवीन आदर्श की रचना नहीं करते बरन् उस प्राचीन का केवल निराकरण ही करते हैं जो कि सचमुच में सराब है।

'निचले तले' के इन लोगों के इस दुहरे रूप (शक्ति तथा दुर्बलता) का पूरा-पूरा उद्घाटन गोरकी की कहानी 'ब्येसकस' करती है। इसमें इस बात पर भी विचार किया गया है कि जीवन की परिस्थितियों से प्रतिभाव करनेवाले मनष्य को कौन सा रास्ता अपनाना चाहिए यदि वह सचमुच में इन परिस्थितियों को बदलना चाहता है।

मदरीका के रूप में हमारे सामने यह किसान है जो जायदाद जोड़ता

भाहता है। यह मन-लिप्ता उसे पैस का मुलाम बना देती है और वह पैस के लिए बुरे से बुरा कार्य करने को तय्यार है। वास्तव में वह मज्जा खादमो वा किल्लु इस दुनिया में उसे एसा बना दिया जिसमें कि मनुष्य को मृदा के अतिरिक्त और कुछ नहीं मिलता। मजरीला का चरित्र इस बात का विशयं है कि मन सम्पत्ति या कामवास की लिप्ता किस प्रकार मनुष्य की आरमा को साबसा बना देती है और वह मुलाम बन जाता है।

ज्येष्ठकथ मजरीला से ऊंचा उठा हुआ है। वह बुद्धिमान बहादुर और उदार है। दूसरी बात यह कि पैसा उसे नहीं खरीद सकता और उसमें मोन नहीं है। वह स्वयं मजरीला के सामने पैसा फेंक देता है।

इन युवों के होते हुए भी ज्येष्ठकथ उतना ही अठहाय है जितना कि मजरीला। उस घर मन का प्रमुख इसलिये नहीं है क्योंकि वह सामान्य जीवन से बाहर जाता गया है और अकेला है। वह इसलिए स्वर्तन है क्योंकि उसने सब बंधनों से मजने को मुक्त कर लिया—और अब वह किमी के लिए जरूरी नहीं है। और निश्चय ही इस रास्ते पर चलकर—अब बीजों से अलग होकर—जीवन का मुख नहीं बनाया जा सकता।

गोर्की स्पष्ट रूप में दिखाता है कि विभिन्न चरित्र के होते हुए भी दोनों का माय एक ही है। दोनों ही समाज की बलि बन गये हैं। यद्यपि गोर्की ज्येष्ठकथ की ओर इसलिए आह्वय होता है क्योंकि उसमें कतिपय गुण हैं और उसमें जीवन के प्रति अमनोप और प्रतिबाह तथा युद्ध की भावना है, फिर भी इनका विषय मुख्य नहीं है क्योंकि वह उस विषयता को नहीं समझ पाता जो कि समाज के मुख में है। वह जीवन में कुछ गया नहीं जाना।

नयीनता का संवाहक वस्तुतः धमिक बर्न है जो जीवन के आधार मूठ मुख्यों की रचना करता है। मुलाम बनानेवाली परिस्थितियों का प्रतिबाह और प्रतिराय करनेवाले इन धमिक के विशय में जीवन की बीमलता का मयार्थ विशय और गोर्की का सतत युद्धशील व्यक्ति के आभिर्भाव वा रोमांटिक विश्वास, यह दोनों साथ-साथ प्रगट हुए हैं।

## 'नटखट' और 'कनवासोव'

१८९६ में गोर्की ने 'नटखट' (बालक) कहानी लिखी। यह प्रथम में काम करनेवाला एक छोटा बालक की कहानी है जो लिबरल—बहुवार के सम्भावकीय में कुछ मध्य अवसर पाकर अपनी आरंभ में जाइ देता है बिनाका आनंद यह है कि यह बहुवार जो मुखा करने का हम भरता है वह स्वयं अपने यहाँ अत्याचार करता है, और सब मृत सिद्धता है।

इस कहानी में कोई अन्तिमकाठी बात नहीं है फिर भी हममें प्रतिवाद की भावना परिपक्व हो गयी है। यह 'अधिका'का (ऊपर के कारण) निष्क्रिय प्रतिवाद नहीं है जो मरकट जीवन को ठुकराकर अपना प्रतिवाद प्रकट करती है। यह 'अवलोकन' का व्यक्तिवारी प्रतिवाद भी नहीं है जो जीवन में अलग हो कर अपने माह का प्रकट करता है, बल्कि यह उस व्यक्ति का प्रतिवाद है जो दुःखता में जीवन के बीच लड़ा है। उस कबल अपनी ही पिठा नहीं करता बल्कि हमों की भी पिठा है। वह इस बात में उत्तेजित है कि प्रथम काम करने वालों का पूरा रोटी नहीं देता यहाँ बच्चा पीट जात है और अत्याचार सब नहीं सिद्धता। फिर भी यह प्रतिवाद एक आक्रामक घटना है। यह कहानी उस व्यक्ति का विश्व प्रस्तुत करती है जिसमें जीवन के प्रति आग्निहस्त अंतर्गत भर गया है किन्तु बिनाका सभी आत्मविकृता के साथ अन्तर्गत में सर्वत्र स्पष्ट एक स्थिर नहीं हो सका है। यह अंतर्गत बनी चेतन प्रकट रूप सही पारण कर सका है।

मजदूर जनता में धीरे-धीरे बढ़ते हुए इस आरम्भिक अवस्था के उद्घाटन 'कनवासोव' कहानी में भी हुआ है। 'कनवासोव' सम्पूर्ण आवाज नहीं है बल्कि यह मजदूर है यद्यपि वह इतर से उबर कर और नमाओरी तथा आत्महत्या में उसका अंत होता है। यह कहानी कि 'यहाँ रेल बनाई जा रही है बाब में यहाँ बन्दरगाह हुआ। यह रेल बना रहा है? जनता। और इसका फायदा किसको है?' जनता पुसानी करेगी और काम की खोज में जाय नहीं और कुछ नहीं। और बन्दरगाह में यह पाएँगे इसीलिए

अन्वय ? चूँकि वह अक्षयिपत्र में मजबूत है इसलिए उसके प्रतिवाद में हल्की सामाजिक झलक भी है। इसमें जग्याचार और उसका विरोध दोनों का संकेत है। योकी में मन्वान परिस्थिति को पहचानकर उसी में उस व्यक्ति का भी प्राप्त किया जो इसीलिए पैदा हुई है कि परिस्थिति से मुक्त किया जाय। चार के संसार में इसके कुछ पन्ने निकाल कर ही हमके ध्यान की आज्ञा दी। 'कनकाशोब' कहानी पाठकों को अन्तिकारी निष्कर्षों की ओर ले गयी यद्यपि कनकाशोब स्वयं वास्तविक अन्ति से दूर है।

### कनकाशोब योकी का रूप

योकी की रचनामा में केवल उनके पास ही नहीं कुछ कहते-मुनते दिखाई पड़ते हैं बल्कि स्वयं केवल भी कबीर निरीक्षक के रूप में कबीर साधी सहचर के रूप में और कबीर कहानीकार के रूप में अपनी ओर से टिप्पणियाँ छोड़ता चलता है और इस प्रकार अपनी रचनाओं में पुरुष का काम करता है। इन टिप्पणियों से इस प्रकार उसके बुद्धिकोम तथा मनोभावों तथा व्यक्तित्व का संकेत भी मिलता रहता है। इसके कारण इन टिप्पणियों में वह उन चीजों पर जोर देता है जिन्हें पात्रों के कार्यकलाप या भावों के माध्यम से व्यक्त नहीं किया जा सकता है और इनके प्रयोग द्वारा वह नये प्रकार के व्यक्ति का संकेत देता है। स्वयं कनकाशोब के रूप में योकी एक व्यक्ति का चित्रण करता है जिसे जीवन की विपन्नताओं के झटके का रास्ता मानस्य है, जो सामाजिक विचारक है। इसी टिप्पणियों में वह सामाजिक स्तर के पुनर्गठन तथा राजनीतिक परिवर्तन का स्वप्न देखता है (एक बार शिथिल में)। इसी प्रकार वह अन्य रचनाओं में भी पात्रों के यन्त्रीय प्रस्ता का उत्तर देता है ( एमेस्वान पिताई 'कनकाशोब')। इसी प्रकार उसके निष्कर्षों भी पाठकों को कहानी के मुख्य विचार को अधिक पहचान से समझने को बाध्य करते हैं। इसी तरह विभिन्न पात्रों के अनुकूल विभिन्न प्रकार की भाषा का संकल्प प्रयोग उन पात्रों की विनिष्ठाओं को बड़ी स्पष्टता के साथ हमारे समक्ष प्रस्तुत करता है।





इसके पहले अपनी कहानियों में गोर्की यह बता चुका है कि पनाथिपत्य या मित्रियत किस प्रकार समुप्य की आत्मा को नष्ट करती है और धन छिपा आदमी को आदमी नहीं रहने देती। वह बच्चों के मन को कष्टपित कर देती है (बाबा अरखीप और स्योल्का) और आदमी को अपराध करने को प्रेरित करती है (थ्येसकस) और अत्याचारियों या पीड़कों को जन्म देती है (व्यापारी पेटुभिकोव) जिन्हें गोर्की 'त्रिन्दी के मानिक' कहता है।

उपन्यास 'कमा गर्बेब' में गोर्की ने इन्हीं 'त्रिन्दी के मानिक' का चित्रण किया है। पाठका के सामने कसी व्यापारियों—इन्नाथ गर्बेब अनानी इचुरोव याकोव मयाकिन—की बड़ी स्पष्ट तस्वीरें आती हैं जिन्हें जीवन ने प्रभुत्वशाली और कठोर बना दिया है और जो अपने को दूसरों के जीवन का मानिक समझते हैं। किन्तु यह प्रभुत्व कागों को गलाकर और नष्ट करके प्राप्त किया गया है और वह अधिकार व्यापारित नहीं है। गोर्की इसकी आलोचना करता है और यह प्रदर्शित करता है कि 'यह जीवन के मानिक केवल दूसरों को गलाते ही नहीं हैं बल्कि स्वयं भी आदमी नहीं रह जाते (जैसे कि थ्येसकस में गवरीला)।

इस उपन्यास में गोर्की ने विभिन्न प्रकार के व्यापारियों के चित्रण की ओर विशेष ध्यान दिया है और वह उस अन्वयपूर्ण मार्ग को दिखाता है जिस पर चलकर इन लोगों ने बुरे से बुरे डंग से धन इकट्ठा किया जिसने कि इनको अत्याचार करने की इतनी शक्ति दे दी। उपन्यास के अंत में कमा उत्सव में एकत्रित हुए इन व्यापारियों और शहर के अमीरों की काली करतूतों को दिखाता है। शक्ति इन लोगों के पास निम्न है, शक्ति है, और धन है इसलिए उनका उत्पीड़न और भी गह्र हो जाता है। कमा का पिता इन्नाथ गर्बेब ऐसा ही है जिसके समूह चरित्र की विनिष्टताएं कृता तथा मद व्यसन में नष्ट हो जाती हैं। याकोव मयाकिन में गोर्की उन विभिन्नताओं को प्रदर्शित करता है जो कि जन्म के क्षण से आते हुए या बने हुए व्यापारियों के गुणधर्म हैं। उनमें दुश्मता है, बुद्धि है तथा ज्ञान के प्रति अभिरुचि है। उनमें बाह्यदृढ़ता भी है। किन्तु

इन्हीं के सहारे उसका अत्याचार और भी विषम हो जाता है।

उपन्यास में गोर्की व्यापारियों की दूसरी पीढ़ी का चित्रण भी करता है। स्यूबा तरास मयाकिन और स्मोकिन दूसरी पीढ़ी के लोग हैं। घन ने स्यूबा का लोगा से सजीव संबंध न रहन दिया। वह किताबा से नग्न रहती है। उसके विचार अच्छे हैं किन्तु आग बसकर स्पष्ट हो जाता है कि उसके चार और का शाठाकरण उसके विचारों तथा भावनाओं को नष्ट कर रहा है और वह बेसी ही है जैसे कि उसके बग कं अन्य लोग। मयाकिन और स्मोकिन सुसंस्कृत व्यक्ति हैं और वे ज्ञान इसलिए चाहते हैं कि जनता को और सुदम किन्तु और गहराई से चूस सकें। दूसरी पीढ़ी का चित्रण करते हुए गोर्की यह कहता चाहता है कि यह उत्पीड़न या अत्याचार इसलिए नहीं है कि यह व्यापारी अपढ़ या अर्धसंस्कृत हैं बरन् यह बताना चाहता है कि संस्कृति या ज्ञान यदि घन बुद्धि की सेवा से रुका दिया जाता है तो यह जनता के उत्पीड़न का और भी तीव्र कर देता है। संस्कृति तथा ज्ञान को जन कल्याणी बनाने के लिए यह आवश्यक है कि उस इस पराधीनता से मुक्त किया जाय।

इन प्रकार गोर्की न आसोपनारमक यथार्थवाद के परम्परागत बस्तु विषय को जाम बढ़ाया और उन बुराइयों का उद्घाटन किया जो कि पूँजीवादी समाज में मनुष्य को मारत कर रही हैं। इस विषय-वस्तु को विकसित करते हुए गोर्की दूसरे ही निष्कर्ष पर पहुँचा। उसने केवल इस समाज का चित्रण ही न किया बरन् इस समाज का पूरा-पूरा निराकरण किया और ऐसे समाज पर आक्षेप किया।

उपन्यास के क्रम में फमा गर्देयेव है जिसे पिता की सारी सम्पत्ति विरासत में मिली है। इसके साथ ही उसमें ऐसी जनभूतियाँ भी हैं जिनके कारण वह स्वतंत्र स्वस्थ जीवन बिताता चाहता है। उसमें कभी-कभी यह भावना बसती है कि वह इस सम्पत्ति का शक्ति नहीं बरन् गुलाम है। जब याकोव मयाकिन यह कहता है कि व्यापारी अप्रगण्य व्यक्ति है वह जवाब देता है कि 'तुमने जीवन की नहीं जल की रचना की व्यवस्था नहीं स्थापित की, मनुष्य पर लरी चलाकी हम घुट रहा है, संकीर्णता है

कार्य मानता है। साथ ही वह यह भी जानता है और अपने लेख 'माटक' में स्पष्ट कहता है कि अन्य साहित्यिक रूपों की अपेक्षा माटक कठिनतम रूप है। फिर भी वह माटकों की ओर मुका क्योंकि वह जानता है कि तीव्र सामाजिक संघर्ष के युग में माटक-रूप विशेष प्रकार से युग की सामाजिक विषमता का गहराई के साथ अभिव्यक्त कर सकता है। इसी से वह माटकों की ओर आकृष्ट हुआ और बल्लोबीय शैली के माटकों की सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक विशिष्टताओं को अपने-आप उसने उनमें अपनी ओर से नया योग भी दिया। उसने सर्वथा नूतने प्रकार के—सामाजिक-राजनीतिक—माटकों की रचना की जिनमें उसने अपने समय की सामाजिक समस्याओं को प्रस्तुत किया—जैसे पूँजीवाद से संबद्ध वर्ग का युद्ध (घनु) बुर्जुआ समाज में व्यक्ति की 'ट्रेबडी' और स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए उसका प्रयत्न ('निचले तले पर') सभी बुद्धिजीवियों का नाम ( 'मकान में रहने वाले' 'सूर्य के बच्चे') आदि। योही इस युग या समय की स्वतः माटकीय मानता है और इसी से वह माटकों की ओर आकृष्ट हुआ। युग के संबंध में उसका कहना है कि 'इस पूर्वतया गम्भीर माटकीय युग में माण तथा निर्माण के तनावपुत्र व्यापार के माटकीय युग में रहे रहे हैं।

'निचले तले पर' और 'घनु' माटकों को छोड़कर सन् १९०० के वर्षों के माटक अधिकतर कत्ती बुद्धिजीवी वर्ग के उस ह्रासपीड मानसिक स्थिति से युक्त कर रहे हैं जिससे कि उन्हें संकीर्ण व्यक्तिवादी बना दिया है। इसमें 'मकान में रहने वाले' में इन बुद्धिजीवियों की उन लोगों में बहल दिया जो जीवन से गहराई में नहीं बंधे हैं और जो जनता के हितों के साथ अपने को न जोड़ सकने के कारण उद्वेगहीन और फलज जीवन बिता रहे हैं ('सूर्य के बच्चे')।

माटकों में श्रमिकों का रूप

जमाना में विविधता इन बुद्धिजीवियों के प्रतिपक्ष में योही उन नये कार्यों का प्रयत्न करता है जो इस विषय में विस्तृत स्पष्ट है कि जीवन

किसा होना चाहिए, जो दुःख के साथ जीवन के नये सत्यों का संबन्ध कर रहे हैं। ये नये लोग श्रमिक या मजदूर हैं। 'मिदनाम्य' नाटक में श्रमिक नील का विषय स्पष्ट है। साहित्य में यह श्रमिक या मजदूर—कान्तिकारी का पहला चित्र है। उसमें जीवन के प्रति सामाजिक संबंध की विविष्टताएं स्पष्ट हैं। वह काम करना चाहता है और साथ ही अपने मनुष्य के अधिकारों के लिए लड़ने को भी तय्यार है। परियम और युद्धशीलता द्वारा गठित यह नील साहित्य में नया रूप है। उसके पीछे कान्तिकारी युद्ध के लिए अत्यन्त मजदूर या श्रमिक वर्ग खड़ा है। फिर भी नील के रूप में नये व्यक्ति का सर्वांगीण चित्र नहीं प्रस्फुटित हो सका है। वह मनुष्य से बाहर प्ररहित किया गया है।

'सन्' नाटक इस दिशा में नया कदम है। इस नाटक में श्रमिकों का एक पूरा समूह है। वे अपने चारों ओर के लोगों—मिस मासिक सासना शिकारी बुद्धिजीवी आदि—से विस्फुल मित्र हैं। वे जीवन के नये सत्य को जानते हैं और यह ज्ञान उन्हें दूसरों से ऊँचा उठा देता है। यह नया सत्य है—सोशलिज्म या समाजवाद इससे उनको नैतिक व्यक्ति मिलती है। अपने साथ ही रहने के लिए वे आत्मत्याग के लिए तय्यार हैं और यह हिम्मत के साथ बल जाते हैं क्योंकि उनका अपने कार्य के औचित्य में विश्वास है। नाटक का अन्त इन शब्दों से होता है कि ये लोग जीतेंगे। इस प्रकार 'मिटवट बालक' से शुरू होकर नये व्यक्ति का रूप क्रम बद्धम उभरता और विकसित होता गया और पूरा हाता गया। उसमें परिस्थितियों के विरुद्ध प्रतिहार की विविष्टताएं मिली जिनका पूर्ण उत्कर्ष जनता के अत्याचारियों के विरुद्ध संघर्ष और युद्ध में हुआ।

‘निचले तले पर’

इस नाटक की रचना 'मास्को क्ला पियेटर' ('मदात' अर्थात् मस्को-वस्की अकादमीकेस्की हुदोब्रेस्तबेरी तियात्र) के साथ योकी के पतिष्ठ संबंध के कल्पनात्मक हुई। योकी के पहले इस पियेटर की मनोवृष्टि व्यापक रूप से सामाजिक ऐतिहासिक नहीं। उसकी सबसे अच्छी द्वितीय चित्रण के मनोवैज्ञानिक नाटकों का अतिरिक्त थी। योकी के आसपास से यह पियेटर

वामें बढ़ा। इस थियेटर के संस्थापक के० एस० स्टागिस्तावस्की के शब्दा में "हमारे थियेटर में सामाजिक राजनीतिक मार्ग का निर्माता और प्रस्थापक गोर्की है। इस थियेटर के प्रस्ताव पर गोर्की ने आरम्भ में 'मिचामे' लिखा और फिर बाद में (१८ दिसम्बर १९०२) 'मिचमे तले पर' नाटक का अभिनय हुआ। दोनों नाटकों का जनता ने बड़ा स्वागत किया। इनमें 'मिचमे तले पर' नाटक को अपूर्व सफलता मिली।

इस नाटक ('मिचमे तले पर') ने पाठकों और दर्शकों में आन्तरिक मामलों और बिचारों के मर्म को सूँझा। नाटक के मुख्य पात्र जीवन के यथार्थ व्यक्ति हैं (सातिल बुबनोव, बरोम)। इनके चित्रण में गोर्की की प्रतिभा की मूल विशेषताएं पूर्णतया स्पष्ट होती हैं—जनता के प्रति अथाप्य प्रेम। पात्रों का ऐसा चित्रण हुआ है कि वे पाठकों के विस्फुट निकट आ जाते हैं। इस नाटक में पाठक बराबर नायक के साथ रहता है।

### मुख्य चरित्र

गोर्की ने इस नाटक में विभिन्न चरित्रों की सृष्टि की है और इनमें से प्रत्येक की अपनी विशिष्टता है। इस 'मिचमे तले पर' समाज के विभिन्न स्तरों से लोग मिरते-मिरते पट्टे पाते हैं। मिखाईल इवानोविच कस्ति स्योर के राज-निवास स्वान पर जहाँ कि काय टिर्न रात में सोते हैं—विभिन्न प्रकार के काय विचारों का पट्टे है। यह 'बरात' (उष्ण बस का) है जिसका चरित्र और नाम्य प्रसुर्ग के ह्रास की कथा कह रहा है। पश्चिम में अलम जनता की मेहनत पर जीवन व्यतीत करने वाला यह उष्ण बस का व्यक्ति धीरे-धीरे मारी शक्ति और बुद्धता से वेला है और निम्नतम बुद्धिसत्ताओं का पिछार बन जाता है और अपनी ही याद किया करता है। वह अब शिम पण्ड में गड़ गया है उसने निम्नतम की कागिग भी नहीं करता। वह इसे स्वीकार करता है और कहता है कि मागूम होता है कि नृममें चरित्र नहीं है।

इसके विपरीत कमेग केवस का महीना इस राज-निवास-स्वान में रहा है और वह बराबर इस बात का प्रयत्न कर रहा है कि इनमें से निम्न

कर वह जीवन में अपना कोई स्थान बनावे। किन्तु दखिता तथा अधि-  
कारहीनता न विमम कि जारवाही क्लृप्त की जनता पड़ी हुई थी—कभी  
मनुष्य को ऊपर उठने का मौका न दिया यदि वह एक बार समाज के  
निष्पक्षे तल पर पहुँच गया। इससे पाठक को भासूम हो जाता है कि  
कर्म का यह स्वप्न पूर्ण न होगा। वृत्त न तो वह प्रयत्नशील है किन्तु  
जन्म में वह परिस्थितियाँ स समझीता कर सता है।

रात्रि-निवास-स्थान में रहनेवालों में स अधिकोग जीवन की परि-  
स्थितियों स युद्ध करना छोड़ देने हैं। रोमी सराही अभिनता अपने तथा  
दुमरों क बार में कहना है कि उन क्रिमी में विश्वास नहीं है। वे पल कहता है  
कि 'मैरा पिता जीवन भर जेस स रहा और वही जमह मेरे लिए भी है।'

पूर्वीवादी समाज को विमस्त करनवासी सामाजिक विपमताओं का  
गार्की बड़ा व्यापक चित्रण करता है। पीड़क तथा पीड़ित का यह युद्ध  
इस रात्रि-निवास-स्थान में मा बराबर चलता रहता है। सोप इस स्थान  
के मासिक केसितम्प्यास की मूट्टी में हैं और वह इनको क्लृप्त की तरह  
भूम रहा है। उसकी पत्नी कमिलीमा उससे भी बड़कर है। ऐसे पूर्वीवादी  
समाज में जहाँ कि मनुष्य मनुष्य का सहायक नहीं बनने एक दुमरे के लिए  
भक्षिया है जहाँ एक की मृगी दूसरे की ब्यथा पर ही निर्भर है उसकी पत्नी  
अपने मानस क लिए अपने पति की हत्या के लिए भी तय्यार है, और उसकी  
हत्या करवा देती है और हत्यारे को पकड़ना भी बेठी है।

इस नाटक के विविध पात्रा का अपना व्यक्तित्व है अपनी उबान  
है और अपना विशिष्ट चरित्र है। गार्की ने उनका बड़ा मजीब चित्रण  
दिया है। वे कितने ही नीध क्यों न गिर गए हों फिर भी उनमें कुछ न कुछ  
मानवता सुरक्षित है। वे भी मादसी बन जाते यदि इनके मार्ग में बुर्जुआ  
समाज की शक्ति बाधा स्वरूप आकर लड़ी न हो जाती। पात्रों के एमे  
जीव-स चित्रण के कारण नाटक का वस्तु-तम्य बड़ा शक्तिशाली बन गया  
है। इसके मार तलब को समाजवादी मानवता' रहा जा सकता है।

यह नाटक मानवतावादी भावना स भौतप्राप्त है। गोर्की पाठक को  
इस बात का अनुभव करा देता है कि प्रत्येक व्यक्ति में—बोद, बेदया

खराबी—उदात्त मानवीय भावनाएँ जीवित और सुरक्षित हैं। यदि ये भावनाएँ पूर्णतया विकसित नहीं हो पातीं तो यह व्यक्ति का दोष नहीं यह उसका दुर्भाग्य है उसकी ब्यथा है और यह उन अछड़ सामाजिक परिस्थितियों का परिणाम है जिसमें कि वह पड़ा हुआ है। यह अनुभूति पाठक को इस अन्तिकारी निष्कर्ष की ओर प्रेरित करती है कि मनुष्य मनुष्य बन सके। इसलिए उस सामाजिक विधान का तोड़ना परमावश्यक है जो जीवन को निचले तले पर पटक देता है। इस विचार ने इस नाटक को अत्यधिक सामाजिक महत्व प्रदान किया।

गोर्की बड़ी कलात्मकता के साथ उस विषयता को प्रकट करता है जो कि व्यक्ति के सामाजिक अथ वृत्तन और उसके अपने उद्धार के स्वप्न में कलित होती है। प्रत्येक पात्र का अपना स्वप्न और अपना प्रयत्न है और व्यक्ति की उदारता और पवित्र में विश्वास है। यह विश्वास नवासा के स्वप्न में वेपल के फिर से आसमी बनने के प्रयत्न में और अभिनेता के उम्र बमरझानी मगर के विश्वास में जहाँ कि वह नीरोग हो जायगा प्रकट होता है। इन प्रकार नाटक ने प्रत्येक पात्र की अपनी विधिगता है और प्रत्येक के साथ उसका विभिन्न सामाजिक वातावरण है।

### सातिन का चित्र

सातिन का चित्र इस नाटक में अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इस नाटक के पात्रों में कबल बही है जिनमें हार नहीं मानी तथा जो बराबर परिस्थितियों में युद्ध करता रहा और जिनका मानवीय उदात्तता तथा जीवन में विश्वास डिगा नहीं। फिर भी गोर्की ने इस पात्र की दुर्बलताओं पर पर्दा नहीं डाला है। इसी से इस पात्र के विश्वास का अर्थ में कार्य रूप में नहीं परिणत किया। गोर्की ने अपने नाटक के मध्य में स्वयं कहा है कि मैं उन लोगों के मुँह से समाजवाद की शिंका नहीं दिता तथा जिन्हें कि जीवन ने मरु कर दिया है।" फिर भी महत्त्व की बात यह है कि उसने आत्म-जर्मण नहीं किया और वह मरण युद्ध करना रहता है। उसे लोगों के बीच जो कि सब पूरी तरह मुक्त गव हैं, जिनके लिए अब यह कहा जा

सकता है कि 'जै कमी आदमी से' मानव की महत्ता की घोषणा करने वाले साहित्य के यह शब्द मूल उठते हैं "मानव स्वतंत्र है मानव महान् है, उसकी इज्जत करनी चाहिए। सान्त्वना या दया द्वारा उस नीच न मिराओ।"

मानव के प्रति इस विद्वान् में मानव के पक्ष में उसकी स्वतंत्रता के लिए युद्ध का आह्वान भी है। साहित्य इस युद्धशीलता का प्रतीक है।

### लुका का चित्र

इस नाटक में निरन्तर युद्धशीलता के मुख्य भाव के माध्यम या साम्त्वना का भाव भी मुख्य है। लुका इस दया या साम्त्वना का भाव का प्रतीक है। वह प्रत्येक पात्र को उसके लिए बिना कुछ करे-बरे निर्दोष सान्त्वना दिया करता है और उनको धाम्य करता रहता है। इस प्रकार का दुःख हटाना करने का हम्का डंग मूठ के महारे ही चल सकता है और लुका इसी का आश्रय लेता है। इसी के महारे वह पात्रों का माह लेता है। इस प्रकार की झूठी सान्त्वना शक्ति मान्तिता चाहे \* व सक्ति वास्तव में वह बड़ी घातक है। अपनी शक्ति को एकत्रित कर युद्ध के लिए सन्नद्ध करने के बजाय एसी झूठी सान्त्वना लुगा का दुर्बल बनाती है उसकी शक्ति को व्यर्थ कर देती है और उनको नष्ट कर देती है। गोर्की ने इस संबंध में कहा है कि 'इस प्रकार की झूठी सान्त्वना बेनेवासे सोग बढ़ बुद्धिमान और निष्ठमापी हाते हैं और इसी में वे बड़े घातक भी हैं।'

साहित्य इसी दुर्बल बनानेवाली झूठी सान्त्वना के विरुद्ध युद्ध करता रहता है। वह कहता है कि 'बहुत में लाम है जो सान्त्वना देने के लिए मूठ बोला करते हैं। मैं जानता हूँ कि मूठ समनकारी होता है, परिस्थितियों से समझौता करानेवाला होता है। मूठ उस कठोरता का समर्जन करता है जिससे कि यद्दूर के हाथ को कुचक दिया और जो मूल से मरनेवालों को शायी ठहराता है। मूठ की बकरत उनको है जो कम-और दिल के हैं। जो स्वाधीन हैं उनको हमकी क्या बकरत। मूठ



सुखामों का धर्म है और सत्य स्वतंत्र व्यक्ति का वेद्यता है।

सत्य कठोर सत्य जो मूठे भाषावा तथा मूठे आत्म-संतोष को कोई स्थान नहीं देता वही मनुष्य को ऊपर उठा सकता है और उसे आत्माचार के बिरुद्ध पुष्ट करने की शक्ति दे सकता है। सत्य के सम्बन्ध इसी सत्य के चेतक हैं।

नाटक का रचना-विधान और भाषा

इस नाटक के रचना विधान की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि जीवन परिस्थितियाँ—जो कि उस समय और साधन के मर्यादावादी समीक्षकों के अनुकूल हैं—पात्रों के पारस्परिक संबंध और संघर्ष का अभिव्यक्ति करती हैं। रात्रि-निवास-स्थान में रहनेवाले पापा व बीच जो आपसी संबंध है उनसे पाठक भली भाँति परिचित हो जाता है और वह यह भी जान जाता है कि विभिन्न पात्र जीवन के किन-किसी सचके हुए इत 'निश्चले तले पर' पहुँचे हैं। मुझ के जाने पर बाड़े ही बिलो म वे संबंध और संघर्ष चरम स्थिति पर पहुँच जाते हैं जो बास्का पपस को जैस मे जैस देते हैं। नताया को मस्पताक भेजते हैं और अभिनेता की आत्महत्या करा देते हैं। नाटक बड़ी ही तीव्र विषमताका वैपरीत्य और संघर्ष पर आधारित है जिनकी तीव्रता नाटक की घटनाओं से स्वतः स्पष्ट है। स्वयं नाटक का शीर्षक 'निश्चले तले पर' यह ध्वनित करता है कि विषमताएँ जीवन को किमकर कर रही हैं और रही हैं। यदि वेना निश्चला तला यह स्तर है जहाँ कि लोग इच्छेन दिए गए हैं तो निश्चय ही सच्चा जीवन भी होमा जिससे कि वे अब बंधित हो नय हैं और जिसको विधास के आधार पर फिर से प्राप्त किया जा सकता है। नाटक ही यह भी स्पष्ट है कि जब तक मनुष्य का मनुष्य द्वारा उत्पीड़न है तब तक उत्पीड़ित व्यक्ति फिर से मनुष्य नहीं बन सकता। इनके नाय ही नाटक का मर्यादावादी आधार, अन्तिमारी रोमांटिक महत्त्व भी प्राप्त कर जाता है। नाटक का आत्म-बचन तथा दूसरे पात्रों की मानवता इस बात का सबेन दे रही है कि यह विषमता व्यापकित नहीं है इसे अवरय बदलना चाहिए और यह अवरय बदलेगी। नाटक में मर्यादा जीवन का ऐसा

बीरवार विवश हुआ है कि वह ऐसे जीवन के प्रति निरन्तर विरोध की आवाज उठाए बिना नहीं रहता।

नाटक के पात्रों की भाषा अत्यन्त वैयक्तिक है। प्रत्येक पात्र अपनी मनोवृत्ति तथा उस सामाजिक वातावरण के अनुरूप ही बोलता है जिसमें कि वह पसा है। अमिता की भाषा अपने पेशे से पुष्ट है बरौन की भाषा में मर्त्य की स्मृति है। मास्ता की भाषा में सस्ते उपन्यासों की विधिपिष्टता है और मुका की भाषा में किसानों की भाषा की झलक है। यह सब यथार्थवादी भाषा के उदाहरण हैं। फिर भी गोर्की ने भाषा की बाहरी झलक को इतना गहरा नहीं किया कि सब अजीब मा किसी दूसरी दुनिया के जीव लगने लगे। गोर्की में सामान्य इयापक भाषा का प्रयोग है और यह भाषा उनके व्यक्तित्व को मुक्तित्व करने के साथ-साथ सबसे अधिक यथार्थवादी सामाजिक समस्या—कि उनके अज्ञान का कारण उनका व्यक्तित्व नहीं बल्कि सामाजिक परिस्थितियाँ हैं जिन्होंने उनके व्यक्तित्व को बना दिया है—को स्पष्ट करती हैं।

### नाटक का महत्त्व

गोर्की का यह नाटक एक ओर तो समाज के उस निचले तले को स्पष्टता के साथ प्रदर्शित करता है जो अत्याचार और उत्पीड़न पर आधारित है और जिसमें समाज के मनुष्य फिर उबर नहीं पाता और दूसरी ओर यह इस विषय से पूर्ण है कि मनुष्य स्वयं अपने को इस अत्याचार से मुक्त कर सकता है। यह मानवतावाद तो है किन्तु यह पुख्तीक मानवतावाद है जो अपने रास्ते से सारी बाधाओं को दूर फेंकता पकता है। गोर्की के नाटक का यह आधारभूत बस्तु-वस्तु है। यह समाजवादी मानवतावाद है। यद्यपि जीवन ने इन पात्रों को कमर तोड़ दी है और वे स्वयं परिस्थितियों से अधिक लड़ने में समर्थ नहीं हैं फिर भी इनका अन्त तक विचारों को जन्म देता है और पाठकों का इस निष्कर्ष पर ले जाता है कि ऐसे समाज का अन्त कर देना चाहिए। यह नाटक मनुष्य के अज्ञान का विरोध करता है और उस झूठी मिथ्यापूर्ण सान्त्वना को भी दृढ़ता है जो मनुष्य को परिस्थितियों से लड़ने की शक्ति नहीं देती बल्कि विभिन्न

बनाती है। बाद में गोर्की ने स्वयं कहा कि नाटक में बिद्रोह का 'सिगनल' है। मचमुच में इस नाटक का अन्तिकारी महत्त्व है। नाटक की सफलता में जारसाही का इतना दरा दिया कि उसने आज्ञा मित्राकी कि प्रान्तीय नगरों में इसके प्रदर्शन के लिए वहाँ के चीफ़ की अनुमति आवश्यक है और इन चीफ़ों को गुप्त रूप से निराश किया गया कि यथासक्ति इसके प्रदर्शन की आज्ञा न दें। यह सब हाते हुए भी यह नाटक कस में तथा देश विदेश सब जगह अत्यन्त लोकप्रिय हुआ और कोई भी रोक या बाधा इसके सामाजिक कलात्मक प्रभाव को कम न कर सकी।

### तूफानी चिड़िया का गीत

गोर्की के उन विचारा की अभिव्यक्ति उन रोमांटिक रचनाओं में भी हुई जो १९०० के द्वाव्दशक वर्षों में लिखी गई 'तूफानी चिड़िया का गीत' (१९०१) और 'मनुष्य' (१९०३)।

'तूफानी चिड़िया का गीत' में गोर्की ने काव्यात्मक ढंग से बड़ती हुई कान्ति की भावना का गीत गाया है। यह चिड़िया कोष में गरजत हुए समुद्र के ऊपर उड़ती हुई जाती है। 'धीम्र ही तूफान गरजेगा' यह इस गीत में कहा गया है। चिड़िया की कूक विजय का उद्घोष है 'और और से तूफान गरजे'। जारसाही ने उम पत्र ('जीवन') को बंद कर दिया जिसमें कि यह गीत छपा था। यह गीत अत्यधिक व्यापक हुआ और कान्ति के पूर्व के वर्षों में दानेबाजी कान्ति का प्रतीक बन गया।

### 'मनुष्य'

यदि 'तूफानी चिड़िया का गीत' दानेबाजी कान्ति का प्रतीक है तो 'मनुष्य' में उसके उच्च स्तर की अभिव्यक्ति—मनुष्य की स्वतंत्रता—हुई है। यह कविता 'मनुष्य का गीत' है। मनुष्य का इस प्रतीकात्मक चित्र में गोर्की बनाता है कि मनुष्य का क्या हाना चाहिए। गोर्की के लिए मनुष्य के गारे कार्यक्षमता का लक्ष्य यह है कि प्रत्येक व्यक्ति 'मनुष्य बन सके'। मनुष्य की शक्ति और उसकी उच्च प्रगति के विरहास में जेल गीत यह गीत गोर्की की मानवतावाद की ओरदार अभिव्यक्ति है। 'सब कुछ

मनुष्य में है—सब कुछ मनुष्य के लिए—आत्मा की चरित्र के इस दुबल  
 क्षण में मैं अपनी कल्पना की पूरी शक्ति के साथ अपने समस्त मनुष्य की  
 महानता के रूप का आह्वान कर रहा हूँ—वेको वह फिर स्वतंत्र और  
 उन्मुख वर्ष से अपना सिर उठाए धीरे-धीरे किन्तु दृढ़ पगों से प्राचीन  
 अंधविश्वासों के बीच से जा रहा है। मनुष्य के रास्ते का अन्त नहीं  
 है। अन्तिकारी मनुष्य इस प्रकार बढ़ता चला जा रहा है—भागे और  
 ऊँचे जागे और ऊँचे।

उपन्यास की 'मा'

१९०९ में गोर्की ने अपनी विस्मयिकायुक्त कृति 'मा' प्रस्तुत की  
 जिसकी रचना उसने सन् १९३ में आरम्भ कर ली थी। १९०७ में  
 सोवियत डिमोक्रेटिक पार्टी के अधिवेशन के समय जब गोर्की तथा केनिन  
 सदन में मिले थे केनिन ने उसकी श्रुतियों का उत्प्रेषण करत हुए भी इसके  
 महत्त्व की चर्चा करते हुए गोर्की से कहा था कि अब तक अन्तिकारी  
 आन्दोलन में बहुत स मजदूर अचेतन रूप में योग दे रहे थे। अब वे इसे  
 पहँच और काम उठाएँगे। यह अत्यन्त समयापयोगी पुस्तक है <sup>१</sup>—यह  
 केनिन की टिप्पणी थी। इस भेंट के बाद केनिन ने गोर्की को लिखा कि  
 'अपनी कलात्मक प्रतिभा के द्वारा तुमने रुस के और न बरफ अकेले रुस  
 के बरन् समस्त सभार—मजदूर आन्दोलन को सदा लाभ पहुँचाया है।  
 जाये तुम और भी काम पहुँचाओगे।

उपन्यास में प्रस्तुत समस्याओं की महत्ता के कारण विनायक की  
 महीनता कलात्मक साधन तथा पुरुषता की मौलिकता और सभार भर  
 के पाठकों पर अपनी प्रभावशालिकता के कारण गोर्की की यह कृति बीमबी  
 घताम्बी के आरम्भ की विदक-साहित्य की महत्त्वपूर्ण पुस्तक बन गयी। इस  
 पुस्तक का सभार की बहुत-सी भाषाओं में अनुबाद भी हो चुका है।

'मा' उपन्यास में गोर्की ने उन नयी शक्ति का पुरा-पुरा चित्रण किया

<sup>१</sup> इसका संस्कृतमा लिखेपत्रुण न० ६० विमोक्षेदेव पृ० ७७।

है जो कि जीवन में तथा अत्याचारियों के विरुद्ध युद्ध में प्रकट हो गयी थी। इस उपन्यास में वे सब चित्र एक में सम्मिश्रित हो गये हैं जिनको उसकी सर्वना ने पहले अलग-अलग प्रस्तुत किया था—'मरुत बालक' बदन का 'काब' 'देहबान्य' तथा 'घनु'—रोमांटिक पादा नायक का चित्र मानवता के उद्धारक का चित्र तथा स्वतंत्रता के लिए युद्ध-समय पयार्थ व्यक्ति का चित्र। उपन्यास के केन्द्र में मड्डुर—आन्तिकारियों के चित्र हैं जिनमें उद्योग के मड्डुर आन्दोलन की पयार्थ विद्यपताएँ तथा उनकी व्यापकता प्रतिबिम्बित है। जिस प्रकार कि 'फमा गर्बेद' में पूंजीवाद का वस्तु-चित्र प्रस्तुत किया गया था इसी प्रकार 'मा' उपन्यास में अत्याचारियों के विरुद्ध आन्तिकारी आंदोलन का पूरा-पूरा वस्तु चित्र अंकित हुआ।

### उपन्यास की सामग्री

इस उपन्यास की मुख्य विषयता इस बात से प्रकट होती है कि हममें पयार्थ व्यक्ति और घटनाएँ प्रतिबिम्बित हैं। इसके मूल में गोर्की ने उन घटनाओं का विन्यास किया है जो निररी मोरीमोरद और मोरमोबो में सन् १९११-१२ में बर्ती (मोरमोबो में पहली मई का प्रदर्शन और उनके सदस्यों के विरुद्ध अत्याचारी कार्रवाई)। पावेत आन्दोलन और उनकी माँ पल/मया मीलोव्ना—उपन्यास के मुख्य पात्र मोरमोबो के प्रदर्शनकारियों (पीटर अग्रवेचिक अलोमोब और उसकी माँ मया विरीना) के बहुत निकट है। फिर मी गोर्की की कलात्मकता इन व्यक्तियों तथा घटनाओं के साथ प्रत्यक्ष सम्बन्ध से सीमित न हुई। उसने आन्तिकारी युद्ध की व्यापकता का पूरा-पूरा चित्रण किया और नये आन्तिकारी मोडों को चित्रित की रचना की। स्त्री मड्डुर वर्ग के प्रगतिशील स्तर के साथ अनिष्ट संबंध से गोर्की की कलात्मक शक्ति प्रथित है। साथ ही अब गोर्की की कला-दृष्टि में उनके उपन्यास के स्तर को ऊपर उठा दिया और वह इन आन्दोलनों की मुख्य विधि-धाराओं को समझ सका और अंकित कर सका।

## उपन्यास में मजदूर और क्रांतिकारी बुद्धिजीवी

इस समय का ज्वलन्त प्रश्न या मजदूर वर्ग का उत्पीड़कों के विरुद्ध आन्दोलन। 'मैं' उपन्यास युग के इसी भूलभूत महत्त्वपूर्ण समस्या का बुरा-भूरा चित्रण कर रहा है। इसके पात्र दो शिबिरों में बँटे हुए हैं—उत्पीड़क और उत्पीड़ित—जो एक-दूसरे के बानी दुश्मन हैं और जिनका वर्ग संघर्ष बराबर चल रहा है। एक शिबिर में तो पूँजीपति हैं और उनके कारिन्दे नारसोही के श्यामात्मक नारसोही की पुलिस तथा जामूस और उनके हाथ बोल में डाली गई जनता और दूसरी ओर हैं मजदूर, मार्क्सवाद का मजदूर वर्ग में प्रचार करनेवाले क्रांतिकारी नवयुवक, तथा मजदूरों के साथ संयुक्त किसान।

इन पात्रों के माध्यम से सामाजिक संघर्ष के ये महत्त्वपूर्ण प्रश्न अभिव्यक्त हुए हैं जिनको गोर्की ने अपने उपन्यास में प्रस्तुत किया है, और वर्ग संघर्ष के उस यथार्थ संबंध को प्रकट किया गया है जिसमें कि इस समय सामाजिक संघर्ष की परिस्थिति को निरिच्छित किया।

प्रत्येक पात्र का चित्र या विशिष्ट उपन्यास में विविष्ट चरित्र का सम्पादन कर रहा है। पाबेल का पिता पुरानी पीढ़ी के मजदूरों का प्रतिनिधि है जिसको कि उत्पीड़न में पूरी तरह पीस दिया है। उसमें व्यक्ति की ऐकिक जीवन के प्रति उमड़ते हुए अन्दर के विरोध के अभिव्यजन का उसे कोई ठीक पेटन मार्ग न मिल सका और मरिदा पात्र कड़ाई-जापड़ा तथा पत्नी पर व्यर्थ बटाव उसका में अन्त होता है। पाबेल की माँ श्री पिता की तरह दमित और बर्बाद है जो सबसे बड़ी है किंतु जिसे क्रांतिकारी नवयुवकों के सम्पर्क में आदमी बना दिया। उसने अब अपना रास्ता जान लिया और अब जीवन के प्रति उसका रुख निश्चित हो गया। पाबेल नयी पीढ़ी का प्रतिनिधि है जो सरकार तथा पूँजीवाद के विरुद्ध बेतन रूप में लड़ रहा है। जीवन के रूप में क्रांति की ओर बढ़नेवाले किसानों की विद्युत्पूर्ण प्रकट की घरी है। क्रांतिकारी बुद्धिजीवियों का मजदूर वर्ग के साथ जो संबंध या वह क्रांतिकारी आन्दोलन का महत्त्वपूर्ण पक्ष या और

उसका विषय साधा मतासा लोकियत आदि पात्रों के कार्यकलाप द्वारा किया गया है।

इस प्रकार यह उपन्यास मजदूर आन्दोलन तथा श्रमिकारी युद्ध के विभिन्न क्षणों को व्यक्त कर रहा है। इसमें आर्थिक स्वयं मजदूरों की माण्डियों के संघटन प्रबन्धन से मुठभड़ व्यावाहय तथा शर्मों में श्रमिकारी प्रचार संघटन में श्रमिकारी कार्य कलाप ने सभी पक्षों की विधिष्ठताका का विषय हुआ है।

### मां का अंकन

इस उपन्यास में मां के चरित्र का विषय महत्व है। इसका नाम भी मां है और यह मुख्यतया मां के चरित्र के विकास का इतिहास है। इसके द्वारा उस मां का अंकन हुआ है जिस पर बल्लभर काग श्रमिकारी बने। पाबेल की मां के चरित्र का यही महत्व है।

आरम्भ के पाबेल की मां पेसोयेया लोकोवना स्नामोवा बड़ी बड़ी हुई डी हुई और मीन शक्ति की गया है। वह अपने बारे में स्वयं कहती है कि मैं बरों जीवित रही—अकड़ा—काप — पति के अतिरिक्त और कुछ भी न बेचा भय के सिवा और कुछ न जाना मुझमें सब कुछ पिन गया आत्मा मार डाली गयी अभी हो गयी—कुछ नहीं सुनती।” भय का उनके जीवन पर दासन है। हर चीज को उत्तर वह आसुओं ने रती है और वह हर चीज को सहती रही। उपन्यास के आरम्भ में वह ऐसी ही अक्षिप्त की गयी है। किन्तु उसके माप ही अक्षिप्त रूप से उसके अन्तर जीवन के प्रति असंतोष धीरे-धीरे बढ़ता रहा यद्यपि इने वह अभी स्वयं नहीं समझ सकती। बाद में मजदूर लक्ष्यक तथा श्रमिकारी विचारों के सम्पर्क में आकर वह अपने को तथा अपनी स्थिति को समझ सकी और अपने उन असंतोष को पहचाना जो कि अक्षिप्त रूप से उनके भीतर ही भीतर उमड़ रहा था।

धीरे-धीरे उनमें परिवर्तन होता है। अचेतन से चेतन की ओर विकसित होनेवाले इस व्यापार या चरित्र-विकास को उपन्यास के बीच योडी बड़ी सूक्ष्मता से गनी-गनी प्रदर्शित करता है और दिखाता है कि

बहु किस प्रकार इन मलयुवकों की बातचीत को समझने लगती है। इस ज्ञान ने कर्म को जन्म दिया और अब बहु क्रांतिकारी काय में अपने लड़के का हाथ बटाना शुरू करती है। इसलिए नहीं कि बहु उसका बेटा है, बरन् इसलिए कि बहु उस लक्ष्य को समझ रही है जिससे प्रति उनका सड़का प्रयत्नशील है और उस अपने बेटे के इस कार्य से सहानुभूति है।

उपन्यास के अन्त में उसका रूप बिलमूल घूमना हो जाता है। अब बहु सर्वथा निर्भीक है और बड़े बड़े स जाहिम कामों को पूरा करती है। भय पर—जिसका कि उसके जीवन पर पूरा आविपत्य था—उसने अब सदा के लिए पूरी विजय पा ली और अब उसमें साहस का आगमन हुआ साहस जो कि युद्ध और विजय का आधार है। इसी से यद्यपि बाह्य रूप में अन्तिकारियों की पराजय के साथ उपन्यास की समाप्ति होती है, फिर भी पाठकों का उनकी आनेवासी विजय में पूर्ण विश्वास है क्योंकि ये क्रांतिकारी निर्भीक है और आन्तरिक शक्ति तथा साहस से परिपूर्ण हैं। वे भय से आत्म-समर्पण नहीं कर देते। मां के चरित्र का यह परिवर्तन अन्तिकारी आन्दोलन की प्रगति तथा विकास की महत्वपूर्ण मञ्च का द्योतक है।

### पाबेल का चरित्र

पाबेल के चरित्र का उपन्यास में अत्यधिक महत्व है। स्वाधीनता प्रेमी नायक की चरित्र-सृष्टि द्वारा गार्डी ने एक धोर तो ग्राहिर्य की कलासिकक डिमोक्रैटिक या जनवादी परम्परा का जाले बढ़ाया और दूसरी ओर उसने नया वस्तु-तत्त्व प्रदान किया जिससे कि पाबेल का चरित्र सोवियत् साहित्य के नये पाठकों का पूर्वज या प्रवर्तक बना। पाबेल के चरित्र का कलात्मक महत्व इस बात में है कि उसके अंकन में गार्डी ने बीसवीं शताब्दी के आरम्भ के मजबूर अन्तिकारी की सभी अपनी विविष्टताओं को प्रतिष्ठित किया और इसके साथ ही पाबेल के अचक परिपम तथा बुद्धि इच्छा शक्ति को प्रदर्शित कर उसके अन्ति मार्ग के उदाहरण द्वारा अपनी यह भावना भी प्रकट की कि मजबूर अन्तिकारी को जीना चाहिए। पाबेल में मोर्डी के पूर्वजित नायकों के चरित्रों



उसका चित्रण साधा तथासा साक्षिमा आदि पात्रों के चरित्ररूप द्वारा किया गया है।

इस प्रकार यह उपन्यास मजदूर आन्दोलन तथा अतिकारी युद्ध के विभिन्न क्षणों को अंकित कर रहा है। इसमें आर्थिक संघर्ष मजदूरों की गोष्ठियों के संघटन प्रवर्धन सेना से मुठभेड़ स्वाभाविक तथा नाबों में आस्तिकारी प्रचार संघर्ष में क्रांतिकारी काय कलाप के सभी पक्षों को विधिष्ठताओं का चित्रण हुआ है।

### माँ का अंकन

इस उपन्यास में माँ के चरित्र का विषय महत्व है। इतना नाम भी माँ है और यह मुख्यतया माँ के चरित्र के विकास का इतिहास है। इसके द्वारा उस माँ का अंकन हुआ है जिस पर चलकर लोग अतिकारी बने। पात्रों की माँ के चरित्र का यही महत्व है।

आरम्भ के पात्रों की माँ पेलोबया नीलोष्मा ज्जामोथा बड़ी बड़ी हुई डरी हुई और मौन अंकित की गयी है। वह अपने बारे में स्वयं कहती है कि "मैं बड़ी अंधिल रही—मगड़ा—कान—पति के अतिरिक्त और कुछ भी न देखा मग के निवा और कुछ न जाना मुसम मग कुछ पिन गया आत्मा मार डाली गयी बँधी हो मग—कुछ नहीं सुमती।" मग का उनके जीवन पर घासन है। हर चीज का उत्तर वह आँसुओं से बड़ी है और वह हर चीज को सहती रही। उपन्यास के आरम्भ में वह ऐसी ही अंकित की गयी है। किंतु उसके साथ ही अलक्षित रूप से उसके अन्दर जीवन के प्रति असंतोष धीरे-धीरे बढ़ता रहा यद्यपि इसे वह अभी स्वयं नहीं समझ सकती। बाद में मजदूर मजबूत तथा क्रांतिकारी विचारों के सम्पर्क में आकर वह अपने को तथा अपनी स्थिति को समझ सकी और अपने उस अवस्थाप को पहचाना जो कि अलक्षित रूप से उसके भीतर ही भीतर उमड़ रहा था।

धीरे-धीरे उसमें परिवर्तन हुआ है। अचेतन में जीवन की और विकसित होनेवाले इन व्यापार या चरित्र-विकास को उग्याम क बीच गोरी बड़ी सूझना से लगे लगे प्रदर्शित करता है और दिखाता है कि

बहु किस प्रकार इन सबपुस्तकों की बाठपीठ को समझने समझी है। इन ज्ञान ने कर्म को जन्म दिया और अब बहु जातिकारी कार्य में अपने सड़के का हाथ बटाना शुरू करती है। इसलिए नहीं कि बहु उसका बटा है बरम् इसलिये कि बहु उस कर्म को समझ रही है जिसके प्रति उसका रुझना प्रयत्नशील है और उस अपने बट क इस कार्य से सहानुभूति है।

उपन्यास के अन्त में उसका रूप बिलकुल दूसरा हो जाता है। अब बहु सबबा निर्माक है और बहु धैर्य से आत्मिक कामों का पूरा करती है। मय पर—जिसका कि उसके जीवन पर पूरा आधिपत्य था—उसने अब सदा के लिए पूरी विजय पा ली और अब उसमें साहम का मापमन हुआ साहस का कि युद्ध और विजय का आधार है। इसी से यद्यपि बाह्य रूप में आन्तिकारिया की पराजय क साथ उपन्यास की समाप्ति होती है, फिर भी पाठकों का उनकी आत्मवासी विजय में पूरा बिदबाम है क्योंकि य आन्तिकारी निर्माक हैं और आन्तिकरि सक्ति तथा साहम में परिपूर्ण हैं। वे मय से आत्म-समर्पण नहीं कर देते। भां क परिण का यह परिवर्तन आन्तिकारी आन्दोलन की प्रगति तथा विनास की महत्त्वपूर्ण मंडिल का धोत्रक है।

### पाबेल का चित्रांकन

पाबेल के चरित्र का उपन्यास में अत्यधिक महत्त्व है। स्वाधीनता प्रेमी नायक की चरित्र-सृष्टि द्वारा मार्की ने एक ओर तो साहित्य की क्लासिकल बिमोकेटिक या जनवादी परम्परा को जागे बढ़ाया और दूसरी ओर उसने मया बस्तु-सम्प्य प्रदान किया जिससे कि पाबेल का चरित्र सोबियत् साहित्य के नये पाठकों का पूर्वज या प्रवर्तक बना। पाबेल के चरित्र का क्लासिक महत्त्व इस बात में है कि उसके व्यंजन में गोर्की ने बीसवीं शताब्दी के आरम्भ के मजदूर आन्तिकारी की सनी अच्छी बिशिष्टताओं को प्रतिष्ठित किया और इसके साथ ही पाबेल के अथक परिश्रम तथा बुद्ध इच्छा सक्ति को प्रवर्षात कर उसके आन्तिक मार्ग के उदाहरण द्वारा अपनी यह भावना भी प्रकट की कि मजदूर आन्तिकारी को कैसा होना चाहिए। पाबेल में गोर्की के पूर्वांकित नायकों के चरित्रों

का सम्मिश्रण है। यदि रोमांटिक कृतियों में जोर्जी ने साहसी स्वतंत्रता प्रेमी नायकों (बाको सोरक) की सृष्टि की और यथार्थवादी कृतियों में प्रतिबाह तथा व्यथाचार के विरुद्ध युद्ध-सुप्रसन्नता की विधिप्यताओं (कनवासोव मटवट बालक) का प्रदर्शित किया तो पाबेल के रूप में उत्तम संघर्ष तथा युद्ध के उद्देश्यों का चेतन बंधन किया है। वह जानता-बूझता हुआ इस संघर्ष के महत्त्व तथा उद्देश्य को समझता हुआ इसमें प्रविष्ट होता है, और पूर्वीबाह तथा व्यथाचार के विरुद्ध लड़ता है। पाबेल का चरित्र मुख्यतः निर्माणशील बोम्बविक का चरित्र है। वह लचील पीढ़ी का प्रतिनिधि है और उन बर्षों में बढ़ा होता है जब कि उस में माकसबाद का नातिकारी सिद्धान्त निर्मित हो चुका था और व्यापक मजदूर आन्दोलन शुरू हो गया था। इसी से उसका प्रतिबाह जनन प्रतिबाह है। वह प्रतिबाही समझ का मध्यम है। स्वतंत्रता के युद्ध के बीच उसका ज्ञान विकसित होता है और दृढ़ होता है। अनेक घटनाओं के बीच पाबेल हमी उभरते हुए आन्दोलन की मतिविधि को प्रदर्शित करता है जिसकी परिष्कृति प्रदर्शन तथा पुष्किल से सुठभङ्ग में होती है।

उपन्यास के अन्त तक पहुँचते-पहुँचते पाबेल अनुभवी क्रान्तिकारी बन जाता है। उसमें इच्छा शक्ति है, दृढ़ता है, और योग्यता है तथा उसमें मजदूर वर्ग की स्वाधीनता के महत्त्व की पूरी अभिव्यक्ति होती है। जनता और पार्टी के हितों की भाँति उसका चरित्र की मुख्य विद्यपताएँ हैं और इन्हीं से उसका जीवन सञ्चालित होता है। पाबेल के रूप में गार्सी ने विश्व-साहित्य में पहली बार नया चरित्र अंकित किया। मजदूर-क्रान्तिकारी का चरित्र जिसमें मजदूर वर्ग की स्वाधीनता और युद्ध के आधार पर सुष्किल नव मनुष्य का नया सामाजिक आदर्श प्रतिष्ठित किया गया।

गार्सी ने इस उपन्यास पर कई बर्षों तक परिश्रम किया। अन्तिम रूप में प्रकाशित हुअ के पहले योर्जी ने उसका पाँच बार संशोधन किया। संतानन उमने उन कृतियों का दूर करने का प्रयत्न किया जिसका निरर्थक संदेह में सेजिन ने किया था।

गोर्दी ने विषय रूप से माया की ओर बहुत ध्यान दिया। मनुष्यों और बटमाया का चुनाव करता हुआ गोर्दी जीवन के समान ही उनका यथार्थ मंजन करता है और उन विविधताओं से उनका अधिक बटकीला बनाता है जिनको वह महत्त्वपूर्ण समझता है और जिनके साथ उसकी सहानुभूति है। और इन प्रकार इन युक्तियों के द्वारा वह पाठकों की सहानुभूति को विविध पक्ष की ओर प्रेरित करता है। व्यक्ति की अपनी खास विविधताओं का सामिक चुनाव गोर्दी को व्यक्ति के समीप अंजन में बड़ी सहायता देता है और पात्र के प्रति पाठक के मस्तिष्क को निर्दिष्ट करता है। प्रत्येक पात्र की बाणी से उसके चरित्र स्थिति सामयिक विकास का पता चलता है। माया की सहायता से गोर्दी पात्रों के आन्तरिक मानसिक विकास का सूक्ष्म संकेत देता है जिससे कि उनकी विभिन्न विविधताओं का पता चलता है। पात्रों का परिवर्तन इस उपन्यास में कृत्रिम नहीं प्रतीत होता। उपन्यास की बटमायों के विकास के अनुरूप पात्रों के चरित्रांकन की विविधताएँ बरसनी जाती हैं और उनके साथ ही मार्की इन चित्रों या पात्रों के भाषायुक्त विविधताओं को धराधार बनाना रहता है जिससे कि चित्रण अपने को समृद्ध करता हुआ नवी-नवी विधेयताएँ प्राप्त करता रहता है और जीवन पर अपने विकास की छाप छोड़ता है। नीलोन्मा तथा पाबेल के अंजन में गोर्दी का माया-कौशल विषय रूप से सञ्चित होता है।

### धारशाही सेंसर और उपन्यास

एसा उपन्यास धारशाही की मञ्जरों से नहीं बच सकता था। सेंसर ने इसे मत्स्यिक अडगनाक ठहराया और कहा कि यह समाजवादी विचारों के प्रति लुभे रूप में महानुभूति प्रकट करता है। वह मद्दह जिसमें कि यह उपन्यास छप रहा था उसकी सब प्रतियाँ जप्त कर ली गयीं टाइट टोड़-फोड़ शब्द गये और स्वयं गोर्दी को बाँट बर्षे की कड़ी भडा देने का निर्णय हुआ यदि वह रूप में हो और यदि वह विषय न चला गया हो। इस प्रकार यह पुस्तक अत्यन्त सञ्चित रूप में छप सकी इसका पूरा प्रकाशन केवल अक्टूबर मास के बाद ही हो सका।

## समाजवादी समाधिवाद

केवल मंचर की ही इस पर कृदृष्टि नहीं थी बल्कि इसकी उस समय क बुर्जुआ पक्ष के आलोचकों ने भी कटु आलोचना की। वास्तव में ये आलोचक इस उपन्यास के कान्तिकारी प्रचार की शक्ति से भयभीत हो गये थे।

यह उपन्यास सन् १९०७ में छपा था। यह समय १९०५ की क्रांति की पराजय के बाद का समय था जब प्रतिक्रियावादी शक्ति बहुत तीव्र हो गयी थी सामाजिक जीवन और साहित्य में निराशावाद पराजय और ह्रास की भावना थी। क्रांति की पराजय से लोग भयभीत हो गये थे। ऐसे निराशा के समय में उपन्यास का प्रकाशन महत्त्वपूर्ण घटना थी जिसने कि लोगों में क्रांति की शक्ति भर दी। स्वयं गोर्की ने अपने उपन्यास का अन्त्य बताते हुए कहा कि 'हमारा ज्येष्ठ जीवन की अभिव्यक्तिकारी शक्ति तथा अन्वेषण का विरोध करने वाली भावना को सहाय देना है, मिरन से बचना है'। इस कार्य को गोर्की ने पूरी तरह से सम्पन्न किया।

गोर्की की महत्ता इस बात में है कि उसने नये युग की समस्याओं का समाधान और उनका पूरा-पूरा अभिव्यंजन किया। इस प्रकार उसने साहित्य में नये मापकी का समावेश किया और उनमें समाजवादी आँसुओं का प्रदर्शित किया। समाजवाद की भावना और मेहनतकारों के साथ सहानुभूति की अभिव्यक्ति ने गोर्की तथा इस उपन्यास को समाजवादी समाधिवाद का अग्रदूत बना दिया। बेच का उद्धार करनेवाला जनता का सेवक समाजवाद के लिए सड़नेवाला साहस सहनशीलता और बलिदान की भावना से युक्त इस उपन्यास का मापक समाजवादी समाधिवाद की बिसपतामा को ही प्रकट कर रहा है। इनके साथ ही अपने कान्तिकारी विराम के बीच जीवन का पुरुष अभिव्यंजन समाजवादी समाधिवाद की अन्य महत्त्वपूर्ण विशेषता है जो इस उपन्यास में पूरी-पूरी प्रतिबिम्बित हा रही है। इसी कारण गोर्की सोवियत साहित्य और उसकी धृती का उपादान-समाजवादी समाधिवाद-का संस्थापक कहाया। अपनी पत्नी

खोस-दुष्टि के कारण वह अपने समकालीनों की अपेक्षा समकालीन घटनाओं से ऊपर उठ सका और उनकी अपेक्षा अधिक व्यापकता तथा गम्भीरता से उनका सामाजिक महत्व समझ सका। जीवन के नए विचारों की साहित्य से जो गई माँगें थीं उनको वह समझ सका और उनका सफल अभिव्यञ्जन कर सका।

अपनी सर्जना में गोर्की के क्लेशन की इस दूसरी अवस्था का बड़ा महत्व है। इस युग में उसकी महत्वपूर्ण कृतियाँ ( 'मा' निचले तले पर' तथा अन्य) सामने आईं। युग के महत्वपूर्ण प्रश्नों को गोर्की की कृतियों में अभिव्यक्ति मिली और उसने नयी समाज के विभिन्न स्तरों को प्रदर्शित किया—प्रोख्लारियत् विभिन्न वर्षों में विभाजित बुद्धिजीवी नयी बुजुर्गों की विभिन्न पीढ़ियाँ कृषि गाँव निचले तले पर, पहुँच हुए 'समाज के स्टेज' आधारों' भाषि।

प्रतिक्रिया के वर्षों में और प्रथम महायुद्ध के बीच गोर्की की सर्जना

सन् १९०५ की क्रांति की पराजय के बाद प्रतिक्रियावादी प्रबल हो गये और हमन बड़े बेग से चलने लगा। आतिकारियों को कठोर हंड दिया गया। जेल भर गये और हजारों को फाँसी मिली। कम जमीन वाले किसानों की हारत और नती बियड़ गयी और मजदूरों का काम करने का दिन बस या बारह घंटे का कर दिया गया। हड़ताल में भाग लेने वाले किसानों को 'वासी क्रूरिस्त' में बर्न कर दिया गया और उनको कहीं काम नहीं मिलता था।

बुद्धिजीवियों पर इसका यह प्रभाव पड़ा कि उनमें पराजय तथा हार की प्रबुत्ति का जगम हुआ और उनमें से बहुत से क्रांति से विमुख हो गये मार्क्सवाद की आलोचना केंद्रन बन गया। बहुत से लेखक क्रांति की आलोचना करने लगे और उसकी हींसी उढ़ाने लगे। यौन संबंधी आकर्षक विषय या हींसी का चलन हुआ। बर्न के क्षेत्र में मार्क्सवाद में संशोधन का घोर बढ़ा तथा सभी प्रकार की धार्मिक धारणें 'बैज्ञानिक' ठर्क का बाना कारण दिव्य हुये बहने लगीं। इन सब का जड़स्य पणता को क्रांति के मार्ग से हटाना था।

रूस की श्रम परिषदि ४ अक्टूबर १९१२ के बोलीकांड में हुयी जिसमें पाँच सौ से अधिक व्यक्ति मारे गये या बायस हुये और जब इसका विरोध किया गया तो गृहमंत्री मकाराग ने कहा कि 'ऐसा ही हुआ और ऐसा ही होगा।'

किन्तु रूस का विरोध करनेवाले ऐसे लोग भी थे जो इस बात पर डूढ़ थे कि ऐसा न होने पायेगा। इस बोलीकांड के विरोध में पीतरबुर्ग में एक लाख व्यक्तियों से अधिक ने हड़ताल की। प्राह् में (१९१२) पाँच अखिल रूसी पार्टी सम्मेलन हुआ उसमें बोम्बेविकों और मसोविकों के बीच एकठा वीदा की और सारे देश में बोम्बेविकों के छपठनों को एक बोम्बेविक पार्टी में डूढ़ कर दिया।

मार्क्सवाद की आलोचनाओं के उत्तर के रूप में लेनिन की 'मार्क्सवाद तथा एम्प्रीरिओ क्रिटिसिज्म' पुस्तक प्रकाशित हुई।

साहित्य में प्रतिक्रियावाद के विरुद्ध मार्क्सवादी आलोचना

साहित्य में प्रतिक्रियावाद का विरुद्ध लड़ाई छिड़ पयी। साहित्य में ह्यामवादी मनोकृति के विरुद्ध मार्क्सवादी आलोचकों ने विवाद छड़ दिया। इस में मार्क्सवादी आलोचना की नींव स्पेखानोव द्वारा डाली गई। इनने साहित्य के विरसेपन में मार्क्सवादी सिद्धान्तों के लागू करने का महत्त्वपूर्ण काम किया। स्पेखानोव की सबसे बड़ी बेन इस बात में है कि उनमें सामाजिक जीवन के साथ कामना का जो बलिष्ठ संबंध है उनका पूरा-पूरा उद्घाटन और अविध्वंस्य कर दिया ('कला और सामाजिक जीवन')। इसके बाद बरोव्स्की (१८७२-१९०३) तथा अन्य लेखक आये। अपने लेखों में ('लड़ाई के बाद रात में तथा अन्य') बरोव्स्की ने ह्यामवादी साहित्य के विरुद्ध युद्ध किया। इनमें उनका महत्त्वपूर्ण योगदान है। साहित्य संबंधी प्रश्नों पर सेन्टा के प्रकाशन द्वारा 'रेवेन्सा' तथा 'ग्राब्दा' पत्रों ने भी इस युद्ध में महत्त्वपूर्ण योग दिया।

मार्क्सवादी आलोचना के विकास में लेनिन के लेखों का मौलिक स्थान है। इन लेखों के द्वारा लेनिन ने साहित्य के मार्क्सवादी विरसेपन

का उदाहरण प्रस्तुत किया तथा सामाजिक जीवन के प्रतिबिम्ब रूप में साहित्य का जो वैज्ञानिक महत्त्व है उसका निरूपण किया। साहित्य का ऐतिहासिक वातावरण से जो संबंध है लेखक के मूल्यांकन में अन-हित की दृष्टि या दृष्टिकोण की अनिवार्य आवश्यकता आदि के प्रश्नों पर भी लेनिन ने महत्वपूर्ण विचार प्रस्तुत किये और सामान्य साहित्य के वैज्ञानिक अध्ययन के सिद्धान्तों को निर्धारित किया। अपने लेख 'पार्टी संगठन तथा पार्टी साहित्य में लेनिन ने समाजवादी साहित्य के मूलभूत सिद्धान्तों की मौलिक स्थापना की और साहित्य में प्रतिक्रियावादी प्रवृत्तियों के विरुद्ध युद्ध किया यह लेख प्रतीकवादिता तथा अन्य प्रतिक्रियावादियों के विरुद्ध था।

### प्रतिक्रियावाद के विरुद्ध गोर्की

प्रतिक्रियावाद के इन वर्षों में गोर्की ने बोल्शेविक प्रेस का बड़ा काम किया और वह 'रबेला' तथा 'प्रोब्लेमेनिए' पत्रों में बराबर लिखता रहा। सन् १९१२ में 'रबेला' में उसकी 'इटली की क्रांति' प्रकाशित हुई। १९०८ में अपने लेख 'व्यक्तित्व का नाम' में उसने उन लेखकों पर आक्षेप किया जिनमें प्रतिक्रियावादी प्रवृत्तियाँ कल्पित हो रही थीं। इस लेख में उसने बड़े जोर के साथ देश-भक्ति का महान काम के मूलभूत आधार के रूप में प्रतिपादन किया और उसे कलासिद्ध कृती साहित्य की महत्वपूर्ण परम्परा बताया। प्रतिक्रियावादी लेखकों के संबंध में उसने कहा कि 'उनका साहित्य देश-भक्ति की भावना से धूम्य है। सामाजिक समस्याएँ हमकी सर्जना की नहीं उपवृत्त करतीं। वह ऊँचाई से क्लिप्त कर दैनिक जीवन की बटनाओं में फँस जाता है। वह संसार का स्पर्श नहीं रख पाता बल्कि घुसने की मूल में पड़ा हुआ कोच का छोटा सा दृक्काम बन जाता है। अपने इस दृष्ट दृष्टके से वह संसार के विद्यालय जीवन को नहीं प्रतिबिम्बित कर पाता बल्कि दृष्टी हुई आत्माओं के दृष्टकों को प्रतिबिम्बित करता है।'

१ स्तक्या सबेत्क्या कितरातूय ल० इ० तिमोफेयेव पृ० १०१।



बहु बहूठा है कि 'स्वयं प्रत्येक लेखक एक दूसरे से विस्तृत बहूठा का फिर भी उन सबको एक कथ्य और प्रयत्न में एक बना दिया था और बहु या वैद्य का भविष्य जनता का भाग्य और संसार में अम-भूमि के स्थान को सोचने-समझने तथा अनुभव करने का अथवा प्रयत्न। १ बहु यह कहते कभी नहीं पकटा कि "ककाकार देश की सर्वोत्तम संतान की और है।—देश के दुर्भाग्य के समय में देश की साहस से मरी आत्मा को अवश्य ही जयाना चाहिए।

अपनी इस समय की रचनाओं में गोर्की ने अपने इसी मूलभूत विचार की अभिव्यक्ति की है। १९०९ में गोर्की ने 'घीघ्य' कहानी लिखी। यह काल्पनिक गीब की कहानी है। गीब का विषय इस समय बहुत प्रचलित था। बहुत से स्त्री लेखकों में गीब की दृष्टिगत दृष्टिपता भावि का विश्व स्वीया है। किन्तु गोर्की की यह कहानी इनसे भिन्न है। इसमें केवल वही नहीं विनियत किया गया है जो कि गीब में था बल्कि उस शक्ति की भी कल्पना की गयी है जो कि स्वतंत्रता प्राप्ति पर विद्यमान होती। इनके विद्यमान में पुत्रीवाद और शासन बाधा शक्य हैं। अपनी रचना में गोर्की ने जनता की इन छिपी हुई किन्तु वास्तविक शक्तियों को उभारा है। इसी से गीब के बारे में लिखी हुई रचनाओं में से केवल गोर्की की रचना 'घीघ्य' ऐसी रचना के रूप में सामने आई जिसमें लेखक शक्ति के पूर्व से गीब की जीवन्त शक्ति की खर्चा करता है। कहानी का अन्त इन शक्तियों से होता है 'महान स्त्री जनता' तुम्हें शीघ्र ही आनन्दाने जन्म की अपाई। इसकी नायिका बार्बा स्त्री मारी का विषय है। स्त्री गीब में मया जीवन अमानेवासी शक्य दुःख हंसपुत्र बापों में स्त्री मारी की परम्परा में प्राप्त अच्छी मरी विद्यपताएँ हैं।

### अकुरोव

सन् १९०९-१० में गोर्की की भाषण में अनिच्छता से सन्निहित की रचनाएँ निम्नी—'छोटा शहर अकुरोव' और 'मत्तवेय कन्व्यादिन

का जीवन'। इनमें गोर्की ने रूसी जीवन का दूसरा पक्ष दिखाया जिनमें संस्कृति से दूर, पिछड़े हुए, छोटे सहरो का जीवन चित्रित किया गया है। इसमें उन लोगों का मातम-संतुप्त जीवन चित्रित किया गया है जो सबेदन-खीर व्यक्तियों के हर प्रकार की सु दरता तथा सत्य के लिए किये गए प्रयत्न को बचा देते हैं। अक्रुरोव सहर का कवि सीमा देबुनिकम कहता है कि 'हमारे पीछे जंगल है, आगे वसुदस थीमन्। हम पर कृपा करो हमारी जीने की इच्छा नहीं। इस सहर के लोग लड़पते हैं उनकी प्रतिमा और सवित के अभिव्यंजन के लिए कोई मार्ग नहीं है। अधिकार किप्सा स्वार्थ प्रेम बुना कठोरता की भावना से विपाकत वातावरण के बीच मोर्की ऐसी वस्तु की खोज कर रहा है और ऐसी जीम पाता है जो कि ऐसे जीवन को बरक सक्ती है। उसका वही व्यक्ति में विश्वास है जो अपने मार्ग की सारी बाधाओं को दूर हटाने की शक्ति रखता है और वह जीवन के उस परिवर्तन को देख रहा है जो कि समीपवर्ती शान्ति को अक्रुरोव में भी का रहा है। अक्रुरोव के नीरस जीवन का चित्र लीखते हुए पोर्की रूस के विकास का रूप भी देख रहा है और उसके प्रकाश में उन शक्तियों को दिखा रहा है जो अक्रुरोव में प्रौढ़ हो रही है। इनमें सबसे प्रथम देस प्रेम है। अक्रुरोव में नये जीवन का संभार होता है, शान्तिकारी प्रकृत होते हैं और जवानों की गोष्ठियाँ बनाई जाती हैं। 'मा' उपन्यास तथा 'धीप्म' कहानी के समान इसका वस्तु-विषय देस के नवजीवन का चित्रण ही है।

### रूसी व्यक्तियों के सस्मरण

इन्हीं वर्षों में गोर्की उन महान रूसी व्यक्तियों का साहित्यिक चित्र प्रस्तुत करता है जिनसे कि वह अपने जीवन में मिला। इनमें करोस्वैको एसेनित बेखव स्काक, कियो तोल्स्ताम जादि सद्रकों का मुख्य स्थान है। इन संस्मरणों को गोर्की ने कई वर्षों में लिखा और इनमें गोर्की की चित्रात्मक कलापटुता प्रकृत होती है। इन संस्मरणों में गोर्की ने विशेष रूप से यह दिखाने का प्रयत्न किया कि रूसी राष्ट्रीय चरित्र की विशेषताएँ किस प्रकार उसके महान प्रतिनिधियों में प्रस्फुटित हुईं उनमें किन्ता

गहरा रेश प्रेम का और उन्हें अपने रेश तथा जाति पर स्थिता पर्ये वा ।  
प्रथम महायुद्ध और गोर्की

प्रथम महायुद्ध के पूर्व गोर्की रुठ लौट आया । उसने 'सियोपिस' पत्र की स्थापना की जो कि शासन-विराधी पत्र था ।

युद्ध छिड़ने पर प्रगतिशील पार्टी ने साम्राज्यवादी युद्ध की निंदा की और लोगो को विद्रोह करने तथा जारघाही को अपदस्थ करने को उत्तम्बित किया । बोल्शेविक पार्टी ने क्रान्तिकारी अन्तर्राष्ट्रीयता का पक्ष लिया और साम्राज्यवादी युद्ध का विरोध किया ।

इस समय क्रान्तिकारी छिप कर काम कर रहे थे मजदूरों का प्रथम बंध था तथा कानूनी रूप से युद्ध विरोधी प्रचार करना सम्भव न था । केवल 'सियोपिस' कानूनी था जिसने कि साम्राज्यवादी युद्ध का विरोध किया । प्रथम महायुद्ध के बीच गोर्की का प्रगतिशील रूप इसी से स्पष्ट हो जाता है । वह महा अन्तर्राष्ट्रीयता तथा प्रजातन्त्रवाद का पक्षपाती रहा । साहित्यिक मोर्चे पर गोर्की युद्ध के वर्षों के बीच प्रगतिशील प्रोव्होकारियन् पक्ष का समर्थनकर्ता बना रहा और उसकी आवाज सारे उत्तार के महानतकसा की आवाज बन गयी ।

कत्तारमक सर्जना के क्षेत्र में उसकी रचना 'लोगों के बीच' (१९१६) प्रकाशित हुई । यह उसकी आत्मकथा की दूसरी पुस्तक है ।

रुठ में अकनूबर की महान जाति निवृत्त हो गयी थी । गोर्की की सर्जना का तथा और अन्तिम युग शुरू हुआ ।

गोर्की और दोसपी शशी के आरम्भ का साहित्यिक दृष्ट

अकनूबर जाति के बाद को गोर्की की सर्जना के सबसे में कुछ कहने से पहले उम यातावरण का मिहावसीदन जत्यावश्यक है जिसमें कि अकनूबर जाति तर उसकी सर्जना विवृत्त हुई । इस युग के कटोर वर्ष संपर्प में साहित्य के क्षेत्र में सैद्धान्तिक संघर्ष को जन्म दिया । इस संघर्ष में गोर्की ने समाजवादी सचार्थवाद का पक्ष लिया जो अनेक विरोधी विचार आराजा के बीच निवृत्त हुआ ।

हीमशी शशी के आरम्भ के काल में लेगाको ने गोर्की से प्रस्ताव प्रार्थ

की क्योंकि गीर्गी की रचनाओं में उनका युग द्वारा साहित्य के समस्त प्रस्तावित समस्याओं का समाधान करनेवाले सर्वमात्मक मिथान्ता की अभिव्यक्ति मिली। इसी से गीर्गी उस समय के साहित्यिक जीवन का केन्द्र बन गया और उसके मित्र और शत्रु दोनों का ध्यान उसकी ओर पया और बहुत से लेखक उससे प्रभावित हुए। इसके साथ ही स्वतः जीवन ने भी ऐसी समस्याएँ स्रष्टा को के सामने प्रस्तुत की जैसी कि गीर्गी ने रची थी और जीवन ने उनको उसी निष्कर्ष पर पहुँचाया जिस पर कि गीर्गी पहुँचा था।

इसके साथ ही दूसरे लेखक भी वे विमर्श प्रतिबिम्बावादी कहा गया और यह कहा गया कि उनकी रचनाएँ जीवन का यथावत्प्य जकन नहीं करती और सामाजिक जीवन पर बुरा प्रभाव डालती हैं। इन लेखकों के विरुद्ध गीर्गी का साहित्यिक दृष्ट बराबर चलता रहा।

जिस प्रकार अन्य क्षेत्रों में उसी प्रकार साहित्य के क्षेत्र में भी अकतूबर क्रांति के पूर्व टीका सैद्धान्तिक युद्ध या संघर्ष चलता रहा।

क्रान्ति के आस्योत्पन्न तथा राजनीतिक चेतना की व्यापकता ने मजदूर वर्ग के मौखिकता को ककारमक क्षेत्र में भी सर्वज-उत्पादन के लिए प्रगित किया मद्यपि यह मर्जन परिपक्व न था। उन् अस्ती म मजदूर कवि निभाएव (१८५९-१९२५) अपनी रचनाएँ छानने लया। वोड़े समय जाइ फे० म स्कूत्योव (१८६८-१९३०) सामने आया। इनका गीत है "इम सुहार हैं और हमारी आत्मा बवान है। कई पत्र भी निकले— जैसे प्रसेवचेनिए' (प्रकामन) (१९११-१७) 'हमारा रास्ता' (१९१३) जिनमें मजदूर लेखकों की रचनाएँ प्रकाशित हुई। इन्ही वर्षों में ज० नाविकोव—प्रिबोय फे० यदकोव एन० ल्यघकाव ने अपना साहित्यिक कार्य शुरू किया। १९१४ म मार्की के सम्पादन म प्रोचिता रिपत लेखकों का संग्रह निकला जिसकी भूमिका में उसम लिखा कि 'जीवन की परिस्थितियों के अत्यन्त विपम हाठ हुए भी क्वी मेहनत कर अपने बुद्धिजीवी वर्ग का स्वतः निर्माण कर रहा है, अपनी घाटीरिक्त शक्ति को मानसिक तथा आरिमक शक्ति में विकसित कर रहा है—

मेरा विश्वास है कि प्रोविंशियल स्वतः अपना ककारमक साहित्य निर्मित कर सकेगा है।<sup>१</sup>

युद्ध श्रमिक लेखकों के विकास में बोस्टाविक पत्र 'रईसदा' तथा 'प्राग्धा' का महत्वपूर्ण योग रहा है। ४०० से अधिक लेखकों ने इसमें लिखा। दो वर्षों में (१९१२-१४) 'प्राग्धा' में हजार ककारमक रचनाएँ और साहित्यिक टिप्पणियाँ छपीं।

इन युद्ध लेखकों ने साहित्य में नया जीवनत आनवी का समावेश किया। 'प्राग्धा' में छपी कविताओं के ककारमक शीर्षक से यह स्पष्ट हो जायगा कि यद्यपि यह आरम्भ ही था फिर भी इस साहित्य ने जीवन के उस शत्रु को प्रकामित किया जो कि अभी तक साहित्य में अस्पष्ट था। इनके शीर्षक थे 'घान' 'छापाखाना' 'राठ की बबली' 'जाम में काम करनेवाले की मृत्यु' आदि। 'प्राग्धा' के इशारों पाठक थे। इससे इस पत्र में छपी ककारमक रचनाओं का सामाजिक प्रभाव की वृत्ति से बड़ा महत्व था।

<sup>१</sup> दरक्या कबेल्क्या लिनेरागुरा क० इ० तिमोफयेव, पृ० १०८१

## प्रा० एस्० सिराफिमोविच

सिराफिमोविच का जीवन भी गोर्की के समान बड़ा कठिन था। उसका पिता जल्दी ही मर गया और परिवार हीन-हीन हो गया। परिवार की सहायता के लिए उसे तीनरे बच्चों से ही काम करना पड़ा। विमने-वियम का स्कूल समाप्त करने के बाद वह पीतरबुर्ग यूनिवर्सिटी में पढ़ने आया। यहाँ उसकी सेनिग के बड़े भाई वल्कसाखर इरियच उपाधोग से नेंट हुई जिसे पार अलेक्साखर तृतीय की हत्या के प्रयत्न के संबंध में फौजी का बण्ड मिला। सिराफिमोविच ने अर्थात्कारी घोषणा पत्र लिखा जिसमें उनमें इस हत्या प्रयत्न की क्याक्या की थी। बापगा पत्र लिखने के कारण वह गिरफ्तार किया गया और तीन वर्ष के लिए दूर दक्षिण समुद्र के तट पर मजदूर नौब दिया गया। वहाँ उसने शिक्षना शुरू किया और १८८८ में उसकी पहली कहानी छपी। १९०१ में उसका पहला संग्रह निकला। उस समय के प्रतिष्ठित लेखकों ने इस लेखक की बड़ी प्रशंसा की। १९०८ में मास्को आकर वह गोर्की के संग्रह 'सनातिये' के प्रकाशन में सहयोग देने लगा।

सिराफिमोविच ने अपनी रचनाओं में उस व्यक्ति का चित्र खींचा है जो कि जीवन की कठोर परिस्थितियों के नीचे सब जाता है और उनकी बर्तन बड़ जाता है। 'स्त्रिपमैन' कहानी में नाटक रूस की पट्टी पर सब कर मर जाता है और उसके परिवार का मूलाबिडा के रूप में तीन लड़कें दिये जाते हैं। 'परगाण' कहानी में मजदूर अपनी मरणासन्न पत्नी से मिलने के लिए बिना टिकट स्टीमर पर चढ़ जाता है। वह पकड़ लिया जाता है और अधिकारी उस सब के रूप में नियत स्थान पर नहीं उतरने देते और माये ले जाते हैं। मजदूर पानी में बूद पड़ता है और डूब जाता है।

सिराफिमोविच की इस प्रकार की बहुत सी कहानियाँ हैं जो किशानों

तथा मजदूरों की परिस्थिति का विषय करती है जिसमें उनकी मिथ्याता निराशा तथा बेबसी के कारण विभ्र लीज गये हैं।

गोर्की के समान विराकिमोविच की दृग बेपैनी और तड़पन का कारण दुईटा है और इसका साथ उन वही मिलता है जहाँ कि गोर्की को। इस सारी विषमता का मूल यधिक से अधिक वन इकट्ठा करने की इच्छा और प्रयत्न में है जिसने लोगों म जहर भर दिया और उनके मानवीय स्वभाव के विकास में बाधा डाली है। 'ममुद्र' कहानी म समुद्र में दो मछुमा परिवारों का संघर्ष दिया गया है। दो माइमों में दूसरे परिवार के बाल से मछलियाँ चुराई। दूसरे परिवार ने उनका पीछा किया। समय में नावें डूब गईं। दो (प्रत्येक परिवार में से एक-एक) उमटी हुई नाव तक तैर कर आ जाते हैं। उनम मानवीम माबना आती है और वे एक दूसरे की मदद करते हैं। बावबीत के बीच एक दूसरे से पूछता है कि 'आई के साथ उसने कितने की मछलियाँ चुराई?' दूसरे ने जबाब दिया कि करीब छ-इ सी की। यह सुनकर वह उम पर झपटता है और दोनों डूब जाते हैं।

तड़की कहानी म मा अपनी बटी को कष्टमय जीवन से बचाने के लिए पन्त्रह हजार का अपना बीमा करती है और मर जाती है। तड़की अपना पार्ती है, पार्ती करती है और आराम से रहती है। तड़की के पति को यह विकासपथ है कि मा न तीन हजार का बीमा क्यों नहीं करवाया? मा के बसिदान का यह परिणाम।

'पनचकी' कहानी मयुर्वे है। पनचकी का बूड़ा मातिक एक जवान काम करने वाली में अपने साथ पार्ती कर लेन का कहता है। वह सीम ही मर जाएगा और पनचकी उस औरत को मिल जायगी। वह रात्री हा जाती है किन्तु बूड़ा मरता नहीं। वह स्वयं बुरी हो रही है। अन्त म वह बूड़े को जहर दे देती है। जब वह एक जवान काम करने वाले से अपने साथ रहने को कहती है और पनचकी की बलीमत्त उसके नाम करने का नामदा करती है। वह आरामी साल भर उसके साथ रहता है, फिर ऊब जाता है और कुम्हाड़ी लेकर उम पर झपटता है। वह

यह कहती हुई विस्मयी है कि उसने जमीयत काड़ डाली है । यह कुत्हाड़ी फेंक देता है । इसके बाद वह बागों मन्दी तरह रहने लगते हैं ।

अपनी कहानियों में सिद्धांतमोक्ष उस धर्म की चर्चा करता है जो कि लोगों को इस तर्कपत्र से बचा सकती है और आत्मा को अभिप्रेत करनेवाली धर्म-संप्रदाय की भावना से मुक्त करती है । यह धर्मि क्रान्ति है । १९०५ की क्रान्ति से संबंधित कहानियों में लखरु इमी ('क्रान्ति') का उल्लेख करता है ('राज के बीच बस') ।

१९०९ की क्रान्ति की पराजय के बाद के वर्षों में शिखर मये स्टेप का राष्ट्र-उपस्थापन का बहुत बड़ा सामाजिक और राजनीतिक महत्व था । इसमें लेखक ने यह कहा कि मद्रास का उपरम नहीं ही था और उसका दूसरा अनियाम बुर नहीं है ।

क्रान्ति के बाद सिद्धांतमोक्ष की सर्वता का विकास हुआ । १९२४ में उसकी कहानी 'मोह भार' प्रकाशित हुई जो साम्यवादी साहित्य की महत्वपूर्ण या क्रांतिकर रचना बन गई ।

**दुपक होलक**

किसातों में उत्थान या कि बीसवीं शती के आरम्भ में सारे देश में ही मद्रास वर्ग का क्रान्तिकारी प्रभाव इन सबनशातों की राजनीतिक चेतना में भोग दिया और साहित्य में दुपक स्तर क उत्थान का साक्ष्यार्थ हुआ ।

साहित्य की सांसातिक विषयता चलीकम धरीबी जनकृति जगजोटी इन सबने किसान सेवकों पर कुछ ऐसा प्रभाव डाला कि उन्होंने सत्य पर पर्दा नहीं डाल करन् जीवन की उस व्यापक और तर्कपत्र का विचार किया जिसे किसान सह रहे हैं । इसकी सर्वता प्राकृतिक रूप से बहार और क्रान्तिकारी थी—किसी गम्भीर चिन्तन का परिणाम न थी । इनके लिए यही पर्याप्त था कि यह अपने जीवन के बारे में कह सकें कि पाठक यह समझने लग कि भागे इस तरह जीना अमम्यक है—और ऐसे जीवन को उत्थन करता है । कभी-कभी इसका विचार व्यापक नहीं



होते थे। इनके यथार्थवाद में गहराई नहीं होती थी और यह अपनी सामग्री में पर्यावरण का जपन नहीं कर पाते थे और उनमें अविश्वस्यता कम थी फिर भी उनका कृतित्व प्रवृत्तिवाद (नेचुरलिज्म) से हटकर यथार्थवाद की ओर झुका था। अपने मूल रूप में यह सर्वनाशक आधारभूत प्रश्नों की ओर संकेत कर रही थी जीवन के साथ से संबंध थी और उन्हीं क्रांतिकारी निष्कर्षों की ओर जा रही थी वहाँ कि योर्सी पहुँच चुका था।

इन किसान लेखकों में एम० पविमाचैव (१८६६-१९३४) का जगहा स्थान है। उसकी रचनाएँ ( मजदूरों के बीच 'मास्को के मजदूर के घर में मठभद्र ) क्रांति के पूर्व के भाँवों के जीवन का स्पष्ट चित्र प्रस्तुत करती हैं। वे यथार्थ जीवन से सिकत हैं। छोपड़ी में उसने जैसे अपनी पुस्तक 'मजदूरों के बीच' लिखी इस बारे में उसने स्वयं लिखा है—  
मेरी पीछ बछड़ा जप गया और मेरी कमीड बनाने लपा। धूँहे पर लेटा हुआ मैं छोटे से भैंस के प्रकाश में सिपता था और कभी रोता था। क्रांति के बाद भी यह सैफक लिखता रहा। उसकी आत्मकथा 'मेरा जीवन कलात्मक रचना के रूप में प्रकट हुई जिसमें उसने अपनी जीवन गतिविधि के बारे में विस्तार के साथ लिखा है।

म एम० बेरेसायेव की रचनाएँ भी बहानियाँ (१८८६-१९२३) पविमाचैव और बस्ताव की कथावस्तु के समान हैं (अबराहिन का जीवन 'बाबा इवान )। किन्तु इन लेखकों के पास अपनी विषय-वस्तु भी है—  
गाँव के बुद्धिजीवी विनोदतया शिक्षक आदि का जीवन। उनमें क्रांति के पूर्व के गाँव के अग्नित्त जीवन की कथा है। इसकी रचनाओं का अविद्योग क्रांति के बाद के समय में संबंधित है और गाँव में 'गृह युद्ध का चित्रण करता ( अतएव हम 'मार्वाबोत्सविका' 'तामकर' ) है। मैके-गाँव न इनमें यह चित्रित किया है कि गाँव किस प्रकार अपने नये जीवन का निर्माण शुरू करते हैं।

बे० बेरेसायेव

वे बेरेसायेव (१८९३-१९४५) दूसरे समूह से यथार्थवाद की ओर

पहुँचा। उसकी पहली कृति का नाम ही अत्यन्त सांकेतिक है—'बिना रास्ते के'। इसमें उसने सन् गण्डे के क्वी बुद्धिजीवियों के विचार संघर्ष का विश्व प्रस्तुत किया है। सन् १८९६ की पीठरवृगं के बुनकरों की हड़ताल ने उस पर बड़ा प्रभाव डाला और वह क्रांति की ओर उन्मुख हुआ। इस समय से वह क्रांति की ओर बढ़ते हुए बुद्धिजीवियों के विचार और उनकी हिचकिचाहट का लेखक बन गया।

क्रान्ति के बाद बरेसायेव ने पुस्किन पर पुस्तक लिखी और वह प्राचीन कवियों का अनुवादक बना।

## गीर्गी और मायाकोष्की

### प्रगीत मुक्तक में यथार्थवाद

प्रबंध-काव्य या कथा-काव्य में गीत-मुक्तक की अपेक्षा यथार्थ का अकल धरम है क्योंकि उनकी कथावस्तु पात्रों का व्यापक चित्रण करती है और उसमें यथार्थ वास्तविकता के अभिव्यंजन की पूरी-पूरी सम्भावना है। प्रगीत मुक्तकों की स्थिति जटिल और सूक्ष्म है क्योंकि न उसमें कोई कथावस्तु होती है और न उसमें व्यापकता से अधिक चरित्र चित्रण। फिर प्रगीत-मुक्तक का अर्थ यथार्थ जीवन का चित्र कैसे प्रस्तुत करे।

प्रगीत-मुक्तकों में जीवन का अंकन सीधा-सीधा नहीं होता बरन् अनुभूतियाँ के माध्यम से होता है और इन अनुभूतियों के द्वारा हम उस व्यक्ति की कल्पना करते हैं या उस व्यक्ति का चित्र सामने आता है जो कि इनका अनुभव कर रहा है। फलतः प्रगीत मुक्तक हममें एक निश्चित प्रकार के व्यक्ति की कल्पना उत्पन्न करते हैं जिसकी अनुभूतियाँ जीवन के निश्चित वातावरण द्वारा प्रभावित और अभिव्यंजित हुई हैं। इस प्रकार हमारे सामने एक निश्चित प्रकार का पात्र-मुक्तक काव्य का रूप-आता है जो विभिन्न ऐतिहासिक युग में स्थित व्यक्ति की मर्तवा और ऐतिहासिक वातावरण की अभिव्यक्ति है। और अर्थात् वे कवि मिश्र-मिश्र बना द्वारा मिश्रित होते हैं और उन मिश्र-मिश्र युगों का अंकन करते हैं इसलिए उनकी बिगड़ताएँ भी मिश्र होती हैं एक भी नहीं होती।

यथार्थवाद का निर्धारण करते हुए एगस्त ने कहा है कि यह सामान्य वातावरण का परिस्परित में सामान्य पात्र या मनोवृत्ति का चित्रण है। इसलिए कहा जा सकता है कि यथार्थवादी प्रगीत मुक्तक जीवन का उद्बुद्ध और आहत मानवीय अनुभूतियों के माध्यम से उनकी (जीवन की) सामान्य विविधताओं के बीच जीवन का सच्चा प्रतिबिम्ब

प्रस्तुत करता है। इस प्रकार सामान्य परिस्थितिमा के बीच सामान्य अनुभूतियों का चित्रण करते हुए प्रवीण मुक्तक जीवन का वास्तविक प्रतिबिम्ब प्रस्तुत कर सकता है। इन्हीं अनुभूतियों के अनुरूप हम निश्चित ऐतिहासिक वातावरण या परिस्थिति के बीच व्यक्ति या पात्र की कल्पना करते हैं। जितनी ही गहराई और व्यापकता से इनका चित्रण होती है उतनी ही महत्त्वपूर्ण उसकी रचना होती है।

प्रत्येक कवि की रचना अपने युग से अनिच्छता से संबंधित है। इसी प्रकार सोवियत सभ में नयी ऐतिहासिक परिस्थितियों के बीच प्रवीण मुक्तक ने नया रूप प्राप्त कर लिया। उसमें ऐसी अनुभूतियाँ का चित्रण होता है जिसमें बड़े आदेश के साथ सोवियत नागरिक का अपने देश के साथ ऐक्य प्रस्तुत किया जाता है। इसमें समाजवादी देश में रहनेवाले समाजवादी व्यक्ति की अनुभूतियों का पर्यायवाची अंकन हुआ है। इसे समाजवादी मुक्तक काव्य कहा जा सकता है।

समाजवादी मुक्तक काव्य की रचना में मायाकोव्स्की अक्टूबर क्रांति के पहले से ही प्रवृत्त था।

### मायाकोव्स्की पर गोर्की का प्रभाव

यद्यपि के क्षेत्र में गोर्की सर्जना के नये सिद्धान्त और रूप पहले ही स्थिर कर चुका था। उसने नये व्यक्तियों या पात्रों का साहित्य में समावेश किया और क्रांति का रूप प्रस्तुत किया जिसकी पुष्कलमूर्ति में बीसवीं शती के आरम्भ की सामाजिक विकास की प्रतिबिम्ब स्पष्ट हो गयी। उसने पुरानी व्यवस्था की बुराइयों का चित्रण किया और क्रांति द्वारा उसके हटाने की अनिवार्यता बताई और देश प्रेमी और साहसी तथा बलिदानी नायक की सृष्टि की। काव्य के क्षेत्र में इस नये आदर्श की स्थापना की आवश्यकता अभी तक बनी हुई थी। काव्य के क्षेत्र में यह काम मायाकोव्स्की द्वारा हुआ।

बीसवीं शती के आरम्भ में रूसी काव्य में प्रतीकवाद का प्राबल्य था। यह पाठ पर्यायवाद की विरोधिनी थी और व्यक्तिवादिता को

बढ़ावा देती थी। संसार की वास्तविकता से हटाकर यह कवियों को स्वप्न के संसार की ओर से ले जाती थी जिसका वास्तविकता से कोई संबंध न था। इस बाप के बहुत से शोषों ने गोर्की की कटु धारणा बनायी।

इसी प्रतीकवादी धारा के भ्रष्ट कवि—झाक तथा बूस्वव—प्राचीन व्यवस्था का मिटाकरण करते हुए और जानेवासी क्रांति की चर्चा करते हुए भी क्रांतिवादी धारणा के प्रदर्शन उत नव शोषों के विभिन्न शक्तियों को ठीक-ठीक व्यवस्थित न कर सके जिनके बिना युग का वास्तविक अन्वेषणवादी चित्र प्रस्तुत करना असम्भव था। यह काम मायाकोव्स्की ने किया। नवीन समाजवादी प्रगति मुक्तक की सृष्टि मायाकोव्स्की द्वारा हुई जिसने कि काव्य क काल में सर्जना के नये सिद्धान्त स्थापित किए।

एनीमिर मायाकोव्स्की तीन बार (१९०८ १ १०) जेल गया और जेल में बैठ कर उसने इस बात का अनुभव किया कि नवीन विषय वस्तु की अभिव्यक्ति के लिए प्राचीन साहित्यिक रूपों को हटाना आवश्यक है। उसने कहा कि जानेवासी क्रांति की भावना बूढ़ कर देना। यह इसलिए वस्तु विषय के संबंध में क्रांति के संबंध में विचार कर रहा है, प्रश्न प्रस्तुत कर रहा है ?

गोर्की युवक मायकाव्स्की का प्रिय केन्द्रक था। क्रांतिकारी आन्दोलन तथा बोल्शेविक पार्टी के संबंध से मायाकोव्स्की क्रांति की निकटता का अनुभव कर सका और गोर्की के विचारों तथा भावों को ग्रहण कर सका।

गोर्की का मायाकोव्स्की की ओर उन्मुख होना भावक्रिमिक न था। मायाकोव्स्की के साहित्यिक धारणा से ही वह उनकी ओर बढ़ा ध्यान देना रहा। सन् १९१५ में जब मायाकोव्स्की पर बुर्जुआ आलोचना ने आघात करना शुरू किया तो गोर्की मायाकोव्स्की की रक्षा के लिए आगे बढ़ा। १९१५ में मायाकोव्स्की गोर्की से मित्रा और उसे अपनी रचना

(‘पतमून में बाइक’) सुनाई। गोर्की ने मायाकोव्स्की को अपने पत्र ‘सेतोपिस’ में सहयोगी के रूप में रत किया। १९१६ में गोर्की की सहायता से मायाकोव्स्की का कविताओं का संग्रह प्रकाशित हुआ और १९१८ में उसकी बड़ी कविता ‘युद्ध और शांति’ छपी।

गोर्की मायाकोव्स्की की ओर इसलिए आकृष्ट हुआ क्योंकि उसकी पैनी दृष्टि ने मायाकोव्स्की की प्रतिभा का पहचान किया था और उसे मायाकोव्स्की में उस द्विमात्रिक रोमांटिक कवि का रूप मिला जिसकी वह प्रतीक्षा में था। गोर्की ने कहा था कि ‘रूस को महान् कवि की आवश्यकता है। पुरिकन की तरह महान कवि चाहिए। द्विमोकेटिक रोमांटिक कवि आवश्यक है। इसी से जब अपनी ‘सर्जना’ के पहले युग में मायाकोव्स्की ‘प्र्यूचरिस्ट’ (भविष्यवादी) कहे जाने वाले कलाकारों और कवियों (बुस्यक माई, उलेबनिकाव मादि) की रूपबारी या फार्म डिस्त्राभावनाओं और रूपों की ओर लक्ष्य हुआ और उसका क्रांतिकारी

‘भविष्यवादी—‘प्र्यूचरिस्ट’—रुह काव्य बारा थी जिसने प्रथम महायुद्ध के पूर्व कुछ वर्ष योरोप और रूस में बड़ी व्यापकता प्राप्त की। प्र्यूचरिस्ट काव्य में नये सुष्टा बनना चाहते थे और सर्वना के नये रूप प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील थे। नाम एक होते हुए भी पाठ्यलय योरोप (विशय रूप से इटली में व्यापक) और रूस के प्र्यूचरिस्ट में बड़ा भेद था। पश्चिम में प्र्यूचरिस्ट ने बुर्जुआ लक्ष्यकों की उग्र सांभार्यवारी भावना की प्रकट किया। इसने युद्ध की सपना की, मशीनबाव की घोषणा की प्राचीन सांस्कृतिक विरासत के प्रति घृणा प्रकट की और कला के रूपबारी सिद्धांत को अपे बड़ाया, इसके मूळ में उग्र बुर्जुआ ध्वस्त-बाकिता थी। १९०९ में पेरिस में प्रकाशित अपने मैनिफेस्टो में इतालवी प्र्यूचरिस्टों के नेता मैग्निनी ने लिखा “हम युद्ध का सम्मान करना चाहते हैं—को कि सत्तार की सत्ताई है—और महिलाओं के प्रति घृणा की प्रकटा करना चाहते हैं। पुस्तकालयों को जला दो। पत्नी की शार को लहरों से इपर मोड़ दो जिससे कि सपनाओं के सचन पानी में डूब

आचार कुछ धूमिल पड़ गया उस समय भी योर्की आरबस्त बना रहा क्योंकि जीवन के प्रति मायाकोष्की का जो क्रांतिकारी रंग था उससे वह भसी भाँति परिचित था। इसी से उसने लिखा कि 'ठीक बात तो यह है कि कोई 'बसुचरिस्म' (मविध्यबाह) नहीं है। है केवल कवि अन्धी-मिर मायाकोष्की—बड़ा कवि।'

मायाकोष्की के आरम्भिक विचार

मायाकोष्की का साहित्यिक कार्यकाल १९०० में शुरू हुआ। उसका कहना है कि जेल में बैठे हुए उसने कविता की पूरी कापी लिख डाली किंतु वह कापी उसने छीन ली मरी और खो गयी।

उसकी पहली कविताएँ 'बसुचरिस्टा के संग्रह' (सामाजिक रुचि को बय्यड़) में छपी। १९१२ से १९१७ तक क्रांति के पहले उसकी कई महत्वपूर्ण इतियाँ सामने आईं—'पतझुल में बाहसे' (१९१५) 'मायमी या मनुष्य' (१९१६) 'मुद और टागिठ' (१९१६)।

जब प्रसिद्ध नगरों को मिट्टी में मिला बी।" यह एक प्रकार से प्रमदुते हुए क्रांतिरंग की ही घोषणा थी, स्वयं इसका मिला मिरनेती प्रभाव क्रांतिरंग कार्यकर्ता बन गया था और स्तालिन्प्रवाद घेरने वाले इत्ताकोय सैनिकों के बीच यह १९४२ में श्रवण मीजूर था।

अपनी आरम्भिक कविताओं में मायाकोव्स्की यद्यपि 'प्रयुक्तरिम' की ओर झुका फिर भी वह आरम्भ से ही अपनी रचना में जीवन के महत्त्वपूर्ण प्रश्नों को उठाता है और उनकी कृतियों में मानवतावादी विषय-वस्तु मनुष्य की सङ्घर्ष की गुंज-सुनाई देती है। मायाकोव्स्की जानता है कि मनुष्य की इस सङ्घर्ष का सारा अपराध इस 'पीले' कीड़े कब्रके या सिक्के पर है। मायाकोव्स्की की उत्पीड़क और उत्पीड़ित की इस भावना में गोर्की का स्वर स्पष्ट है।

गोर्की के समान ही 'मायाकोव्स्की की आरम्भिक रचनाओं में सामाजिक विषयताओं से विभाजित संसार का यथार्थवादी चित्र उसके बिखर दिए गए अतिकारी रोमांटिक विरोध और प्रतिहार के साथ ब्रुल मिल जाता है। इसके गोर्की के साथ मायाकोव्स्की का आन्तरिक विकास निर्धारित होता है इसका अर्थ मायाकोव्स्की की मौमिकता का निराकरण

के प्रति असंतोष या किन्तु उसकी ठीक-ठीक अभिव्यक्ति उनकी शक्ति के बाहर की चीज थी और वे वास्तविकता के बिखर घुड़ करने में असम थे। इसी से जीवन के प्रति विद्रोह उन्होंने व्यंग्य और समकालीन संस्कृति के निराकरण के रूप में प्रकट किया।

जीवन की अपुष्यता या अपर्याप्तता के बिखर जो प्रतिहार इन प्रयुक्तरिम्बों ने किया वह बुर्जुआ व्यक्तिवादिता के रूप में था। इसी से यद्यपि यह बाहरी रूप में बुर्जुआ स्तर के बिखर आक्रमण या फिर भी मूलतः वे इसी के प्रतिनिधि बने रहे।

इन प्रयुक्तरिम्बों ने जो कुछ लिखा वह 'फार्मलिज्म', स्मयार ही था। इसमें कोई संदेह नहीं कि प्रयुक्तरिम में आरदाही उस के बिखर प्रतिहार ध्वनित हो रहा था, किन्तु यह प्रतिहार केवल मकारमक था और उनके पास कोई एसी योजना न थी जिसे कि उस व्यक्त्या का स्वाभाविक बना सकते जिसका कि वे मञ्जक उड़ाते थे। इत प्रकार इसी प्रयुक्तरिम केवल बुद्धिजीवी कलाकारों के एक हिस्से का विद्रोह था जो प्रधान सामाजिक आन्दोलन की धारा से असम था।



कदापि नहीं है। मायाकोष्ठी की रचनाओं में मनुष्य की लड़पन का कदम विषय विशेष रूप से विकसित हुआ और सामान्य रोमांटिक रंगों या व्याख्या के बीच क्रांति का विषय प्रस्तुत किया गया। किन्तु उनमें क्रांति का वह ठोस रूप नहीं है जो कि गौरी की लाम विघ्नपता है। यह केवल व्यक्तिगत विमिश्रता है और इससे उस सामान्य निष्कर्ष में कोई अन्त नहीं पड़ता कि उस व्यापक साहित्यिक आन्दोलन में जिसका समुदाय गौरी या मायाकोष्ठी का अपना महत्वपूर्ण स्वाम है।

## बीसवीं शताब्दी का आलोचनात्मक यथार्थवाद

बीसवीं शती के आरम्भ व साहित्यिक विकास का चित्र प्रस्तुत करने के लिए, आलोचनात्मक यथार्थवाद की परंपरा व सबसे सफल के इतिहास का संक्षिप्त परिचय अत्यावश्यक है।

आपस में भरोसे व होठे हुए भी यथार्थवादी लेखक जो गार्फी के निष्कर्ष से उन्होंने अपनी इतिहास में जीवन के मूलमूल प्रश्नों को उठाया और युग की मूलमूल विषयवस्तुओं की ओर पाठकों का ध्यान आकृष्ट किया। इनमें से उनके यथार्थवाद की सही आलोचककारी विद्यमानता थी।

बीसवीं शती ने अब स्वतंत्र जीवन के नये व्यक्तिकारी योद्धा नायक के सृष्टि-चित्र की अपेक्षित सामग्री प्रस्तुत की। एने सृष्टि-चित्र के बिना भी जीवन के आलोचनात्मक चित्रण का महत्त्व बना ही रहता किन्तु अब वह जीवन की मुख्य समस्याओं को न छू सकता और न उनको प्रस्तुत ही कर सकता। वह अप्रधान प्रश्नों तथा अप्रसन्न एकांगी चित्रण से सीमित हो जाता। वह निम्नलिखित संख्या चित्रण प्रस्तुत करना किन्तु लेखक के दृष्टिकोण की सकीर्णता या अनुदायता चित्रण में व्यापकता व ध्यान देती। यथार्थवाद अब पूर्ण को न पहचान कर बीच ही में रास्ते में रुक गया था और विचरण तथा व्यक्तिगत चित्रण की कला में परिवर्तित हो गया था। इस प्रकार आलोचनात्मक यथार्थवाद व्यापकता को खो खोकर संकुचित हो गया था। यह एक प्रकार से संकुचित यथार्थवाद था जो बाहर से ही उन्नीसवीं शती के आलोचनात्मक यथार्थवाद के निष्कर्ष था किन्तु वास्तव में उससे दूर हट गया था क्योंकि नयी परिस्थितियों में उसकी पुनरावृत्ति ने उसे हीन और संकुचित बना दिया।

ई० बुनिन अ० कुपिन एन० अन्तरेम इन संकुचित आलोचनात्मक यथार्थवाद के प्रसिद्ध प्रतिनिधि हैं। अपनी प्रतिभा तथा भावापत्त कौशल के कारण इन लेखकों का बीसवीं शती के आरम्भ के साहित्य में महत्त्वपूर्ण

स्वान्त था। योकी कृति की प्रतिभा पर मुख्य था। एक समय इन लेखकों ने गार्की के साथ सहयोग किया किन्तु उनका साहित्य में वा कार्यकलाप वा उसके कारण नाबिमत आलोचक उनका महत्त्वपूर्ण स्वान नहीं देते। सोवियत आलोचकों का कहना है कि सर्वता में सबसे प्रमान है जीवन की महत्त्वपूर्ण बात भी खर्चा करना और यह चीज इन लेखकों में बहुत कम है। ये लेखक बहुत अच्छा विषय करते हैं किन्तु गीम बातों का। योकी ने अपने कार्यकरण के आरम्भ में लिखा था कि हमारे चारी और जीवन उफन रहा है। नयी चेतना जग रही है नयी समस्याएँ सामने आ रही हैं मया व्यक्ति उठ रहा है। यह नया व्यक्ति पाठक है जो हमने जीवन के मूममूत प्रश्नों का उत्तर माँग रहा है। यह जानता चाहता है कि मरत कहाँ है। मया कहाँ है वहाँ बीसों को बुझना चाहिए और कौन दुःखमन है। आलोचनात्मक मपार्यवाद के प्रतिनिधियों ने इन प्रश्नों के बारे में पाठकों से कुछ न कहा। वे कानि को न समझ सके और न उन नये लोगों का समझ सके जिनको जीवन प्रस्तुत कर रहा था। वे अपनी ही विषय-वस्तुओं में व्यस्त हैं जो कि उन्हें अच्छे लगते हैं। उनकी इतियाँ में मुग का मकन नहीं मिलता। उनकी सर्वमा पूर्ण बिकाष न प्राप्त कर सकी क्योंकि उनकी मनुनेताएँ उनके व्यक्तित्ववाद और प्रतिक्रियाकारी लीक दृष्टि में संबद्ध हैं तथा आत्मिकारी मोवोलन और बीसवीं शती के आचारमूलकी जीवन में उनके विधिछन्न रहने के कारण हैं। योकी ने इन आलोचनात्मक मपार्यवारी लेखकों की कटु आलोचना की और उन आलोचना का अभिप्राय यही था कि वेण के माय्य और मविष्य से इन मरत की कार्द दित्तवस्वी मही है।

### ६० अ० घृनिन

कृति (अग्य सन् १८७०) आलोचनात्मक मपार्यवाद का सबसे महत्त्वपूर्ण प्रतिनिधि है। अगनुबर कानि के बाद कृनिन कम छोड़कर बिदेय चला गया। बिदेय में रहने हुए उसने कुछ महत्त्वपूर्ण म लिखा और यह हम बात का मकन है कि वेण ने माता सून पाने पर लेखक की सर्वता का किम प्रचार हास होता है। उनका दृष्टिकान उनके विचारों तथा

आध्यात्मिक स्थिति से बहुत संबंधित हो गया था। यह अमीशारी या सामन्तशारी मस्तिष्क से अनिष्ट रूप से संबंधित था और इसी में उस सक्रान्ति का ठाढ़ से न समझ नया जिनके अगर न अमीशार हवे जा रहे थे।

अपनी कहानी अस्तानानीय मेर' में यह अमीशारों के फार्म को उस पर्यहार क समान बताया है जो निर्बल हो गया है जो कष्ट चुका है और यह अन्तर्गत हा रहा है जिसके बारे में आज स पचास वर्ष बाद केवल हमारी कहानियां ही जाना जा सकेगा। दूसरी कहानी मूर्खी शायी' में यह इसके बारे में यह आशय के साथ कहता है— पचास साल में अमीशार के अन्त में ऊँचे वर्ग का विनाश भिन्न गया।<sup>१</sup>

अमीशारी या सामन्तशारी जीवन के नाग क बिज ने बुद्धि की वृद्धि में उसको बाँसल कर दिया जो कि वास्तव में अन्त ल रहा था और विकसित हो रहा था। इसी में उसकी सर्जना में उदासी का रूप है और निराशा तथा अकेलेपन का भाव है। उसके प्रतीत मुक्तका का नायक भी निराशा और अकेले भरत हुआ है। यह लिखता है "मैं एकलकी मदा सुखा। यह एकलकीपन का भाव उसका प्रतीत मुक्तका का मुख्य भाव है।

बुद्धि अमीशारी लड़पन और अन्त का बड़ा स्पष्ट और औरवार बिज लीचता है किन्तु सबसे बड़ी बात यह है कि बुद्धि नये जीवन की इन समृद्धि को नहीं समझ पाता जो कि उसके चारों ओर उभर रही है। नये संसार की वेबेनी उसके प्रयत्न उसके विचार और उसके जोर और लड़ी का अनिश्चयन उसके प्रतीत मुक्तका का नायक न कर सका। यही उसकी सबसे बड़ी कमी है।

### अ० ई० कृमिन

अपनी आध्यात्मिक विशेषताओं में कृमिन (१८७०-१९१७) बुद्धि के भिन्न है। अमीशारी कहानियों में कृमिन ने अपने चारों ओर की पर्यायता का अर्थन किया। आरणाही शीर का जीवन (इन्द्र मुद्र ल

१ अन्यथा अन्तर्गत अन्तर्गत स० इ० विभाकेवेब पृ० १२२।

वे उनमें ब० तोम्सोव, ए०० सर्गेयेवत्सेव्की एम० प्रीशिन आदि हैं। अपने देश के साथ आगे बढ़ते हुए क्रांति के बाद इन लेखकों ने सहस्रवर्षीय रचनाएं प्रस्तुत कीं जिनकी विषय-वस्तु दशमकित से बोध प्रोत थी।

### साहित्य में ह्रास की प्रवृत्तियाँ

उन्नीसवीं शती के प्रथम में जनपनेवाकी सामाजिक विषमताका की तीव्रता ने जीवन में भी तीव्र सैद्धान्तिक मूढ़ छेड़ दिया। एक ही प्रकार की सामाजिक प्रवृत्तियाँ की व्याख्या लेखकों की अपनी सामाजिक तथा सैद्धान्तिक स्थिति के अनुसार भिन्न-भिन्न प्रकार की हुईं मढ़ती हुईं क्रांति के द्विमाकृतिक या जनवादी लेखकों को क्रांति की ही विषय-वस्तु से संयुक्त मये यथार्थवाद को अपनाने में सहायता की। इसके साथ ही यह भी हुआ कि कुछ लेखक जो यथार्थवादी तो थे किन्तु जो समय की नयी माँगों को अपनी सर्वना में स्थान न दे सकें वे जीवन से दूर चले गये और जीवन तथा अग्रजान पलों की ध्वंजना में लप गये। किन्तु ऐसे लेखक भी थे जो बढ़ते मये सामाजिक समय में मबनीत हो गये। वे केवल जीवन के यथार्थ विषय से विरत ही न हुए बल्कि उन्होंने यथार्थवाद की कटु आलोचना की और कपारमक सञ्जाल के लिए दूमरे रास्तों की खोज की मीम की।

१९५ की क्रांति के बाद बुर्जुआ सामन्ती रूप की कला और साहित्य के विषमता की अवस्था प्रकट हुई जो सन् १९१७ तक बनी रही। इन साहित्य ने जिनमें कि बुर्जुआ वर्ग का ऐतिहासिक बन्ध मलक रहा या यथार्थवादी परंपराओं को दुकन दिया और उन्हें स्वीकार नहीं किया। इन नवीनपारा का नाम 'विकारमन्तवाद' या ह्रासवाद (फ़ांशीसी शब्द 'विकारायह्वाम) या माइर्निरम' (माइर्न-नवीन) नवीनतावाद पड़ा। 'विकारमन्त' शब्द (या ह्रासवाद) अर्थमन्त प्रकथित था क्योंकि इन शाय के प्रतिनिधियों ने जिन विचारी को आम पड़ाया वे गामान्य साहित्य की दुष्टि न इतने दूर या अल्प थ कि वे क्रांति के ह्रास की साथी रूप गर्जना के परिचाम प्रतीत हाते थे। बाद में इस कारण कि यह पारा

कलात्मक सर्जन में प्रतीकों के महत्व और उपयोग पर कहा और  
 देती थी इसे प्रतीकवाद कहा जाते था ।

इसके सामाजिक तथा राजनीतिक स्थिति के मूल में बुद्धिमान मानववादी  
 हास्यमयी विचारधारा थी । प्रतीकवाद की एक विशेषता यहाँ के  
 लेखकों और सर्जकों प्रकार के पश्चिमी महत्वाकों के सामने फिर बुकाना  
 था । इसमें पक्षपाती कला के क्षेत्र में 'नाम्नोपास्थितिरम' के नाम पर  
 देव प्रकृत-विरापी और पश्चिम की युवापी का भाव धर रहे थे । स्त्री  
 साहित्य की स्वतः आवादी परंपराओं में अलग हट जाने के कारण ही  
 प्रतीकवादियों में वैप्रेय के भाव का हास्य हुआ ।

प्रतीकवाद की मुख्य विशेषताएँ थीं चरम काटि की व्यक्तिवादिता  
 सामाजिक जीवन से संबंध विच्छेद को कला कला के लिए मिश्रण में  
 प्रकृत हुआ सामान्य रूप में वास्तविकता का अस्वीकार तथा मर्यादा  
 के विरुद्ध सेवक के अपने स्वप्न या कल्पना के मसार की प्रस्थापना । ये  
 स्वप्न एने नहीं थे जो जीवन की उस मयी अक्षि को देख केठे जो कि जीवन  
 का पुनर्निर्माण करती हैं बरन् किमी बुमरे अमौलिक संसार के विचार या  
 स्वप्न वे जो इस संसार के दुःख-दर्द से अलग वे । प्रतीकवाद के मूल में  
 एक प्रकार का ईत है— जो प्रकार के संसार की कल्पना मौलिक संसार  
 और ईबी संसार । प्रतीक संसार इस ईबी संसार का प्रवेण द्वा है ।  
 इस उद्भववादी दार्शनिक आचार में प्रतीकवादियों के रोमांटिक रूप-रंग  
 को निरिबध किया । यह रोमांटिसिज्म प्रतिक्रियावादी या द्विमये साहित्य  
 को महत्वपूर्ण सामाजिक समस्याओं से दूर हटा दिया और नैतिक  
 रूप में यह कहा कि महत्वपूर्ण बात जीवन को बरखने के लिए अर्पण करना  
 नहीं है बरन् उस ईबी नन्दा संसार की आशा व्याप केठे रहना है  
 निमका स्वर्ग ही ब्रह्म है और तब तक चाहे हम पृथ्वी पर जीवन  
 कितना ही रहित क्यों न रहे ।

प्रतीकवादियों के बुद्धिबोध से कला का कार्य प्रतीक संसार की  
 अभिव्यक्ति के बीच आत्मवादी ईबी संसार की अक्षय देवता है और इन  
 अक्षय को पात्र के सामने प्रस्तुत करना है । उन्हे प्रतीक को 'अक्षय

का 'कारोन्पाटन' और 'अकारबत' का सामयिकता में प्रकाश' बताया अर्थात् जीवन का ऐसा अभिव्यंजन जिसमें केवल द्वारा प्रस्तुत प्रौढिक सत्ता का अभिव्यंजन जीवन में छिने हुए और रूसी आरम्भ के बारे में सोचने को बाध्य करता है ।

रूसी प्रतीकवाद के विकास में पश्चिमी योरोपीय प्रभाव के अतिरिक्त रूसी दार्शनिक रहस्यवादी और कवि प्लेखोविर सुरुष्येव (१८५३-१९००) का भी बहुत बड़ा हाथ था । उसकी कविताओं में संसार की सोझरी-दूँतपूर्ण-कल्पना की विषय-वस्तु अंकित थी जिसे कि प्रतीकवादियों ने ग्रहण कर लिया । वास्तविकता की अभिव्यक्ति स्वयं बनने में प्रतीकवादियों के लिए बिल्कुल या कपिकर न थी बल्कि वह इसलिए थी कि वह हमसे उनके पीछे छिपी हुई रहस्यपूर्ण सत्ता को बेगन का बचकर देती थी जिसे कि केवल कवि ही देख सकता था या समझ सकता था ।

प्रतीकवादियों में यकार्बारी मोर्डी-साहित्य को बटु आभाषना की । उनके पक्ष 'तराङ्क' में सेनिन के लेख 'पार्टी संगठन और पार्टी साहित्य' की भी बड़ी तीव्र आलोचना हुई । इससे उनका अन्तिम विरोधी पक्ष स्पष्ट हो गया ।

बीसवीं शताब्दी के दूसरे दशक के आरम्भ में एक और प्रतिक्रियावादी धारा भी प्रकट हुई— 'अकमइरम' ( नुविस्वोव अस्मातोवा आदि ) । प्रतीकवादियों के समान इन धारा के कवि भी रूसी साहित्य की बेग-भक्ति की परंपरा में दूर हटे हुए थे और उन्होंने अन्तिम पर कीचड़ उछासा । कला को उन्होंने 'आत्मपूर्ण हस्तशैली' बताया और अविश्व वास्तविकता में बचने के लिए अपनी कुछ नव्य व्यक्तिगत अनुभूति में धारण का निम्न प्रयत्न किया ।

### प्रतीकवाद के विरुद्ध

आकार्बारी आभाषना और विरोध का ये गार्डी ने प्रतीकवाद के विरुद्ध बगवत मण्य किया । गार्डी को प्रतीकवाद में हानिकारक बताया जिसके प्रवृत्तियों रिगार्डी पड़ी जिनसे विरुद्ध रचना अनिवार्य था । उनमें उन समय के रूसी बुद्धिवा साहित्य का वर्णन इन पत्रों में किया है—

सन् १९०७-१९१७ तक का समय उत्तरदायित्वहीन विचारों की पूर्ण स्वेच्छाधारिता का समय था और साहित्यकारों की सर्वना की स्वतन्त्रता से परिपूर्ण था। इस स्वतन्त्रता की अभिव्यक्ति सामान्यतया सभी प्रकार के पण्डितों की प्रतिक्रियावादी बुर्जुआई विचारों के प्रसार में प्रकट हुयी। सामान्यतया १९०७-१९१७ का दसक स्त्री बुद्धिजीवियों के इतिहास का अत्यन्त सन्तुष्टक दशक है। १

इस प्रकार बीसवीं शताब्दी की अस्तुत्तर काल के पहले तक के साहित्य पर गार्फी की छाप और छाया है। वह समाजवादी साहित्य के नवीन कलात्मक साधन—समाजवादी यथार्थवाद—का भाषा निर्मित कर रहा है और वह उन सबके विरुद्ध संघर्ष कर रहा है जो इस साहित्य के विरुद्ध हैं और जीवन के सत्य को विरुद्ध कर रहे हैं। उससे प्रेरणा पाकर बहुत से लेखक इस संघर्ष के सत्य और साधन—'अस्तित्व' के निकट आए। इस सामाजिक यथार्थवाद का जन्म और विकास प्रतिक्रियावादी भारतीयों के विरुद्ध संघर्ष लेखकों का अस्तित्वकारी नवनिर्माण—इन सबका खोबिलत साहित्य के विकास में बड़ा महत्त्व रहा है और इन सब में सार्की का बड़ा योग रहा है।

इन वर्षों में साहित्य के सामने सर्वथा नयी समस्याएँ थी। नायक अब एंश मनुष्य को होना चाहिए जो कि युद्धवीर हो जो मनुष्य के सुख के लिए उन सबके विरुद्ध युद्ध का आह्वान कर सके जो अत्याचारी हैं और उसी प्रकार वेद प्रेम का अस्तित्वकारी वेद प्रेम होना चाहिए जो प्रोत्साहित करने को शार तथा पूँजीवाद से मुक्ति दिखानेवाले स्वाधीनता-युद्ध का जन्म कर सके। इसी प्रकार वह यथार्थवाद का अनुशासन उसकी गत्यात्मकता के बीच बने, उसका विरुद्ध अस्तित्व के प्रकाश में हो।

इस प्रकार समाजवादी यथार्थवाद का विकास और इसका उन सबसे संघर्ष जो कि समाजवादी आन्दोलन के विकास में बाधा डाल रहे हैं—यह बीसवीं शताब्दी के अन्त और बीसवीं शताब्दी के आरम्भ के साहित्यिक



जीवन का मूलमूल स्वभाव है। इसी में उस युग के साहित्यिक विकास का मूल विचार अभिव्यक्ति हुआ यद्यपि बाहु म कर में अन्य विचारचाराएँ बहुत थीं और उनके अंतर्गत भी संख्या में बहुत थे।

इस प्रकार बीसवीं सदी के आरम्भ में साहित्यिक मनाजवादी साहित्य की नींव डालनेवाले अनेक नामने जाते हैं। जिसका नेता और संचालक मैक्सिम गोर्की है।

गोर्की की सजना साहित्यिक साहित्य के विकास के मूलमूल प्रस्ता को समझाने की कुंजी है।

### अस्तुत्तर क्रान्ति के बाद गोर्की की सजना

अस्तुत्तर क्रान्ति के बाद समाजवादी कला के विकास में गोर्की का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। उसके अनुभव के आरम्भिक साठसठ दशक तथा उसके मजदूरतात्मक कार्यकाल ने साहित्यिक लेखकों को बहुत प्रभावित किया और उन्हें बड़ी प्रेरणा दी। उसकी साहित्यिकता का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि १९१८ से १९५१ के बीच उसकी इतियाँ के १८२५ संस्करण निकल और साहित्यिक सभ (तथा विरह की प्रायः सभी भाषाओं में) की प्रायः ७१ भाषाओं में अनुबाह हुआ तथा बहुत से महारा संस्थाओं आदि के नाम गोर्की के नाम पर रखे गये।

क्रान्ति के बाद गोर्की की सजना ने विशेष रूप प्राप्त किया। उनमें एक प्रकार का गमम्बय हुआ। वह एक बार फिर अपनी मूलमूल विषय-वस्तुओं और विषयों की ओर जाता है जिसमें कि वह उनकी पूर्ण तथा सम्पन्न कर में अतिवृत्त कर सके। इस प्रकार वह ऐसी कृति प्रस्तुत करता है जिसमें वह पूर्णता के साथ पूर्णता की विषय-वस्तु का उद्घाटन करता है (आत्मोपनिषद् का व्यापार या काम)। 'विश्वसनीयता का जीवन' में कसी अतिशयोक्तियों का भाव्य क्रान्ति के पूर्व के वास्तविक जीवन का अत्यन्त इतिहास और महदूर जीवन के नेता का विश्व है। 'मरे विरहविद्यालय' या 'युनिवर्सिटियाँ' के रूप में उनमें आत्मरूपा की अपनी नयी पूर्ण की।

१९२४ में उनमें मैक्सिम के संरक्ष में अपना संस्मरण प्रकाशित किया। साहित्यिक संस्मरण के बीच इसका महत्त्वपूर्ण स्थान है। जीवन का

अंकन गोर्की ने बड़ी मूकमता और यहुराई से किया और कई बपों के बीच इसकी रचना की। उस्मरमारमक साहित्य में इसका विशेष स्थान है और सोवियत साहित्य की यह एक अनुपम कृति मानी जाती है। इसमें कान्ति के नेता लेनिन का व्यक्ति तथा राष्ट्रीय गायक के रूप में उसकी विभिन्न-दृष्टियों का बड़ा वास्तविक तथा सजीव चित्र प्रस्तुत किया गया है।

### ‘भारतमोनोवों का व्यापार या काम’

१९२५ में गोर्की का नया उपन्यास ‘भारतमोनोवों का व्यापार या काम’ प्रकाशित हुआ। जिसमें एक व्यापारी परिवार की तीन पीढ़ियों का इतिहास प्रस्तुत किया गया और इस रूप में रूसी बुर्जुआ के पूर्ण ह्रास की ससिप्त कथा प्रस्तुत की गयी। गोर्की ने एक ही परिवार के छौ बपों की कथा लिखने की अपनी इच्छा लेनिन के सामने प्रकट की थी। इसी प्रकार तोस्तोय से भी उसने कहा था कि वह एक व्यापारी परिवार की तीन पीढ़ियों को जानता है जहाँ ह्रास या अक्षय-पतन के नियम ने बड़ी बेहरी से अपना काम किया है। इन दोनों ने गोर्की का समर्थन किया और उससे ऐसा उपन्यास लिखने को कहा। यह उपन्यास गोर्की के इसी विचार और इच्छा का परिणाम है।

इस उपन्यास में गोर्की ने पूँजीवाद की समस्या को उसकी पूर्णता के साथ प्रस्तुत किया और उसकी मानवतावादी आलोचना की। पूँजीवादी समाज में मानवीय व्यक्तित्व कैसे विकसित हो सकता है? यह प्रश्न गोर्की की कृतियों में कई बार उठाना जा चुका है। किन्तु इस उपन्यास में वह इस प्रश्न पर विचार केवल मानवीय जीवन की एक घटना के आधार पर (जैसे कि ‘भ्येत्सकथ में’) नहीं करता या या एक व्यक्ति के जीवन का निरीक्षण करते हुए (जैसे फमा गयेब में) नहीं करता बरन् कई पीढ़ियों के विकास के बीच इनका सम्बन्ध करता है कि परिवार के प्रस्थापक बाबा से लेकर पोते तक के पूँजीवादी समाज के बीच व्यक्तित्व का कैसा विकास होता है। इसमें गोर्की उत्पीड़ितों के बारे में इतना नहीं कहता क्योंकि वह तो स्पष्ट ही है बरन् यह विधाता है कि दूमरा के उत्पीड़न स्वयं किस प्रकार अक्षय-पतन या ह्रास के गिहार हो रहे हैं। किस प्रकार

उनके व्यक्तित्व का प्रवर्धन हो रहा है और अब वे मध्वे अर्थ में मनुष्य नहीं रह गये हैं। उनका काम या पूर्वोक्तादी व्यापार अब उनका मानिक धर्म गया है। वास्तव में वे व्यापार का मचासन नहीं कर रहे हैं बल्कि व्यापार अब उन पर हावी है और उन्हें मनुष्यता से दूर अवपतन की ओर इधेक लिये जा रहा है। इसमें मार्गी प्रसंगित करता है कि किस प्रकार मनुष्य अपनी महामता को बँटना है और धीरे धीरे दूसरों का महान पर जीबित रहने के कारण पश्चिम और प्रपल की बाधन छूट जाने के कारण बिक्रम की अपनी पत्ति या बँटना है। स्वयं परिधम म कय चकने के कारण उनका बिक्रम रुक जाता है बजाकि बिक्रम परिधम म ही परिधम के माम्यम से ही होता है।

### परिधम की भावना

मार्गी की दृष्टि में परिधम ही सब कुछ है। जीवन में जो कुछ मूष्यबान है, जो कुछ मूदन है जो कुछ महान् है उन सब का निर्माण परिधम ही है। मनुष्य की उदास बनाने वाला और समाज को बदल देनेवाला यह परिधम ही मूत्र रूप में उसकी मजना में घुसित है। ऐसे परिधम से बिरत होने पर मनुष्य पाषण हो जाता है जीवन की यथाय भावना का या बँटना है और उनका ह्रास हो जाता है। यही हम उन स्वास का मुख्य माप है। और इससे अनिचार्य रूप से यह निष्कर्ष निकलता है कि अमिनि मनुष्य तथा परिधम की मुक्त करती है और तब परिधम बर बस गसामी की निगामी न हाकर मजना का रूप धारण करता है। पृथ्वी की मजाब तथा मनुष्य के उपमुक्त जीवन के मगठन का कारण बनता है।

परिधम की यह पौर्णीय भावना इन उदात्तम के वस्तु विग्यास के उदुपादन की वृत्ति है। तब के प्रस्वारक ईस्या का जीवन बँडोर परिधम का है। उसमें मजनात्मक पत्ति है और दूध दृष्टा है। इसकी उम्र तब यह परिधम से बिरत म हुआ। इस परिधम में उनके कतिव की कर्द मूष्यगान् भिगिप्लगाए दी और उनसे बानि परिधम से जीवन में अगना स्वास बना लिया। किन्तु पूर्वोक्तादी समाज का उमा मगठन है कि एक की बड़ी या उम्रति का माणव है दूसरों का उलीकन दूसरों को

अपने आधीन बनाता दूसरों को घुसाम बनाता। उसकी जो विशिष्टताएं हैं उनका उपयोग वह अपने स्वार्थ तथा जनता के उत्पीड़न के लिए करता है। वह इसलिए जनता के लिए छतगनाक बन जाता है क्योंकि उसकी योग्यता का प्रयोग जनता के विरुद्ध होता है।

धीरे-धीरे उसका घमा बड़ता है और वह दूसरा को नीकर रखता है किन्तु उनका जीवन के सर्जनारम्भ आकार—परिधम ग मबव दूट बाना है और उसकी आत्मा इस बंधे की मलाम बन जाती है, वह पराये परिधम पर जीबिठ रूता है और उसकी इमानियत मप्ट हो जाती है।

### दूसरी पीढ़ी

फिर भी सममें थोड़ी इमानियत बची रहती है। लेकिन उसके बच्चों पर उसकी बंधे का कारवार का कुप्रभाव पड़ता है और उनकी आत्मा खोखली हो जाती है। आरम्भ में इन मड़कों में थोड़ी बहुत मानबधा है क्योंकि आरम्भ में उनका भी कठोर जीवन बीता और जनता से उनका सबध बना रहा। किन्तु बंधा बन्धन के साथ-साथ ये गुण शिथिल और दुर्बल हो जाते हैं। उपन्यास के आरम्भ में ये कामल और सरल ब्यक्ति हैं किन्तु बाद में इनका बरिब गिरन छगता है। पीठर का बरिब भूमिभ हाने समता है। उसकी पत्नी नतास्या का भी यही हाल होता है। जब वह हाब में कम बन्ती है तो उनका कामल बेहरा कठोर हो जाता है और उसकी थोठ मिच जात है। इन्ही प्रकार पीठर ऊबता है शराव पीने कमता है और सोखला हो जाता है। यही हाल अन्धेरेई और निकीठा का भी है। उनकी मानबीयता ममाप्त हो जाती है और बंधे को छोड़ कर वे और कुछ नहीं सोच पाते। उपन्यास के आरम्भ में यही लोग बड़े सरल और कामल थे। इन प्रकार अपने जीवन के अन्त तक आरतमोतोबा के परिवार को दूसरी पीढ़ी का ह्रास हो जाता है।

### तीसरी पीढ़ी

तीसरी पीढ़ी का तो आरम्भ ही ह्रास के बीच होता है। पीठर और नतास्या के जीवन के आरम्भ में तो कम से कम कुछ था किन्तु इनके बच्चे तो आरम्भ से ही खोखले हैं। येसना ततियाना माकोव मारि में कुछ

महीं हैं। भरतमानावा का बंग समाप्त हो गया। तीन पीढ़ियों के धंसे ने इन लोपों की शक्ति प्रतिभा मानवीयता को बूझ लिया जा कि उनको बनता कि बीच रहने न प्राप्त हुई थी। आरम्भ म के जनता के ही व्यक्ति थे और बनता क सभी गुण उनम थ। बाद म बनी हुाने पर उनका यह संपर्क टूट गया और पीरे-बीरे उनकी बन-विनयताएं लपट हा गयी और यह परिवार किसी के लिए आवश्यक न रह गया और नष्ट हा गया। उपवास इती का प्रवसन है और यही इस उपन्यास का मुख्य भाव है। इसका यह भी मुख्य संदेश और भाव है कि पूंजीवाद का नाश अनिवार्य है क्योंकि यह मनुष्य को मनुष्यता से मिरा दता है।

इसने यह न समझता चाहिए कि मनुष्य का हाथ अक्षयमन्माही और अनिवार्य है। यह अपनी बूढ़ इच्छा शक्ति के द्वारा हम पांडेमेबाळ बाता बरन के विरुद्ध शक्ति कर, शक्ति की शक्ति द्वारा इस घेरे से विरुद्ध लफटा है। अपने प्रयत्नों द्वारा इस घंसे पर विजय प्राप्त की जा सकती है किन्तु हमके लिए हमसे अपने का अलग करना आवश्यक है। पीछर, लतात्वा आदि दुर्बल व्यक्ति व हमसे व इसकी कारा में वह घंसे और उग्होंने अपनी मानवीयता का पंवा दिया।

किन्तु लम्हा ईस्या हम घेरे का लोड़ बासता है। जनता से वा मिलता है और स्वाधीनता आंदोलन में भाग लता है। इन प्रकार लम्हा ईस्या के कम में नाहीं यह प्रवर्गित करता चाहता है कि बुरुजा बाताबरन में पला हुमा व्यक्ति भी अपने का विनयित कर लफटा है। किन्तु इसके लिए उनमें त्याग और बूढ़ इच्छा शक्ति चाहिए। उस अपने घेरे को त्याग कर बाहर जाना पड़ेगा। पीछर का दूसरा लड़का ईस्या गोरों के इभी विचार को प्रकट करता है कि बुरुजा वर्ग क धेच्छ लाल जनममर्क-हीनता के कारण अपने वर्ग कर नाश अनिवार्य समझतर हमसे बाहर बने जाते हैं और पुरुष मानव बनने का अवसर पाठ है। ईस्या ने यह किया जो काम गर्दिवेक न कर गया और यह उग्हो व्यक्तिपठ विगिपुता और बूढ़ इच्छा शक्ति का प्रमाण है क्योंकि यह परिवार, परिस्थिति व्यक्तिपठ संघर्ष संस्कार आदि के विरुद्ध होने हुए भी बनता से मिल जाना है।

### तीसरा व्यासोप

तीसरा है माध्यम म योर्की ने बंधे के प्रति जनता के संभव को प्रकट किया है। वह किसान है और हर परिस्थिति में क्रिमान बना रहता है और इन बंधे का कभी समर्थन नहीं करता वह जनता की आत्मा के रूप में प्रकट होता है। वह सदा इन परिवार के साथ रहता है और इसके कार्य कलाओं का मूल्यांकन करता रहता है। वह प्रत्येक महत्त्वपूर्ण घटना के समक्ष प्रकट हो जाता है और उपन्यास में आ भी घटनाएँ घटती हैं उनकी सीमांना करता है।

पूरा उपन्यास पूर्वीवासी व्यवस्था की आलोचना है। विषय-वस्तु में इस उपन्यास में मूल रूप में बाब साम्य रखनवासे योर्की के दो नाटक 'द्वार कुष्ठिभाव' तथा 'वस्तिगायक' और 'दुमर' हैं जिन्हें योर्की ने १९३२-३३ में लिखा।

### विश्वमसमृग्नि

१९२० में योर्की ने अपनी सबसे बड़ी कृति 'विश्वमसमृग्नि का जीवन' (बासीम वय) प्रकाशित करना शुरू किया। उसमें इसे कथा (पाब्लो) कहा किन्तु इसके बाद भाव है और योर्की इसे पूर्ण न कर सका। इसमें बहुत से बर्षों की कथा है और समकालीन आलोचना इसको 'एनाम कहती है और इन महाकाव्य का गद्यान्तर साहित्यिक रूप मानती है।

योर्की ने रूप के सामाजिक विकास के बासीम बर्षों का जीवन (१८७० के मध्य से १९१७ तक) चित्रित करना चाहा और उसको उसकी पूनता तथा विविधता के साथ संकित करना चाहा। इसे स्वामी जीवन की एनमाइकलार्जिडिया कहा जा सकता है। इसमें देश की महत्त्व-पूर्ण संकित और घटनाएँ प्रदर्शित की गयी हैं। १९०५ की क्रान्ति प्रथम महायुद्ध सेनित का १९१७ में वेनोप्राद में आगमन इन घटनाओं की पृष्ठभूमि में उर्ध्वसूत्री शक्ति के मध्य और बीसवीं शती के आरम्भ के विचारों का संघर्ष प्रदर्शित किया गया है। यह कथा 'अनिर्दिष्ट' के रूप में है और पात्रा तथा घटनाओं का विलय का विकास एकठा प्रदान करता है।

पौर्बी एक समय अपनी इस कथा को 'रोकनी आत्मा का इतिहास' कहना चाहता था और बास्तब में मिलम का चित्रण बुर्जुआई लोकोपी आत्मा का इतिहास है जिसे केवल अपन से ही प्रेम है। यह उगी ह्रास का परिणाम है कि जिसे 'पौर्बी अस्तमोनोबी के काम में' प्रदर्शित म प्रदर्शित कर चुका है। मेव इतना ही है कि अस्तमोनोब मिस्त्रियत बान्ब आबमी है और मिलममनूविन बुद्धिबीधियो का प्रतिनिधि है बकीस है और धामक बग की सेवा करता हुआ पालसा हो जाता है। उमका जीवन म अपना कोई उद्दय नहीं है। वह क्रान्तिवारियों से संवधित है फिर भी उनसे घृणा करता है। वह सेनित से भी घृणा करता है। सेनित के आममन के साथ उसकी मृत्यु हो जाती है। सनित के स्वायत में उमइती हुई भीड़ में वह मर जाता है। यह हम बात का प्रतीक है कि अन्ति ने वह सब मल कर दिया जो मनुष्य को ह्रास की ओर से जा रहा था, जो उसके रास्ते में बाधास्वरूप था और जो अर्बंर प्राचीन को बनाए रखना चाहता था। मिलम के चित्रण के मूल म यह सपर्य है जो कि मनुष्य के विकास को रोकता है।

पौर्बी केवल मनासामक चित्रण से ही संतुल नहीं हाता वरन् उस पक्षित का चित्रण भी करता है जो मनुष्य का उदार करने वाली है और यह है उमइती हुई अन्ति की पक्षित। इसम उन पात्रा का भी चित्रण हुआ है, जो सभी क्रान्ति के गवाकक है और जो गरी गविन और बंधिप्य के प्रतीक है। कुतुबोर ऐमा ही पात्र और प्रतीक है। उमने व्यक्तित्व का विकास अनहित के पक्ष में हाता है और सभी से उमरी प्रतिभा प्रकटित होती है और पूर्ण विकास प्राण करती है। वह अन्ति का अनुभवी नेता है और क्रान्ति की ओर दुइ विभाग के पात्र विना किसी हिंसापाहण के अग्रसर होता है।

निकट आती हुई क्रान्ति की मानना हम कथा का मूल आधार है जो हम पूरी रचना और उमकी सर्वथा विविध पन्नात्रा और पात्रों का एरता प्रदान करती है।

'विश्वमार्गपूगिन का जीवन' यह बुहन् नामात्रिक ऐतिहासिक गद्य

महाकाव्य है, 'एपोस' है जिसमें उन्नीसवीं शती के अन्त और बीसवीं के आरम्भ के स्त्री जीवन के विकास की विभिन्न मंडलियाँ—बिहार संघर्ष, पटनाएँ आदि—वड़े ही कलात्मक ढंग से प्रस्तुत की गयी हैं। इसी में इस रचना का स्त्री साहित्य में महत्व है।

### पत्रकार और प्रचारक गोर्गी

गोर्गी के कार्यों की विविधता तथा अनेकरूपता न उसका कबल साहित्यिक लेखक ही न बना रहने दिया। सामाजिक जीवन तथा क्रांतिकारी श्रियाकलापों से घनिष्ठ रूप में संबद्ध रहने के कारण उस अनेक विषयों पर कल्पन चकानी पड़ी। इसी से गोर्गी कलाकार हाम न साध-साध पत्रकार और प्रचारक भी है और इस रूप में उसका महत्व कम नहीं है। देश के जीवन में समय-समय पर होतवाली सामाजिक राजनीतिक घटनाओं पर उसकी सखी महत्वपूर्ण विचार प्रकट करती रही और लोगों में प्रेरणा तथा स्फूर्ति भरती रही। उसकी पार ली से अधिक कलात्मक कृतियाँ हैं। उस हज़ार पत्र हैं और चौदह ली के इरीब उसके लेख हैं। पत्रकारिता का यह काम उसके साहित्यिक कार्य के साथ-साथ चलता रहा।

दिल्ली मोवमेंट से करलैन्की के मुस्ताफ पर बहु ममारु आया और वहाँ के स्थानीय पत्र में बहु रेखाचित्र लिखने लगा। इसी पत्र में उसकी कलात्मक कृतियाँ भी छपीं। इन लेखों में उसने एक पिसे अधिकार हीन लोर्गी—दफतर में काम करनेवाले दूकान पर सामान बचनेवालों का पद्य लिखा।

१९०५-१९०६ में उसने बहुत से राजनीतिक लेख लिखे और विदेशों द्वारा भारत को कब्जे दिए जाने की निंदा की। अमेरिका की यात्रा के बाद उसने बहुत से लेख लिखे और वहाँ के बुर्जुआ समाज के दुर्गुणों का उद्घाटन किया। प्रतिक्रियावाद के वर्षों में उसने 'व्यक्तिगत का मार्ग' लेख लिखा जिसमें कहीं सेवकों को जनसेवा तथा देश भक्ति के लिए उद्घाटित किया। अलगदूर कान्ति के बाद उसकी पत्रकारिता का और भी महत्व बढ़ा। गहरा देश-प्रेम समाजवाद का स्वानत, बुर्जुआ समाज की कृतियों



का उद्घाटन साहित्य का समर्पण और लड़ाई छेड़नेवालों के प्रयत्नों की मिठा मक-जीवन के निर्माताओं के परिश्रम की प्रशंसा से उसके लेख के मूलभूत विषय हैं।

सोवियत संघ की क्रांति के बाद उसने पूरे देश की यात्रा की। इस यात्रा के बाद उसने 'सोवियत संघ निर्माण की ओर' तथा 'हमारी सम्प्राप्तियाँ' पत्र निकाले जिनका उद्देश्य समाजवादी निर्माण की सफलता का विश्व प्रस्तुत करना था।

समाजवाद की प्रतिष्ठा में योग देने के साथ-साथ उसने फ्रांसिसम पर निर्मम आक्रमण किया क्योंकि वह जानता था कि फ्रांसिसम की बर्बरता सत्ताधिर्या की संस्कृति तथा मानवीय सम्प्राप्तियों को नष्ट कर देगी। जीवन भर वह फ्रांसिसम के विरुद्ध आन्दोलन का संचालन करता रहा।

इस प्रकार उसकी पत्रकारिता भी विविधता से विभूषित है। वह सदा मातृभार रहा और हर प्रकार के सामाजिक और सामाजिक प्रश्नों का उत्तर देता रहा।

गोर्की शब्द का महान् शिल्पी जीवन का सुखम ज्ञाता मानव से अद्विष्ट विद्वान् रहनेवाला था। उसकी सत्रना ने क्यी जीवन का पुरा-पुरा अनिश्चयन किया और नवीन आदर्श तथा नवजीवन की प्रतिष्ठा और निर्माण में पूर्ण योग दिया। गोर्की देश भक्त था पार्सी मानवता का दोहा और मानवता का प्रेमी था।

## २ गृह-युद्ध के समय का साहित्य तथा जन मार्थिक व्यवस्था का नव-निर्माण

[ १९१८-१९५५ ]

अक्टूबर १९१७ से लेकर फरवरी १९१८ तक बीच सोवियत शासन बढ़े वेग से सार देश में फैल गया। फिर भी उसे शांति के माध्यमिकित्त होने का अवसर न मिला क्योंकि अखिरी ही सोवियत नव-व्यवस्था बनना के बीच व्यापक हुई उठना ही अधिक अपव्यय गोपक बर्ग ने उसका जी जान से विरोध किया। साम्राज्यवादी राष्ट्रों की सलाह न देश पर आक्रमण कर दिया और इवेल गाहों का विद्रोह भी शुरू हो गया। विदेशी हस्तक्षेपकर्ताओं का समर्थन पाकर प्रतिक्रियावादी अन्ति के विद्रोह अपनी सेनावा का संगठन करने लगे। गृह-युद्ध शुरू हो गया।

इस प्रकार विदेशी हस्तक्षेप और गृहयुद्ध की अत्यन्त विषम और अन्यायक परिस्थिति के बीच सोवियत राष्ट्र का जन्म हुआ और जन्म लेने के साथ ही उसे अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए प्राणों की बाजी लगाकर लड़ना पड़ा। परिस्थिति के कारण शांतिपूर्ण वातावरण के बीच देश का निर्माण असंभव था। फलतः राष्ट्र 'युद्धशील साम्यवाद' की नीति अपना के लिए'। सारे देश का जीवन अन्ति के विद्रोह के लिए आसित युद्ध के मार्थन कर दिया गया। सारा देश प्रौढी कैम्प में परिवर्तित हा गया और अनेक कठिनाइयों के बीच—मूल ठंड मष्ट आधिक जीवन और युद्ध तथा प्रतिक्रियावादियों का तोड़-फोड़ की नीति के बीच—सोवियत शासन का विजय मिली। विदेशी हस्तक्षेपकर्ता देश के बाहर निकाल फेंक दिए गये और इवेल गाहों का विद्रोह कुचक दिया गया। अब समाजवादी अन्ति का अपना महत्वपूर्ण कार्य—रम के पुनरुत्थान तथा नव-निर्माण

का कार्य—शुरू हुआ। जनता समाजवादी संस्कृति के निर्माण में लगी। व्यतीत की सांस्कृतिक सम्प्राप्तियाँ पूरे समाज की संपत्ति बन गयीं और मारी जनता को सुलभ हो गयी। आरंभही से मुक्त की गई जनता को सोवियत शासन तथा कम्युनिस्ट पार्टी समाजवादी संस्कृति तथा सांस्कृतिक निर्माणकारी कार्य की ओर ले गयी।

अक्तूबर क्रान्ति ने साहित्य के सामने नयी समस्यार्थ प्रस्तुत की। अब यह आवश्यक था कि सोवियत संघक जन-समूह के क्रियाकलाप को प्रतिबिम्बित करें उसके समाजवादी निर्माण के आदर्शों को अभिव्यक्त करें और नव-जीवन निर्माण के मार्ग को अपनी मायनाओं में प्रकाशित करें।

फिर भी सोवियत साहित्य के निर्माण का काम धूम्य में नहीं शुरू हुआ। इसके पहले रूसी क्लासिक साहित्य मानवतावादी साहित्य की परंपरा आरम्भ कर चुका था। इसी सर्वनात्मक सिद्धान्त के सोवियत युग ने प्रोमितारियन साहित्य का माध्यम बनाकर क्रान्तिकारी बस्तु-तत्त्व को निकल कर दिया। गाबियन साहित्य के विकास तथा गतिवृद्धि के संघाशित तथा निर्दिष्ट करनेवाले थे—यावत्वाद लेनिनवाद की शिक्षा साहित्य की पार्टीकरण के विषय में लेनिन की शिक्षा तथा कम्युनिस्ट पार्टी के क्रियाकलापों का अनुभव। इसी प्रकार मॉर्डी की रचनाओं में धीरे-धीरे कम्युनिस्ट का चिह्न उभरा और मायाकाष्पी ने अपनी प्रतिमा कम्युनिज्म और सोवियत काव्य की तथा में अंकित कर दी।

गृह-युद्ध के मार्ग पर जवान सोवियत सैनिक अपने देश की रक्षा के लिए और अपने नवीन आदर्शों की प्रतिष्ठा के लिए लड़े। युद्ध-युद्ध ने सन्त पर इन सत्ताओं के अनुभव साहित्य में अभिव्यक्त हुए। इन सत्ताओं में मुख्य हैं—शाओंगार फ्लादकोद अस्ताफ्की पुग्मासोव फेदेयेव लिओनोव मर्माकिन तथा अन्य। इन सत्ताओं की कृतियों में गाबियन कला के सर्वनात्मक सिद्धान्तों का विज्ञान हुआ।

इन प्रकार अक्तूबर क्रान्ति के बाद सोवियत साहित्य या नये साहित्य का नया रूप प्रस्तुत हुआ। गृह-युद्ध और समाजवादी नव-निर्माण इस

## गृह-युद्ध के समय का साहित्य

साहित्य की मुख्य विषय-वस्तु के रूप में प्रकट हुए और भेदा में रहनेवाली सभी जातियों की मित्रता पर आधारित देव प्रेम की भावना का नया रूप सामने आया और उस नया महत्त्व प्राप्त हुआ।

बन्धुबन्धुत्व के अभाव में समाज में किस प्रकार का व्यवहार होगा? समाज के जीवन में इस महत्त्वपूर्ण क्षण में किस धर्म का प्रथम प्रकाश कि व दशा के कोष्ठी ने लिखा कि 'क्रान्ति में हिंसा नहीं या नहीं' देने के लिए प्रश्न ही नहीं उठा। क्रान्ति मरी है। इसी प्रकार गोरी के अपने बारे में कुछ न कहने पर भी उसका पक्ष स्पष्ट ही है। इस प्रकार क्रान्ति के प्रति भय कल्पना का एक मिथ्याकर्मोक्ति का निराकरण सामने आया। क्रान्ति के तत्परता पर बाद में अ० तस्साय भी स्पष्ट था। यह सब क्रान्ति के तत्परता पर।

किन्तु कुछ सेनाएँ क्रान्ति से अलग थीं और अलग थे। अपना देव छोड़ कर विदेश जाने वाले प्रवासी कभी सेनाएँ नहीं मरे। इनमें से कुछ अपने जीवन के अन्त में स्वयं सौट आए (कूप्रित निरालोचन असेनी तास्त्रांय। कूप्रित बलमोल अत्रयव प्रवासी सेना ही बन रहे)। देव मरने जानेवाले सेनाओं में भी बहुत ऐसे थे जो कि सही क्रान्ति को म समझ सके। बाद में उनके विचारों में भी-भी परिवर्तन हुआ और फिर वह क्रान्ति को समझ सके और उसके पक्ष में हो गए। फिर भी उनकी भावना क्रान्ति के सामाजिक आधार तथा समस्याओं के सम्बन्ध में स्पष्ट नहीं थी। ऐसे सेनाओं का कमी में 'सहकारी पत्रिका' कहा गया।

इस प्रकार क्रान्ति के आरम्भिक वर्षों की साहित्यिक परिस्थिति विविधता और विषमता से भरी थी। अपने को प्रगतिशील कहनेवाले साहित्यिक संगठनों में कुछ ऐसे थे जो मनीषी समाजवादी रूप के रूप संगठन को ठीक-ठीक नहीं समझ पा रहे थे। 'प्रयुक्तरिस्ट' (या मन्वियवादी) ऐसे ही थे। अंग्रेजों की संस्कृति के प्रति उनके विचार संहार-कारण थे। इसी प्रकार 'प्रोत्कृष्ट' (सर्वहारा संस्कृति के समर्थक) वाले अंग्रेजों की संस्कृति का निराकरण कर रहे थे। पार्टी नियमन संगठन में न बँधकर और उनसे मुक्त है अपना स्वतंत्र अस्तित्व चाहते थे और यह चाहते थे कि शासन उनके कार्यकाल में हस्तक्षेप न करे। 'कूप्रित'।

साहित्यिक संगठन के विचार भी प्राक्सकुस्त के निकट थे। इस प्रोलेटकुस्त का छपटन प्रान्ता में भी था और नवम्बर्का पर उसका बड़ा व्यापक प्रभाव था। सोवियत शासन तथा कम्युनिस्ट पार्टी ने साहित्य तथा जनता पर उसका प्रभाव का भावक माना और उससे उसका सर्वथा हुआ। लेनिन ने प्रोलेटकुस्त पर आरोप किया। उसके प्रतिद्विधावादी रूप की आलोचना की और स्वतन्त्र नहीं बनने कम्युनिस्ट पार्टीवादी साहित्य की रचना को आवश्यक और अच्छा बताया।

इस प्रकार सोवियत साहित्य का विकास आरम्भ से ही कई प्रकार की विचारधाराओं से युक्त और विरोध के बीच हुआ। इनमें से राजनीति से तटस्थता बुजुर्गों की व्यक्तिवादिता तथा अतीत के सांस्कृतिक उत्तराधिकार के निराकरण का मिश्रित सोवियत इन्टरनैशनल लक्ष्य के सर्वथा प्रतिकूल थे। सोवियत कला तथा साहित्य के विकास के उन्मूलन का पूरा पूरा प्रयत्न किया।

गृह-युद्ध की विपन्नता और गमीरता के बीच स्वाभाविक ही था कि सोवियत साहित्य प्राचीन उत्पीड़क व्यवस्था का विरोध और नवीन समाजवादी व्यवस्था की स्थापना और समर्थन करता। इन विरोध और समर्थन में ही सोवियत साहित्य का मूल स्वतन्त्र निर्धारित होता है। जीवन और साहित्य में इन नवीन व्यवस्था की स्थापना जनता के युद्ध और आत्म बलिदान द्वारा संभव हुई। साहित्य जनता की चेतना से पूर्णतया सकारण के उन्मूलन और समाजवादी भावना के बीज-वपन का सत्तु प्रयत्न करता रहा। फलतः सोवियत साहित्य प्राचीन पूँजीवादी व्यवस्था की नयी प्रकार की प्रच्छन्न और प्रकट विचारधाराओं का विरोध करता रहा जो समाजवादी संस्कृति और कला के निर्माण में बाधा डाल रहे थे। बहानावाद हथकड़ी (कार्मेलिज्म) पशुचरित्र (भविष्यवाद) साहित्य प्रतीकवाद सौन्दर्यवाद प्रोलेटकुस्त आदि का जो विरोध हम सोवियत साहित्य के प्रत्येक मर्म में करते हैं उनके मूल में यही भावना है कि वे विचार-धाराएँ पूँजीवाद का प्रच्छन्न रूप हैं और समाजवादी विकास के लिए आवश्यक पादक हैं। इन धाराओं का विरोध कर सोवियत साहित्य ने

समाजवादी कला और समाजवादी संस्कारों के विकास का पथ प्रदर्शित किया।

इस प्रकार राजनैतिक और विचारपरक समय के बीच सोवियत साहित्य की मुख्य विशेषताएँ निर्मित और बढ़ गईं। मर्यादता का उसके क्रांतिकारी पक्षपरकता के बीच अभिव्यक्त क्रांतिक समयपरक सिपाही और योद्धा के रूप में सोवियत व्यक्ति का चित्रण श्रमिक क्रांति का मानवता के इतिहास की महत्वपूर्ण मजिल के रूप में चित्रण क्रांति-विरोधियों के विचारों और कारनामों का परीक्षा करना और उनका दमनाही बनहित प्राप्त कर देना उनकी भावना।

क्रान्ति के आरम्भिक वर्षों की कविता

कविता इस समय के मुख्य साहित्यिक रूप का प्रकार के रूप में प्रकट हुई। फिर भी इसका रूप गृह-युद्ध मुख्यस्थित नहीं था क्योंकि जो महीनताएँ अभी-जमी जीवन में प्रकट हुई थी और उनके संबंध में जो संस्कार बन रहे थे व अभी तक दूरे-दूरे हृदयगत नहीं किये जा सके थे अपनाएँ नहीं जा सके थे। लेखकों ने इन भावों को मार्च पर या उत्सवों की काव्यों के बीच प्राप्त किया था। अभी वह अनुभव भी प्रकट नहीं हो सका था जिससे कि महीन अमता और उसके आपस के महीन संबंधों को व्यापक, विस्तृत रूप में अभिव्यक्त किया जा सकता। स्वतः इन वर्षों का असाधारण रोमांटिक रूप काव्य की ओर प्रेरित कर रहा था और जीवन को कुछ-कुछ आत्मपरक भावपरक रैतियों से रँग रहा था। आन्दोलन की व्यापकता ने—जिसने कि जीवन में गहरा परिवर्तन उपस्थित कर दिया—काव्य तथा साहित्य को रोमांटिक भावना से रँग दिया। स्वतः 'शोकस्तुत' और 'कृतिस्त' के बहुत से कवि क्रान्ति का उसकी स्पष्ट विशेषताओं से हीन भावपरक तथा मुख्य चित्रण करते रहे थे।

इन वर्षों में छावित काव्य अतः म. यै. कवि भाए-अ. कविनेकी एम. पलादनी, वे. कानिन वे. अलनसन्नेकी तथा अन्य। इन सब में सोवियत साहित्य के विकास की दृष्टि से तथा महीन व्यक्ति के चित्रण की दृष्टि से मायाकोव्स्की की सर्वता अत्यन्त महत्वपूर्ण है। अपने नाटकों

कविताओं तथा प्रचारपत्रों में 'कान्ति' इसी शक्ति और उसके सामाजिक धार तत्व को उसने अभिव्यक्ति दी। उसकी इस समय की कविताओं में उसका गहरा रोमांटिक रंग स्पष्ट है।

### ब्रेम्मान बेदनी

इन वर्षों में ब्रेम्मान बेदनी का क्रियाकलाप व्यापक रूप में विकसित हुआ। उसका प्रचारोत्सव महत्त्व है। उसकी सर्जना कान्तिकारी विचारों से परिपूर्ण थी। लेनिन और स्तालिन ने उसकी कविताओं को बड़ा ऊँचा स्थान प्रदान किया। लेनिन ने उसकी सर्जना के संबंध में कहा 'उसकी सर्जना बस्तुतः प्रोमितारियू की है। वह अमिक बर्म के अत्यन्त निकट है जो उसे अच्छी तरह समझ लेया। यह युद्ध के वर्षों में उन कविता की तीस पुस्तकें लिखी जिनका बड़ा व्यापक प्रचार हुआ। उसके गीतों का जो कविताओं के द्वारा जन-समाज के विरापतया किंगानो के बीच प्रसारित विचार बड़े सजीव रूप में फैल और इसी में उनका महत्त्व है। १९२३ में वह छोट छंद के आर्बेर से पुरस्कृत हुआ।

ब्रेम्मान बेदनी ने अपनी सारी शक्ति सोवियत जनता के कान्तिमय निर्माणकारी परिश्रम के चित्रण में लगाई। वह छोट से छोटे तथ्य को भी समाजवादी समाज के निर्माण की दृष्टि में जोरता है और उन महत्त्व देता है। इसी में वह नबीय का धार बड़े ध्यान से उभरता होता है। उसकी कविता में व्यंग्य भी बहुत है।

अपनी कविताओं में उनका अपनी प्रचार की गमकासीन घटनाओं पर अपनी लेखनी बर्णना। साहित्यिक स्तरों की विविधता विगम-गल्लु की गमूडि कान्ति की यथार्थता का बर्णन बर्णन की प्रतिभा रूसी भाषा का मजबूत मान यह सब उसकी अभिव्यक्ति के मूल में है और इन कारणों से बड़ा लोकप्रिय बना दिया। एक मजबूत स्तालिन ने उसकी भावनाओं को भी यथोक्ति स्तालिन के अनुसार वह रूस की अनीत की गमूडि को ठीक तरह में समझ करा था। द्वितीय महायुद्ध के समय भी उसकी शक्ति बराबर गुनाई देती रही। उसने 'स्तेपान उरा रोदनी' प्रकाश पाप्य भी लिखा। इसी प्रकार उसके नाम 'मुख्य गद्दर' की भी बड़ी पंक्ति

रही। इसमें उस असह्य प्रातिहारियत का वर्णन है जो 'सुम्य सङ्क' पर विश्व-इतिहास के प्रायण में जय मार्ग कर रहा है जिसके साथ क्रान्ति चल रही है और जिसके पैर की धमक से क्रान्ति के धनु हठाव हो रहे हैं।

### आकोबलविष्व जूसोव

प्रतीकवाणियों के समुदाय से क्रान्ति को और अपने मन से आनेवाले कवियों में जूसोव और आका बड़े प्रसिद्ध हैं। जूसोव के समय में योर्की ने लिखा था कि यह क्लम में सबसे सुसंस्कृत क्लम है। जूसोव कवि गद्य सेतक अनुभावक विद्वान अनेक कर्मों में हमारे सामने आता है। वह सारे जीवन कधी संस्मृति की सजा में लगा रहा और सोवियत शासन ने उसका भावर सम्मान भी बहुत किया।

आरम्भ में जूसोव के काव्य में व्यक्तिवादिता रहस्यवाद तथा अन्य संघारा की सोच के नाम में यथार्थता से विरक्ति बड़े जोर के साथ अभि व्यक्त हुई। इसके काव्य में प्रतीकवाद की सभी विधायताएँ थी किन्तु उसकी ऐतिहासिक तथा सामाजिक दृष्टि की व्यापकता ने देश की वस्तु स्थिति उसे समझा ही और वह क्रान्ति का परमासी वन गया। वह उन लोगों का प्रतिनिधि था जो कि शासन वन में बड़े किन्तु विनम्र बनजा से मिल जाने की उचित और हिम्मत थी।

सामाजिक कार्यकलाप के साथ उसका सर्वतारमक कार्य भी चलता रहा। उसके कई कविता संग्रह निकले। क्रान्ति के साथ उसकी सर्वना की मुख्य विषय-वस्तु स्वयं ही और वह अपने देश की महानता और बन्धन विषय के विषय में लिखता रहा। वह क्रान्ति के महत्त्व को ठीक तरह समझ गया था और उसका विश्वास था कि क्रान्ति वह बटना है जो देश की महानता की बार से जावेगी। उसकी कविताओं में साक्षियत<sup>१</sup> देश भक्ति की मूलमूल विधिपटाएँ बड़ी सुन्दरता के साथ अभिव्यक्त हुई हैं। देश भक्ति की भावना प्राचीन संस्कृति से गहरी सहानुभूति प्राचीन पर मनीन व्यवस्था की विजय का अडिग विश्वास जूसोव की इस समय की कविताओं की मुख्य विधिपटाएँ हैं। जूसोव उच्च साहित्य



कसा इन्स्ट्र्यूट का रेक्टर था और १९१९ से कम्प्यूनिस्ट पार्टी का सदस्य भी।

**अलेक्सान्द्र अलेक्सान्द्रोविच ब्लॉक (१८८०-१९२१)**

जब ब्लॉक की मृत्यु हुई तो मायाकोव्स्की ने उसके बारे में यह कविता "ब्लॉक को काव्यात्मक सर्वना से पूर्व यह युग है। ब्लॉक का समकालीन काव्य पर बहुत बड़ा प्रभाव है। कान्ति के पूर्व के महान् कवि के विषय में कहे गए कान्ति के महान् कवि के ये शब्द सर्वथा उचित हैं। अत्यधिक काव्यात्मक संवेदना उच्च काव्य कीमत्त सत्यानुभूति शैल-भक्ति इन सब ने उसकी सृजना को कवी काव्य के इतिहास में अभूतपूर्व बना दिया और बाब भी उनके कारण उसके काव्य का महत्त्व बना हुआ है।

कवी सत्कृति के महान् व्यक्तियों ने समान बर्तान् न सपूर्ण हृदय से कान्ति का स्वागत किया और उसका गायक बना। उसकी 'बारह' कविता ऐसी ही है। उसने कहा कि "सारे घटीर स पूर्ण हृदय से सारी बेतना के साथ कान्ति को सुनो।

उसकी रचनाओं में 'बारह' का अत्यधिक महत्त्व है। कान्ति के दिन तथा उन दिनों की प्रचण्ड गति और प्राचीन के अनिर्धार्य नाम भविष्य के पूर्ण विश्वास का पूरा-पूरा आभास हम कविता से मिल जाता है। बारह अध्यायों की यह कविता जीवन के विविध पलों के चिह्नो से संपुष्ट है और छिद्र भी इसमें उद्देश्य की लक्षता है। इसमें ईसा मसीह का बारह व्यक्तियों के भागे-भाग चलना कान्ति की परिचयता में ब्लॉक के अद्विग विश्वास को प्रकट करता है। इन कविता में स्वार्थबाह से विषय-बस्तु के माध्यम न कवि की कान्ति की भावना प्रकट हुई है। उसी भावना को उसने अपने संग 'बुद्धिजीवी और कान्ति में प्रकट किया है। उसने कहा कि "कान्ति कर्मिन् गूढान की तरह है जो मान गाय नहीं और अत्यधिक को मारती है बह बहता को पीना देनी है। पर जल भँवर में बहता को पगु बना देनी है और यथोप्य को मूले तट पर पहुँचा देनी है। जिन्नु उसमें उसकी राग की दिशा नहीं। बदलनी और न बहु-धर्मीय पीय जो इससे पीरा हुआ है। यह पीय हर हास्य में तथा मगान् न बारे में होता है।"

छोबियठ आलोचकों ने इन कविता की आलोचना यह कह कर की कि जीवन का केवल रोमांटिक दृष्टिकान से ग्रहय सञ्चार तथा ईमानदारी से मुक्त होते हुए भी अपने में पूरा पर्याप्त नहीं है और ईसा के विश्व के कारण अन्तिम के उद्देश्य को वह यथार्थता नहीं मिल पाती है जो कि जगत के सामने स्पष्ट थी। उसकी सजना कान्ति का बचावकारी बनन नहीं कर सका और इससे एकाँची है। फिर भी अन्तिमकारी रोमांटिसिज्म का सत्य और शक्ति ने उसे जीवन के सत्य से परिचित करा दिया और जयन इसका अंकन इतना ईमानदारी से किया कि उसका सारे कवी काव्य में सजा महत्त्व है।

एस० एसेनिन (१८९१-१९२५)

एसेनिन बटिलताओं और विषमताओं में मुक्त कवि है। गोर्की ने उसके बारे में किया कि 'सिराई एसेनिन आदमी नहीं बल्कि प्रकृति द्वारा केवल काव्य के लिए गढ़ा गया माध्यम है—ममार व सभी प्राणियों के प्रति प्रेम के प्रदशन के लिए। उसे अपने देश और अपने देश की प्रकृति में वैसा ही प्रेम का जैसे बच्चे को अपनी माँ से होता है। उसकी प्रवीतारमक प्रतिमा की पूर्ण अनिश्चिति कवी प्रकृति के विषय और प्रेम-गीता की सूक्ष्मता में हुई। जमाने मानवीय भावनाओं के संसार की बड़ी गहरी सरक और गूढम अनिश्चिति प्रस्तुत की। आनन्द उत्साह देश के प्रति प्रेम, प्रेम और शोक तथा देश की प्रकृति का सटीक अंकन एसेनिन की अपनी विषयता है। फिर भी जीवन तथा परिस्थिति की विषमताओं का उसकी ऊपर का प्रभाव भी पड़ा। वह पुरानी दुनिया का पूरा-पूरा परित्याग नहीं कर सका और सामाजिक जीवन के प्रति उसका रोमांटिक दृष्टिकोण बना रहा। यद्यपि वह देश के उछलते हुए नये जीवन में हिस्सा लेना चाहता है फिर भी वह जीवन को ठीक-ठीक हृदयंगम न कर सका और उसमें ह्रामकारी प्रकृति का उदय हुआ। अत्यधिक रमिक जीवन और काव्य में रसिकता का मादक सम्बन्ध इन सबने मिल-जुलकर एसेनिन के नाम को रसिकता का पर्याय बना दिया। महिला की जखन और महिलात्व के शौलाहस की विषय-वस्तु ने इसके काव्य को कुछ पकिस कर दिया।

मास्का में वह इन्हीं पाप-रंग में डूब गया।

फिर भी कवी प्रकृति तथा स्वच्छ और आत्मकम्य प्रेम के उसके उत्तम प्रगीत लदा जीवित रह्ये। इन कवियों में नाट्य साहित्य का भी विकास हुआ। रंगमंच पर अधिकतर (रोमांटिक तथा आभितकारी रंग किये हुए) नाट्यकर्म नाट्यकृतियाँ बड़ी साक-शिम रही। किन्तु इनके साथ ही मध्यापता का उदय करनेवाली नाट्यकृतियाँ का भी विकास हुआ। इन्हीं कवियों में विरोधकी का नाटक-रचना के क्षेत्र में प्रवेश हुआ। इन्हीं कवियों में क्लृप्तवादी विस्मयेसाथे रकोम्की आस्की मेवराण आदि के नाटक सामने आय।

गृह-युद्ध की विविधता और पारस्परिक विरोधी परिस्थिति के बीच ही सोवियत राज्य की विघटताएँ शस्कुटित होन लगी। इन्हीं कवियों में मूलभूत विषय-वस्तु ममत्याएँ तथा विषय कवित्त और प्रस्तुत किये जाने लग गिनकी वि सोवियत साहित्य के साथ आनेवाले युवा म विवर्धित किया गया। गृह-युद्ध क कवियों के साहित्य ही के लये नायक का जनता के उदारक आग्नि के माझा का विष उबरने लगा था और नर्जनात्मक परिधम उनका विषय-वस्तु बन गया। परिधम क विषय-वस्तु क साथ ही शाति क। विषय-वस्तु भी साहित्य में प्रविष्ट हुई। नाविमत शासन का आरम्भ ही 'घानि की घायला' से हुआ था। परिधम और शाति की विषय-वस्तुएँ कल्पन ही महत्वपूर्ण हैं और आत्मन म ननी धनिष्ठता म सवधिन है कि एर डुसर म अथय नहीं का आ सवनी। नाग्नि से पहले यह विषय वस्तुएँ गार्की मायाकोम्की मिराकियादिच आदि की नर्जना म विवर्ध है और नाग्नि के साथ जनता के स्वल्पन हा जाने कर इनको नया ही महत्व प्राप्त हुआ और वह युक्त जनता के नवीन नरवों के प्रति अथक प्रयत्न का छोटा बन गरी।

प्राचीन और नवीन का युद्ध तथा सामनेता की विषय-इम नवका अवन और अनिर्ध्वजन गृह-युद्ध के युग के साहित्य म मिलता है। मधीनता की मामवी और सामाजिक नर्धया की उदिलता मे—त्रिनके बीच सेगका मे रचना की—(नवी विषय-वस्तु मे संयुक्त) नाविमत

साहित्य के रूप-गठन का प्रभावित होना स्वाभाविक ही था।

इसके साथ ही जब साहित्य में समाजवाद का विचार, नये मायक का अंकन—समाजवाद के योद्धा तथा जीवन को उसके क्रान्तिकारी विकास के बीच प्रतिबिम्बित करने का प्रयत्न प्रबल होने लगा यद्यपि यह अंकन और प्रतिबिम्ब अभी अपनी आरम्भिक अवस्था ही में था। गृह-युद्ध के इन्हीं वर्षों में समाजवादी यथार्थवाद के विकास की परिस्थितियाँ भी निर्मित होने लगीं।

इसके साथ ही साहित्यिक जीवन को संगठित करने का कार्य भी चलने लगा। इस क्षेत्र में गोर्की का काम बड़ा महत्वपूर्ण है। उसने लेखकों को एकत्रित किया और नयी प्रतिभाओं के विकास में बड़ी सहायता दी। बहुत से साहित्य-लेखकों को उससे प्रेरणा और प्रोत्साहन मिला है। गोर्की ने १९१८ में अखिल विश्व-साहित्य प्रकाशन संघठित किया जिसने कि विदेशी लेखकों की सर्वोत्तम कृतियों का अनुवाद किया। इन्हीं वर्षों में माचास्की भी विभिन्न सांस्कृतिक क्षेत्रों में काम करता दिखाई पड़ता है और उसकी कृतियाँ (नाटक, लेख आदि) सामने आती हैं। इस प्रकार गृह-युद्ध के वर्षों में ही साहित्य साहित्य के चारों ओर ऐसी प्रतिभाएँ एकत्रित हो गईं जिन्होंने आगे चलकर दक्षिणायनी सांस्कृतिक आन्दोलन को आगे बढ़ाया जिससे कि देश का सामाजिक साहित्यिक जीवन पुष्ट हुआ।

अन-आर्थिक व्यवस्था के पुनर्निर्माण तथा पुनर्स्थापन की ओर

गृह-युद्ध समाप्त हुआ और देश में पुनर्निर्माण का काम शुरू हुआ। 'सब कुछ क्रान्ति के लिए का नारा 'सब कुछ राष्ट्रीय अर्थ-व्यवस्था के लिए' के नारे में बदल गया। गोर्की से साहित्य-लेखक लौटे और वे सजाई के अपने अनुभव तथा साहसपूर्ण कार्यों की कथा कहना चाहते थे। इन्हीं वर्षों में समाजवादी व्यक्ति की नयी विशिष्टताएँ प्रकटित और विकसित हुईं। गृह-युद्ध की कठना और रोनाटिकिज्म की जगह पुनर्निर्माण के ठोस कार्य में से लीं।

इन सबसे साहित्य में नयी प्रवृत्तियाँ और नये लेखकों का उदय हुआ।

साहित्य के विकास का नया युग शुरू हुआ। साक्षरता साहित्य समाजवादी निर्माण के प्रधान रास्ते के रूप में प्रकट हुआ और वह देश के जीवन के नये युग का अभिव्यक्ति करने लगा और स्वतः परिवर्तित होने लगा। अब कविता के साथ गद्य के प्रकार—बहानी तथा उपन्यास भी प्रस्तुत किये गये। पत्र भी निकलने लगे (पुस्तक और क्रांति—१९२० प्रथम और क्रांति १९२१) और इसमें प्रकाशन-कार्य और भी बढ़ा। साहित्यिक जीवन नये रास्ते पर चलने लगा।

इन वर्षों के साहित्य में जो विषय-वस्तु प्रमुख हैं। नृह-युद्ध की विषय वस्तु (सन् १९२२ में) और बिनास के बाद देश के पुनर्निर्माण में शांति पूर्ण परिस्थिति या सर्वनाश की विषय-वस्तु (नारदाब का उपन्यास 'सीमेंट तथा अन्य लेखकों की कृति)। इस नयी सजीव जनक रूपरत्मक सामग्री का उपयोग करते हुए साक्षरता-साहित्य ने नये साक्षरता-व्यक्ति के निर्माण और उसके विकास का चित्र प्रस्तुत किया और उसके नये आदर्श तथा प्रेम और परिश्रम के प्रति उसके नये दृष्टिकोण का प्रकट किया। साथ ही साक्षरता नागरिक के यहाँ देश प्रेम का भी इस साहित्य ने नये रूप में अभिव्यक्ति किया। सन् १९३३ के वर्षों के साहित्य में मायाकाव्य की कृतिवत् दस दृष्टि में विनोद महत्त्व रागता है। उनके मुक्तक प्रतीति में नये नायक का स्पष्ट चित्र उभरा है और उनमें विकास के मार्ग की बाधाओं को दृढ़ता से कृच्छर बन के प्रयत्न का स्पष्ट अर्थ है।

**प्रकाशक साहित्य के क्षेत्र में पार्टी की राजनीति**

नवीन राजनीतिक आर्थिक व्यवस्था की ओर सफलता के समय जब कि पूँजीवादी और बुजुर्ग वर्ग की विचारधारा का पूरा-पूरा अन्त नहीं हुआ था कम्युनिस्ट पार्टी का बुजुर्ग विचारधारा के प्रति सख्त रहना स्वाभाविक ही था। यह और भी महत्त्व का कारण कम्युनिस्ट पार्टी नवजुर्ग के ऊपर हमारे प्रभाव का अन्तना पाठ सपना थी। इसलिए कम्युनिस्ट पार्टी और उनसे मतभेद न प्रतीति और नवीन विचारधारा के साहित्यिक संघर्ष में गुप्त कर हिम्मा लिया। भूमि जायत का अधिकार

अब वहीं के हाथ में था इसलिए उन्होंने साहित्य को पूरा-पूरा पार्टीबादी बना दिया। प्रेस प्रकाशन तथा साहित्य-संघर्षी प्रश्नों पर पार्टी के ग्यारहों बारहों और तेरहों सम्मेलन में बड़ी बहस हुई और प्रतिक्रियावादी साहित्य के विरुद्ध संघर्ष तथा समाजवादी साहित्य की रचना का निश्चय हुआ। पार्टी के बारहवें सम्मेलन (१९२२) के प्रस्ताव में कहा गया कि सम्मेलन प्रतिक्रियावादी साहित्य के प्रभाव को रोकना और मजबूतकी की कम्युनिस्ट धिक्का को आवश्यक समझता है। पार्टी के बारहवें सम्मेलन (१९२१) में यह कहा कि सोवियत रूस में कलात्मक साहित्य की सामाजिक धर्मिता इनकी बढ़ गई है कि पार्टी के लिए अब साहित्य को सहायक और निर्देशन के प्रश्न पर विचार करना ही होगा और उसे अपने हाथ में लेने का उचित किया।

साहित्य के विकास के समय में कलात्मक साहित्य के क्षेत्र में पार्टी के नीति प्रस्ताव में (१८ जून १९२५) बहुत कुछ कहा गया। उसमें यह कहा गया कि जैसे वर्गीय समाज में वर्गीय संघर्ष नहीं रहता उसी प्रकार साहित्यिक क्षेत्रों पर भी यह संघर्ष बराबर चला रहा है। वर्गीय समाज में तटस्थ कला न होती है और न हो सकती है, मरुपि कलात्मक साहित्य का या कला का वर्गीय रूप राजनीति की अपेक्षा अधिक अनेक कलात्मक होता है। सोवियत-साहित्य के विकास के कदम का निर्धारित करते हुए प्रस्ताव में कहा गया कि उसे बीरे-बीरे क्षेत्रों का प्रासिद्धारिण्य विचार भाग के चारों तरफ से जाना है और छात्रों को सावधानी के साथ बीरे-बीरे कम्युनिस्ट विचारधारा की ओर अभिसर करना है। प्रस्ताव में अनेक साहित्यिक विचारधाराओं के बीच स्वतंत्र प्रतिपक्षिता की बात कही और यह कहा कि सोवियत-साहित्य को ऐसा कलात्मक रूप प्राप्त करना चाहिए कि वह कार्ता-काराओं की मजबूत में आ सके। कम्युनिस्ट पार्टी के इस प्रस्ताव का सोवियत साहित्य के विकास पर बड़ा गंभीर प्रभाव पड़ा और इसने उसके सन्तुष्टात्मक रूप का निर्धारित किया।

साहित्य में वर्ग-संघर्ष

सांस्कृतिक अर्थ के रूप में प्रकट होनेवाले इस सोवियत-साहित्य

का आदर्शवादी विचारधारा से विरोध और संघर्ष अवश्यम्भावी था और हुआ। क्रान्ति के पहले मोर्चे पर इस विचारधारा ने जो आक्षेप किया था उसकी चर्चा की जा चुकी है। क्रान्ति के बाद भी यह इष्ट बलता रहा किन्तु अब परिस्थिति बदल गयी थी। अब वे सोवियत-राज्य पर सीधा आघेप नहीं कर सकते थे। बर्जुआ प्रसन्न कर दिये गये थे। अब कई साहित्यिक योष्टियाँ प्रकट हुई जिसमें साहित्य सबधी अनेक बाद प्रचारित किये गये जिनमें कुछ सोवियत साहित्य के बुष्टिकोष के प्रतिकूल थे। इस प्रकार 'सिरापीयोतोव भाई' का पूष या समुदाय १९२१ में सामने आया जिसने साहित्य और सामाजिक उत्तरदायित्व के संबंध को आक्षेपक नहीं ठहराया और साहित्य को राजनीति से मुक्त कहा। यह मतवाद स्पष्ट ही लेनिन की 'साहित्य की पार्टीबाहिता' के विरुद्ध था और कम्युनिस्ट पार्टी और प्रसन्न होने में इसकी कटु आलोचना की गयी।

इसी समय अन्य साहित्यिक समुदाय और संगठन भी प्रकट हुए। इनमें से कुछ ने संगठनों को क्रान्ति के प्रति अपने संबंध को निरिच्छत करने में और सबांधता के निरुद्ध जाने में मदद दी। इनका संगठन कम्युनिस्ट पार्टी के प्रस्ताव के आधार पर हुआ था और इनमें बड़-बड़ लेखक थे। 'लेख' (कला में काम पेश) समुदाय के साथ मायानोमकी संबंधित था। 'कैसिक' (रचनाकारों का साहित्यिक केंद्र) के साथ ई. सस्वीनकी व० इग्जर व। 'विरिवाक' पूष में प्रीरिचन अनेक इत्यादि थे किन्तु सबसे बड़ा साहित्यिक संगठन 'पुष' (प्रोक्लारियात्सु लेखकों का रूसी एसोसिएशन) था। इसके सदस्य धारोतोव सिरापिओविच इत्यादि थे। इन संगठनों से सोवियत-राज्य के कटरेगन बना किन्तु राष्ट्रीय संघर्ष की परिस्थितियों में यह संगठन विचारधारात्मक संघर्ष के अलावा काम नग। 'विरिवाक' पूष ने यह कहा कि सामाज्यतया धर्मिक-धर्म के हर्षा की रक्षा करने वाला प्रानिगारिन् साहित्य नहीं है। गवता और वट गिरा की कि लेखकों को राजनीति से अलग रहना चाहिए। 'विरिवाक' पूष ने कलाकार की समाज से स्वतंत्रता की मांग की कला में स्वतंत्रता का निराकरण किया और गवता के साथ से प्रातिबुद्धान (इष्टपूषान)

तथा मशीनिकता (इंजनमिरम) की दुहाई थी। 'सिद्ध' समुदाय के लोगों ने 'उष्ण का साहित्य' का सिद्धान्त प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि लेखक को मूठ या मन-मग्न से बचना चाहिए और जीवन में विद्यमान तथ्यों का उपयोग करना चाहिए। जिस लेखक की रचना में मिथ्यात्व का समावेश रहता है उसकी सर्वना का सामाजिक महत्त्व धिक्कर पड़ जाता है। 'कला कला के लिए' प्रतिक्रियावादी सिद्धान्त भी प्रस्तुत किया गया जिसके द्वारा कृति के रूप पर जोर दिया गया और उससे वस्तु-तत्त्व (विचार, समाज आदि) की उपेक्षा की गयी। संक्षेप में इन सब सिद्धान्तों का विरोध या संशय सोवियत की पार्टीवादिता से या सोवियत-साहित्य के इस मूल दृष्टिकोण या सिद्धान्त से या कि बर्न-युद्ध समाज में वटस्क या वर्गद्वेष्य साहित्य न होता है और न हो सकता है तथा लेखक की सर्वना बनहित के लिए होनी चाहिए और जो कुछ वह बनता को देता है उसकी पूरी-पूरी सामाजिक तथा राजनीतिक जिम्मेदारी उस लेखक पर है।

किन्तु जब घासन और अधिकार कम्युनिस्ट पार्टी के हाथ में आ और उसने अपने दृष्टिकोण के अनुसार साहित्य का संभालन नये मार्ग पर किया। इस विचारधारात्मक संघर्ष से सावियत-साहित्य और पुष्ट होकर निकला। उसने सोवियत-लेखकों की सर्वनात्मक प्रतिभा के आभार-रूप समाजवादी बर्गबिरोध की विज्ञान या सिद्धान्त को विकसित किया और जनता का समाजवाद और साम्यवाद की भावना में सिद्ध करने का अपना कर्तव्य स्वीकार किया। उसने स्व-जागृति का भी बड़ाका दिया जिसने लोगों की गलतियों को प्रदर्शित कर उनकी प्रतिभा का विकास में सहायता दी।

इस प्रकार कम्युनिस्ट पार्टी ने सावियत-साहित्य के आरम्भ से ही उसका संभालन किया जिससे कि एक ओर उसका संगठनात्मक रूप स्थापित हुआ और दूसरी ओर उसे निश्चित विचारधारात्मक दिशा मिली। गृह-युद्ध के मूल से आरम्भ कर पार्टी-नेतृत्व सावियत-साहित्य के प्रत्येक युग के विकास के लिए आवश्यक वैज्ञानिक तथा संगठनात्मक मार्ग प्रदर्शित करता रहा।



## गृह-युद्ध का विग्रह

गृह-युद्ध मारे देश में फैल गया और जनता की पणित साहस तथा बलिदान ने बड़ परिपक्व में विजय प्राप्त की। इससे स्वामाधिक ही पा कि गृह-युद्ध का विषय-वस्तु साहित्य में व्यापकता प्राप्त करनी। फलतः हमें साहित्य साहित्य के प्रत्येक युग में गृह-युद्ध की बलिदान करने वाली वृत्तियाँ मिलनी हैं। बलिदान और गद्य-साहित्य के सभी रूपों में इनकी बर्षा लेखकों ने की है। काव्य सायादोष्की बदनी तीयनीव आदि पद्य निराकिमाविष इबानीव फोर्मानोव नाटक विम्पीव। गृह युद्ध के विजय की अनकरता के बीच कुछ एकता भी है। यह सबसे पहले जनता के सामूहिक बेचन आंदोलन या प्रवृत्ति के रूप में है फिर युद्ध के बीच निर्माण होनेवाले जनतापक की समस्या है और अंत में पणित तथा गृह-युद्ध का संघर्ष और नेतृत्व करनेवाली पार्टी की समस्या है। बन्तुन यह समस्याएँ सब एक दूसरे में घुली मिली हैं। अथवा अथक का किंगी एक बार विदाय मुकाबल दमन में किंगी को विदाय महत्त्व दे देता है।

## ख० एम० निराकिमोविष की सर्जना

अधुनार पणित के मारुप से ही निराकिमाविष सांघाविक प्रस (इरवेस्तिवा) के काम में लगा रहा। माँचे पर युद्ध-यमाचारदाता के रूप में (प्राप्त) यह काम करता रहा और उगका इतिव भी पणित रहा। मेनिन ने उमक कार्य की बड़ी प्रवृत्ता की। ३० वर्ष की आयु में वह मेनिन के पुरस्कार में विभूषित हुआ (मन् १९३३)। और मन् १९४३ में प्रथम काल लड़ के पुरस्कार में। साहित्य-ज्ञानन व बीच उनकी कई वृत्तियाँ ('अबान फीर १९४३ 'दो मीन' १९२६ पणकार १९२३ मेनिन ने वहाँ 'मेहमान' १९४६) आदि प्रकाशित हुई।

## सौहृदार (१९०४)

विशु पणित के बाद की उमदी सबसे महत्त्वपूर्ण वृत्ति 'सौहृदार' है जो साहित्य-साहित्य की बकागिन बन गई। इसमें पणित का पण रूप प्रकाशित किया गया है और यह दिगाया गया है कि विजय प्रचार

पार्टी के नेतृत्व में अन्तिम जन-आन्दोलन बन गयी और बिना प्रचार जनता की चर्चित न अपना मार्ग को गयी वाशवाओं को कुचल दिया और सभी बटिनार्यों पर विजय प्राप्त की। संघर्ष में यही हमकी कपा-बलु है।

जन-समूह को यह चर्चित सहमा नहीं प्राप्त हा जाती। सेवक प्ररमित करता है कि किस प्रकार जनबल युद्ध के बीच उसका संगठनात्मक रूप गुरु हुआ है और यह भी जनमन्त्रि बन जाती है और इसका नेता नहीं है या जनता स आमा है और उसके रास्ते पर चपटा है।

यह जनसमूह ही हमका गता है। उसके ब्यक्तित्व का बिपद बिभन्न नहीं मिच्छता। कर्तव्य का बिभन्न वास्तव में बहुत ही सखिप्त हुआ है। हमी प्रकार अपने सामाज्य धर्म में हमका कोई कपातक नहीं है। नायक स्वतः जनसमूह है और उसकी गतिविधि पर कपातक या बन्धु बिबान निर्मित हाता है फिर भी सेवक सारे उपन्यास में घटनाओं या परिस्थितियों को हम प्रकार प्रस्तुत करता है कि उनसे पात्रा का स्पष्ट चित्र सामने आ जाता है। बलवर्द्ध और आनका क बीच का युव्य ऐसा ही है।

एमी ही हमकी भाषा है। इसमें पात्रों की ब्यक्तित्व भाषा नहीं है बिसय कि उनका स्वभाव वा आमास निक सके। इसमें जनसमूह की ही भाषा मिच्छनी है, तमी का समवेत गाम है और उसी की भाषा के जनक स्वर मिच्छत है और तमी की प्रकृतियों की ब्यक्तिमिच्छत है। सेवक की भाषा बड़ यथासंवासी संय से जीवन की बटनार्यों का बिभन्न करती है और उसमें रामांटिक बाणी का संय भी निक जाता है। बाणी की ब्यक्तिमत्ता की तमी चर्च-बस्तु के प्रति रामांटिक संवेक की चर्चित से पूरी हो जाती है। उपन्यास यथार्थ सामग्री पर आधारित है। सन् १९१८ में तमान की पौत्र (ओ इवेन गाड और विद्रोही कर्ताक कुसक से बिरी हुई थी) के बाक्यमम की बटना-फिर भी उसमें ब्यापक सामग्री का उपन्यास हुआ है बिमसे अन्तिकारी युद्ध की ब्यापकता का आमास मिच्छता है। यह 'मोहभार' समाजवादी यथार्थवाद पर आधारित सर्वना की ब्यक्तिमत्ता का उपाहरण है। इसमें जीवन का बिभन्न उसके अन्ति

काठी विकास के बीच हुआ है और कम्युनिस्ट नायक का—डोस नायक का—चित्र प्रस्तुत किया गया है।

### फुरमानोव का चपायेव (१९२३)

रे० फुरमानोव (१८९१-१९२६) की रचना 'चपायेव सिराकि-नोबिच की रचना की अपेक्षा गृह-युद्ध के अन्य प्रश्नों से संबंधित है। इस रचना का शरय जन-नायक का चित्र प्रस्तुत करना है जो कि शान्ति के वर्षों में समाजवाद के बोझ और प्रस्थापक के रूप में हमारे सामने आता है।

उपस्थास 'सोव्कार' की अपेक्षा यह बड़ा भी है और सभी व्यापक सापेक्षी पर आधारित है। फुरमानोव कामसत्ता के (पसकोवतिक) कमांडर लुजे के अत्यन्त निकट था। १९१९ में उसे कलपाव के विरुद्ध युद्ध में मोर्चे पर भेजा गया जहाँ वह विबीजन का कमिस्तर (कमिस्तर) बनाया गया इनका कमांडर 'चपायेव' था। फुरमानोव ने इसमें चपायेव के जीवन और मृत्यु की कथा प्रस्तुत की है। वह स्वयं कर्लीचकोव के नाम से इसमें भाग लेता है।

चपायेव के रूप में फुरमानोव ने जन-नायक की बहुत सी विशेषताओं का सही-संयत प्रस्तुत किया है और यह प्रदर्शित किया है कि शान्ति में किस प्रकार इनको मुमुक्षु बनाया। शान्ति में चपायेव का वैसा ही चित्र प्रदर्शित किया है जैसा कि वह जीवन में था। इन चित्र का महत्व केवल इस बात में नहीं है कि यह जन-नायक का चित्र है बल्कि इसमें नवी परिस्थितियों के बीच इन नायक का विकास क्रम भी प्रदर्शित है जूँकि वह देश की सेवा में गया हुआ है इसलिए उसकी विशेषताओं का महत्व और भी बढ़ जाता है। उसकी विशेषताएँ—दृढ़ता महत्शीलता शाह्य-बलि-युद्ध के बीच और भी विकसित होती है और वह और भी ऊँचा उठता है।

चपायेव शान्ति के पहले ही में अपना विपत्ती का किन्तु चार की सेवा में ऐन आदमी का कोई मुख्य न का जो प्रमुख्य का न हो (सोव्कार में कज़ुग के नाव भी यही हुआ) और उस समय उसके सामने कोई

हंका लक्ष्य भी न था। अस्तुवर-अम्लि ने यह सब बदल दिया और लोगों के समस्त उच्छ लक्ष्य और आदर्श प्रस्तुत किया देश तथा जनता का मार्गदर्श—इस लक्ष्य ने अपनी उत्कृष्ट विभिन्नताओं को विकसित करने का पूरा-पूरा अवसर दिया। जपान के भी विकास हुआ। जपान के रूप में हमारे सामने धीरे-धीरे एक प्रतिभावाली बुद्धिमान-सना-सना-सना का उदय होता है। मुद्र में बहु मांठ और अविद्य रहता है और निपाहियों को जीव से नर देता है। उनमें अद्भुत आश्चर्य है। सिपाही उनकी बात सुनकर मुग्ध हो जाते हैं। गांधी और पाने की भी उनमें अच्छी प्रतिभा है। इन सब मानवीय गुणों के आभार पर उसका धैर्य प्रभाव आचारित है। इसके साथ ही उसका अर्थ उमड़ी सारी बुद्धिमत्ताओं और अपूर्णताओं के माप दिया गया है। उपन्यासकार ने इस पर पर्दा नहीं डाला है बल्कि यह दिखाया है कि जपान के किस प्रकार की-किस प्रकार के प्रभाव में इसकी धीरे-धीरे बुर करता है।

सन् १९२० के आरम्भ के साहित्य में प्राप्त कम्युनिस्टों के उत्तम विचारों में से कनीशकोव का विश्व एक है। इसमें अम्लि के बीच पार्टी के नेतृत्व और धैर्य महत्त्व को प्रदर्शित किया गया है। कनीशकोव के प्रभाव में जपान का विकास इसी महत्त्व का प्रतीक है। साथ उपन्यास पार्टी के संघर्ष से संबंधित है और यह नेतृत्व ऐसी मुश्किल प्रस्तुत करता है जिसमें जपान के समान वेगमत्त निमित्त होते हैं और अपनी मानवीय शक्ति को विकसित करते हैं।

जपान के यह विश्व लौकिक जन-सेवा का विश्व जन सेवा। इनने द्वितीय महायुद्ध में लोगों को देश रक्षा के लिए सब कुछ करने को तैयार, तत्पर बना दिया और उनमें अपूर्व आधुनिक शक्ति भर दी। इसी में इस रचना का अन्तर्गत महत्त्व है।

जपान के निकट और समान ही फुजिमोरी की दूसरी कृति 'विद्रोह मित्र' (१९२५) है। इसमें यह बताया गया है कि मध्य एशिया के एक पहाड़ में कम्युनिस्टों का एक छोटा सा समुदाय किस प्रकार बसेत गईं शायद भड़काए हुए बड़े धैर्य विद्रोह को रोकता है। इन विद्रोह के

समय में स्वतः कुरमानोव ने हिस्सा लिया था। पार्टी द्वारा चिह्नित यह समुदाय घात और बड़ है और प्रतिस्वयं जीवन की बलि देने को तैयार है। कम्युनिस्ट भड़काये बस से उन्हीं की सामान्य माया में बाधनीत करते हैं और उनको समझा लते हैं। विद्रोह घात हो जाता है और शत्रुओं की भाँस ब्यर्ष हो जाती है।

यद्यपि यह कमा मभार्य भटना पर आमारित है फिर भी इसका रूप सर्पका बलात्मक है और उसका माध्यम से कुरमानोव ने कम्युनिस्टों का परिचय प्रकृत किया है। यह परिचय विशेष रूप से उस समय उभरता है जब कि स्लेसक को विद्रोहिमां की समा में थापन देना है जहाँ कि उसकी मृत्यु निश्चित है। यह साबता है कि "यदि अन्त निश्चित है तो ऐसी मृत्यु पुना जिससे बड़कर दुसरी न ह"। ऐसे मरा कि तुम्हारी मृत्यु से नी लान हो। मृत की तरह बँटुभाते हुए, काँपते हुए मरना अच्छा नहीं। अच्छी तरह मरा। इसल ऐसे कम्युनिस्ट का विश्व है जो अन्तिम क्षण तक जगता की सेवा करता है। यहाँ तक कि घात को भी अपने लक्ष्य की सेवा करने का विश्वास करता है। इसमें कुरमानोव के सर्वना की पार्टीबाधिता भी प्रकट होती है।

कुरमानोव की दीप्र मृत्यु न उसकी जर्जना का पूरा-पूरा विकसित हान का अन्तर्गत में दिया। मोविमन्त-आहित्य के बीच उभरता अपना विशिष्ट रसात है और अभाव का विश्व साधियन-आहित्य के विशिष्ट विश्व में से एक है।

स्लेसक गाड़ी में सा-शीरिया के छायामार्ग के मुठ की विषय-बन्धु इवानोव की कहानी ज्ञान पोएम्स १४-१० (ज्ञान रसागाड़ी १४-१०) के मूल में है। यह कहानी इवानोव की छायामार्ग कहानियों में संपूर्णीत है। इसमें छायामार्ग को अन्तर्गत में समन्वित और अन्तर्गत की विशिष्ट किया गया है जो कि अन्तर्गत के लक्ष्य प्रेम माहृग और अन्तर्गत का प्रतिनिधित्व करते हैं।

लिटरैचर की कहानी 'गप्पाद' में उन श्रम कम्युनिस्टों का विश्व है जो अन्तर्गत आगमन के पक्ष में उस समय लड़ रहे थे जब कि अन्तर्गत

दशों में श्रान्ति विरोधी 'रक्षक पक्ष' का आधिपत्य था। इस कहानी में उस समय का पूरा चित्र है। यह कहानी उस समय अत्यन्त आकर्षित हुई।

**स्यूबाब यरोबाया क० त्रिन्योष**

यह युद्ध क बिचम में सञ्चित इतिहास में त्रिन्योष का 'स्यूबाब यरोबाया' और म० फुदयब का 'नाग' महत्त्वपूर्ण इतिहास हैं। दोनों इतिहास में दा मासों का प्रवर्धन किया गया है। एक मास जनता की आर जाता है और श्रान्ति का अनुसरण करता है जिसमें व्यक्ति का अपन चरित्र की साहस पूष विधि-विधानों का विकसित करने का अवसर प्राप्त होता है (मन्दिमन मरुतका बकलाबाब स्यूबाब यरोबाया) और दूसरा रास्ता व्यक्तिगत सहीय स्वार्थ की ओर जनता से दूर दूरदर्शी और नाग की आर ल जाता है (मिन्नाहस यरोबाया मन्दि)।

यह नाटक ता साविध-मद्यकार और नाटककार (१८७८-१९०९) त्रिन्योषकी सर्वोत्तम इति है। उसकी पहली कहानी १८९८ में छपी। इसकी मन्दिमनक प्रतिभा क विक्रम म गाँधी का बड़ा हाथ है। श्रान्ति क पूर्व उमन कई महत्त्वपूर्ण इतिहास प्रस्तुत की किन्तु श्रान्ति क बाद उसकी मन्दिना सामाजिक दृष्टि से संपुक्त हुई और उमने उस गृह-युद्ध के नायक की मन्दि विरोधपूर्ण व्यक्ति करण का अवसर प्रदान किया। अनुसर श्रान्ति के बाद उमने कई नाटक 'पत्नी अनुभव नेवा क ठा पर आदि लिखे। श्रान्ति के युग में उद्योग क साथ उभरनेवाले सामाजिक संघर्ष तथा इसमें विकसित होने वाली आर्थिक शक्ति और गभीरता की चतना न उमे नाटक लिखने की प्रेरणा थी।

किन्तु उसकी सबसे महत्त्वपूर्ण इति नाटक 'स्यूबाब यरोबाया' है। मन्दि १९०६ में यह मन्दि म पहल माली विद्युत क रंगमन्दि पर प्रस्तुत किया गया और उस समय से धनी तक बड़ा लोकप्रिय है। इस नाटक में देश में व्याप्त वर्ग-भेद की तीव्रता प्रस्तुत की गयी है। ऐसी तीव्रता जो परिवार का नष्ट कर देती है और प्रियजन एक दूसरे के विरोधी बन जाते हैं। इससे साथ ही इसमें यह शक्ति भी है कि श्रान्ति के पक्ष में ही

और जनता के साथ ही व्यक्तिगत का विकास होता है और जनता के विपक्ष में होने से उसका ह्रास होता है।

नाटक पति-पत्नी के जीवन और क्रांति से संबंधित है। क्रांति के पूर्व बानों का जीवन बड़ा प्रमत्त का किन्तु क्रांति में असम-असम पस्ता अपमाने के कारण वे असम हो जाते हैं और उनके बीच विचारों की बहुत बड़ी खाई आ जाती है।

पति क्रांतिकारियों का विरोधी बनता है और पत्नी स्तुबीय पराधायी क्रांति का पक्ष ग्रहण करती है। पत्नी के हृदय में पति के लिए प्रेम है किन्तु कर्तव्य की भावना उससे भी अधिक बड़ है। अन्त में वह सदा के लिए पति से असम हो जाती है। अन्त में परिस्थिति ऐसी आती है जिसमें उस अपने पूर्व पति के विरुद्ध लुप्त रूप में लड़ना है और उस परकृपण व्याय का व्यक्तिगत समय और नाटक भी चल रहा है जिसमें पत्नी प्रेम को बचाने के लिये अपने पति का और जनता का साथ देती है। दो वर्ष तक वह पति को मृत समझती रही। किन्तु जब दोनों की भेंट होती है और उस पता चलता है कि वह प्येत्याडों के साथ है तो वह बहोस हो जाती है। अभी उसमें पति के प्रति प्रेम है और वह उस बचाना चाहती है किन्तु जब वह जान जाती है कि पति सर्वथा सोवियत-मासन के विरुद्ध है तो वह उसे व्याय के हाथ में सौंप देती है—एक समय सौंप देती है जब कि उस बचाया जा सकता था।

यह नाटक यह प्रदर्शित करता है कि महान् लक्ष्य की प्राप्ति में देश की स्वाधीनता के लिए यज्ञ में तथा जनता का साथ देने ही में पूर्ण मानवीय चरित्र का विकास होता है।

यह नाटक सोवियत नाट्य साहित्य की महान् मजकूरता है। विचारों की समीक्षा और चरित्र की स्पष्टता की दृष्टि में यह सोवियत नाट्य साहित्य की अत्यन्त सफल दृष्टि मानी जाती है। इसकी महत्ता हम बात में भी है कि उसमें गृह-युद्ध में भाग लेनेवाली रूसी नारी का चित्र प्रस्तुत

किया गया है। इसमें अपने युग के सभी जटिल सामाजिक संबंधों तथा व्यक्तिगत संबंधों के साथ गृह युद्ध का कारभारिक मुम विहित किया गया है और वेद विरोधी श्लोकों की ध्वंग पूर्व आत्माचना की गयी है।

गृहयुद्ध के युग में गाँवों में जो तीक्ष्ण बर्न-संघर्ष बसा उसने बहुत से सोशियल-सेलकों का ध्यान आकृष्ट किया। इनमें नेबेरोव (बल्लह हंस) सेइफूडिना (बिरीनेवा) मिमोनोव (बरमुकी) और सोलोसोव मुख्य हैं। इनकी कृतियों के मूळ में किसान और कुसकों का संघर्ष है।

इसका सबसे जम्हा जनिम्यजन नेबेरोव के अपूर्ण उपन्यास 'बल्लह हंस' में हुआ है। इसका मूळ विचार यह है कि किसानों के बीच 'हंस' हैं जो मये जीवन की ओर उड़ना चाहते हैं किन्तु उनके बीच बल्लह भी हैं जो जमीन की ओर जीवती हैं और जो हंस की स्वाधीन उड़ान को मही समझती या मही समझ पाती। उपन्यास में किसान और कुसका की शक्ति को दो सामाजिक शक्तिया के रूप में एक दूसरे के विरोध में प्रस्तुत किया गया है।

नेबेरोव की कहानी तासकंब रोटी बाला सहर भी बड़ी लोकप्रिय है। इसमें एक लड़के का चित्रण है जो अनेक कठिनाइयों पर विजय प्राप्त कर परिवार को किसान के लिए राटी से भाटा है।

सेइफूडिना ने अपनी कृतियों में किसानों में आपस लाने वाली आर किसानों की शेतता और रहन-सहन में घटावियों से पैठी हुई प्राचीन व्यवस्था और जन्मविश्वास को तोड़नेवाली शक्ति की शक्तिशाली शक्ति का चित्रण किया है। बिरीनेवा में किसान और बिरीनेवा का व्यक्तिगत के समय के खिलाड़ विरोध प्रदर्शित किया गया है। बाद में सेइफूडिना ने इसे माटक के रूप में भी प्रस्तुत किया।

ग्राम जीवन पर इस शक्ति का जो मंमौर प्रभाव पड़ा है उसका अंजन मिमोनोव के उपन्यास 'बरमुकी' में हुआ है। इसमें पुष्पनी कुवियों का गाँवों के कुसकों और कुसक्येष्ठ (वेदियाकंस) व्यवस्था का—नाश और शेतता तथा संवर्धित शक्ति को विजय का आरम्भ प्रदर्शित किया गया है। उपन्यास का मूलमूल संघर्ष वा माइयो की मूठमेइ में प्रदर्शित किया गया



है। एक भाई सिम्पोन फ़ान्ति बिरोबिचो के पक्ष में है और दूसरा भाई पाकेस बोस्तोबिचो के साथ है।

इन्हीं बच्चों में शोर्पा का ध्यान सोलोव्योव के कहानी-संग्रह 'डाम की कहानियाँ' की आठ नमा जिसमें डाम-नेत्र के गोला के जीवन में फ़ान्ति का प्रवेश विवक्षित किया गया है। इनमें उस समय का मध्य और उस क्षण के खून-सहून तथा स्थानीय रंग का बड़ा मज़ीब चित्रण हुआ है। इनमें कल्पना का पाश्चिक रूप और उसके विरोध में किसानों के बीच यज़्नी हुई प्रगतिशील धर्मिता दोनों का उद्घाटन हुआ है।

इन लेखकों के साथ-साथ ज़मोइस्की क़रबाणवा गरबूताव तथा अन्य गणना में भी अबतक फ़ान्ति गृह-युद्ध और स्वातंत्र्य निर्माण के प्रथम बच्चों के युग के बहादा के विषय बर्णन-मध्यम का चित्रण किया है।

### पुनर्निर्माण का युग

सन् बीस के बरों के उत्तरार्द्ध में जब कम्युनिस्ट पार्टी ने देश के सामाजिक औद्योगिकरण का आरम्भ किया तो साहित्य के मामले में भी समस्याएँ आईं। देश के पुनर्निर्माण का यथेष्ट ध्यान हुआ। धर्मिक बर्णन के साथ ही और बटोड़ों शोला के उन्मादपूर्ण परिधम में गारे देश के पुनर्निर्माण में अपूर्व प्रगति पैदा कर ली। देश गमाजवाद की प्रतिष्ठा की ओर बढ़ा। देश के औद्योगिकरण के लिए नये लोगों की उद्योग के नये निर्माताओं और विशेषज्ञों की टोक्तियाँ तैयार करने की अनिवार्य आवश्यकता थी। स्तालिन ने कहा कि "अब हमें बोस्तोबिचो की आवश्यकता है—बागु कण्डाईयन अर्ध-व्यवस्था के विनाशकारी आवश्यकता है। अब हमें बोस्तोबिचो में से तज़ारो तथा लागो नये विशेषज्ञों के समुदाय की आवश्यकता है। इसके बिना धर्म के भीम समाजवादी निर्माण की बात ही व्यर्थ है—कोई भी लक्ष्य और विशेषज्ञता अर्थात् देश का औद्योगिकरण बिना विद्यालय लक्ष्य बिना जोगीयों के बिना नये भावमियों के बिना नये निर्माताओं के समुदाय के पूरा नहीं किया जा सकता।" स्तालिन के

इन विचारों को ध्यान में रखने पर देश के औद्योगीकरण के लिए नये विद्येपत्रों के समुदायों के निर्माण का लक्ष्य ग्वादकोव के उपन्यास 'सीमेंट' का महत्त्व बहुत बढ़ जाता है जो कि सन् बीस के बर्षों के साहित्य की प्रथम रचना है। इसमें कर्नारमक रूप में औद्योगीकरण के मोर्चे पर बोल्शेविकों के कार्य का आरम्भ प्रदर्शित किया गया है।

पुनर्निर्माण की कथावस्तु फे० ग्वादकोव का 'सीमेंट' (१९२५)

ग्वादकोव का उपन्यास 'सीमेंट' पुनर्निर्माण के युग के आरम्भ में प्रकाशित हुआ। ग्वादकोव का साहित्यिक कार्यकाल अक्तूबर क्रान्ति के पहले ही शुरू हो गया था। सन् १८८३ में एक निर्धन कुचक परिवार में उसका जन्म हुआ था। ९ वर्ष की अवस्था से ही उस मछली पकड़ने टीपप्राप्ती भाषि में काम करना पड़ा था। उसने बड़ी मुश्किल से स्कूल समाप्त किया और इसके पहले ही उसने अपनी पहली कहानी ('प्रकाश की मोर') छपाई। इसके बाद से वह नियमित रूप से लिखने लगा। १९०१ में उसका गोर्की से परिचय हुआ जिसने उसे एकदम बदल दिया। क्रान्ति में योग्य शिक्षण निर्वासन साइबेरिया का जीवन इन सबने उसे विभिन्न व्यक्तियों का बहुमुल निर्दोष और विमल अनुभव दिया। अक्तूबर क्रान्ति के बाद उसने गृह-युद्ध में भाग लिया और गृहयुद्ध के बाद वह साहित्यिक कार्य में लगे गया।

'सीमेंट' में उसे सोवियत लेखकों की प्रथम श्रेणी में प्रतिष्ठित कर दिया। इस उपन्यास की ओर बहुतों का ध्यान गया। ग्वादकोव ने देश के जीवन की नयी विद्येपत्राओं का और निर्माता-बोल्शेविकों का चित्र अंकित किया। इसके संबंध में गोर्की की टिप्पणी बड़ी महत्त्वपूर्ण है—'इसमें पहली बार क्रान्ति के बीच समझौते की सबसे महत्त्वपूर्ण विषय-वस्तु परिधम दृढ़ता और स्पष्टता के साथ अंकित किया गया है।'

इसका कथानक साधारण है। गृह-युद्ध के बाद कारखाने में बर्दई स्वेव बुमाकोव वापस छोटा है। कारखाने की बड़ी पिरी दगा है। मशीनें लराह हो गयी हैं और मजदूर अपने कारखाने का नाम अच्छी तरह न कर

अपन-व्यवस्थित काम में लगे हुए हैं। जब बड़े जोंग के साथ उन सबका विचार करता है जो कारखाने की उन्नति में बाधक है। पुनर्निर्माण का अन्तर्गत पश्चिममूर्ती का कार्य उद्योगों की परम्पराओं का मूल आधार है। कारखाने का पुनर्निर्माण बिना कि वह देश के समाजवादी जीवन में योग दे सके यह सोना का पुनर्निर्माण भी है। रक्त धीरे धीरे धमिक बर्तन का संभ्रमणकारी और नेता बन जाता है। कारखाने में कारखाने का इतिहास उमर में सठक और साक्षर रहता है किन्तु बाद में अपने कारखाने के पुनर्निर्माण में लगे मजदूरों के परिपक्व और जीवन को देखकर उमर हृदय में भी उच्च मानवीय भावनाओं का उदय होता है और वह उनके कार्य में उनका पूर्ण सहयोगी बन जाता है।

पश्चिम ही हम उद्योगों की विषय-वस्तु हैं। हम पश्चिम के विषय में उपस्थान के माध्यम का यह कहना है कि 'स्वच्छन्द और श्रिय पश्चिम ही जीवन का आधार होगा। स्वच्छन्द व्यक्ति का निर्माणकारी पश्चिम उस सर्वशक्तिमत्त्व बना देता है उसका पश्चिम प्रकृति पर विजय दिनाता है जीवन की संभ्रमण करता है और समाज को सजाता है। इतिहास का उपस्थान में विकास हुआ है। उसकी पत्नी राजा का बिना साक्षर साहित्य के उन बिना में से है जिसमें नती प्रकार की स्त्री निर्माई गई है जो आदमी के साथ समाजाधिकार के साथ लगे जीवन के निर्माण में कार्यशील है।

गणतन्त्र का योगदान हम बाद में है कि उनमें सोवियत साहित्य में पहले गणतन्त्र प्रबन्धकारक उपस्थान के रूप में मजदूर का जीवन की परिस्थिति के साथ धमिक-बर्तन के निर्माणकारी परिपक्व का विचार किया है।

सीमेंट के बाद बहुत ही जिनगी सामान्य आई जिसमें इसी विषय-वस्तु पर विचार किया गया है। गणतन्त्रवादी व्यक्ति को मनी विचारणा 1. विचार : या नानिर्माण में लगे है। विचार 2. साहित्य में प्राण समाजवाद के यद्यपि इतिहास-वस्तु का

आरम्भ मोर्ची से हो जाता है। बाद के संस्करणों में उपन्यासकार ने इसकी भाषा में बड़ा सुधार किया।

मीमेंट' के बाद यमिन्-बर्ग और पुनर्निर्माण के इस युग की बनना के निर्माणकारी कार्य से संबंधित और बहुत सी कृतियों भी सामन आईं। इनके माय ही बलेनसेई टौन्स्त्रोय एरिम्प्यान विरक्त स्थाम्बकी बियों के लखों ने तथा बर्सेतिएब की कहानिया ने ('एक रात') और स्यारको की कथा (मद्दी) ने पाठकों का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया। ये कृतियाँ बड़ी लाकप्रिय हुईं।

राज-क्षेत्र को अन्त विचारों के समान इस युग का रंगमंच भी उद्भान्तिर मान्य से जोयजात है। कम्युनिस्ट पार्टी ने अपने सोवियत रंगमंच के लिए बड़ा प्रयत्न किया और इस बात का भी प्रयत्न किया कि रंगमंच जनता के निकट जा जाय और रंगमंच के अमिताय और कार्यकर्ता कसी रंगमंच और नाट्य कला की प्रगतिशील परंपराओं को अपना लें। बर्तीत की रंगमंचीय संस्कृति की प्रगतिशील परंपराओं को विकसित करते हुए और नयी सोवियत-कला का प्रदर्शन सुवर्धन करते हुए सोवियत-रंगमंच पार्टी की प्रगता पाकर पामसिजम राजनीति से तटस्पता बाधि न विरक्त धाम्नीकन करता रहा। सोवियत-नाटककारी ने एक ओर तो अतीत में कसी जनता द्वारा स्थायीता के लिए किए गये युद्धों का चित्र प्रस्तुत किया और दूसरी ओर मुहमुड तथा सोवियत युग की घबारांताओं का अंकन किया। मिष्योव के नाटक पुमाचोव रिचना में किजाल बिरोह के नेता पुगाचोव का चित्र अंकित किया गया है। इसी प्रकार बिग्न-बेनोदमरकीम्बकी के नाटक 'वुडान' में एक छोटे से शहर में बोसोविकों का आन्ति-बिरोधियों ने युद्ध चित्रित किया गया है। इसी युग में रपाचोव का अर्ग नाटक 'हवाई गुमिया' प्रकाशित हुआ जिसमें स्वापारी-बर्ग और बिकारी-बर्ग का महात्त उड़ाया गया है। इनमें उन तीनों की लाकचा प्रवृत्ति का बड़ा मत्रीय अंकन हुआ है।

काव्य के क्षेत्र में इस युग में मायाकीष्की तथा देम्प्यान बेदमी के माय बडिमम्बकी, बारीव स्वेतमोव तथा क्रिस्टन जैम अचाम कवियों

अपने अन्वितमय काम में लग हुए हैं। ऐसे बड़े जोर के साथ उन सबका विरोध करता है जो कारखाने की उन्नति में बाधक है। पुनर्निर्माण का अनवरत परिश्रमशील कार्य उपन्यास की पट्टाओं का मूल मापार है। कारखाने का पुनर्निर्माण जिससे कि वह देश के समाजवादी जीवन में बोल दे सके यह कार्यों का पुनर्निर्माण भी है। एक धीरे धीरे धमिक बर्ष का संयुक्तकर्ता और नेता बन जाता है। कारखाने का कारखाने का इन्जिनियर उसमें सफल और साक्षयान रहता है किन्तु वाय में अपने कारखाने के पुनर्निर्माण में लगे मजदूरों के परिश्रम और जोर को देखकर उनके हृदय में भी उच्च मानवीय भावनाया का उदय होता है और वह उनके कार्य में उनका पूर्ण सहयोगी बन जाता है।

परिश्रम ही हम उपन्यास की विषय-वस्तु है। हम परिश्रम के विषय में उपन्यास के मायक का यह कहना है कि स्वच्छन्द और श्रिय परिश्रम ही जीवन का मापार हुआ। स्वच्छन्द व्यक्ति का निर्माणकारी परिश्रम उसे सर्वशक्तिमत्त्व बना देता है उसका परिश्रम प्रकृति पर विजय दिखाता है जीवन को सुगठित करता है और संसार को सजाता है। हमी बिचार का उपन्यास में बिकसत हुआ है। उसकी पत्नी बाया का चित्र साक्षयत साहित्य के उन चित्रों में से है जिनमें मरी प्रकार की स्त्री दिखाई गई है या आधुनी के माय समानाधिकार के माय नये जीवन के निर्माण में कार्यशील है।

समादकार का पागवान हम बात में है कि उसने साक्षयत साहित्य में पहले पहले व्यापक प्रकाशमय उपन्यास के रूप में अवतूबर अन्ति की परिस्थिति के बीच धमिक-बर्ष के निर्माणकारी परिश्रम का चित्रण किया है।

गीमेट के बाद बहुत ही श्रुतियाँ सामने आईं जिनमें हमी विषय-वस्तु का चित्रण किया गया और जिनमें समाजवादी व्यक्ति की नयी चिन्तनाएँ गिनाने का प्रयत्न किया गया या पुनर्निर्माण या नवनिर्माण में लगा है। एक तथा बाया के चित्र बाद में साक्षयत साहित्य में प्राप्त समाजवाद के निर्माणवादी के चित्रों के आरम्भिक रूप हैं यद्यपि इन विषय-वस्तु का

भारतम पोर्ची से हो जाता है। बाद के संस्करणों में उपन्यासकार ने इसकी भाषा में बड़ा सुधार किया।

सीमेंट' के बाव भूमि-बर्न और पुनर्निर्माण के इस युग का जनता के निर्माणकारी कार्य से संबंधित और बहुत सी कृतियाँ भी सामने आईं। इसका साथ ही बलकसेई लोम्स्टोप, लुमियान सितकाब स्ताम्स्की जिगी के लेखों ने तथा बर्सेतिण्ग की कहानियों ने ('एक रात') और स्प्रादको की कथा (भट्टी) ने पाठकों का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया। ये कृतियाँ बड़ी लोकप्रिय हुई।

गण-सेवा की अन्य विधाओं के समान इस युग का रंयमञ्च भी सैद्धान्तिक संघर्ष से अतिप्रोत्थित है। कम्युनिस्ट पार्टी ने नये सोवियत रंगमञ्च के लिए बड़ा प्रयत्न किया और इस बात का भी प्रयत्न किया कि रंयमञ्च जनता के निकट आ जाय और रंयमञ्च के अभिनेता और कार्यकर्ता सभी रंगमञ्च और नाट्य कला की प्रगतिशील परंपराओं को अपना लें। मतीथ की रंयमञ्चीय संसृष्टि की प्रगतिशील परंपराओं को विकसित करते हुए और नयी सोवियत-कला का प्रदर्शन समर्पण करते हुए सोवियत-रंगमञ्च पार्टी की प्रेरणा पाकर फार्मलिरम राजनीति से तटस्थता भावि के विरुद्ध आन्दोलन करता रहा। सोवियत-नाटककारों ने एक ओर तो अतीत में कही जनता द्वारा स्वाधीनता के लिए किए गये युद्धों का चित्र प्रस्तुत किया और दूसरी ओर गृहयुद्ध तथा सोवियत युग की पक्षार्थताओं का संकलन किया। विर्योव के नाटक मुयाचोव विचना में किसान मिरोह के नेता पुगाचोव का चित्र अंकित किया गया है। इसी प्रकार विर्य-रेओरेरेकोम्स्की के नाटक 'तूफान' में एक छोटे से शहर में बोलेविकों का आगित-विरोधियों से युद्ध चित्रित किया गया है। इसी युग में रमायोव का श्रंग नाटक 'हवाई बुनिया' प्रकाशित हुआ जिसमें व्यापारी-बर्ग और अधिकारी-बर्ग का महाकाव्य उड़ाया गया है। इसमें उन सीनों की मास्की प्रकृति का बड़ा सजीव अंकन हुआ है।

काव्य के क्षेत्र में इस युग में मायाकोव्स्की तथा देम्यान बबनी के साथ बबिगेम्स्की जारोव स्वतकीव तथा छतिकम जैसे जवान कवियों

के नाम भी जुबाई बैठे हैं। तीसनाब का नाम भी इस समय बड़ा साहसप्रिय हुआ। इन 'कमसोमोल' कवियों की प्रतिमा के साथ-साथ मोवियत-काव्य यथार्थता की ओर भी उन्मुख हुआ। यद्यपि अभी इन कवियों की प्रतिमा प्रौढ़ नहीं हुई थी फिर भी उनमें अग्नि का पूरा बेज और साम्यवाद की विजय का अद्विज विरवाह था।

बेजिमिंस्की के काव्य-समूह 'जीवन कैसे महक रहा है' में कवि यथार्थ जीवन की ओर उन्मुख है और देश के तवीन का रंग का चित्रण कर रहा है। यथाय जीवन की छोटी-छोटी बातों में और प्रतिदिन के निर्माणकार्य में कवि को विश्व अग्नि के महान् विचारों की सफ़क विनाई पड़ती है। इसी प्रकार 'कमसोमोल' काव्यमें प्रान्तिवारियत् साहित्य के राजनीतिक सिद्धांतों की सफ़क है। यह काव्य जल्दाही 'कमसोमोल' समुदाय या समूह का चित्रण करता है जो लक्ष्य की एकता से संप्रविष्ट है और जो साम्यवाद की विजय के लिए हर प्रकार की कठिनाई सेलने की तय्यार है।

बेजिमिंस्की यनोरनी स्वेतमीच देम्यान बेवनी के भीत मोवियत जनता के जीवन में पैठ गये और उनका सामूहिक जन-वीता का विकास का आग्रह हुआ। ये तीन सन्तुष्टीय के खमाने में बड़े व्यापक हुए। इन वीता के नायक पैग के लक्षक माहली बीर, मोवियत-मैनिफ हैं।

इसी वर्षों में निकोलाइ तीगनोव के वीत (बैनेड) बड़े लोकप्रिय हुए। इन गीता में अग्नि के माहमी सैनिक का बड़ा मजबूत चित्र उभरा है। खाने अग्निदारी कर्षणों को मममने वाला और मजबूत माहन अ युक्त यह समकालीन मैनिफ ही तीगनोव के वीता का नायक है।

इन युग के मोवियत-काव्य में अमेयेड का प्रमुख स्थान है। इसकी कविता अग्निदारी वाचना के संकल्प और मोवियत जीवन ममावकारी रूप तथा निर्वास के मवचिन है। उनके काव्य 'छप्रीन' में कविकाव के उन साहमी बोधोविहों का वर्णन है जिनका नेता स्थान महम्म्यान

या और जो १९१८ में ब्रिटिश साम्राज्यवाद की गोली का शिकार बना।

क्रान्ति द्वारा पाँवों के रूप रंग में जो परिवर्तन हो गया है और उनका जो निर्मासकारी कार्य चल रहा है उनकी काम्यात्मक अभिव्यक्ति ईसाकोष्की के काव्य में हुई है। अपनी संगीतात्मकता सज्जितता और क्लासिकता में ये रचनाएँ गीतों के अधिक निकट हैं जिनका ईसाकोष्की आगे चलकर कुसल भाषार्थ और रचनाकार बन गया। इन रचनाओं का मूल भाव समाजवादी युग में गाँव और दाहरों के बीच की असादिकता के प्रतिच्छिन्न भाई को मष्ट करता है। कवि गाँव के जीवन में महीन-रेडियो बिजली ट्राक्टर आदि के प्रवेश से प्रसन्न है। ईसाकोष्की जनता का एक में मिश्रान वाले सामूहिक परिभ्रम का गूँघगान कर रहा है जो कि मोर्छों के शब्दों में पृथ्वी पर चमत्कार की सृष्टि करता है।

संक्षेप में इस युग के समाजवादी काव्य की विशेषताएँ हैं—परिभ्रम की काम्यात्मक अभिव्यक्ति कला का जीवन के निकट जाना प्रगीतों के मायक का गंभीर जकन जो सोवियत-सैनिक और ग्रामिक की सामान्य विशेषताओं से समन्वित है तथा रोमांटिक बेव से युक्त अपारम्भवादी ठोस उच्च की ओर प्रवृत्ति।

शावित्त-साहित्य के इतिहास में गृह-युद्ध और जातीय भाषिक व्यवस्था के पुनर्निर्माण के वर्ष बड़े महत्त्वपूर्ण और सर्जना से परिपूर्ण वर्ष माने जाते हैं। इन्हीं वर्षों में अनात्मक साहित्यिक आन्दोलन को व्यापकता प्राप्त हुई जाती है। १९१७-१८ में फुरमानोव और बेडिम्सकी साहित्य में आये १९२० में तीखतोव तथा क्लेरिन १९२१ में सेइ फूतिना आरोव पलावनी १९२२ में लिम्गेनोव १९२३ में वीकोवोव अवेवेव, १९२४ में पठम्जोवन्की और १९२५ में किग्मानोव साहित्य में आये।

इन्हीं वर्षों में मोर्छों की क्रान्ति के बाद की प्रतिभा प्रौढ़ होती है और उसकी रचनाएँ मौलिक विचार, विषय तथा विषय-वस्तु प्रस्तुत करती हैं।

इन्हीं वर्षों में मायाकोष्की की महत्त्वपूर्ण रचनाएँ सामने आती हैं जिनमें सोवियत देग-अन्वित की आबना और नये समाजवादी व्यक्ति का विश्व पूर्ण अभिव्यंजन प्राप्त होता है। इन्हीं वर्षों में गृह-युद्ध के



अनुभव भी साहित्यिक कृतियों में अभिव्यक्ति पाते हैं और उस समाजवादी सोवियत-वेद्यमन्त्र का भी चित्र अंकित होता है जिसका युद्ध समाप्त कर मष्टप्राय वेद्य के पुनर्निर्माण की व्यवस्था शुरू की।

इन्हीं वर्षों में ऐसी कृतियाँ भी प्रस्तुत हुईं जिनको सोवियत-साहित्य में महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त हुआ है। वेद्य के नये समाजवादी जीवन के अनुभवों में सिद्ध समाजवादी यथार्थवाद भी साहित्यिक क्षेत्र में कलारमक माध्यम के रूप में विकसित हुआ।

## ३ अलदीमिर अलदीमिरोविच मायाकोव्स्का

[ १८९३-१९६० ]

मायाकोव्स्की सोवियत-युग का महान् कवि है और अपन काव्य में मानवतावादी परंपरा बचाने के कारण पुस्किन केरमन्तोव मेखमोव जैसे बड़े कवियों की पंजी में बिना जाता है। इसके साथ ही वह सोवियत युग का कवि है और उसकी रचना सोवियत-व्यक्ति की मच्छी-प्रच्छी विगिष्टताओं (माहून स्वदेश-प्रेम सामूहिकता की भावना परिश्रम के प्रति उत्साह) का अभिव्यंजन करती है। इसी में उसकी लोकप्रियता बड़ी व्यापक है। उसकी सर्वोत्तम प्रतिभा में प्रवीण मुक्तक प्रबन्ध-काव्य नाटक व्यंग्य आदि सभी की रचना की।

मायाकोव्स्की को उत्तमक वा प्रचारक कवि कहा जाता है और वह इसलिए कि उसने प्रवीण मुक्तकों के साथ क्रांतिकारी राजनीतिक सांस्कृतिक जीवन में संबंधित रचनाएं प्रस्तुत की जिन्होंने जनता का उद्बोधन किया और जो जनता के बीच बड़ी प्रचलित हुई। उसकी कुछ पंक्तियां बस्तुओं की समीक्षाओं के रूप में क्रांति के समय बहुत सुनाई पड़नी थीं। उसके बहुत में प्रवीण-मुक्तक ऐसे हैं जिनकी विषय-बस्तु राजनीतिक है तथा जिनकी अनुमृतियां पाठकों में सामाजिक भावना जगाती हैं।

मानवतावाद, स्वदेश-प्रेम समाजवादिता क्रांतिवादिता के भाव तथा अभिव्यंजना में सर्वोत्तम उदाहरणों को साथ प्रचारककृता प्रगीतारमकृता आदि न मायाकोव्स्की को सोवियत-साहित्य में अनुपम स्थान पर प्रतिष्ठित कर दिया।

जीवन

मायाकोव्स्की का जन्म १८९३ में आर्जिया के एक गाँव (बगवावा)

में हुआ था। उसका पिता जंगल में मौकर था। सन् १९०५ से ही स्कूल में पढ़ने हुए मायाकोव्स्की राजनीतिक कारवाहियों में प्रदर्शन समा आदि में भाग लेने लगा था।

१९०६ में उसके पिता की अचानक मृत्यु हो गई और परिवार को मास्की आना पड़ा। परिवार को अपनी आवश्यकता-पूर्ति के लिए कमरे किराए पर उठाने पड़े और सौधों का धाना बनाना पड़ा। आतिथारी विद्यालयों में कमरे के सिधे और यही वे अपना काम करने लगे। बालक मायाकोव्स्की इस प्रकार आतिथारी-साहित्य और कार्यकलाप से परिचित हुआ। इस बीच उसने दर्शन और कला का पर्याप्त अध्ययन किया। अध्ययन की पुस्तकों में माक्स के 'कैपिटल की मूमिका' में उने बहुत प्रभावित किया।

१५ वर्ष की उम्र में मायाकोव्स्की रूसी सोशल डिमोक्रेटिक पार्टी में शामिल हुआ। इस समय वह कला-स्कूल में पढ़ता भी था। इन्हीं वर्षों में वह तीन बार गिरफ्तार किया गया किन्तु उम्र कम होने के कारण उसे छोड़ दिया गया। फिर भी कई महीने (सात महीने) उस जेल में रहना पड़ा और उसने इस समय का आत्म-विश्लेष के लिए पूर्ण अनुयोग किया।

जेल से छूटने पर उसने कला-स्कूल में पढ़ना शुरू किया। यही उमर का बुद्धिक म परिचय हुआ था कि एक कला के प्रतिष्ठ स्कूल—पपचरिखम 'अनिप्यारा' का प्रतिनिधि था। इस प्रकार वह पपचरिखम के प्रभाव में आया।

१९११ में एक सप्ताह सामाजिक दल की 'सोशली' निरसा क्रिममें पपचरिखम का सामूहिक वैनिट्टी प्ररागित हुआ था और क्रिममें मायाकोव्स्की का भी हुलास था। इसमें मायाकोव्स्की का श बलिगाए पी—राग और गुबह'। इन्हीं वर्ष उमकी बलिगात्रा का पहला मडह वै निकला।

१९१४ में वह अन्ति के पूर्व की अपनी उमर बलिगा 'पपचरिखम में आदल की रचना में लगा। पपचरिखम के माय पन्डिट में बलिगा पढ़ने

के कारण उसे स्कूल से निकाल दिया गया। १९१५ में पहली बार उसका मार्की से परिचय हुआ। उसने अपनी कविता 'पतझूम में बादल' का कुछ बर्णन उसे सुनाया। मार्की ने उसे अपनी पुस्तक 'बचपन' में ट की।

१९१५ से वह अपनी रचनाएं नये ध्यम्य पत्र में छापाने लगा। बाद में स्वयं-कविताओं से मुक्त उसके ध्यम्य-चित्र बहुत लोकप्रिय हुए।

१९१६ में मायाकोष्ठी अपने दो प्रबन्ध काव्य 'मुझ और शांति तथा 'मनुष्य' की रचना में लगी। १९१७ में उसने अपनी कविता 'मनुष्य समाप्त की। करवटी की बुर्जुआ डिप्लोमेटिक अन्ति को उसने श्रमिक आन्दोलन या मजदूर की बाढ़ का प्रथम दिन' कहा। मायाकोष्ठी यह दिन अन्ति के गहर पेरोबाद की सड़को पर बिताता है।

जब 'जबरोय' पहला की लोपों के साथ अन्ति के नये युग की गूँज सुनाई पड़ी उस समय मायाकोष्ठी अन्ति के केन्द्र स्तोत्रनी में ही था। इस प्रकार अन्ति के वातावरण के बीच मायाकोष्ठी की रचना का विकास शुरू हुआ।

मायाकोष्ठी की रचना का आरम्भ प्रयुक्ति में के बीच होता है। उसने पश्चिम में उनकी ओर से रचनाएं पढ़ी और उनके मैनिफेस्टो पर हस्ताक्षर किया। रचना के आरम्भिक वर्षों में उसके ऊपर प्रयुक्ति का प्रभाव था। उसने लिखा कि "विचार पत्र को जन्म नहीं देता बल्कि शब्द विचार को जन्म देता है—विचार या कथामक नाम की कोई चीज नहीं है।"

किन्तु जाने बकर अन्तिकारी आन्दोलन के अनुभव मार्क्सवादी विचारों से परिचय तथा मार्की के प्रभाव ने उसको शरीर-शरीर प्रयुक्ति से बचाने में मदद की और उसके दृष्टिकोण को बदल दिया। कला को सामाजिक अभिव्यक्ति के रूप में ग्रहण करने के कारण मायाकोष्ठी ने काव्य में सामाजिक जीवन के मुझ में योग देने की मांग की। मायाकोष्ठी ने लिखा कि 'आज की कविता मुझ की कविता है। उसने यह भी कहा कि 'अपनी कविता-अपनी भाँवे पेश कर रही है। उसके लिए अभिव्यक्ति के नये

साधन चाहिए, नये गद्य चाहिए । उसने लिखा कि नये काव्य को पुराने ढंग से नहीं लिखा जा सकता ।

‘पतलून में बादल’

इस प्रकार मायाकाव्यकी पुनश्चरित्रमको छाड़कर साहित्य-राज में क्रांतिकारी कवि और मनीनता के उद्भावक क काल में प्रकट हुआ । हिन्दु उमका नाम उस समय से महत्त्वपूर्ण कवि के रूप में फैला जब उसकी कविता पतलून में बादल (१९१५) प्रकाशित हुई । इस कविता के चार अध्याय हैं । इसकी रचना के माप कवि की सामाजिक हलचल पान वाली क्रांति की भावना और चेतना संबंधित है । वह स्वयं सिंगता है ‘बादल’ सिंग रहा हूँ निकटस्थ क्रांति की चेतना बुझ हुई । इससे साब ही कवि में अपनी कलात्मक तथा विचारान्तरक प्रीकृता की भावना भी बुझ हुई । वह लिखता है कि प्रीकृता का अनुभव कर रहा हूँ । विषय-वस्तु पर अधिकार प्राप्त कर सकता हूँ । उन कलात्मिक कर्तव्य । विषय-वस्तु का प्रथम प्रस्तुत कर रहा हूँ—काल के बारे में पतलून में बादल’ के बारे में सोच रहा हूँ ।

जब मेंकर ने इसके पहले के दौरिक (तीन मैना) का वर्णनात्मक बतकर उसकी महमति नहीं ही तो आसून में कही गयी तुम्हारा या उसने प्रयोग किया । यदि बादले ही तो बिनस नूँगा । भाग्यी न नहीं पतलून में बादल । उसने इन कविता के बारे में मुमिरा में बताना कि— पतलून में बादल का मैं आज ही कला की आलोचना समझता हूँ । तुम्हारे प्रेम का चेतन हा तुम्हारी कला का पतन हा तुम्हारे पथ का पतन हो तुम्हारे समान का पतन हा ।”

इन गल्पों में इन कविता के मूल भाव अभिव्यक्ति हा मय है । कवि कृत्रिम प्रेम की भर्त्सना करता है । मानवय अनुमृतिनां गत्यानुमृति मुठे सामाजिक नवपा क बाल्य ठाग ही जाता है । इसमें इन नवपा का नाग हा और उन समाज या नगठन या स्तर का नाग हा या मानवीय अनुमृतिनां की नरयता में बाबा पट्टेबाग है । इसी तरह उन मुने प्रेम का नाग हा जो उन समाज में सामान्य का में फैला है । इन कविता में व्यक्ति-

नत पीड़ा व्यापक सार्वजनिक रूप प्राप्त कर सती है। कवि की व्यक्तिगत दुःखेड़ी उसके माथ ही हजारों दूसरे बेजबान लोगों की सौ दुःखेड़ी है जिनकी वार्त्ता कवि मायाकौमुदी बनना चाहता है। वह समकालीन जनता को क्या इच्छा और आन्दोलन को प्रकट करना चाहता है।

मायाकौमुदी न जिस प्रकार झूठ प्रेम पर धार किया उसी प्रकार झूठे धर्म पर भी। जमान सामाजिक असामंजस का समझा और उसका अनुभव किया। व्यक्ति तथा कवि दोनों कपो न मायाकौमुदी न यह निर्दिष्ट कर दिया कि जब भाव इसी तरह मौना नहीं हो सकता और यह कि पुरानी दुनियाँ काश्चिरी मौन में रही है। कवि अपने को भरनी वाली हुई कान्ति का एक हिस्सा समझता है। अपने को वह कान्ति का सघनत समझता है। वह कान्ति की सेवा में सदा है। कान्ति के लिए वह सब कुछ करन का तैयार है। "तुमको (कान्ति) मैं अपना हृदय निकाल कर दे दूँगा। मृत में रख दूँ हृदय का तुम्हें सड को तरह दे दूँगा।

इस कविता में मायाकौमुदी की मौलिकता प्रकट होती है। यद्यपि काव्य-युक्तियों काव्य-विषय में संबंधित है। पुरी कविता एक आदमी के स्वगत कवन क रूप में है जो सब चीजों के बारे में कहना चाहता है और विषय उन से यह कहना चाहता है कि ज्ञान न ज्ञानक परिवर्तन आवश्यक है। नायक का कान्तिकारा मनोभाव पूरे काव्य को एकता प्रदान करता है और इस प्रकार एक विषय से दूसरे विषयान्तरण इसी माथ से प्रविष्ट प्रतीय होता है। उसकी काव्य-युक्तियों की कवि क कान्तिकारी अनुभव और संस्कारों से युक्त है।

इस कविता की भाषा भी मौलिक है। कवि ने एक धार ता इस प्रतीक-काव्य में ऐसे शब्दों का उपयोग किया जो इस प्रकार के काव्य के लिए निम्न समझ जाय न और हमारी भाषा नये शब्दों से सहे। किन्तु य नये शब्द मायाकौमुदी न कती भाषा की प्रकृति और व्याकरण के संस्था अनुकूल नहूँ। उनकी प्रकृति के विच्छेद नहीं। यह नये शब्द एक ही भाषा क सूक्ष्म अन्तर और रंगों को प्रकट करने हैं। इसी प्रकार कविता की अर्थान और भाषाबोध से उसका पथ विकास भी अत्यधिक प्रभावित है।

## मायाकोष्ठी का कान्ति क पूर्व का व्यंग्य

मायाकोष्ठी में व्यंग्य की प्रतिभा थी। प्रथम महायुद्ध के समय की परिस्थितियों ने हमें और भी उद्बुद्ध किया जब उसने कहा कि बुर्बुआ और सीतागर बीच बच देने का सम्पार है और जनता का खून बह रहा है। इसीलिए उसकी धार्मिक अनुभूति व्यंग्यात्मक पराक्राम करनेवाली रचनामा में प्रकट हुई। हीरोइक नायक किसने को उसकी इच्छा व्यंग्य रचना के रूप में प्रकट हुई। उसको काव्य और व्यंग्य में भरी मञ्चाक उद्घाटनवाली रचनाएँ 'नए व्यंग्य' पत्र में प्रकाशित हुई। 'रिबल का पीठ' ग्याय का पीठ' रचनाओं में कवि ने आरसाही के मासन और कार्यकर्ताओं पर कटाव किया जो महान किया करते थे और बपटरी बागडों में बूढ़े रहते थे। उन पर मार्मिक व्यंग्यपूरा बटाव किए। उनमें मोटे पूंजीपतियों पर (छाने का पीठ) भी बहुत व्यंग्य किया। पूंजीपति का पट पनामा में है। यदि मनुष्य का पट पनामा में बदल जाता है तो वह अर्थिमाइटिज और हैज में पीड़ित होने के अनिश्चित और क्या है? जवन व्यंग्य में मायाकोष्ठी अस्पृशित का एसा प्रयोग करना है कि बन्धु का व्यंग्यपूर्ण विरुद्ध चित्र प्रस्तुत हा जाता है। फिर भी उसका यथार्थवादी आपार बना रहता है और यथार्थ तथा अनिश्चित एक में मिल जाते हैं और बड़ तीव्र बन जाने हैं। यह विरुद्ध अरुन यथाय म विद्यमान सामाजिक बहाई का उद्घाटन करता है। अनिश्चित के कारण य जवन कभी-कभी महान हास्यप्रद ही नहीं रहने बल्कि भयप्रद भी बन जाने हैं।

मन् १९१५-१६ की मायाकोष्ठी की व्यंग्यात्मक कविताएँ बचम कान्ति क पूर्व की यथार्थ चिन्ति का मञ्चाक ही नहीं हैं बल्कि पूंजीवादी रणर की मानवता विरोधी चिन्ति का पराक्राम भी करती हैं।

## युद्ध और शान्ति, मनुष्य

इन व्यंग्यपूर्ण कविताओं के साथ-साथ मायाकोष्ठी में तीन कविताएँ लिगी। 'पनेरना-गरराबिक' (१९१५) 'युद्ध और शान्ति' (१९१९) और 'मनुष्य' (१९१७)। इनके अंत में भी बड़ी समरवा है जो व्यंग्य के मूल

न है—पूबीबाब के मानवता विरोधी अस्तित्व की समस्या । किन्तु इसका उच्चाटन सर्वथा दूधरी प्रकार हुआ है । उसकी पहली कविता में कवि उसकी ब्रेवरी को वह व्यक्ति छीन लेता है जिसके पास बहुत पैसा है जबकि वह प्रेम को खरीद लेता है । 'युद्ध और शान्ति' में कवि साम्राज्यवादी (प्रथम) महायुद्ध का विरोध करता है जिसे कि प्रमु-बर्न न अपने स्वार्थ के लिए छोड़ा है । इनके केन्द्र में 'मनुष्य' है जिसकी अविभक्त प्रगतितात्मकता के माध्यम से कवि ने उत्तम पुरुष में' में हुई है । यह मनुष्य मायाकोष्की की कविता का नायक है । उसका माध्यम उसका मुख धम की शक्ति के विरुद्ध प्रस्तुत किया गया है । पूबीबाब के विरुद्ध मानवता की यह प्रतिस्थापना बड़ी शक्ति (और गहराई) के साथ मायाकोष्की की शान्ति के पूर्व की संज्ञा में और उसकी कविता 'मनुष्य' में अभिव्यक्त हुई है । बाइबिल के समाप्त होने के अन्त्योक्तियों का नामकरण किया गया था । बाइबिल की इस युक्ति का मजाक बनाया गया है । मायाकोष्की का जन्म मायाकोष्की का जीवन फिर भी सब मजाक नहीं है और मायाकोष्की इस कविता के द्वारा वह कहना चाहता है कि मनुष्य इस पृथ्वी पर सबसे बढ़कर है । उस मनुष्य का एक प्रतिद्वन्द्वी है जिसे कवि ने 'पेबा' कहा है । यह सबका मार्गिक है और यह पूबीबाब का प्रतीक है । मनुष्य सबसे इस बात में बढ़कर है कि उसके पास हृदय है । यह मनुष्य की सबसे मूल्यवान् वस्तु है । यह हृदय मानवता के मुख के लिए अपनी अग्नि देने का तैयार है । इसी से मायाकोष्की इसे मनुष्य की अमूल्य वस्तु मानता है ।

स्वतन्त्र मनुष्य की वह मानवतावादी मान्यता मायाकोष्की के मन में जाने वाली समाजवादी शान्ति से बँधी हुई है । शान्ति से पहले तक स्वतन्त्र मनुष्य का यह चित्र मायाकोष्की के लिए केवल अविष्य की कल्पना है । अन्तही मानवता की उपलब्धि उस अकालीन की उसी समाजवादी शान्ति में हुई ।

१९१७-१८ के वर्षों में मायाकोष्की

१९१७ की शान्ति के बाद से मायाकोष्की का कार्यकाल और



शोरों से बसा। यह कला-राज के कार्यकर्ताओं की समाधों में भाषण देता है। 'आसिम' (समाजवादी कला समिति/एसन) 'इमो (बच्चों की कला) जैसे प्रकारना का संगठन सामयिकी सारका की इतियो क छपाने क लिए करता है और मडबूरी सिपाहिया और मी-मैजिकों के सामने कबिताए पढ़ता है। इसके अतिरिक्त यह तीन दिवसा में गिनेमा-मभिनता के रूपमें काम करता है जिसकी सिमारियां (किस्म कला) उसमें प्रस्तुत की थी।

अबुबकर कान्ति के वापिकोस्सब के पूर उसने अपना नाटक मिस्त रिया बूक छप्यार कर लिया थी वापिकोस्सब के दिन बड़ी सफरता क साथ छेसा गया। यह 'अपन मुम का महाकाव्यात्मक तथा ध्यंभ्यारमक चित्रण है। कूनाबास्की ने कहा कि 'दम इति की विषय-वस्तु समकालीनता की सारी व्यापकता और बिराटना के साथ ही गरा है। कान्ति के चित्रण में मायाकोम्पकी बड़ साहम भीरता और 'मिम्परिया' के साथ उपहाम (बूक) का समिभण कर रता है। कान्ति के पराजित घबुजा की हंमी हाठी है। मरक तथा स्वग के चित्रण में भी तीत्र उपहाम है।

१७ दिसम्बर १९१८ में मायाकोम्पकी को मी-मैजिकों के नामने कबिता पढ़न का आमत्रित किया गया। इसकी छप्यारी करते हुए उमन बाण ध मार्च (पीवी कूब) लिया।

### कान्ति क विषय में कबिता

कान्ति क बाद मायाबाष्परी में बटून मी कबिताए लिगी जिसमें से कई बटून प्रमिड हूँ और बिदगी आपामा में अनुरित की गई। यह कानि क विषय में या कान्ति में कला क स्थान क विषय में है। कानि की साबता में उमरा प्रतिमा का और भी उदुबुड किया और नय युग तथा मानवता क बिगाट एतिहासिक मोड़ की अनुभूति में उमरी कबिता में बड़ा गरित री। बटू कान्तिचारी उमरा का कवि बनना भी चाटना था। कान्ति के बाद उमरी कबिता का स्वर बदल जाता है और उमम स्वगत मनुष्य

उम्कत प्रतिमा के अपार हर्ष शक्ति और उरसाह के स्वर में सुनाई पड़ते हैं।

### कला और क्रांति

कान्ति न उसमें हिम्मेवारी की भावना-देश तथा जनता के प्रति उत्तर शायित्त-को और भी वृद्ध किया। उसका विदबास है कि कान्ति के युग में कला जनता के लिए और भी आवश्यक है क्योंकि जनता को प्रभावित करती हुई वह बहुत बड़ी शक्ति बन सकती है। इसी से वह चाहता है कि कला महत्ता संघर्षात्म्यो से निकल कर सड़क पर आ जाय जनता के पास पहुँच जाय और इतिहास की महान् घटना कान्ति के उरसब के हर्ष को प्रकट करे। मायाकोष्की की कला की सेना को हुबन नामक कविता हर्ष उरसाह, क्रांतिकारी आग और ज्वाली के जोष से भरी हुई है। कवि नये जीवन्त कार्य की ओर सबको प्रेरित कर रहा है। सबका आह्वान कर रहा है। वास्तव में कवि अपने को ही संबोधित कर रहा था।

### रोस्ता और मायाकोष्की

१९१९ में मायाकोष्की ने 'रोस्ता' (स्वी टार एजेंट) कला विभाग का संगठन किया जिसमें 'रोस्ता की व्यंग्य की लिङ्कियाँ' या 'रोस्ता की लिङ्कियाँ' निकालनी शुरू कीं। यह विभाग प्रकार के पोस्टर के त्रिम पर सामयिक विविध विषयों या घटनाओं पर हाथ से रंगीन चित्र बन रहते थे और प्रायः उनके नीचे कविताएँ भी लिखी रहती थीं जो दूकानों में लटकायी जाती थीं। मायाकोष्की का कला-मनूस का ज्ञान यहाँ काम आया। इस प्रकार उसने सभी कलाओं को जनता की जतना उद्वुद्ध करने में और जनहित में लगाया। उसकी व्यंग्यात्मक कविताओं ने कलाघात का काम किया। १९०० पोस्टरों में से एक-दशमांश मायाकोष्की की पंक्तियों (गद्य तथा पद्य) पर आधारित है और एक तिहाई स्वयं कवि के द्वारा चित्रित है। 'रोस्ता' का काम गृह-युद्ध के कठिन समय में शुरू हुआ। यह क्रांतिकारी युद्ध के तीन वर्षों के चित्र है। गृह-युद्ध से लेकर अनेक प्रकार की घटनाओं का ध्व्यपूर्ण अंकन इनकी विषय-वस्तु है। अपनी इन कविताओं

के संघर्ष को मायाकोष्ठी ने भबंकर हास कहा—हास जिसने सैनिकों में  
सत्साह भय और घमृजों के हृदयों में भय । इस प्रकार जयने कविता और  
कला दोनों के द्वारा प्रचार का कार्य किया, जयता की सेवा की ।

कविता '१५ करोड़'

रोस्ता में नाम करते हुए भी मायाकोष्ठी ने १९१९-२० के बीच  
'मिस्तेरिया बूठ' का संघोषण किया और बड़ी कविता १५०००००००  
लिखी ।

इस कविता की विषय-वस्तु इज्जत का विस्मय से युक्त है । इज्जत  
काठिबारी कम है और विस्मय पूंजीवाद का रूप है । इस दोनों प्रतीकों  
के माध्यम में मायाकोष्ठी ने पूरे ऐतिहासिक युग का वस्तु-तत्त्व दुनिया  
का समाजवाद और पूंजीवाद के दोनों में विजादन प्रस्तुत कर दिया है ।  
ये होना वा विचारों के रूपों के प्रतिनिधि है । मायाकोष्ठी ने इस  
कविता को विमोना (लोक-प्रवचन-काव्य) भी कहा है । काक काव्य  
के समान इसमें भी शब्द का व्यापकपूर्ण अतिरिक्त चित्र प्रस्तुत किया गया  
है, जिसमें उमे पढ़ने गहन कोण-प्रवचन छाया वा ध्यान आ जाता है ।

नया स्वर

यह काव्य मायाकोष्ठी की बचनी हुई मनोवृत्ति को भी प्रदर्शित  
करता है जो कि बालि के बाद की अन्य कृतियों में भी मिलती है । बालि  
के पूर्व की रचनाओं में मायाकोष्ठी ने गहरी करणा मिलती है जिसके  
मूल में मानवतावादी पूंजीवाद की मानवता विरोधी स्तर की विषयता  
है, जिसमें बालि के बाद की रचनाओं में हर्ष और कुछ विस्मय का स्वर  
है । इस सर्व प्रतीकान्वय मनोवृत्ति ने उनके काव्य को संघन बनाया और  
उमे नया स्वर, नया लहजा दिया । हर्ष वा यह नया स्वर १५०००००००  
'मिस्तेरिया बूठ' तथा 'रोम्ना की गिहस्त्रियों में मिलता है । विषय रूप  
से कभी-कभी मायाकोष्ठी के माय परी में असाधारण पन्ना कविता में  
यह उगाह ध्वज के बीच टिप्पण मिलता है । इस कविता में पूर्व कवि के  
यहां केहनाम बन कर आता है और दोनों में बड़ी बानें होती हैं । दोनों

में मर्तव्य भी है, कवि और सूर्य दोनों का काम एक है और बड़ा महत्व-पूर्ण है। कवि जीवन में बही करता है जो सूर्य करता है—सब जीवधारियों के विकास में मदद करता और जीवन में से अन्धकार को दूर करता। कविताओं का वैसा ही प्रभाव पड़ना चाहिए जैसा सूर्य की किरणों का। कवि अपने स्वयं से उसी प्रकार नहीं बिरत हो सकता जैसे कि सूर्य अपने मार्ग से। इसलिए मायाकोष्ठी के लिए काव्य और कला दोनों प्रकाश के प्रतीक हैं।

कवि इसी के साथ अपनी जिम्मेवारी को भी नहीं भूलता और वह सब काम करता है, जो जरूरी है। जब सोवियत व्यापार संस्था के पोस्टरों के लिए उसने इसकी ध्वनि मिश्रित कविताएं लिखनी शुरू कीं तो उसकी आकांक्षा हुई कि मायाकोष्ठी वैसा बड़ा कवि ऐसी हलकी पीर से लिखे। मायाकोष्ठी ने आश्चर्य बिया कि मैं इसके बारे में लिखना चाहता हूँ क्योंकि यह जरूरी है। यह मायाकोष्ठी की विशेषता है। जो कुछ सोवियत शासन के लिए आवश्यक था वही मायाकोष्ठी की व्यक्तिगत इच्छा बन गयी। देश के व्यापक हित में ही उसने अपने व्यक्तिगत स्वार्थों को भिजा दिया। फिर भी यह कहना पड़ेगा कि प्रचार पोस्टरों की मायाकोष्ठी की रचना न मंभीरता में और न महत्व में 'रोस्ता' को पाती है। समाचार-पत्रों तथा व्यंग्यपत्रों में छपी हुई उसकी कविताएं 'रोस्ता' का ही विशिष्ट काम हैं। उसका इस समय के कार्य की दूसरी विधा प्रतीकारत्मक (प्रबन्ध) काव्य की है।

आगे चलकर सांस्कृतिक और सामाजिक समस्याएं भी मायाकोष्ठी के व्यंग्य की वस्तु विषय बन गयीं। सोवियत व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन की नकारात्मक प्रवृत्तियाँ अमिक बर्न पर—बुर्जुआ प्रभाव के विरुद्ध कुछ व्यूरीकटिश्म की आलोचना आदि ने सोवियत व्यंग्य रचना की माँग की थी कि स्वजाकोचना का साधन बन गईं। मायाकोष्ठी ने इसे अपना लक्ष्य बनाया। १९२२ में मायाकोष्ठी ने बराबर समा और बहम करमेवालों पर व्यंग्यपूर्ण कविता 'समाबाज' किन्नी जिसका अनुमोदन लेनिन ने भी किया। 'मायाकोष्ठी' का व्यंग्य विस्तृत ठीक था।

के संग्रह को मायाकोष्ठी ने संयोजित हास कहा—हास जिसने सैनिकों में उत्साह मरा और शत्रुओं के हृदयों में भय । इस प्रकार उसने कविता और कला दोनों के हाथ प्रचार का कार्य किया अनन्त कवि मया भी ।

### कविता '१५ करोड़'

रोम्मा में काम करते हुए भी मायाकोष्ठी ने १९१०-२० के बीच 'मिस्तेरिया बूठ' का संघीयम किया और वही कविता १५० ००० ०० मिली ।

इस कविता को विषय-बन्धु इबान का विषय में युद्ध है । इबान का विचार ही है और विषय पृथ्वीवाद का रूप है । इन दोनों प्रतीकों के माध्यम से मायाकोष्ठी ने पूरे ऐतिहासिक युग का बन्धु-बन्धु दुनिया का मनाबता और पृथ्वीवाद के लोभों में विभाजन प्रस्तुत कर दिया है । ये दोनों ही विचारों के संघर्ष के प्रतिनिधि हैं । मायाकोष्ठी ने इस कविता को 'दिलीना (सोक-प्रबन्ध-काव्य) भी कहा है । सोक काव्य के समान दुःख भी शत्रु का व्यंग्यपूर्ण अतिरिक्त विषय प्रस्तुत किया गया है, जिसमें उसे अपने समय सोक-प्रबन्ध-काव्य का ध्यान आ जाता है ।

### नया स्वर

यह काव्य मायाकोष्ठी की बड़ी हुई मनोवृत्ति को भी प्रकट करता है जो कि कालि के बाद की अन्य वृत्तियों में भी मिलती है । कालि के पूर्व की रचनाओं में मायाकोष्ठी ने गूढ़ि करवा मिलती है जिसके मूल में मानवतावादी पृथ्वीवाद की मानवता विरोधी स्वर की विषयता है, किन्तु कालि के बाद की रचनाओं में हर्ष और बड़ विराम का स्वर है । इस नए प्रगीतात्मक मनादृष्टि में उसके काव्य को संघर्ष बनाया और उसे नया स्वर, नया सहजा दिया । हर्ष का यह नया स्वर '१५० ००० ०००' 'मिस्तेरिया बूठ तथा 'रोम्मा की विद्वतियों में मिलता है । विषय रूप से 'कालिमाय मायाकोष्ठी के साथ र्नी में अनाधारण घटना' कविता में यह उल्लाह काव्य के बीच छिना मिलता है । इस कविता में सूर्य कवि के धर्म मेहमान बन कर आता है और दोनों में बड़ी बातें होती हैं । दोनों

में मसैवय भी है, कवि और सूर्य दोनों का काम एक है और बड़ा महत्त्व-पूर्ण है। कवि जीवन में बही करता है जो सूर्य करता है—मन जीवधारियों के विकास में मदद करना और जीवन में स अन्धकार का दूर करना। कविताओं का वैसा ही प्रभाव पड़ना चाहिए जैसा सूर्य की किरणों का। कवि अपने अन्ध स उसी प्रकार नहीं बिरत हो सकता जैसे कि सूर्य अपने मार्ग स। इसलिये मायाकोष्ठी के लिये नास्य और कला दोनों प्रकाश क प्रतीक हैं।

कवि इसी क साथ अपनी विम्वेशरी को भी गहीं मूस्ता और बहु सब काम करता है, जो अकरी है। 'बन साबियत व्यापार सस्या के पोस्टनों के लिये उसने हुस्की अंग मिथित कविताएं सिखनी दूक की तो उसकी आसाचना हुई कि मायाकोष्ठी जैसा बड़ा कवि ऐसी हुस्की पीब लिखे। मायाकोष्ठी ने बबाब दिया कि 'मैं इसके बारे में सिखना चाहता हूँ क्योंकि यह अकरी है। यह मायाकोष्ठी की बिसपता है। जा कुछ सोबियत शासन के लिये आबश्यक था बही मायाकोष्ठी की अकियत इच्छा बन गरी। देस क व्यापक हित में ही उसने अपने अकियत स्वार्थों को मिटा दिया। फिर भी यह कहना पड़गा कि प्रचार पोस्टग की मायाकोष्ठी की रचना न गमीरता म और न महत्त्व में 'रोन्ता' को पाती है। समाचार-पत्रों तथा अंगपत्रों में लपी हुई उसकी कविताएं 'रोन्ता' का ही बिकसित कम हैं। उसक इस समय के कार्य की दूमरी रिणा प्रमीतात्मक (प्रबन्ध) काव्य की है।

आगे बसकर सांस्कृतिक और सामाजिक ममस्याएं भी मायाकोष्ठी के अंग्य की बस्तु बियव बन गरीं। सोबियत अकियत और सामाजिक जीवन की नकारात्मक प्रबतियाँ अकिक बर्ग पर—दुर्जुमा प्रभाव क बिकर मूड अंगोकात्रिम की आलोचना आदि ने साबियत अंग्य रचना की मांग की जा कि स्वआसाचना का माधन बन गई। मायाकोष्ठी ने इसे अपना अन्ध बनाया। १९२२ में मायाकोष्ठी ने बराबर समा और बहुस करनेबासों पर अंगपूर्व कविता 'समाबाब' लिखी बियका अनुमोदन कैनिन ने भी किया। 'मायाकोष्ठी' का अंग्य बिकरुठ टीक था।

इजबेस्तिया' की इस कविता के बाद उसकी कविताएँ 'मास्को मजदूर', और 'बकिपास' = छपी जिनमें बहुत सी व्यंग्यपूर्ण की जो राजनीतिक नेताओं और पूँजीवादी शासन तथा ब्यूरोक्राटिज्म पर थी।

कविता ठसदीमिर ईलियच लेनिन

लेनिन के जीवमकाल ही में सन् १९२४ में मायाकोव्स्की ने अपने प्रिय नेता लेनिन के विषय में लिखने की सोची थी। किन्तु यह कार्य लेनिन की मृत्यु के बाद ही संभव हो सका। सन् १९२४ में यह कविता पूर्ण हुई। १९२५ में यह कविता प्रकाशित हुई। इसे कवि न रूसी कम्युनिस्ट पार्टी को समर्पित किया। मायाकोव्स्की की यह कविता कई जगह बड़ी सफलता के साथ पढ़ी गयी। लेनिन की छठी बापिकी पर कवि ने ४ दीमिर ईलियच लेनिन कविता का तीसरा भाग बस्योय बियेटर में पढ़ा। पार्टी ने उसका स्वागत किया और स्नाकिन ने उसकी प्रशंसा की। वर्तमान समय में इस कविता की व्यापक सोवियत सभ के बाहर भी बहुत ही और ससार की कई भाषाओं में इसका अनुवाद भी हो गया है।

'ठसदीमिर ईलियच लेनिन कविता मायाकोव्स्की के नायक-अंकन का विशिष्ट रूप प्रस्तुत करती है। इस कविता में मायाकोव्स्की का मानवतावादी आदर्श कवि के अपने प्रतीकारत्मक उद्गारा के माध्यम से नहीं बल्कि व्यक्त हुआ है (जैसे कि 'पतझूम में बायल' में) और न बनता के प्रतीकारत्मक रूप के माध्यम से (जैसा कि १५ .. .. कविता में) बल्कि यथार्थ व्यक्ति लेनिन के माध्यम से।

मायाकोव्स्की के लिए लेनिन सबसे मानवता का साकार रूप है। वह सबसे बड़ा 'मानवीय मानव' है। वह मरिच्य का कम्युनिज्म का मनुष्य है। उसकी आत्मा ने वह सब देख लिया जो कि समय के गर्म में छिपा था जिस पर समय का पर्दा पड़ा था। सनित व्यक्ति और युग के प्रतीक के रूप में नेता सनित इन बातों को मायाकोव्स्की की प्रतिभा ने यथार्थ सजीव चित्र में पूर्णित कर दिया। इस चित्र की प्रत्यक्ष रचना यथार्थ पर आधारित है और इसकी प्रसारकता इस बात में है कि नायक

की बाहरी स्मरणा के साथ उद्यम चरित्र वा (अनुभूति और विचार चारा) भी पूरा पूरा अभिव्यक्त हुआ है।

इस कविता की प्रबन्ध रचना में प्रबन्ध काव्यात्मक या ऐतिहासिक और प्रतीकात्मक या ईयत्तिक दोनों तत्वों का बड़ी कलात्मकता के साथ समाहार हुआ है। मनीष क कायकलाप के विषय ऐतिहासिक महत्त्व की प्रकट करण के लिए कवि को इस कविता में पूर्वीवाद के इतिहास के बीच दो तीन सौ वर्ष के कान्तिकारी आन्दोलन के प्रमुख तत्वों का समावेश करना पड़ा तथा उसकी जीवन की घटनाओं सम्बन्धित पार्टी की मुख्य संघर्षों १९०५ के अन्तिम आदि का भी उल्लेख करना पड़ा। मायाकोम्पनी इस कठिन कवि कर्म में सफल हुआ और ऐतिहासिक (या चटकात्मक) तथा प्रतीकात्मक (या अनुभूतिपरक) के सम्मिलित अभिव्यक्त से व्यक्ति और नता (या इतिहास निर्माता) के लिए का एक पूर्ण समन्वित चित्र प्रस्तुत कर सका।

इस कविता में मायाकोम्पनी ने पूर्वीवाद की उन तीनों मुख्य विषय-सामान्य का उद्घाटन किया है और जो कि साम्राज्यवादिता के युग में पूर्ण उत्कर्ष पर हाठी है और विनय कुटकार सिर्फ प्रोत्साहित करने के द्वारा ही निकल सकता है। ये विषय-सामान्य हैं—परिष्कार और पूर्वी की विषय-सामान्य साम्राज्यवादी रेषा में आपस में हमारे देश पर अधिकार पान की विषय-सामान्य तथा अस्वतन्त्र्यक प्रमुख और बहुसंख्यक उपनिवेशों की अज्ञानता के बीच की विषय-सामान्य। इनमें से प्रत्येक का स्वतन्त्र रूप से वर्णन हुआ है। किन्तु फिर भी अज्ञानता की अपने नेता-उद्धारक के स्वयं पर विश्वास की आवश्यकता इनमें एकात्मिक प्रस्तुत करती है और इनका एक में बाँध देती है।

मायाकोम्पनी पूर्वीवाद के पूरे विकास और उसकी संपूर्णता का चित्र प्रस्तुत करता है और कहता है कि इनमें चक्कर वा कठोरता निकल आता असंभव है। सिर्फ एक ही उस्था है और वह है हमका उद्घाटन।

हमके आने कवि पूर्वीवाद के भीतर ही से पैदा होनेवाली और विकसित होनेवाली शक्ति की चर्चा करता है जिसमें पूर्वीवाद का भाव निहित कर दिया। जिसमें नये प्रकार के नेता समाजवादी शक्ति के



नेता केनिन के प्रावुर्बाब को संभव किया। इन सबके बीच पैसा हुआ सामान्य बाइबल सेनिन को गिना और कश्मिकापी तैयारी के साथ प्रथम मध्याह्न समाप्त होता है।

दूसरे अध्याय में मायाकोम्प्ली केनिन का अकम इस के इतिहास के संबंध से करता है जहाँ पर केनिन का कार्य-व्यापार बना और जहाँ उसके विचार कार्यक्रम में परिणत हुए और जन्त में जिसके मनुष्य में इस में शक्तिशाली समाजवादी राष्ट्र निर्मित हुआ जिस साम्राज्य बाधियों के भी मायता प्राप्त हुई। संघार का पीचबा भाग मध्याह्न से अपनी टोपी और वाक उठाकर इतिहास के जनतन्त्र को प्रभाव कर रहा है।

मायाकोम्प्ली ने इस प्रकार केनिन के रूप में न कबल समाजवादी मनुष्य का ही चित्र अंकित किया है बरन् एक बेम और पार्टी के नेता के रूप में उसका ऐतिहासिक महत्व भी प्रदर्शित किया है।

जिस प्रकार काव्य में प्रबन्धात्मक या कथारूपक अथवा महत्त्व है उन्ही प्रकार प्रतीतात्मक अथवा भी इस काव्य के प्रभावबर्धन में भाग देता है। प्रथम भाग के आरम्भ में भी प्रतीतात्मक उद्गार है जिनमें से प्रत्येक की अपनी विषय-वस्तु है। प्रथम में मायाकोम्प्ली यह बताता है कि यह इसकी रचना क्या कर रहा है? इसकी क्या सामाजिक आवश्यकता है। द्वितीय प्रतीतात्मक उद्गार सेनिन के व्यक्तिगत चित्र की ओर ध्यान आकषिप्त करता है। केनिन मूर्ख है। यदि केनिन को मानवव्य मानकर उसने अपने व्यवहार, अपने विचार और धर्मों को खींचता है, तीसरा है। आगे यह कहता है कि केनिन के अभिप्रेत में धर्म महान है। तीसरे प्रतीतात्मक उद्गार की विषय-वस्तु केनिन है और उसके काव्यात्मक अंकन में बुझता है। इनमें सेनिन का चित्र प्रतीतात्मक मायक के रूप में उभरता है और यदि का आभावे सेनिन के संबंध से प्रकट होता है। इस प्रकार प्रतीतात्मक उद्गार काव्य की प्रबन्धात्मक और ऐतिहासिक सामग्री को अग्रिम प्रदान करते हैं और उन अपने रंग में रंग बैठे हैं। प्रतीतात्मकता अब विगरे अर्थों को एक में बाँध देती है।

लेखन की वस्तु पर क्मो बनता ने उने जो गाँव और मूक बिडा की दससे प्रभावित होकर मायाकोम्की ने अपने इस काव्य में पूछा कि 'बह कौन है उमन बना किया बह कहाँ मे थाया था त्रिमको जनता जाइ की इस छिद्रुन के बीच छोड़ो सम्मान और बिडाई के रही है? इन प्रश्नों का उत्तर प्रथम दा अध्यायों में दिया गया। घटना और कथा की दृष्टि से रचना पूरी हो गयी है किन्तु फिर भी कविता पूरी नहीं हुई। सभी मायात्मकता और प्रतीकात्मकता की भाँति बाँधी है। इसकी पूर्ति के लिए तीसरे अध्याय की रचना प्रतीकात्मक स्तर पर हुई है जिसमें कवि का मायावेद्य पूरे काव्य का उत्कर्ष किन्तु बन जाता है। काव्य की समाप्ति काल में व्यक्तिगत और उसके विचारों की महत्ता तथा पश्चिमी प्रतीकात्मक भाँति व्यक्ति और अधिसंरत के साथ होती है।

इस कविता की भाषा में जीवन की भाषा और साहित्यिक भाषा में कोई अंतर नहीं है बल्कि दाना एक दूसरे में घुलमिल गई हैं। मायाकोम्की इस प्रकार की हींकार या कोई कृत्रिम अर्थ नहीं प्रस्तुत करता। नये अर्थ गहन के लिए मायाकोम्की प्रसिद्ध है किन्तु यह शब्द रूपी भाषा की प्रकृति और व्याकरण के अनुकूल ही बनाये गये हैं। इसमें राजनीतिक अर्थ और स्या सामाजिक के तथा व्यवहारी अर्थ बहुत अधिक हैं।

मायाकोम्की की कविता 'एलबीमिर ईपिच लेखित' पाठकों में देव प्रति की भावना भर रही है और देव-देवा की प्रशंसा देती है।

पश्चिम के विषय में मायाकोम्की के विचार

मायाकोम्की की कृतियों के बीच 'विदेया विषय-अध्यायों' पर लिखी गई कविताओं का विशेष स्थान है। इसमें विषय-वस्तु की विविधता और अनेकत्वता है। १९२३-१९२९ के बीच मायाकोम्की ने नौ बार विदेशों की यात्रा की। उनसे अत्यंत अमेरिका संविधान के, पश्चिमी धारि कई देशों की यात्रा की और इन प्रकार पश्चिमी जीवन और समाज

से परिचित हुआ। विरस पर्वबसन्त की उसकी अनुभूतियाँ 'ईजेस टाबर से बात वेरिस 'अमेरिका से संबंधित रचनाएँ, 'सोबियत पाठकों के विषय में कविता बीसी प्रसिद्ध कृतियों में अभिव्यक्त हुई।

मायाकोव्स्की ने अपने इन पर्यटन पर्वबसन्त में जो अच्छी चीजें केलीं उनकी ठारीक भी की और जो बातें उसे अच्छी नहीं प्रतीत हुईं उनकी आलोचना भी की। 'ईजेस टाबर और 'म्युयार्क का इकलिन पुर्' जैसी कविताएँ इस बात का प्रमाण हैं। मायाकोव्स्की अमेरिकन उद्योग-कीमत्त तथा फेन्च संस्कृति को महत्त्वपूर्ण स्थाप देता है और उसका अंधा मूर्खान्त करता है। फिर भी वह पूँजीवादी पच्छिम की समकालीन संस्कृति की आलोचना करता है। अमेरिका से संबंधित कविताएँ और सेप अपनी विचारारमक गहराई और कलात्मक पनता में बड़े महत्त्वपूर्ण हैं। अमेरिका का प्रगतिशील उद्योग-जीमान 'डालर के देश' के पिछड़े हुए या प्रतिभिया वादी सामाजिक संबंधों का मायाकोव्स्की की नज़र से न छिपा सका। सोबियत सामरिक और निवासी की बृष्टि में पच्छिम के पूँजीवादी जीवन का बेलकर उसके हृदय में अपने देश के प्रति उच्चता मम्मान और प्रम की भावना और भी दृढ़ हुई और वह इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि नैतिक और सामाजिक बृष्टि में अमेरिका जाति बहुत पीछे है। अमेरिका के मूल निवासियों का नाश नौशो लोंगो पर अत्याचार सामाजिक विषमता तथा पूँजीवादी स्तर की नीब-भून पनीला और झूठ-इन सबका अकन माया कोव्स्की की पर्यटन सबधी कविताओं और सेपा (अमेरिका का उद्घाटन) में बड़ विस्तार के साथ हुआ है और पच्छिम के जीवन की बड़ी ठान यथार्थ और युक्तिपुक्त अभिव्यक्ति हुई है।

पच्छिम की यात्रा में उसका स्वागत भी हुआ। अनेक देशों में उसका नाम जातिवादी कवि और कैम्बर्गों के साथ जुड़ गया। धीरे धीरे इन देशों में उसकी गविन र्द में महत्ता को लोगों ने माना। मायाकोव्स्की पहला सोबियत कवि था जो पच्छिम में इतना विख्यात हुआ।

इस यात्रा ने मायाकोव्स्की के देश प्रम को और भी गहरा किया और देश के प्रति उसके उत्तरदायित्व की भावना को उत्तचित किया।

अमेरिका से लौटते हुए जहाज पर कवि ने अपनी सर्वोत्तम कृतियों में से एक कविता 'घर की ओर' पर काम शुरू किया। इसमें सोवियत संघ के साथ कवि के प्रतिष्ठित संबंध और उसकी विध्वंसकारी की भावना की अभिव्यक्ति हुई है। यह कविता कवि की सर्जना के नये (और अंतिम) युग की ओर संकेत करती है जब कि सोवियत संघ में कवि तथा कला के स्थान तथा महत्त्व के संबंध में उनके विचार परिपक्व और प्रकट हुए।

### मायाकोव्स्की की सर्जना का अन्तिम युग

गृह-युद्ध के बाद राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था के पुनर्निर्माण का आ महान् कार्य शुरू हुआ या वह १९२६ तक बहुत कुछ पूरा हो गया। देश के औद्योगिकरण की बहुत सी कठिनाइयाँ अब दूर हो गयी थीं। नयी प्रविष्टियों सबकोष करकोष आदि का नवीन व्यापक निर्माण विवक्षित हुआ। सोवियत साम्य के इतिहास की इस नयी मंडिल में मायाकोव्स्की के सामने नए विषय-वस्तु नये लक्ष्य और नयी सभावनाएँ प्रस्तुत कीं। फलतः कवि के कामकाज की व्यापकता तथा विविधता और भी बढ़ी। मायाकोव्स्की पाठकों के लिए मिश्रित वाक्य भी लिखता है और 'बच्चा है' कविता भी लिखता है। नयी उम्र के बच्चा के लिए छोटी-छोटी किताबें भी तैयार करता है और 'पूरी आवाज में' कविता का भी प्रयोग करता है। अमेरिका के बारे में लेख भी प्रकाशित करता है, अन्तर्गत में काम करता है और अपने ही नाटकों 'अन्तमक' और 'स्नानघर' के प्रदर्शन में भाग भी लेता है। १९२९-३० के बीच उसने बहुत कुछ लिखा और उसकी प्रतिभा प्रीड़ हुयी।

व्यंग्य के क्षेत्र में प्रतिनायक के अन्तर्गत उदाहरण उसके व्यंग्य नाटक 'अन्तमक' और 'स्नानघर' हैं। नाटयक की आचारमूल समस्या स्वयं कवि के पाठों में आने ली बुझाई की वापसी करना है। मायाकोव्स्की कथक व सुझाई जीवन पद्धति पर हैसता ही नहीं बरतू अर्थिक वर्ग पर उसका जो हानिकारक प्रभाव पड़ता है उसका चित्रण भी करता है। नायक प्रिमीरिस के पाठों और कार्यों में जो अन्तर है कवि उसका विश्लेषण

कर उस पर व्यंग्य करता है और यह बताता है कि क्लस में बुर्जुआरजी का नाश अनिवार्य है।

'स्नानघर' का मुख्य राजनीतिक विचार 'ब्यूरोक्रटिज्म से युद्ध और समाजवादी विचारधारा का समर्थन है। इसका भाषक भी ब्यूरोक्रट है जो समय घड़ी की मशीन चलानेवाले कमसोमोल नवयुवकों के काम में अड़बटें डालता है। अन्त में यह स्पष्ट हो जाता है कि भाषक जैसे व्यक्ति कम्प्युनिज्म के लिए बकाए हैं इनकी कोई जरूरत नहीं है।

काव्य के विषय में फिनिस्फेक्टर से बातचीत

अपनी सृजना के इस युग में काव्य के सारस्वत और समाजवादी समाज में लक्षक के कार्य और परिस्थिति के विषय में मायाकोस्की पुनर्विचार करता है। कवि के कार्य के विषय में मायाकोस्की लिखता है कि 'प्रधान कार्य काव्य में काव्यत्व माना है। यही मुख्य कार्य है और लक्षकों को इसी के लिए आबोधन करना अनिवार्य है 'मिर्गो ऐमनिन' प्राकृता रिक्त कविता को संदेग भावि रचनाएँ विशेष रूप से कला के विषय में हैं। इनमें कवि के कटा संबंधी दृष्टिकोण का पता चलता है।

मायाकोस्की का आचारभूत विचार यह है कि काव्य परिवर्तन है, जटिल तथा अतर्क्य परिभ्रम है किन्तु इसके साथ ही आनन्दप्रद भी है। मायाकोस्की यह चाहता है कि समाज में कवि के परिभ्रम की इच्छा हो और साथ ही कवि अपने काव्य को सामाजिक द्दिग्धकारी को महसूस करे। कवि सांपक है। वह जीवन और मनुष्य में जो कुछ नहीं है उसका उद्घाटन करता है। काव्य अज्ञात की ओर यात्रा है।

मायाकोस्की काव्य से महान् सामाजिक विचार को मांग करता है। यह काव्य के सामाजिक अस्तित्व की बड़ी संकीर्णता में निर्धारित करता है। काव्य अन्य कलाओं के समान जीवन का प्रतिबिम्बन है। इस काव्य काव्यी घरे या परिधि में समाविष्ट शताब्दी के बीच से एक पक्षि उड़ा जो और समय जानत या जायगा। एक पक्षि समय को वापस ले जाती है। इसके साथ ही सामाजिक मुद्दों में काव्य पक्षिवादी शक्त

है और मात्र कवि का अनुप्रास दुकार है और उसका मारा है संगीत और कोटा

मायाकोष्ठी कवि कर्म पर बड़ा जोर देता है। उसका कहना है कि अपने कवि नाम को सायक करने के लिए यह आवश्यक है कि कवि प्रस्तुत विषय-वस्तु के उपयुक्त रूप अनुप्रास उपमा आदि खोज सके। अगस्त्य परिश्रम कविता के काम्यत्व को उत्कर्षे प्रदान करता है और पाठकों पर उसके प्रभाव को बढ़ाता है।

मायाकोष्ठी स्वतः अपनी रचनामा पर बड़े श्रेय के साथ परिश्रम करता था और उनको बहुत मँजता था। कवि के लिए काम का दिन आठ घंटे का नहीं करना जरूर पड़े का होता है।" ऐसा उसने लिखा था। मायाकोष्ठी में प्रत्येक परिस्थिति में काम्य रचना की प्रतिभा और धरित थी। वह सड़क पर, रैस्टाँ में बिलियर्ड खेलते हुए और बातचीत करते हुए काम्य रचना कर सकता था। फिर भी उसका कहना है कि बिन घर में मेरे काम का जोर है आठ या दस पवित्र्याँ और यह इसलिए क्योंकि वह एक एक पवित्र को कई बार बदलता था। एक साहित्यिक का कहना है कि "मायाकोष्ठी ने एक पवित्र के दामन प्रयोग बढ़ाए और फिर भी उन्हें छेक दिया स्वीकार न किया।"

फिर भी केवल परिश्रम से ही अच्छी कविता नहीं लिखी जा सकती यदि उसमें कवि का हृदय नहीं झड़कता यदि वह खानापूरी बर्न करने वाला केवल उग्रानीन कसक मात्र है यदि जनता के जीवन में भाग लेने वाला और लोग देने वाला नहीं है। अच्छी कवि यह है जो देश जनता और भाँ की पुकार पर आने बढ़ता है जनता है और प्रंगार की तरह बमकता है। कवि जनता का नामक और उसके साथ ही जन सेवक भी है। उसके गीत और कविता 'बस और संडे हैं। कवि यह है जो हमारे तीक्ष्ण बर्न संघर्ष में अपनी कलम प्रोत्साहितियों को सभ्रद करने के लिए उत्साहार को दे देता है। कवि आज का बर्नन करत हुए उसको भी देख सकता है और बठा जनता है जो कि अभी भविष्य के गर्म में है।

असली कवि अस्पष्टता की भिनगारियों के बीच से अपेक्षाकृत बंसी ज्योतिर्बुध ज्ञान प्रकट करता है। उसका दृश्य मानवीय चरित्र का सचासक है। बन्धु का सन्धु उनको उठाना है से चकता है, आकृष्ट करना है। बिनकी भाँसे कमजोर हो गयी है।

मायाकोब्सकी की सावियत मुग की कविता मही कर रही है और विषय रूप से उसकी उत्कृष्ट कविता अच्छा है।

### ‘अच्छा है’ कविता

अच्छा है कविता १९२७ के प्रीम्स में पूरी हुई और अक्तूबर कान्ति के बसने वापिकोरसव पर प्रकाशित हुई। मूना वास्की ने इसे ‘सोवियत-साहित्य की महत्त्वपूर्ण सम्प्राप्ति’ बताया और कहा कि यह अक्तूबर कान्ति की मानो ताँबे की डकी मूर्ति है। वस्तुतः अक्तूबर कान्ति और समाजवादी दैव इस कविता की विषय-वस्तु हैं जो इतने बूले निभे हैं कि अलग नहीं किये जा सकते। दैव भवित का भाव यों तो बंसी साहित्य में बहुत पुराना है किन्तु अक्तूबर कान्ति के बाव बिभार में जो परिवर्तन आया उसने इसे और गहरा तथा व्यापक बताया और इसे सर्वथा दूसरा नया रूप दे दिया। सोवियत दैवमन्त्रि का आचार जातीय भावना नहीं है बरन् सभी जातिपों के माईचारे और मित्रता पर आधारित सोवियत दैव के प्रति जनता का विदवास और प्रेम है। सोवियत दैव मन्त्रि के मूल में सोवियत संघ के सभी काम करने वालों के गहरे हिल की भावना है और सोवियत व्यक्ति की वृष्टि में ‘सर्वसामान्य और अपने में को’ मद नहीं है जो सबका है वही उसका अपना है।”

इसी प्रकार “प्रत्येक का परिग्रम सबके परिग्रम में मिल जाता है और दैव ऊपर उठ रहा है आगे बड रहा है। कवि किसान और शमिक उनका परिग्रम सामूहिक जन-परिग्रम की सुलका की कड़ियाँ हैं जो कि दैव की शक्ति बड़ा रही हैं। चीनों के पीछे

कभी हुई किताबों के डेर में मेरा साम कवियों की खेती में है। मैं प्रसन्न हूँ कि मेरा परिश्रम अपनी इन रिपब्लिक के परिश्रम में मिल रहा है कम हो रहा है।

इस कविता में अस्तुवर शक्ति उसके कारण उसकी व्यापार मूल शक्ति और उसके बीच समर्पण करनेवाला—धर्मिक धर्म किमान सिपाही शक्ति विरोधा बसेत-गार्ड आदि को चिन्तित किया गया है।

मायाकौम्बकी सोवियत रिपब्लिक को परिश्रम और युद्ध के बीच बन्धी हुई कहता है। इस प्रकार परिश्रम की विषय-वस्तु अस्तुवर शक्ति की विषय-वस्तु को देश की विषय-वस्तु के साम जोड़ देता है स्वेच्छा से परिश्रम, विशेष रूप से शनिवार को अतिरिक्त परिश्रम यह समाज शक्ति को ही उपसर्ग है यह स्वेच्छा से एकत्रित हुए लोगों का स्वेच्छात्मक परिश्रम है और उसके साथ ही यह युद्ध-मष्ट देश के पुनर्निर्माण की व्यवस्था और कार्य का समारम्भ है।

हम काम करेंगे

बिसस कि बीचन

दिनों के पहियों को त्वरित गति देता हुआ

सोह की पटरियों पर हमारे दिवसों में

स्तंभ के ऊपर, हमारे ठिठुरे नगरों में

दीड़ सके।

इस प्रकार मायाकौम्बकी के लिए शक्ति केवल मष्ट मष्ट करनेवाली शक्ति ही नहीं है बरन् सर्वनात्मक शक्ति है, जिसके धीरे पर धर्मिक धर्म है जिसका संघासन पार्टी कर रही है और जिसका संघासन मुख्य रूप से कैमिन ने किया। काव्य में इन सबका परिश्रम, इन सबकी अठिनाई और इन सबकी विजय चिन्तित की गयी है और यह दिखाया गया है कि सोवियत शक्ति का प्राथम सोवियत मूमि या देश के सामान्य माध्य से भिन्न या अलग नहीं है। उसको बही होया जो कि उसकी मातृभूमि का होया।

मायाकौम्बकी ने सिखा कि अच्छा है' कविता को मैं उस समय का



प्रोग्राम या कार्यक्रम मानता हूँ। यह कविता मायाकोव्स्की के कसारमक आचार्यत्व के विकास का आगे बढ़ा हुआ इन्धन है उसकी सभी कविताओं में यह कविता सब से अधिक बहुमुखी और संतुलित है। इस काव्य में ऐतिहासिक और सामान्य जीवन सामग्री का जो व्यापक प्रयोग हुआ है और अनुभूतियों के अनिर्घ्वंजन में जो पूर्णता तथा विविधता मिलती है बहुइय काव्य की प्रबन्धात्मक भाषा संबंधी तथा मय संबंधी अनेकरूपता के अनुरूप है। इस कविता में प्रबन्धात्मकता और प्रतीकारमकता दोनों एते गुंथे हुए हैं जैसे कि मायाकोव्स्की के लिए सर्वसामान्य और निजी या अपना।

इस कविता में बहुत सी घटनायें थीं बहुत से पात्र हैं। कविता अपने कथानक में अटिक है। पात्रों का अंकन अत्यन्त सक्षिप्त है फिर भी अत्यन्त सजाव और यथार्थ है। ऐतिहासिक या वास्तविक (लेनिन विरश्निन्की मायाकोव्स्की आदि) और कल्पित (पयोद अडव्पुर्टेंट आदि) दोनों प्रकार के पात्र अपनी अपनी विशिष्टताओं के साथ अंकित किये गये हैं। इसके साथ ही इसमें सूक्ष्म हास्य है। सबीब संघर्षों का व्यंग्य है जीवन-वर्धन की प्रभावात्मकता है चुमते पीनवे हैं और गान्त कथा है। पात्रा तथा घटनाओं के परिवर्तन के साथ ही कथन या वर्णन के स्वर या लहजे में भी परिवर्तन आ जाता है। दोनों में एक साथ ही परिवर्तन होता है। इस प्रकार घटनाओं और पात्रों की विविधता के समान इस कविता में स्वर या लहजे की भी अनेकरूपता है।

इस काव्य का लक्ष्य हुआ भावोत्कर्ष इस कविता के लीपक (अच्छा है) की उपसुकनता विद्ध करता है। विशेषतया अन्तिम अध्याय हर्ष और उरमाह से परिपूर्ण है। उभोमबा अध्याय यह उम व्यक्ति का उद्गार है जो कि वही मुखिलर में अपने हर्ष को रोक पाता है—

मैंने इस पृथ्वी की प्रदमिणा कर डाली

जीवन अच्छा

जीना अच्छा !

और यही कवि का भी निष्कर्ष है।

## पत्रकारिता

मायाकोष्ठी ने अखबारों में भी काम किया। मायाकोष्ठी की पत्रकारिता १९२२ से 'इरवेस्तिया' से शुरू होती है। कमसोमास प्राम्ना पत्र का काम उसके लिए विद्यमान रूप से महत्त्वपूर्ण था क्योंकि वह देश के मीत्रवादी पत्र का और उसके द्वारा देश का युवक वर्ग तैयार किया जा रहा था। इस पत्र में मायाकोष्ठी सहयोगी के रूप में था। वह अखबार अपनी रचनाओं में सामयिक प्रश्नों और विषय-वस्तुओं को उठाता था और युवकों को सलाह देता था तथा प्रारंभिक करता था। इन रचनाओं को 'इस्टन' कहते हैं।

मायाकोष्ठी को समाचारपत्रों से संबंधित कविताओं में से अविनाशक अंगभूत है। मायाकोष्ठी उन सबको दूरी तरह खबर देता है जो सोवियत शासन का व्यक्ति करते हैं चाहे वे देश के अन्दर ही और चाहे बाहर। कुलक (जमींदार) खबर करनेवाला (यूरोकट) मरिचिम्मादार कलाकार आदि उसके अंगभूत के सिद्ध है। स्वयम् कामसोमोन् योषी की भी बुराई का उठने का सोचना को। इन पत्र और 'अश्वमेधिका' की उसकी अंगभूत रचनाएं उसके यथार्थवादी कौशल के विकास की ओर प्रेरित करती हैं। गीतक तथा साहित्यिक इतिहास की परंपरा में उसकी अंगभूत कविताओं ने अनेक सजीव चोट करनेवाले चित्र प्रस्तुत किए।

१९२७-३० की मायाकोष्ठी की पत्रकारिता तथा अंगभूतक सृष्टि देश के जीवन के साथ उसके अनिष्ट संघर्ष को व्यक्त करती है।

## पंचवर्षीय योजना की विषय-वस्तु

प्रथम पंचवर्षीय योजना का विराट् कार्यक्रम समाजवादी मीत्रवादी करण और सामूहिकरण के रूप में मायाकोष्ठी को १९२८-२९ के वर्षों में अपनी मार बड़ी मति से जाहृष्ट किया और उसने पंचवर्षीय योजना से संबंध विषय-वस्तुओं पर बहुत ही कविताएं लिखीं। इन्हीं रचनाओं के साथ सोवियत साम्यिक के मने व्यक्तित्व के विकास की विषय-वस्तु भी संबद्ध है और मायाकोष्ठी के काव्य में इसके विकास की कई मजिसें

सहित होती है। क्रांति के पूर्व मायाकोम्स्की ने कहा था कि स्वतन्त्र व्यक्ति आयेगा। उस समय यह विश्वास मात्र ही था और काव्य में इस विश्वास के साथ पूजावादी समाज में मनुष्य के उत्पीड़न और मनुष्य के ह्रास का ही चित्र प्रस्तुत किया गया था। क्रांति के दार्शनिक कर्षों में व्यक्ति की विषय-वस्तु जनता की विषय-वस्तु में (इवान का चित्रण) मिला गई। अर्दीमिर लेनिन का चित्र प्रथम साक्षियत व्यक्ति के रूप में सामने आता है जो अत्यन्त ठोस यथार्थ और बिनाप्यता से संपन्न है। साथी नेत्र को— जहाँ और व्यक्ति का कविता में साक्षियत व्यक्ति और भी विकसित होता है। यह कविता उस साक्षियत पात्रक का चित्र है जो अपने कार्य के कारण जनता की स्मृति में अमिट है।

इसी प्रकार मायाकोम्स्की ने सर्वप्रथम प्रतीकों में साक्षियत व्यक्ति का चित्र प्रस्तुत किया। यह चित्र मोस्कोवित् वामपोर्ट के विषय में कविता हम 'इवान कबिरमोव की कहानी' आदि में अच्छी तरह उभरा है। इस प्रकार पञ्चवर्षीय योजना के युग में व्यक्ति की विषय-वस्तु मायाकोम्स्की के काव्य में स्वर्द्ध के विषय-वस्तु से गुंथित हो जाती है।

### अपने के अन्तिम वर्ष

मायाकोम्स्की अपने पाठकों से बराबर मिलना चाहता था और उनसे परिच्छेद मन्त्र रचना चाहता था। इस लक्ष्य से उसने कई स्थानों की यात्रा की। वह चाहता था कि अधिक से अधिक लोग उसकी रचनाओं की समझ सकें। इस उद्देश्य से वह जयहू जमहू मन्नाबा में अपनी रचनाएं सुनाता था। उनकी व्याख्या करता था और उन पर बहस करता था। कामा को अपने कार्य में परिचित कराने के लिए उसने 'मायाकोम्स्की के काव्य के बीच बंध प्रदर्शनी भी आयोजित की। इसी प्रदर्शनी में उसने अपनी हस्तलिखित रचना 'पूरी आबाद के भाव' पढ़ी जो उसकी मृत्यु के बाद छपी थी। जनचरण परिषद में उसके अपने स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव डाला और वह सिधिस हो गया।

उसके जीवन के अन्तिम वय बड़ी विपत्तियों के बीच बीते। एक ओर तो मायाकोष्ठी की बड़ा सज्जदिय या और दूसरी ओर उसके विरोधी उसकी मनी प्रकार की कटु आलोचना कर रहे थे कि उसकी कविता सामान्य जन समाज की समझ के बाहर है। उन्होंने उसकी प्रतिभा की हूसी उड़ाई और प्रदर्शनी का 'वायनाट किया।

व्यक्तिगत जीवन की कठिन कठोर एवं शठक परिस्थितियाँ यसे की बीमारी जिससे कि वह सब जन समूह के सामने कविता पाठ नहीं कर सकता था—इन सबने उसकी मानसिक समन्विति को नष्ट कर दिया। ऐसे ही एक क्षण में उसने (१४ अगस्त १९३०) को आत्महत्या कर ली।

### 'पूरी आवाज के साथ'

मायाकोष्ठी की मृत्यु के बाद अक्टूबर पत्र का अंक निकला जिसमें मायाकोष्ठी की अंतिम कविता 'पूरी आवाज के साथ' (प्रथम काव्यात्मक मापन) प्रकाशित हुई। यह रचना पूरी न हो सकी अपूर्ण ही रह गई। पूरी कविता का विषय प्रथम पंचवर्षीय योजना होता। इस कविता के हमारे मापन के विषय में यह अनुमान लगाया जाता है कि वह प्रेसों के किये किये गए पचारमक पत्र के रूप में होता। यह कविता मायाकोष्ठी की उत्तम रचनाओं में मानी जाती है।

मायाकोष्ठी ने इन काव्य रचना का मध्य बताते हुए कहा कि 'प्राय इतर आ लोग मरे साहित्यिक अखबारी काम में अस्तित्व हैं व यह कहते हैं कि मैं कविता लिखना शुरू गया और इसके लिए आनेवाली पीढ़ी मेरी कट आलोचना करेगी। मैं स्वयं आनेवाली पीढ़ी से बात करना चाहता हूँ और इसकी प्रतीक्षा नहीं करता चाहता कि उनका भविष्य में आलोचक मरे जाने में बताएँ। इसलिए मैं स्वयं अपनी कविता में जिसका नाम 'पूरी आवाज के साथ' है आनेवाली पीढ़ी के साथ सीधी बात करना चाहता हूँ। इसलिए कवि इसमें आनेवाली पीढ़ियों के साथ सीधी संभाषणपूर्ण और कभी-कभी तीव्री बात करता है।

यह कविता सोवियत पाठकों की विवेचनना नवनुबकों की उत्पन्न लोकप्रिय रचनाका में से एक है और सत्कार की कई भाषाओं में अनूदित हो चुकी है। इस कविता में कवि भविष्य को संबोधित करता है और स्वयं अपने कार्यों का मूल्यांकन करता है। कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में जनता द्वारा आरम्भ किये गये विराट् कार्य की अभिव्यक्ति को योजना के साथ साथ इस कविता में मायाकाव्यकी काव्य क्षेत्र में किये गये अपने व्यक्तिगत कार्यों का भी आकलन करता है और भविष्य की पीढ़ियों तथा पाठकों की ओर उन्मुख होता है जिन्हें लिए आज के समकालीन नए जीवन का निर्माण कर रहे हैं।

इस कविता में यह भविष्य के पाठकों को बतलाता है कि यह कौन है और बनने लिए कहता है कि—

“मैं आश्रित द्वारा निवृत्त निरुत्त हूँ”

भिक्षु की विषय स्पष्ट कर देता है कि उत्तम जन ऊपर कठिन किन्तु महत्त्वपूर्ण काम—जीवन को स्वच्छ करने का गरीबों को दूर करने का काम-सिया है। इस काम में अपना सारा जीवन लगाकर यह भविष्य की पीढ़ी को मोर उन्मुख होता है और कहता है कि—

तुम जो स्वस्थ और पूर्णिते हो

तुम्हारे लिए

कवि

आयी के शूक की

पोस्टरों की पुरखरी जवान से आया था।

मायाकाव्यकी के लिए परिष्कृत ही सर्वना है और सर्वना परिष्कृत है। पूरी आवाज के साथ कविता मादियत व्यक्ति और कवि के साहस और भक्ति की काव्यात्मक अभिव्यक्ति है।

मायाकाव्यकी की सर्वना का सोवियत काव्य के लिए निरूपणरमक तथा मैथिलिक महत्त्व है। उसकी सर्वना का महत्त्व केवल इस बात में ही नहीं है कि उसने नये-नये प्रयोग कर कवी कविता की अभिव्यक्तता

को व्यापक और समृद्ध बनाया वरन् काव्य तथा कवि के प्रति उसकी उस भावना में है जिसको कि उसने अपना रचनाशास्त्रांग पुष्ट किया और जो कि उसके बाद आन बाके साहित्य कवियों का रचनाशास्त्र में भी किया न किसी रूप में अगितार्थ हो रहा है।

इस भावना का सबसे बड़ी विशेषता मायाकोव्स्की की निम्न तथा सामाजिक प्रेम तथा प्रय के एक्य का अनुभूति है। मायाकोव्स्की की सोवियत प्रेम प्रेम में उसके मानवतावाद का समाजवादी विप्लवता में तथा सर्वना का उच्च विचाररमकता में महा भावना कलित हो रही है। उसकी कविता में नव साहित्य व्यक्ति का चित्र उभर रहा है जो सत्य प्रेमी और परिश्रमी है, मायावादी है, और जो स समझीना क्रम को तय्यार नहीं है।

मायाकोव्स्की की रचना रचना के प्रति सदा अपन उत्तरदायित्व का अनुभव करती रही है और नवीनता का अन्तःकर उसकी कलात्मक अभिव्यक्ति के लिए सदा प्रयत्नशील रही है। पाठका का प्रभावित करनेवाले काव्यात्मक शब्द की अभिव्यक्तता तथा में उनकी रचना सर्वत्र महक रही है। वेन के भाष्य के साथ उच्च प्रेम समाज के निर्माण की लक्ष्य भाग निर्माणकारी परिश्रम का गुणगान कान्ति के शत्रुता स पूजा—यह मायाकोव्स्की के काव्य की मुख्य विशेषताएँ हैं।

रबानोव ने कहा था कि साहित्य का काम कबल जनता की भाँति को पूज करना ही नहीं है वरन् उसे जनरति को ऊपर उठाना चाहिए। उसे नव विचारों से समृद्ध बनाता चाहिए। जनता को भाग से बचना चाहिए। मायाकोव्स्की की रचना का यही प्रगतिशील रूप रहा है। उसने बराबर यही कहा कि कवि का कर्म के प्रकाश में 'आज' को देखना चाहिए। उस 'कर्म' को धोर, आने की ओर बढ़ना चाहिए।

मायाकोव्स्की का महत्त्व इस बात में है कि उसने 'सोवियत' और 'काम्य' के नवीन साहित्य मानदण्ड स्थिर किए, नवीन समाजवादी प्रतीत मुक्तक को पुष्ट किया। उसने कला के क्षेत्र में पार्टीबाहिता को प्रतिष्ठित

दिया। इसलिये सोवियत काव्य क्षेत्र में उसका बड़ा महत्व है। मायाकोव्स्की सोवियत युग का महान कवि है।

सोवियत काव्य क्षेत्र के समान विदेशों के प्रगतिशील काव्य क्षेत्र पर भी उसका बड़ा प्रभाव पड़ा है। उसकी कविताएँ योरोप तथा पूर्व की तीस भाषाओं में अनूदित हो चुकी हैं। कान्ति का गायक मायाकोव्स्की इन सभी देशों में बड़ा प्रिय रहा है वहाँ कि युवक वर्ग पर हीमला उल्पीइन आदि के विरुद्ध मुड़ करता रहा है। युवक वर्ग मायाकोव्स्की की सर्जना और काव्य में नये व्यक्ति का प्रगतिशील व्यक्ति का समाजवाद के व्यक्ति का चित्र देखता है।

## ४ द्वितीय महायुद्ध के पूर्व की पञ्चवर्षीय योजनाओं के आधार पर राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था के विकास के युग का साहित्य [ १९२६-३६ ]

अप्रैल १९२९ में मोन्टगुमेरी पार्टी कार्यक्रम में प्रथम पंच वषीय योजना को स्वीकार किया। देश में समाजवादी विचारों का नाम धुलू हुआ। औद्योगिकीकरण जोरों में चला और कृषि व्यवस्था को सामूहिकीकरण योजना कार्यान्वित हुई, और समाजवादी मसूहों की चेतना विकसित हुई। युद्ध युद्ध तथा साम्राज्यवादी युद्ध में नष्ट राष्ट्रीय धर्म व्यवस्था का पुनर्निर्माण कर सोवियत देश समाजवादी औद्योगिकीकरण के रास्त पर चला। नवी तकनीकी प्रक्रिया के आधार पर भारी उद्योगों का निर्माण कर औद्योगिक क्षेत्र में धर्म के पिछड़पन को जल्दी में जल्दी दूर करना अनिवार्य थी।

१९३१ में स्थापित न कहा था कि 'हम प्रगतिशील देशों से पचास से सौ साल तक पीछे हैं। यह कामना हमें हमें हमें हमें करना होगा। हमने देश की पिछड़ी हुई स्थिति का पता चलता है।

१९३४ में मोन्टगुमेरी पार्टी कार्यक्रम में स्थापित ने जो कहा उसमें पता चलता है कि देश किन्तु भीष्टता में उन्नति की मार बढ़ रहा है। जर्मन कहा कि 'सोवियत संघ में हमें भी भीष्टता परिवर्तन हो गया। उसमें अपने मध्य युगीन धर्म को गंवार फेंका। कृषि प्रधान देश में यह औद्योगिक देश बन गया। छोटे-छोटे टुकड़ा में विभक्त कृषि में यह बड़े-बड़े मशीन शक्ति कृषि क्षेत्र में बढ़ा गया।

इस प्रकार पञ्चवर्षीय योजनाओं ने देश और देश विधानियों दोनों में सामूहिक परिवर्तन कर दिया। माने देश में नया निर्माण शुरू हो गए। यूरोप में क्रपतोव्स्की और पीरलोव्स्की के कारण उत्तर में मशीनयुगीन



का धातु का कारखाना साइबीरिया में कृजनेस्की के कारखाने बने । इसके साथ ही भारी मशीन बनाने के कारखाने मोटर के कारखाने, नेपर बैच का बिजली घर आदि तय्यार हुए । इन उद्योगों से देश का रूप-रंग ही बदलने लगा । परिस्थिति और मनाबूति दोनों के परिवर्तन ने साहित्य के सामने नये प्रश्न नयी समस्याएँ प्रस्तुत की । साहित्य को नया बस्तु-रत्न प्रदान किया और नयी गतिविधि भी । प्रश्न और समस्याएँ समाजवादी चरित्र के निर्माण से संबंधित थीं बस्तु-रत्न परिव्यम और छाति का तथा नयी गतिविधि मनुष्य में नयी समाजवादी चेतना डबू कराने की विद्या में थी । यदि मनुष्य नये जीवन के क्रिये कड़ता है तो नया जीवन मनुष्य के लिए कड़ता है, उसे खिला देता है और उसमें नए व्यक्तित्व का विकास करता है । छन् छिन्न के बर्णों के सोबियत साहित्य की बहुत ही कृतियों का यही मूल भाव है जिससे पता चलता है कि सोबियत जनता में समाजवादी चेतना का विकास किस प्रकार हो रहा था ।

समाजवादी जीवन पद्धति की विजय के खेलकों में सैद्धान्तिक ऐक्य दृष्ट किया उनके समाजवादी मतवाद को उग्र बनाया और खेलकों के सामने नयी समस्याएँ प्रस्तुत की ।

### साहित्यिक कलात्मक संगठनों का पुर्निर्माण

२३ अप्रैल १९३२ में कन्द्रीय कमेटी ने साहित्यिक कलात्मक संगठनों के पुनर्निर्माण का निश्चय किया । इस संबंध में कहा गया कि कुछ वर्ष पहले जब कि प्रोस्यारियत खेलकों की धरती दुर्बल थी और साहित्य पर अनुकूल प्रभाव नहीं पड़ रहे थे पार्टी ने कला और साहित्य के क्षेत्र में प्रोस्यारियत संगठनों के निर्माण और उनका वृद्ध करने में बड़ी मयब की । किन्तु अब सम्प्रति प्रोस्यारियत कलात्मक संगठन संकीर्ण होते जा रहे हैं और गंभीर केंसारमक सर्वना की व्यापकता को रोकत हैं । कन्द्रीयकमेटी ने इसलिये प्रोस्यारियत खेलकों के संगठन को समाप्त कराने का निश्चय किया और सोबियत योजना या सोबियत शासन के प्कटकार्य का समर्थन करने वाले और समाजवादी निर्माण में भाग लने वाले सभी खेलकों की

सोवियत लेखकों के एक संघ में मिळाने का निश्चय किया और उसमें (सब में) कम्युनिस्ट संघान का संगठन किया।

फरव 'राप' संगठन (प्रोक्रिठारियत लेखकों का क्सी असोसिएशन) समाप्त हो गया। यह संगठन केनिन की साहित्य में पार्टीबाबिता की नीति का विरोध करता था। इसी प्रकार 'प्रोसेकुसुठ' की बिचारबाध भी साहित्य के सर्वाङ्गीण बिज्ञान के अनुकूल न थी क्योंकि यह बलाधिकतम संस्कृति के उत्तराबिज्ञान का अस्वीकार करता था और यह प्रोक्रिठारियतों की उक्ति द्वारा प्रोक्रिठारियत संस्कृति का निर्माण आवश्यक और अनिबार्थ बघाठा था। इन साहित्यिक संगठनों का इडिक्शन संकीर्ण हो गया था इसलिये सोवों को साहित्यिक मोर्चे पर परिवर्तन की आवश्यकता का अनुभव हुआ।

यह एतिहासिक निश्चय सोवियत साहित्य के बिज्ञान का महत्वपूर्ण चरण सिद्ध हुआ। सन् १९३२ में 'सोवियत लेखक संघ' की समठन कमेटी बनाई गयी जिसके शीर्ष पर मैक्सिम गोर्की था। इसे सोवियत लेखकों के अखिल संघीय (अखिल क्सी) सम्मेलन बुलाने का भार सौंपा गया। इसकी कार्यकारिणी में फदेयेव, टीसमोव, क्रिमोलोव आदि थे। बड़ी लम्पारी के बाद मास्को में १९३४ में सोवियत लेखकों का प्रथम अखिल (क्सी) संघीय अधिवेशन बड़ी कुमबाम से हुआ। यह अधिवेशन देश के जीवन की महत्वपूर्ण घटना है। इसमें बहुत से सोवों के भाषण हुए जिसमें साहित्य की समस्याओं सोवियत साहित्य के रूप और बिधि प्यता तथा लेखका के योगदान के बिषय में बहुत कुछ कहा गया। वास्तव में सोवियत लेखकों के सर्वनात्मक बिज्ञान में इस अधिवेशन का महत्वपूर्ण योगदान है।

इस युग में फदेयेव (नाए) गार्कोवोव (शास्त्र ज्ञान) अस्त्रोव्स्की (कोहा कैसे तैयार किया गया) अ० लोसुतोव (पीड़ा के बीच यात्रा) जिगोव (स्पुबोव परबादा) स्वरस्योठ इमानोव स्वेतकोव असेयेव बरीव्स्की आदि की सर्जना का बिज्ञान हुआ और उनकी कृतियाँ लोक प्रिय हुईं।

इसी युग में मायाकोव्स्की की कविता अच्छा है। छपी और गोर्की की कृति 'विश्वम सम्पूर्ण का जीवन' के दो भाग प्रकाशित हुए। इन लेखकों के अतिरिक्त इसी युग में पनपयोग्य कुरावायवा गरवातोव स्ताव्स्की अफ्रीनोगमेव जैसे नये लेखक भी साहित्य के क्षेत्र में आए।

अधिक बर्ग तथा उसके निर्माणकारी परिधम की विषय-वस्तु इन लेखकों की कृतियों में पस्थित हुई। अपना पुराना वाना फेंककर सताशियों की अर्द्ध कड़ियों और अक्षयिदास को छोड़कर आगे बढ़ते हुए गाँवों के कसबोजीय जीवन का चित्रण कई लेखकों की कृतियों में हुआ। पनपयोग्य का उपन्यास 'बुस्की' तथा ईसाकोव्स्की की कविता में इसी परिवर्तन का चित्रण है।

बुद्धिजीवियों के मानसिक उद्वेग तथा विवास का प्रश्न इस समय का महत्वपूर्ण राजनीतिक प्रश्न था। इस समस्या का अंशम उपेक्ष के नाश करके लेखकों 'दूटना' विषय के 'स्पृष्टीय परवाया' में हुआ। बुद्धिजीवियों की अतिदृष्ट्यात्मकता और फिर अन्ति के पथ में हो जाना अलक्ष्मिद तीस्त्वोय की कृति 'मनु अठारह' में चित्रित है। इस समय ऐसी कृतियाँ भी प्रस्तुत की गईं जिनमें अन्ति के प्रति कला का सर्वप्रथम ध्यान दिया गया। इनमें सकुच्छ पर बुजुवा विचारधारा का प्रभाव है। पेस्तरनाकनी मर्जना की स्वाधीनता और सेस्वीन्स्की की 'अभि के अचिकारों की घोषणा' ऐसी ही कृतियाँ हैं। समय के प्रवाह में यह कृतियाँ अचिकार न ठहर सकीं।

व्युरोकाटिरम तथा वगुठरी कारवाइयों पर ध्यान उन अफसरों तथा कर्मचारियों पर आये जो पंजीवादी तीर-तरीका अस्तित्वा कर समाजवादी प्रगति का रोक्ष हैं इन सबका व्यंग्यारमक चित्रण माया काम्स्की के व्यंग्य-प्रधान नाटक 'अन्मस' तथा 'स्नाम घर' में तथा बजी-मन्स्कीके नाटक 'मोमी' तथा 'हमारे जीवन का दिन' काव्य में हुआ है।

महाकाव्यारमक उपन्यासों की रचना इस युग की साहित्यिक विशेषताओं में से एक है। गोर्की का 'विश्वम सम्पूर्ण का जीवन' शोपोवॉव

का' छाँठ डान' पम्पपोरेक का 'डूस्वी'फदेवेक का उद्वेग से भाँलिरौ हसी का संकेत दे रहे हैं। नाट्य क्षेत्र में यथार्थवादी नाटक की प्रीतिना प्राप्त हुई और क्लामिकल नाटकों के साथ-साथ मोडर्न नाटका का रंमर्भ पर प्रदर्शन शुरू हुआ। धीरे धीरे साहित्यत रणमर्भ'पुङ्गु हो गया। साहित्य के बीच सैबिक के चित्र के साथ-साथ मजदूर नायक का अंकन और चित्र भी प्रतिष्ठित हुआ और साहित्यत साहित्य बर्ग मधर्प निर्माच-कारी परिभ्रम और समाजवादी मयार्थवाद स परिपुन हुआ गया।

### औद्योगीकरण और सामूहिकरण की विषय-वस्तु

समाजवादी निर्माण का बेग विणाल औद्योगीकरण कृषि का सामूहिकरण तथा मशीनीकरण गाँवा का कलखोत्रा में परिवर्तन त्वरत बिमम कि बरा का रूप-रेख ही बिस्कुस कल्पता जा रहा था—इन सबने लेखकों के सामम नयी और कठिन समस्याएं प्रस्तुत की। इन कलकारों के लिए नयी परिस्थिति की नयी प्रपति-सामग्रो का सम्यक ग्रहण अरया बखक था। किन्तु जीवन एसो छोत्र पति से बघर रहा था कि कला कार उतनी बत्वी उसकी धीत्र परिवर्तनशील बिशिष्टताओं का कला-त्मक रूप नहीं दे पा रहा था। अब कि परिस्थिति या जीवन को कला कार कलात्मक परिधान पहिनाए बहु परिस्थिति ही बदल जाती थी।

एमी परिस्थिति में साहित्यिक प्रकार के रूप में कलात्मक निबन्ध का भाविभावि अनायाम या भाकन्मिक मटना नहीं है। समूचीस के बर्षों के आरम्भ में कलात्मक निबन्ध अल्पिक ध्यापक साहित्यिक प्रकार के रूप में कम में बहुत प्रबलित हुए। समूचीस में मोठी ने निबन्ध सिपनबासा के लिए एक बिघप पत्र 'हमारी सम्प्रान्तिर्षी' की स्थापना की।

निबन्ध की कला केन्द्र की इस पाप्यता पर आधारित है कि बहु जीवन में जो सर्वसामान्य और सर्वस्यापक है उसको पहचान मक और धीबन्त सप्यों का कलात्मक रूप या महत्व देत हुए उसकी धमिध्वनित कर सक। पहलू कथा या' एसी ही निबन्ध की पुन्तक है जो गार्की ने सपादन में निकरी। उसमें 'बिद्योकागात्की' काहे के खान में काम करने वाले सौ मजदूरों क अपने विषय में संस्मरण और कथावर्षी है। यह सन्धी

घटनाएँ हैं किन्तु इनके बीच से हम कारखाने का आरम्भ से लेकर अन्तिम तक का इतिहास सामने आ जाता है। 'स्तालिनप्राय ट्रक्टर के लोग' भी इसी प्रकार के निबन्धों की पुस्तक है। इसमें इस कारखाने के बनानेवाले रूसी व्यक्तिवों की आत्मकथा है। इन आत्मकथाओं का केवल यथार्थ तथ्य की दृष्टि से ही नहीं बरन् कलात्मक दृष्टि से भी महत्त्व है।

गाँवों का पुनर्निर्माण बड़ी स्पष्टता के साथ स्ताल्स्की के संज्ञा में दिखाया गया है। उसकी पुस्तक 'बीड़' गाँवों के सामूहिकरण के आदीपन को प्रस्तुत करती है और यह दिखाती है कि 'कुलकों' (बमीशारों) के विरोध को नष्ट कर सोवियत गाँव किस प्रकार 'कल्लेज' में परिवर्तित हुए। यह पुस्तक भी सच्ची घटनाओं पर आधारित है।

इसी प्रकार पीपी के लेख 'व्यक्तियों के विचार चिन्ता और कार्य' और 'नये व्यक्ति' तथा सगिन्यान के आरमीनिया में भ्रमण का बड़ा महत्त्व रहा। सन् १९३१ में निबन्ध लेखक के रूप में अगस्तोव एकलोक मिश्रीठाव गालिन गरबाथोव तथा अन्य लेखक इस क्षेत्र में जाय। लीबनोव की निबन्ध पुस्तक 'खानाबदोश' बड़ी लोकप्रिय हुई। इसमें तुर्कमीनिया के नए जीवन का बड़ा सजीव चित्रण हुआ है।

निबन्ध महत्त्वपूर्ण होते हुए भी साहित्य द्वारा प्रस्तुत सभी प्रश्नों का जवाब न समाधान न कर सके। इसी से निबन्धों के माप-साध कहानी उपन्यास जैसे विकसित साहित्यिक प्रकार भी सामने आए जिनमें उद्योगों तथा गाँवों के जीवन का पुनर्निर्माण के व्यापक चित्र प्रस्तुत किए गये। परिश्रम तथा निर्माण के नए रूपों को प्रदर्शित करती हुई ये कृतियाँ इस ओर भी ध्यान देती हैं कि स्वतः मनुष्य इन परिस्थितियों में किस प्रकार बदल रहा है और उसमें किस प्रकार संसार के प्रति समाजवादी संबंध बूढ़ हो रहा है। नए प्रकार के इस सोवियत व्यक्ति का व्यापक चित्रण इस समय के लेखकों की कृतियों में बहुत मिलता है। एम० एब्रिम्यान का उपन्यास 'हाइड्रा सेन्द्रल' (१९२१) किमानोव का 'सोत (नदी) ईश्या एरिन बर्ग का 'बूगरा दिन' (जो भयंकर की कुरमेत्स्की के घातु कारखाने की यात्रा के बाद लिखा गया) और बिना गाँव बरमे' (१९१५) कटाएव

का 'आप की ओर' (१०३२) एसी ही कृतियाँ हैं। जो मोबियस बंद में होनेवाले विद्यालय समाजवादी निर्माण का अंकन करती हैं तथा जो साहस तथा समाजवादी आत्मबलिदान में मुक्त परिधम के बेध में परिपूर्ण हैं और जो त्वर की अनुमति से हम मान स कि सौ मात्र के समय को उन्हें हम साल में तय करना है, निश्चय है।

लिभोनोव का 'सोत्र (नदी) देम क जीवन की मर मडिक— समाजवादी पुनर्निर्माण का युग का विभजन करनेवाला महत्वपूर्ण उपन्यासों में से एक है। लिभोनोव ने यह उपन्यास उम स्थल की यात्रा के बाद लिखा जहाँ कि औद्योगिक कारखाने का निर्माण हुआ था। सोत्र नदी का यह क्षेत्र पिछड़ा हुआ प्रदेश था और वहाँ के सर्वाधिकारी नवीन जीवन के विरोधी और शत्रु थे। हम प्रदेश में धीरे-धीरे विरोध के बीच समाजवादी निर्माण शुरू होता है और जनता की चेतना में परिवर्तन होता है। प्राचीन और नवीन के संघर्ष में कृत्रिम जीवन पर नवीन समाजवादी संस्कृति की विजय होती है।

शायियाल के उपन्यास 'हाइड्रा मस्कर' में दस की आर्थिक व्यवस्था का समाजवादी निर्माण की विनाशकारी योजनाओं का अभिस्मरण हुआ है। हमने यह बताया गया है कि यह समाजवादी यात्रा केवल सामान ही नहीं तय्यार करती बल्कि सामान के साथ-साथ यह तथा समाज भी तय्यार कर रही है जो वही अधिक महत्वपूर्ण है। देश के जीवन का व्यापक परिवर्तन और उसके समाजवादी औद्योगिकरण उपन्यास में बड़ी सजो चला के साथ अभिस्मरित हुआ है।

आगे बढ़ा उपन्यास का विषय-वस्तु समाजवादी निर्माण से संबंधित है। हमकी अलग-अलग घटनाओं में पंचवर्षीय योजना के साहसपूर्ण दिन तथा समाजवादी आर्थिक व्यवस्था का पीछातिपीछा संपन्न करने में लगी हुई जनता के अथार परिधम का बड़ा महत्त्व अभिस्मरण हुआ है।

मस्कोव का उपन्यास 'शक्ति' समाजवाद के निर्माण की नया मडिक और हम बीच पुनः हुई नयी जनता से संबंधित है। इसके मूल में 'नेपर यीन' के निर्माण से संबंधित सामग्री है। इसके केन्द्र में परिधम और उसके

प्रति नये समाजवादी संबंधों की समस्या है। उपन्यास में जनता की संकट के अपभ्रम को रोकने की समस्या पार्टी द्वारा जन शक्ति के संचालन की समस्या और नैतिकता तथा परिवार से संबंधित जनक प्रश्नों को प्रस्तुत किया गया है।

जनपयोरोध का उपन्यास 'बुस्की' कान्ति के बाद के ग्रामीण जीवन से संबंधित है और अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। यह बताता है कि गाँव का पुनर्निर्माण कैसे हो रहा है। कैसे वर्ग संघर्ष के बीच नये प्रकार के साज जन्म में रहे हैं और गाँवों के जीवन के नए रूप का किस प्रकार सगठन किया जा रहा है। गाँवों के जीवन में संघर्षित हुएगी अत्यन्त लोकप्रिय छुट्टि अपना करवायेबा का उपन्यास 'जंघम का कारखाना' है। इसमें गाँव की नयी प्रगतिशील और कान्तिवादी शक्ति का 'कुक्का' के साथ संघर्ष दिखाया गया है। लेखिका ने यह दिखाया है कि प्रगतिशील विचारों के प्रभाव से गाँवों में किन्हीं प्रकार नये समाजवादी संबंधों का जन्म हो रहा है। सामूहिक परिष्कार विकसित हो रहा है और किसानों की समाजवादी चेतना दृढ़ हो रही है।

छोलेनोव का उपन्यास 'अनबोटी नूमि' इस क्षेत्र में सबसे अच्छा उपन्यास है। बलकोव्री स्तर की विषय ल्गन्सकी की कविता 'दो मुराविया' में प्रदर्शित की गई है।

बुस्की के प्रथम ही भाग में सामूहिकरण की समस्या प्रस्तुत की गयी है। लेखक ने इस व्यक्तिगत मिश्रित की भावना के विरुद्ध युद्ध के रूप में प्रस्तुत किया है। तीसरे भाग में कुक्का तथा उन पर अवलम्बित बुसर्ग का सामूहिकरण के प्रति विरोध दिखाया गया है। कम्पोज़ा के अन्दर कर्ग्यात्र विरोधी लम्बा को प्रदर्शित किया गया है। विन्तु समाजवाद की शक्ति बढ़ती है और उसकी विजय होती है। चौथे भाग का मुख्य भाग समाजवादी सर्जना है।

इस समय में ऐतिहासिक उपन्यासों का भी विरासत हुआ। साहित्यिक सैम्पल का ध्यान एक ओर तो मन्तूबी-बठारहूकी एलाघी के किमान विदाहों की ओर गया और दूसरी ओर अठारहूकी-उप्रीमबी शरी के

अन्तिकारियों के कार्य कमापों की ओर आकृष्ट हुआ। इस क्षण में जपी गिन का उपन्यास 'राबिन स्तेपान' पहला सोवियत उपन्यास है जिसमें किसान विद्रोह का जनारमक रूप प्रस्तुत किया गया है। इसमें स्तपान राबिन का विद्रोह रूसी समाज के 'उच्च' और निम्न' के युद्ध के रूप में अंकित किया गया है।

रूसी बुद्धिजीवियों का रूसी अन्ति और रूसी संस्कृति के बिकास में जो योगदान है उसका विशय मॉल्गा फोर्ड के उपन्यास 'ममकासीन और 'पत्थरों का पहनावा' तथा गिम्पानोव के उपन्यास 'क्यूस्त्या में हुआ है।

इस युग की मादम हृदियाँ बड़ी महत्त्वपूर्ण हैं। इनमें त्रिग्योव के नाटक 'स्पूबोव बरबापा' का अपना स्थान है। इनमें अन्ति के प्रति लेखक और नागरिक का संबंध स्पष्ट रूप में स्थापित किया गया है और बोल्से-विरम तथा अक्यूबर अन्ति का समर्पण किया गया है।

अबरेम्बोव का नाटक 'टूटना' भी सोवियत नाट्य साहित्य की महान् उपसक्ति मानी जाती है। इसके मूस में ऐतिहासिक घटनाएँ हैं। कूबर 'अबरोव' की घटनाएँ, जो पत्रोप्राद के युद्ध और अक्यूबर अन्ति से संबंधित हैं। नाटक के नायक गदून के चित्रण द्वारा बोल्सेविक मतलब का रूप प्रस्तुत किया गया है। अह्राव का कप्तान बरेसेनेव अन्ति के पक्ष में ही जाता है।

इवानोव की कथा पर आधारित नाटक 'जानेपाएस्त १४-१९ बस्तर से मड़ी रैलगाड़ी १४-१९ बिसेप रूप से सफल हुआ इसका पूरा विषय-वस्तु श्रमिका का आन्दोलन है।

मूह-युद्ध से संबंधित नाटकों में इल्गाकोव का नाटक 'तुरबीनों के दिन' का विशेष स्थान है। इसी प्रकार सोवियत जीवन की पर्याप्तताओं से संबंधित नाटकों में रमाघोव के नाटक 'त्रिबोटीस्क का अन्त' तथा 'अम्मिमय पुत्र' और फाइकोव का नाटक 'हृदयों का आवासी' विशेष रूप में उल्लेखनीय हैं। 'त्रिबोटीस्क का अन्त' में नाटककार ने प्राचीन रूसी प्रान्त के अन्तिम दिनों का और कमसोमोव युवकों द्वारा लचीव समाज



बाकी नगर निर्माण कार्य को प्रवर्धित किया है। 'अग्निमय पुल' की मूल विषय-वस्तु बुद्धिजीवी और नाति है। नायिका हरीना दुर्भावना अपने परिवार से अलग होकर पुरानी दुनिया छोड़कर समाजवाद क पक्ष में आ जाती है।

'हृदयग बाला आरामी' में बुद्धिजीवियों का जीवन प्रस्तुत किया गया है। इसमें प्राचीन वैज्ञानिकों का और कम्युनिस्ट विद्वानों का उन लोगों से संघर्ष दिखाया गया है जो सोवियत समाज और सोवियत विज्ञान को हानि पहुंचा रहे हैं।

व्यंग्य प्रधान नाटकों के क्षेत्र का इस युग में विशेष सफलता प्राप्त हुई। मायाकोव्सकी के नाटक—'लटमल' और 'स्नानघर' का सोवियत व्यंग्य प्रधान नाटकों के विकास पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा।

यून् लीम के नाट्य-साहित्य में सोवियत श्रमिक वर्ग के उत्साहपूर्ण परिष्कृत और समाजवादी निर्माण की विषय वस्तु का विकास पर्याप्त रूप से प्रदर्शित है। पर्याप्त का पहला नाटक 'मति' १९२९ में प्रकाशित हुआ। उसके बाद कुस्हाकी की कविता और 'मिरा बोस्त' नाटक प्रकाशित हुए। पर्याप्त के प्रथम नाटक के नायक किमान अजबूर हैं जो स्टाकिनघाट टुबटर निर्माण में काम करते हुए पंचवर्षीय योजना के समर्थक बन जाते हैं और बेतन रूप में सक्रिय योग देते हैं। दूसरे नाटक का मुख्य प्ररक भाव वैश्वमूलक सोवियत जनता का सर्वनात्मक परिष्कृत और कम से कम समय में समाजवादी उद्योग का निर्माण है। कठिनाइयों और विशेष रूप से लोगों का नहीं रोके पाते बल्कि संघर्षरत व्यक्तिगत स्वार्थ नहीं करने के प्रयत्न तथा समाजवादी निर्माण का उत्साह कर रहा है।

प्रथम पंचवर्षीय योजना में संबंधित महत्वपूर्ण नाट्य कृतियों में बलाग्व का नाटक आम वक्रा तथा बिस्व बलोसेवकोव्सकी का नाटक 'लस की आवाज' उल्लेखनीय हैं। इसी प्रकार समाजवादी समाज, यून् लीम के दसक के पूर्वार्ध के उन नाटकों के संघर्ष और समस्याओं के मूल में हैं जिनमें सोवियत बुद्धिजीवियों के जीवन का अभिध्वंजन हुआ

है। अफ़िनेनेव के नाटक 'अमीब आदमी' 'मय' लिबोनोव का 'स्फ़ूटा-रेवस्की' रमाद्यान का 'पोडा' ऐसे ही नाटक हैं।

'अमीब आदमी' नाटक का नायक बरीस बोल्गिन है जो एक छोट से पहाड़ में कारख़ाने में काम करता है। वह किसी पार्टी का सदस्य नहीं है फिर भी वह समाजवाद के निर्माण को अपनी निजी काम समझता है और इसकी विजय में उसका विश्वास है। वह बुद्धिजीवियों के उम्र भय का प्रतिनिधि है जिसने क्रान्ति के बाद अपने की जनता के साथ मिश्र दिया और सोवियत शासन का समर्थन किया। वह उत्साही कार्यकर्ताओं का मंडक बनाता है और कारख़ाने की पंचवर्षीय योजना की शरत में पुरा करने की प्रेरणा देता है। नायक का ध्युरोकाटिज्म के विरुद्ध जो मूढ है वही इस नाटक के उषर्ष के मूढ में है।

'मय' नाटक में विज्ञान के मोर्चे पर शर्ष-सर्ष की समस्या की ओर ध्यान आक़ुष्ट किया गया है। इसमें बयोबुद्ध बैज्ञानियों के राजनीतिक सिद्धान्तिक पुनर्निर्माण का प्रयत्न प्रस्तुत किया गया है। इसमें बैज्ञानिक शर्ष में पिछड़ हुए तथा हानिकारक तथा का नाश और किमाना तथा मनुष्यों के बीच विद्वानों की नयी शर्षी का निर्माण विलाया गया है। नाटक का उषर्ष इन्स्टिच्यूट के डाइरेक्टर बरोविन और जवान कम्प्युनिस्ट विद्वानों के बीच होता है। बरोविन इस प्रतिस्पर्धाकारी सिद्धान्त से प्रेरित होता है कि मनुष्य का सञ्चालन केवल प्रेम भूक्त बुद्धा और भय से होता है। अन्त में उसे पता चलता है कि वह जामुसों के हाथों में बोक रहा था। नाटक का अन्त सोवियत विज्ञान के प्रतिनिधियों की विजय और बरोविन की पराजय में होता है। आश्रित में वह अपनी एकदली स्वीकार करता है।

गृहयुद्ध से संबंधित नाटकों में बिबनेवस्की का 'आमाबादी ट्रेनेबी' महत्वपूर्ण है। इस नाटक में यह दिखाया गया है कि प्राकृतिकरिपयत क्रान्ति किन प्रकार घटकों से सुमन्वित हुई किन्तु प्रकार उसकी शक्ति से समुद्र हाकर पार्टी का संगठनात्मक रूप और कार्य सफल हुआ और किन्तु प्रकार अराजकता के ऊपर समाजवादी अनुशासन विजयी हुआ। नाटक में

गृहयुद्ध की एक सामान्य प्रकार की घटना का विषय हुआ है। नीचे निर्दोषों की एक अराजकतावादी टुकड़ी कम्युनिस्टों के प्रभाव से छाल सेना का नियमित सुसंगठित और अनुशासित अंग बन जाती है जो कैमिया में बहुत गाड़ों के विरुद्ध लड़ती है। इसकी नायिका कमिसार का विश्व अत्यन्त प्रभावोत्पादक है। नाटक के अन्त में वह शत्रु द्वारा मार डाली जाती है फिर भी वह क्षुब्धी नहीं और अंतिम क्षण तक वह पार्टी और माव्युनि के बारे में सोचती रहती है। उसका निर्णय अतः क्रान्ति सोचियत जनता और कम्युनिस्ट पार्टी की अनिवार्य विजय में सबका विश्वास दृढ़ कर रहा है। इसी से 'ट्रिजेडी' होते हुए भी यह आशाकारी है।

### काव्य

समाजवादी परिस्थिति का सोवियत काव्य पर गहरा प्रभाव पड़ा। इस युग में हेम्यान बीबनी का अपना काव्य-सर्जन चलता रहा। देश के औद्योगिकरण के साथ उसके काव्य में सर्वनात्मक परिष्कार की विषय-वस्तु और निर्माणकारी मार्ग पर जनता के साहस और उत्साह का अंकन प्रस्तुत हुआ। प्रतिदिन के काम को अच्छी तरह पूर्ण करने वाले सामान्य सोवियत व्यक्ति को उसने नायक के रूप में प्रस्तुत किया।

सोवियत सामन के इन आरम्भिक वर्षों में पुराने कवियों के साथ कवियों की नयी पीढ़ी भी सामने आई। बेदिमंस्की ने अपने काव्य में सोवियत नवयुवकों का भावनात्मक प्रस्तुत किया और उनका काव्य में उसकी व्यंग्य की प्रतिभा लक्षित हुई और उसका पार्टी प्रेम भी। उसने कहा कि 'सबसे पहले मैं पार्टी का सदस्य हूँ और बाद में कवि।' हमारे जीवन के दिन में कई व्यंग्य विद्य हैं। उनका पद्य मात्रक 'पोली' बड़ा लोकप्रिय हुआ।

गाँव के नवयुवकों के बीच आरोग्य का काव्य बड़ा लोकप्रिय हुआ। 'बासन्ती दिन' 'प्रम के पीठ' आदि उसके कई संग्रह हैं। खजानी का उत्साह सर्वोत्तम परिष्कार प्राकृतिक विषय तथा प्रेम की विषय-वस्तु ने पाठकों का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया।

गृह-युद्ध और क्रान्ति के दिनों की संस्मृति युद्ध के बीच साहस तथा

वीथी आदि का व्यापक चित्रण स्वेतलोव, स्यामोव गलोदनी आदि की कृतिपों में मिलता है। स्वेतलोव की कविता 'अनार' (अनार) में इसका वर्णन हुआ है, जिसमें काष्ठ सेना के सैनिक के लिए अपने देश का स्वातन्त्र्य युद्ध सारे ससार की जनता के स्वातन्त्र्य युद्ध से संबंधित है। यह युद्ध से संबंधित उसकी कुछ कविताएं बाद में लोकगीत के रूप में लोकप्रिय हो गईं। इसी वर्षों में आलीमोव का 'छापामार' बड़ा व्यापक हुआ।

इसी युग में लीखनोव की काव्य प्रतिभा उसके काव्य 'नायक की खोज' के रूप में अपना विकास मार्ग ईंट रही है।

एडुमर्द बरीत्स्की के काव्य 'अपानस के विषय में विचार' में यूकेनीव रग है। इसमें अपानस का चित्रण है जो क्रान्ति से विमुख होता है जोर बाद में धनु पद में बला भाता है। इसमें उसके जीवन की ट्रेजरी दिखाई गयी है। कवि ने वैयक्तिक स्वामित्व की मानना की आलोचना भी की है। इसाकोव्स्की का इस समय का काव्य भी महत्वपूर्ण है। नये पाँवों के जीवन की नई विषयताओं का उसमें बड़ा अच्छा चित्रण हुआ है। उसका काव्य 'पूँस में बिबसी का तार' सोवियत काव्य के विकास का महत्वपूर्ण रूप माना जाता है।

इसकी कविताओं में नगर तथा गाँवों को प्रतिपत्ती के रूप में न चित्रित कर किसानों तथा मजदूरों की नपर तथा गाँवों की एकता का समर्थन किया गया है। इस समय की उसकी अन्य कविताओं में प्राचीन गाँवों के आनन्द रहित जीवन के साथ नवीन पाँवों के उत्साहपूर्ण आनंद जीवन की तुलना मिलती है। आगे चलकर कस्बोत्री पाँवों की विषय-वस्तु का उसके काव्य में और भी विकास हुआ। उसने कस्बोत्री जीवन के बड़े संजीव चित्र प्रस्तुत किये। असेयव के राजनीतिक प्रपीतों में अब स्वतन्त्र हुई स्त्रियों के मुक्त सीमाध्य तथा सोवियत मजदूरों के उत्साहपूर्ण स्वतन्त्र जीवन का अंकन हुआ है।

समाजवादी निर्माण की विषय-वस्तुओं से संबंधित सम्पूर्ण तीस के आरम्भिक वर्षों की कृतिपों के बीच ब्रेजिमेंत्स्की के काव्य 'नवज राशि'

का उत्सर्जन आवश्यक है। इसमें प्राचीन व्यवस्था का अनिर्धार्य भाग दिखाते हुए कवि ने 'नेपर नैस' (अस विक्रमी धर) के निर्माण को नयी समाजवादी व्यवस्था की नई सभित के प्रतीक के रूप में चित्रित किया है जो प्रकृति पर अधिकार प्राप्त करती हुई व्यक्ति को साहस तथा समिधानपूर्वक कार्यों की प्रेरणा देती है।

नये साहसी और आत्मविक्रान्ती नायक का चित्र दिनेश्वर की कविताओं (पद्य कथाएँ) में समरा है। इसमें कवि ने सामान्य सौखिन व्यक्तियों की उच्च नैतिक विधिष्ठताओं को प्रदर्शित किया है और परिष्कृत के प्रति उस नये सर्वश को दिखाया है जो समाजवाद के लिए क्रिये गये सामूहिक संघर्ष के बीच उत्पन्न और 'बूढ़ होता है 'नया तरीका' 'ईजी निगर 'बानून'।

इन्हीं वर्षों में सीमनोव असीयेर इकमाताम्की आदि का काव्य प्रकाशन आरम्भ होता है। इन्हीं वर्षों में मुरकोव के प्रथम काव्य संग्रह युनयून (हम उन्न) प्रस्तुत हुए और उनमें गीतकार के लक्षण विकसित हुए।

सोवियत संघ के अग्र प्रजातन्त्रीय समाजवादी जीवन का जो मूल निर्माण हो रहा था उसकी अभिव्यक्ति भी इस समय के काव्य में मिल रही है। सीखनोव के काव्य में 'युना' (करबती के विषय में कविता) इसकी अच्छी अभिव्यक्ति हुई है। नव जीवन के निर्माता की दिन-प्रति-दिन की कार्य उत्पत्ता और उत्साह का वर्णन कवि का मुख्य उद्देश्य है।

तुरुमीनिया के प्रजातन्त्र के जीवन का चित्रण लोम्बेन य की कविताओं में हुआ है। मोस्कोविच को रैबिस्तान और बसन्त की विषय वस्तु समाजवादी विद्या और प्राचीन बर्तियों के विरुद्ध संघर्ष है।

अपने युग की आत्मा को सुरक्षित करने हुए पश्चिम के भावावेष्ट से परिपूर्ण वे कृतियाँ देस के पुनर्निर्माण के प्रति उस सर्वान सामकीय संबंध को प्रदर्शित करती हैं जो कि इन वर्षों में प्रस्तुत हुआ। इस प्रकार परिष्कृत-शील जनता की सर्वना का वर्णन करनेवाली इन कृतियों में सोवियत साहित्य की देवकृति की भावधारा तथा विद्या का अभिव्यजन हुआ।

ये कृतियाँ यह भी प्रदर्शित करती हैं कि जिस प्रकार पंचवर्षीय योजनाओं की सफलता के साथ देश बढ़ा उसी प्रकार अपने देश के साथ बढ़नेवाले नये व्यक्ति की नयी विधिष्ठताएँ भी विकसित हुईं। सोवियत देशक मानवीय चरित्र की इन नवीन ऊँचभूमी प्रयत्नशील विशिष्टताओं को जिन्हें कि समाजवादी यथार्थता ने निर्मित किया के अंकन की ओर विशेष रूप से आकृष्ट हुए। जनता के चरित्र विकास का यह अधिक रूप समूह के बीच उसके चरित्र का परिवर्तन आन्तिकारी युद्ध में उसका योगदान इन सबकी बड़ी सुन्दर अभिव्यक्ति व्यक्तोष्की के उपन्यास 'लोहा कैसे तैयार किया गया' और मकरंको की कविता 'विस्तारमक कविता' में हुई।

इस प्रकार इस युग का काव्य जीवन की यथार्थताओं के अधिकधिक निकट जाता गया और उसने जीवन के प्रसिद्ध में सक्रिय भाग लिया। समाजवादी आदर्श का समर्पण और बुर्जुआ व्यक्तिगत माननाओं के विरुद्ध संघर्ष-इस समय के काव्य की मुख्य विशेषताएँ हैं। इस समय की महत्त्वपूर्ण कृतियों के नामक मखूर, कलखोजी किसान इंजीनियर तथा मामूली श्रमिक हैं जो समाजवादी समाज के आत्म बलिहारी निर्माता हैं और जो जीवन और परियम के क्षेत्र में नये सामाजिक संबंधों को बूझ कर रहे हैं।

### अ० मकरंको की शिक्षात्मक कविता

व्यक्ति की समाजवादी शिक्षा (जो कि मनुष्य को परिवर्तन की ओर स्वेच्छा से प्रेरित करती है) की समस्या मकरंको की कविता 'विस्तारमक कविता' में बड़ी मंत्रीरता के साथ प्रस्तुत की गयी है। सोवियत साहित्य की अन्य कृतियों के समान यह भी यथार्थ पर आधारित है। इस कविता के मूल में मकरंको का यह अनुभव है जो कि उसे अनाथित बालकों के संगठन और संघामन में प्राप्त हुआ था। कठिन परिस्थितियों के बीच भी मकरंको असामाजिक बुरी आदत सीख हुए इन बच्चों का सफल संघठन बना सका जो आग चल कर मच्छ डाक्टर, इंजीनियर, सैनिक आदि बने।

मकरंको ने न केवल अपने आश्रित इन बच्चा को शिक्षा दी बल्कि

इस तथ्य को कलात्मक परिधाम भी दिया जिसका परिधाम यह कविता है। यह प्रदर्शित करता है कि किस प्रकार जीवन की परिस्थितियों द्वारा मनु इन लोगों की आत्माएं फिर से सुबखती हैं और परिधाम तथा मनुष्य का मनुष्य में विश्वास किस प्रकार उनको समाज का सुसम्मानित सदस्य बना देता है। यह घटना अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है जिसमें संगठन के एक सदस्य (मृतपूर्व खोर) को बाकसाने से रपया जाने को भेजा जाता है। उसके प्रति विश्वास के इस प्रदर्शन ने उसमें आमुस परिवर्तन उपस्थित कर दिया, उसमें मनुष्यता को जन्म दिया और उसमें उस शक्ति को प्रबुद्ध किया जिससे कि वह दूसरों के विश्वास के योग्य बना रह सके। अब वह भी अपने को इच्छितकार आदमी समझने लगा। समाज बावी शिष्या ने इस प्रकार व्यक्ति के सामने नया व्यापक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। उसकी उदात्त भावनाओं को प्रबुद्ध किया और उसके आत्मिक सौन्दर्य को सच्च स्तर पर प्रतिष्ठित किया।

मदरेंको का योगदान इस बात में है कि वह इस छोट से जवा-  
हरण में सोवियत व्यक्ति की नयी विशिष्टताओं की और जीवन की उन  
शक्तियों को जिन्होंने इन विशिष्टताओं को पुष्ट किया—देख सका,  
समझ सका और प्रभावपूर्ण ढंग से प्रदर्शित कर सका।

## ५ निकोलाई मलेखोविक भस्त्रोष्की

[ १९०४-१९३६ ]

भस्त्रोष्की का जीवन अल्प किन्तु जीवन के अनुभवों एवं अनुभूतियों से परिपूर्ण है। बीसह वर्ष की वय में वह यूक्रेन में स्वैठ पादों के विरुद्ध युद्ध में प्रवृत्त हुआ। वह यूक्रेन के कमसामोल (युवक कम्युनिस्ट लीग) संस्था के प्रथम सदस्यों में से था। वह साल सना में और युद्धमयारों में भी रहा।

१९२० में भाग्य होकर वह सेना से अलग हो गया। स्वस्थ होने पर वह देश के पुनर्निर्माण के काम में लग गया। किन्तु वह फिर बीमार हो गया और बीरे-बीरे उनके शरीर के सारे खंड खसल हो गये। उसे एक प्रकार का गठिया हो गया और वह बिल्कुल अंधा हो गया।

यद्यपि उसकी शारीरिक पीड़ा अपनी पराकाष्ठा पर पहुँच गई थी और वह बिल्कुल निस्मय हो गया था फिर भी इस पीड़ा ने आत्मसमर्पण न किया। वह अपनी अन्तिम साँस तक लड़ता रहा। वह एक पत्र में अपने मित्र को लिखता है— "मैं हीम साध में अपने जीवन के लिए युद्ध कर रहा हूँ। यदि मेरे जीवन के मूस में आखिरी समाधान तक लड़ते रहने का सिद्धांत न होता तो मैंने न जाने कब अपने को मस्ती मार डी होती।"

शरित्त श्री यह बूझता उम इस चीज से मिली कि उसने अपने जीवन को सर्व सामान्य की जीवन मति में भिन्न किया। उसने लिखा कि यह तेजी या अर्ध भाव वाला व्यक्ति सबसे पहला मरत होता है। वह अपने में और केवल अपने लिए जीवित रहता है। यदि उमका यह अर्ध टूट जाता है तो फिर उसके पास जीवन के लिए कुछ नहीं रह जाता। किन्तु जब व्यक्ति अपने लिए नहीं जीता बरन सामाजिकता के बीच निर्मित और विकसित होता रहता है तो उसे मारना कठिन है—तब उम मारने के लिए धारे मारतारन को सारे देश को सारे जीवन को मरत करना आवश्यक है।



यदि व्यक्ति में व्यक्तिगत या निजी हित बृहत् स्थान ले लेता है और सामाजिक हित का स्थान अल्प हो जाता है तो व्यक्तिगत जीवन का नाश उसके लिए सर्वनाश हो जाता है। तब उसके सामने प्रश्न उठता है कि किप्रतिष्ठा क्या है ?

अस्वास्थ्य के सामने यह प्रश्न कभी नहीं उठता क्योंकि उसे जीवन में कुछ करने की शक्ति व्यक्तिगत या निजी काम की भावना से नहीं मिली बरन् उसे यह शक्ति उसकी पार्टी/बाबिता और बेस तथा बनता की अन्तिम छान तक सेवा करते रहने की प्रबल इच्छा होती रही।

अपनी पार्टी बनता तथा बेस की सेवा करने की वृद्ध इच्छा ने ही उसमें सेवक बनने की भावना जमाई। हर प्रकार से पंगु हो जान पर भी जब न वह बेस तकता था और न किस को बोहरा सुकता था—बड़ सेवक बना और बौक-बौक कर दूसरों को अपने भाव विचार तथा अनुभूतियाँ सिखाता रहा जिससे कि चौबिधत बनता उनसे साम उठा सके।

उसकी इस बुद्धता का परिणाम है उसकी कृति 'कैसे सोहा तम्हार किया गया। इसका प्रकाशन अस्वास्थ्य की विजय थी। उसके लिए जीवन के द्वार फिर से खुल गये। उसने सिवा 'जीवन के द्वार मेरे नामने पूरे खुल गये। (जीवन) मुझ में पुरा-पुरा भाव लेने का मैत्र स्वप्न पूर्ण हो गया। जब काम की ओर विकास की ओर, संप्राप्ति की ओर। १

सेवक के रूप में समाजवाद का समर्थन करते हुए वह सेवक की जिम्मेदारी अच्छी तरह समझता था। उसने कहा कि "सेवक होने का मतलब सब से पहले समाजवाद का निर्माण जाना। वह (सेवक) पांडा है, पिछक है, न्यायालय है। वह कहता है कि "धार्मिक धर्म का पार्टी का बड़ावार पुन बनने से बड़ा कोई जानन्द नहीं है।" पार्टी के महत्व को वह ऐसे रूप में स्वीकार करता है। मैं कर्षी की छोटी बूँद हूँ बिद्यम पार्टी का गुर्ब प्रतिबिम्बित हो रहा है। वह पहचानता है कि उसकी रचना पड़ते समय पाठक महान् पार्टी के प्रति बड़ावारी की भावना से अभिभूत हो जाय।

## ‘शोहा कैसे तप्यार किया गया’

उसे अपने इस पड़ोसे ही उपन्यास में बड़ी सफलता मिली क्योंकि इसकी सर्वना के मूल में उच्च आदर्श था। इसमें मस्त्रोस्की ने यवार्थ घटनाओं की सामग्री के आधार पर नवीन व्यक्ति की समस्या उसकी सहजशीलता की शक्ति ने बीच प्रस्तुत की और उसका अपना जीवन स्वयं वह मूकमोल बन गया जिसकी यवार्थ घटनाओं का चयन कर उसके उपन्यास की रचना हुई। उसका जीवन स्वयं आदर्शों से इतना अनुप्राणित और संघातित था और आन्तरिक शोध्य से इतना प्रवीण था कि वह स्वयं इस युग की कलात्मक कृति बन गया।

यह उपन्यास मूल रूप में उसके जीवन की ही कथा है और इसका नायक पाब्लो कर्षामिन मस्त्रोस्की की ही प्रतिमूर्ति है। दोनों का माय्य बहुत कुछ एक सा है। जमता के साथ ऐक्य केसक और उपन्यास के नायक दोनों के विकास और शौध्य के मूल में है। दोनों में वृष्टि और श्वेय की बड़ी स्पष्टता है और दोनों में चरित्र की दृढ़ता है। पाब्लो कहता है कि ‘मनुष्य के लिए सबसे प्यारी चीज जिनगी है। यह मनुष्य को एक ही बार दी जाती है। इसलिए इस तरह जीना चाहिए कि बार में यह पकतावा न हो कि इतने वर्ष उद्वेक्यहीन जीन लये और मरते हुए कह सकें कि साग जीवन और सारी शक्ति संसार में सबसे धुंर-मानवता की मुक्ति के युद्ध—के प्रति अर्पित कर दी गयी।’

पाब्लो अपना जीवन इसी प्रकार बिताता है। वह पृथु युद्ध के वर्षों में ठारु सेना की प्रथम पंक्तियों में है और समाजवाद निर्माण के वर्षों में शमिकों की अगली पंक्ति में। जब वह सब प्रकार से रोमी और शंका छोड़कर सतिहीन होकर बिस्तर पर पड़ जाता है तो वह सोचता है कि क्या आरम्भ कर लूँ। तब उसका विवेक कहता है कि क्या तूने जीवन पर विजय पाने की चपटा की? क्या तूने सब कर लिया कि अब इसे (जीवन) फेंक दे? रिवातकर किया और अब इसकी चर्चा किसी से न करता। उस समय जीने की शक्ति एक जब जीवन जमहा हो जाय। जीवन को हितकारी बना।

चरित्र की यह दृढ़ता जिसकी शिक्षा उस अपनी पार्टी से मिली—  
उसे अपनी दुर्बलता पर विजय पाने की शक्ति देती है और वह उद्देश्य या  
व्यापक सत्य प्रदान करती है, जिससे उसका जीवन उपयोगी बन जाता है।  
जब वह सब प्रकार से पंगु और बेबस हो जाता है तो वह उस साधन का  
उपयोग करता है जो अभी तक बचा है और यह शस्त्र है। वह सभ्यों  
का प्रयोग करता है और सेलक बन जाता है। उसकी कृति से पाठकों को  
यह शिक्षा मिलती है कि कभी आत्मसमर्पण न करना चाहिए। कभी  
हिम्मत न हारनी चाहिए और अपने में सदा शक्ति खोजनी चाहिए जिससे  
कि युद्ध में लड़ा रखा जा सके।

इस उपन्यास में नकारात्मक नायक का नहीं बरन् गुण संपन्न युद्ध नायक  
का चित्र अंकित किया गया है। इसके केन्द्र में कम्युनिस्ट नायक है जो  
अपने चरित्र की विशेषताओं में पूर्णतया अनेक रूपारमक है। अस्त्रात्मकी  
का उद्देश्य ऐसे ही युवक नायक का चित्र प्रस्तुत करना था जिससे देश के  
अज्ञान प्रेरणा या मर्के और युद्ध तथा क्षति दोनों के मोर्चों पर उट कर  
काम कर सके और जागे बढ़ सके।

‘दूदानों से जन्मे’

यही समय समने अपने दूसरे अपूर्ण उपन्यास ‘दूदानों से जन्मे’ के  
लिए रखा था। ‘यह कृति सोवियत युवक वर्ग को समित करके लिखी  
गयी है। ‘जवानों में यह भेतना मरनी चाहिए कि एक योद्धा बेबसी की  
परिस्थिति में भी साहस द्वारा शत्रुओं को अपार हानि पहुँचा सकता है।  
अन्तिम संभावना तक लड़ते रहने के लिए साहस और दृढ़ता की शिक्षा  
देनी चाहिए। ऐसे साहस का उद्देश्य जो तर्क के विरुद्ध है कभी कभी  
आश्चर्यक है। यह प्रमाणित करता है कि बेबसी की परिस्थिति नहीं होती  
है साहसपूर्ण प्रतिरोध जब कुछ मष्ट कर देता है, इसी से अस्त्रात्मकी  
और उसके उपन्यास का नायक सभी प्रकार की कठिनाइयों पर विजय  
पा सके। जीने का आनन्द उनको कष्ट क बीच भी इसलिये मिल  
सका क्योंकि उनके सामने बेग सेवा का उधार सत्य था जो कि उन्हें  
बराबर प्रेरणा देता रहा।

यह उपन्यास सोवियत साहित्य की उन मार्क्सवादी कृतियों में से एक है जिसमें समाजवादी निर्माण का बेग प्रदर्शित किया गया है। युद्ध के बाद शांति की परिस्थिति में देश के पुनर्निर्माण का कार्य किस जोर के साथ किया जा रहा है, यह इस उपन्यास में चित्रित किया गया है। इस उपन्यास ने युद्ध तथा निर्माण दोनों के अनुभवों के आधार पर नवयुवकों को यह धारणा दी कि जिन्दगी से सबसे अधिक प्यार करो किन्तु यह प्यार केवल अपने लिए न हो बल्कि सच्चा तथा व्यापक बन्धुत्व को कार्यान्वित करने के लिए हो। अपनी सर्वना और अपने जीवन के द्वारा अस्त्रोव्स्की उस दृढ़ता साहस सहनशीलता तथा निरन्तर प्रयत्नशीलता की शिक्षा देता है जो कि मनुष्य को सच्चा कल्याण द्वारा प्राप्त होती है।

'छोटा कैंपे लम्बारा किया गया' उपन्यास सोवियत साहित्य की अत्यन्त लोकप्रिय कृतियों में से है। इसने बहुत से (१८८ से अधिक) सम्स्करण हो चुके हैं और बहुत सी भाषाओं में इसका अनुबाद हुआ है। इस व्यापक लोकप्रियता का कारण यह है कि इसकी पुस्तक और उसका जीवन बहुधा को चीना सिखाता है और प्रस्ताव तथा उत्साह देता है। युद्ध के बीच युवकों को इससे बल मिला और उन्होंने देश की रक्षा में अप्रतिम साहस का प्रदर्शन किया।

अस्त्रोव्स्की की सर्वना का सोवियत साहित्य के अभिव्यक्ति के विकास में बड़ा महत्त्व है। लेनिन की पार्टीबादिता की शिक्षा ग्रहण कर, मैक्सिम गोर्की के कठोरतमक स्वरूप में दीक्षित होकर अस्त्रोव्स्की ने समाजवादी यथार्थवाद की महीन ऐतिहासिक परिस्थितियों में साहित्य के बीच प्रविष्टित किया। इसकी सर्वना में हमें यथार्थता के प्रति सच्चाई के पार्टीबादी संबंध का सत्य दिखाई पड़ता है और सोवियत व्यक्ति के चरित्र की मूकभूत विशेषताओं की यही पकड़ मिलती है।

अस्त्रोव्स्की का प्रभाव उसके बाद के लेखकों पर भी स्पष्ट है जिन्होंने पाठक वर्गीयता से प्रभावित होकर सोवियत जनता का विश्व प्रस्तुत किया है। सीमोनोव के 'बिन और 'उठ' का नामक सचूरोव अस्त्रोव्स्की

आपसी की कथा' का नायक मेरिसियेव आदि को पाबेल कर्बापिन द्वारा प्रभावित या शिक्षित कहा जा सकता है ।

सोवियत व्यक्ति की आत्मिक प्रकृति का प्रदर्शन करने के साथ-साथ अस्तोमस्की ने सोवियत समता की सृष्टि की आकांक्षा को भी व्यक्त किया है जिससे कि बहु कम्युनिज्म का निर्माण कर सके । 'हम सृष्टि चाहते हैं हम कम्युनिज्म का मकान बना रहे हैं ।

## ६ मि० झ० शोलोखोव

[ १९०५- ]

मिराफिच बलकन्नाम्बोविच शोलोखोव का जन्म १९०५ म डान सोव में हुआ था। १९२३ में ही उसकी कृतियों का प्रकाशन शुरू हो गया था। १९२४ में उसकी पहली पुस्तक 'डान की कहानियाँ' प्रकाशित हुई।

यद्यपि उसकी उम्र अभी बहुत न थी-फिर भी उसे जीवन का अनुभव बहुत था। वह डान के झग में बहुत भूमा और वहाँ काम किया। १९२२ तक वह डान के राम म अधिकार कर लेनेवाले समुदायों के पीछे पीड़ता रहा और वे इसका पीछा करते रहे। इस प्रकार उसे विभिन्न परिस्थितियाँ मं रहना पड़ा।

१९२३ में वह यान्को माया और उसमें कई काम किये जिनमें बाभा डोमे का जीन ईटें जोड़ने का काम भी था। बाद में वह कमसोमीक पत्र 'मूनसस्व्या प्राग्धा' में सहयोगी हो गया।

साहित्यिक जीवन के आरम्भ में शोलोखोव को मिराफिचोविच से बड़ा समर्पण प्राप्त हुआ। उसने शोलोखोव की प्रथम पुस्तक की ओ भूमिका लिखी थी उसमें शोलोखोव के उन्मत्त भविष्य की बात कही थी और कहा था कि उसका विकास बहुत बड़े लेखक के रूप में होगा।

शोलोखोव की सर्बना का विकास बड़ी तेजी के साथ हुआ। 'डान की कहानियाँ' के तीन वर्ष बाद ही उसके उपन्यास 'घाँठ डान' का प्रथम भाग जनता के सामने आया जिसमें उस सोवियत लेखकों की प्रथम ध्वनी में प्रतिष्ठित कर दिया। १९२९ में इस उपन्यास का दूसरा भाग १९३३ में तीसरा और १९४० में चौथा भाग प्रकाशित हुआ। १९३३ में 'रुंधारी परती जौती यरी' उपन्यास का पहला भाग प्रकाशित हुआ। इन

इतियों की लोकप्रियता का बम्बाय इसी से जमाया जा सकता है कि 'घात डान' १४९ बार और 'बंभारी बरती जोड़ी पपी' उपन्यास १२० बार प्रकाशित हुआ। सोवियत संघ की जनता की पचास भाषाओं में तथा अनेक विदेशी भाषाओं में इनका अनुबाद हो चुका है।

'घात डान' पर सोलोवोव को स्तालिन पुरस्कार मिल चुका है। १९३२ से वह कम्युनिस्ट पार्टी का सदस्य है। १९३९ में वह विज्ञान अकादमी का सदस्य चुना गया। वह उच्च सोवियत का डिप्टी चुना गया। इससे उसकी लोकप्रियता और उसे जो सम्मान मिला है उसका आभास मिल जाता है। द्वितीय महायुद्ध में वह सोवियत सेना में फ्रांसिस्टों के विरुद्ध लड़ चुका है। युद्ध समाप्त हो जाने पर अब वह शांति आन्दोलन का बहुत बड़ा समर्थक है।

इनके अतिरिक्त उसकी और भी इतियाँ हैं। सोलोवोव का जीवन और उसकी सर्वता उन्हीं आदर्शों की ओर उन्मुख है जिसके लिए सारी सोवियत जनता प्रयत्नशील है—कम्युनिज्म के निर्माण के लिए और सारे ससार में शांति के लिए। उसकी सर्वता की स्थापना तथा उसकी अनात्मकता के विचारारम्भ के कारणक महत्त्व के मूस में बही विचार है।

संज्ञात्मक कार्यरक्षण का आरम्भ

सोलोवोव की आरम्भिक कहानियों की कथावस्तु गृह-युद्ध से संबंधित है जिसमें लोगो की ही विरोधी पक्षों में बाँट दिया। इस कठोर युद्ध के बीच सोलोवोव बहु बीड़े देख सका और दिता सका था कि मनुष्य से अच्छी है और उन्हें भी जो कि इन अन्धकारों की मनुष्य से जयाती है। अण्वैज्ञानिक प्रगतिमिसार 'परिवारवाला मनुष्य' कहानियों में यह प्रकटित किया गया है कि किस प्रकार कठोर तथा दयित्वात्मक युद्ध के बीच नये जीवन का जन्म हुआ है। उसकी कहानियाँ मनुष्य के प्रति विश्वास से पूर्ण हैं और यह बताती हैं कि जिस प्रकार कठिन परिस्थिति में मनुष्य की अज्ञान भावनाएं प्रकट होती हैं। जैसे वह अपने स्वयं प्राप्ति के लिए सब कुछ होन कर दे

के लिए तय्यार हुआ है और दूसरे की रक्षा के लिए अपना जीवन दे देता है। कम्युनिस्ट बर्षागिन ठंड से ठिकुरे एन लडक को उठा छटा है और अपने बोड़े पर ले चलता है। श्वेत पाद उसका पीछा कर रहे हैं। बर्षा का भीर कोई उपाय न बलकर वह थोड़ा उभरे दे देता है और स्वयं रुक कर मृत्यु की प्रतीक्षा करता है। इस प्रकार आत्म बलि देकर उसने मर्त्य की जान बचा ली।

इन आरम्भिक कहानियों ने उसके अन्वय का बढ़ाया। उसकी प्रतिभा को पुष्ट किया और उसे मनुष्य के गहरे तथा जनक अन्वयक अर्थक प्रकृति के सूक्ष्म तथा पारदर्शी विनम और सजीव संसार लेखन की योग्यता थी। यह सब परिपक्व रूप में उसकी महत्त्वपूर्ण कृति 'मानव ज्ञान' में प्रकट हुई। ज्ञान की कहानियाँ के कथानक की बहुत सी परिस्थितियाँ शान्ति की विद्युत्ताएँ अलग-अलग घटनाएँ अपना रूप बदल कर इस उपन्यास में आ गई हैं।

### 'शांत ज्ञान'

अपारम्भिक का अनेक अन्वयक अर्थक और उसमें प्रस्तुत समस्या की संमीक्षा के कारण 'शांत ज्ञान' का शोचनीय साहित्य में अत्यन्त उच्च स्थान युक्तियुक्त ही है।

यह उपन्यास के अतिशय प्रकार, जिस महाकाव्यात्मक उपन्यास कहा जा सकता है—का प्रकट करता है जिसे हमें 'रोमान एवा पवा' कहते हैं। योजन के अनुसार एनोपेवा एने व्यक्ति को मायक चुनता है जो अविनाश बनता घटनाओं तथा प्रवृत्तियों से संबंधित तथा संयुक्त रहता है। सब कुछ इस मायक के चारों ओर प्रकाशित होता रहता है। 'शांत ज्ञान' इसी प्रकार का महाकाव्यात्मक उपन्यास है।

उपन्यास के कथानक के अन्त में शिगोरी ब्रसेलोव के जीवन का आधुनिक इतिहास है जो ज्ञान ज्ञान के गृह मुख की पीठिका में प्रकटित किया गया है। इसके साथ ही अन्तिम के पूर्व और बाद का अन्वयक



जाती है। स्वयं शोलोखोव का ध्यान इस ओर गया और उन्होंने भाषा को सुधारा और सरल बनाया। फलतः इस उपन्यास के उत्तरोत्तर भागों तथा बाद के संस्करणों में स्थानीय प्रयोग कम हो गये।

कैसक की भाषा में बहुत से प्रगीतात्मक उद्गार हैं। इसके साथ ही उपन्यास में ऐतिहासिक सामग्री का भी समावेश किया गया है तथा बटनाओं पर मूलात्मक ऐतिहासिक टिप्पणी भी गयी है। इससे उपन्यास की भाषागत विचयता की परिधि बहुत बढ़ गयी। मुख्य पात्रों की विभिन्न बोलियों के कारण भाषागत ठाने-बाने की अनैक्यता कैसक की अपनी भाषा की अभिव्यंजन शक्ति को कभी सरकारी कामों की भाषा और कभी प्रगीतात्मक उद्गार के रूप में प्रकट होती है और कभी मुख्य पात्रों की भाषा में गुब जाती है। इन सबने इस उपन्यास की भाषा को वैसे ही अनैक्यतात्मक तथा समृद्ध बना दिया वैसे कि बटनाओं की व्यापकता तथा विचारों की यथोचितता के कारण स्वतः उपन्यास अत्यन्त समृद्ध है।

**‘हुँकारी भरती जाती गयी’**

१९३२ में शोलोखोव का उपन्यास ‘हुँकारी भरती जाती गयी’ (प्रथम भाग) प्रकाशित हुआ। ‘साँठ डान’ की तरह इसमें भी कठवाकों का जीवन चित्रित है किन्तु नई ऐतिहासिक परिस्थिति में पात्रों के सामूहिक जीवन के युग में। शोलोखोव का ध्यान विशेष रूप से कठवाकों के सामाजिक वर्गीकरण के प्रश्न के उद्घाटन की ओर केन्द्रित हुआ। ‘हुँकारी भरती जाती गयी’ यह उस जनता और पार्टी का गद्य महाकाव्य है जिसमें कि गाँव में जातिकारी परिवर्तन किया और प्राचीन व्यक्तिगत मित्रियता को नाशना को हटाकर नई कलखोबी व्यवस्था स्थापित की।

‘हुँकारी भरती जाती गयी’ में कठवाकों के सामाजिक पुनर्निर्माण की बात नहीं गयी है और भाषिक व्यवस्था को समाजवादी संघटन की ओर ले जाने का उद्देश्य है। उपन्यास के एक मुख्य पात्र कठवात माइखीलोव

## मि० म० सोलोखोव

शारा सोलोखोव ने कज्बाकों के मध्य इपक बर्ग (दिनक पात्र इपि क अपने साबन है और जो इमरों के परिधम का जन्मीदन नहीं करते—अमामी या बुद्ध कास्तकार) की विधिप्लताओं का प्रदर्शित किया है। इमम कम्युनिस्टों का चित्र 'घात' नाम की अपेक्षा अधिक स्पष्ट और बटकीला तथा विकासशील है। शारा कार्यकलाप कलशोत्रीय जीवन के मान्दाहन या मुद्र क शारा मोर कन्वित है। यह उपन्यास इस प्रकार अपनी ऐतिहासिक मामणी क अनूत्प गाकों के पुनर्निर्माण के बर्षों या युग का स्मृति ग्रंथ कहा जा सकता है जो (युग) अपनी महता में अनूत्पर कान्ति के बर्षों में कम नहीं बरन् बराबर ही है।

शाकाशाव व्यक्तिवैगिप्ट्य क बड़ कौशल क साथ उन सबका चित्र प्रस्तुत करता है जो कि इम उपन्यास में समर्प रत है। इसमें उन निर्धन प्रतीकों का चित्र है जिनको कि साक्षियत मासन में अमी-अमी मुक्ति मिली है और जब क स्वम्प होकर सौम से रहे हैं। गाकों के कुलकों (बर्मीबारों) का अंकन है जो विद्राह तथा हत्या करने को तैयार है। (याकाबन्कीच अन्त्रोबनाव) श्रेष्ठ याकों का प्रदर्शन है और उन बुद्ध कास्तकारों का चित्रम है जो भीर पीरे अपन बीहुर चरित पर विजय पा रहे हैं या (बाहुर चरित) किसानों की विद्यपता है। गाकों क नए जीवन में पाटी समठन मान्दाहनकारी के रूप में प्रकट होते हैं। पाँच क कम्युनिस्टों का आत्मबलिदानी कार्य जिसका अगुमा शहर स माया हुआ बबीशव है उपन्यास क कथारमक विकास की घुरी है।

### बबीशोव का चित्र

बबीशोव का चित्र अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। यह प्रयत्नशील नम्र कम्युनिस्ट अपने रोज के सामान्य काम में इम समय से प्रवृत्त होता है जिससे कि उसकी आन्तरिक शक्ति का पता चलता है। अधिक बलों के बीच कार्य के प्रति जा मनाभूति है उसको बदलन के लिए वह अपने का उदाहरण के रूप में प्रस्तुत करता चाहता है और इसलिए यद्यपि वह पहली बार

भूमि जोतता है फिर भी सम्पन्न किसानों से अधिक जोतता है। बाहे क्षेत्र पर मर जाऊ फिर भी (पूरी) भूमि जोत बाहुना' यह कहता है।

यह शक्ति केवल उसकी अपनी नहीं यह शक्ति उसमें देश प्रेम तथा पार्टी विद्या से बूझ हुई है। यह शक्ति पार्टी और जनता की शक्ति है। यह देश के साथ अपने को समित्त समझता है। उससे अपने को असंग नहीं करता। यह समाज के काम को अपना ही काम समझता है और उसके हित में ही अपना काम देखता है और उसके लिए अपनी शक्ति तक देने को तय्यार है। यह दुकता उसके शक्ति को विशेषता है। इसी से अब राज्यों के प्रचार से भड़काए हुए लोग उससे बहार की चामी मांगते हैं तो यह चामी देने से छाड़ इन्कार कर देता है। लोग उसकी हत्या कर देते हैं। यह मर जाता है फिरतु अपने कर्तव्य का पालन करता है।

### कम्युनिस्टों का चित्र

दलीखोव के अतिरिक्त सोलाखोव ने कम्युनिस्टों के पाँचों के सामूहीकरण के आरम्भ के युग के गाँवों के कम्युनिस्टों का भी अनेककपात्मक चित्र प्रस्तुत किया है और उनका दैनिक जीवन तथा राजनीतिक कार्यबन्धन के तनाव के बीच प्रदर्शित किया है। सोलाखोव ने उनकी शक्तियाँ भी दिखाई हैं और शक्ति के प्रति उनकी जा समत है और उनके शक्ति की जो शक्ति है उस भी प्रदर्शित किया है। इनकी दलीखोव के उदाहरण से प्रेरणा और शक्ति मिलती है और यह अपने को ठीक भी कर लेते हैं। गगुस्नाव तथा रज्ज्मोतमोव ऐसे ही कम्युनिस्ट हैं।

कत्रातयाइवासीकोव भी उपन्यास के मुख्य पात्रों में से हैं। इनके माध्यम से सोलाखोव ने यह प्रदर्शित किया है कि माध्यम वर्ष के युवक कारतकारों ने किस प्रकार धीरे धीरे कलगाज की स्वीकार कर लिया और ने किस प्रकार कलगाज में शक्ति हो गये। युवकारतकारों का कलगाज में प्रवेश उस युग की बड़ी महारथपूरा राजनीतिक समस्या थी जिसकी चर्चा मिलिन तथा स्टाकिन ने भी की थी। अब माइवासीकोव

यह समझ लता कि उसका हित कल्याण में सम्मिलित हो जाने में है तो वह इसमें बाधित हो जाता है। उसका यह भाव सरल न था। मित्रियत की भावना उसे यह रह कर काँचती है। पीरे पीरे वह इस पर विजय पाता है। शास्ताजी ने इस मनोवैज्ञानिक दृष्टि का बड़ी सूक्ष्मता से दिखाया है। इसके साथ ही उस सामाजिक हित का भी बड़ा ध्यान है। पीरे-पीरे उसमें जीवन के प्रति समाजवादी संभव दृढ़ हो रहे हैं। माइक्रानिका क चरित्र का इस उपन्यास में महत्त्व इस बात में है कि उसके माध्यम से खतरनाकियों के कल्याण में प्रविष्ट होने का व्यापार प्रदर्शित किया गया है बिना कल्याणीय आन्दोलनकी विजय और सफलता निश्चय कर दी।

### शत्रुओं का चित्रण

समाजवादी यथार्थवाद की विजयता यह है कि वह कबल 'जीवन में जीवन का समर्थन' ही नहीं करता गुण संपन्न ठास नायकों का सृजन ही नहीं करता बल्कि उन सबसे कुछ भी करता है जो नये के विकास में बाधा डालते हैं उसकी प्रवृत्ति को रोकते हैं। इस उपन्यास में भी इसी प्रकार शत्रुओं का समाजवादी पुनर्निर्माण विधाते हुए तथा जीवन में नये की प्राप्ति पर अक्षरमन्मात्री विजय प्रदर्शित करते हुए शोका-लता ये उसके शत्रुओं (कृष्ण तथा दशैतपाई) का भी अनेकरूपात्मक चित्रण प्रस्तुत किया है। यह शत्रु कई प्रकार के हैं जो सोवियत शासन का क्लेश तथा घिन कई रूप में विरोध करते हैं। तीव्रतरतीन खुले रूप में दशैतपाई पर आक्रमण करता है। सुपगिनोव का शत्रुत्व के प्रति विरोध चांमिक ढोंग में छिपा हुआ है। सबसे खतरनाक दुश्मन अस्त्रोबनोव है जो कल्याण के भीतर है और भीतर ही भीतर उसे नुकसान पहुँचाने की कोशिश कर रहा है। उसका माध्यम स घोषोत्तम न छिन हुए और इसी से और भी खतरनाक कालि क शत्रु को प्रद-ष्टित किया है। इन्हीं के बीच सोवियत शासन के शत्रुओं को समर्थन प्राप्त होने है। शिरोध्वंसकाव क रूप में उनका चित्रण हुआ है जो विदेशियों के हाथ बिके हुए बैगरीही हैं और जो सोवियत शासन के

विद्वत् सब कुछ करने को तैयार है। इसमें रूसियों का ऐसा ठीक-ठीक वर्णन हुआ है कि जब रूसीय के बपों में कलसोवों में इस उपन्यास का सामूहिक पठन आरम्भ हुआ तो उसने वहाँ के रूसियों के उन्माद में बड़ी सहायता की।

राबूबा की शक्ति को दिखाता कर सोलोवोव ने मरीन के विद्वत् उनके पराजय की खनिवायता भी दिखाई है। पाबों के समाजवादी जीवन की ओर से जाने वाली पार्टी की नीति से कलसोव के विकास को रोकन वाला सभी रूसियों का नाश निश्चित है। उपन्यास का मुख्य भाव यही है कि मरीन की अनराजेय शक्ति सभी विरोधों पर विजय पाती है।

### कक्षात्मक विशेषताएँ

सोलोवोव की अन्य कृतियों के समान इस उपन्यास का भी कक्षात्मक स्तर बड़ा ऊँचा है। इसके विचारों का महत्त्व अविभ्यंजन के उत जानेक कक्षात्मक उपादानों की समृद्धि से और भी बढ़ जाता है जिसका कि इसमें उपयोग हुआ है। पाबों का सजीव चित्रण अत्यन्त कला संघर्षों के द्वारा हुआ है। हर एक पात्र का अपने बोलने का ढंग है जिससे उसके व्यक्तित्व का पता चलता है। इसके साथ ही सोलोवोव अपने पाबों को उनके क्रिया-कलापों के बीच भिन्न-भिन्न परिस्थितियों में रखता है जिससे उनके चरित्र की जनक विधिपटाएँ उभरती हैं और जिससे प्रत्येक पात्र स्वतन्त्र व्यक्तित्व के साथ सामने आता है।

इस उपन्यास की विषय-वस्तु भी अपने ढंग की है। अधिकतर उपन्यासों के वस्तु-तरंग का गठन नायक के व्यक्तिगत जीवन की घटनाओं के आधार पर गठित होता है किन्तु सोलोवोव इससे अलग कक्षात्मक संघर्ष के इतिहास पर या सामाजिक जीवन की घटनाओं पर कथानक का निर्माण करता है। इसमें मुख्य भाव यह है कि व्यक्ति के चरित्र की मुख्य विधिपटाएँ सबसे पहले समाजवाद के निर्माण के प्रति उसके संबंध से उन्मादित होती हैं। समाजवादी संबंध में वह जितना प्यूस है उतना ही उगता व्यक्तित्व स्पष्टता में प्रस्फुरित होता है और

उसके चरित्र के विभिन्न पक्ष विवक्षित होते हैं। इसमें उस्ता जितना ही वह सामाजिक कार्यों में लग्न्य या अलग रहता है उतना ही 'शोशोत्रोत्र' के शिष्या की तरह उसके व्यक्तित्व का महत्त्व पट जाता है और उसके अष्टे गुण गण्ट हा जाते हैं। बग सभप क बीच मैदात्मिक मुड म परिधम के व्यापार मे बीच व्यक्ति की खेतना बूड जाती है और उस का चरित्र मजबूत हाता है। क'खारा धरनी जाती गर्गी' में व्यक्ति का विकास समाजवाद की भार जाल म प्रबलित किया गया है जिस पर चलकर बहु करन व्यक्तित्व का अधिक म अधिक समूह बनाता है। सामाजिक जीवन की घटनाओं पर मनन का केन्द्रित करता हुआ भी सोशलाइज इनकी उन स्वामाजिक व्यक्तिपठ जीवन की परिम्पठिया म समय नहीं करता जा कि इनका कर हुए हैं। वह महात् और लक्ष महत्त्वपूर्ण तथा हास्यप्रक्ष मानवीय जीवन तथा प्रकृति क जीवन को एक में गूँथ देता है।

शोशोत्रोत्र न प्रकृति के अनेक चित्रों का मनन उपन्यास में ममावेश किया है। प्रकृति क सूक्ष्म पर्यवलन पर आधारित प्रकृति क म चित्र धार्मीण जीवन को काव्यात्मक परिधान देत हैं और यह बताने हैं कि मनुष्य का जीवन कितना पूर्ण और व्यापक हा जाता है जब वह अत्याचार और निर्बलता स मजपा मुक्त हो जाता है। उस समय वह अपने चारो भार क प्राकृतिक कातावरण के सौन्दर्य को टाक तरह देखता है और उसका अनुभव करता है।

'शोशोत्रोत्र' की तरह हम उपन्यास की भाषा भी अत्यन्त समूह जनक-स्वात्मक अनिश्चयक तथा कहीं कहीं प्रान्तीय प्रयोगों के कारण दुगम है। कूबारी धरनी जाती गर्गी' साक्षियत साहित्य की महत्त्वपूर्ण हठिया में म एक है।

सुद्ध के रूपों में शोशोत्रोत्र का कार्यकलाप

द्वितीय महायुद्ध में शोशोत्रोत्र न युद्ध-संवाद-गता बनकर युद्ध में भाग लिया। मोक्षियन नेता क माहमपूर्ण कार्यों का अंकन शोशोत्रोत्रने अपनी पुस्तक 'वे मानुमूनि के लिए लड़' में किया है।

राज्य की बर्बरताओं के प्रति जनता में बुधा जगाना—बिस्के  
 लिए सोवियत जनता अभी पूरी-पूरी तैयार नहीं है—युद्ध के आरम्भिक  
 वर्षों के सोवियत साहित्य की महत्वपूर्ण समस्या थी। घोसोखोव के  
 लेख 'बुधा का विज्ञान' ने इस कथ्य की पूर्ति की। आदिस्टों द्वारा  
 सोवियत क्रांतियों का उपहास दिखाने के इस सेवक ने जनता के हृदय में  
 राज्य के प्रति अत्यधिक बुधा जगाई।

युद्ध के बाद घोसोखोव ने शांति आन्दोलन में योग देने लगा।  
 इस समय में उसने लेख भी लिखे और भाषण भी दिए।

उच्च सोवियत में घोसोखोव के बुधा का प्रस्ताव प्रस्तुत करते हुए  
 अ०ते० कालिनिन ने कहा था कि 'घोसोखोव पूरा-पूरा जनता का सेवक  
 है। वह जनता के बीच से आया और हमारे (जनता के) साथ उसका  
 मजिष्ट संबंध बना हुआ है। उसकी रचनाएं न केवल हमारे देश में ही  
 अत्यन्त लोकप्रिय हैं परन्तु सारे सभ्यता के समियों के बीच उसकी  
 अत्यधिक लोकप्रियता है। कालिनिन का यह कथन बिस्कुल ठीक है।  
 उच्च सोवियत में घोसोखोव का कई बार बुधा जाना इस बात का प्रमाण  
 है कि वह कितना लोकप्रिय है और सोवियत जनता उसकी सर्जना का  
 किशता आदर करती है।

## ७ एलेक्सेइ निकोलाएविच तोलस्तोय

[ १८८३-१९४५ ]

अलेक्सेइ तोलस्तोय का जन्म अभिजात कुल में हुआ था और वह उच्च वर्ग के शासकत्व में बड़ा हुआ। प्रतीकवाधियों से उसका चमिष्ट संबंध आरंभ में था जिसके प्रभाव ने उसे क्रांतिकारी विचारों से दूर रखा किन्तु रूसी साहित्य के अन्य संस्कारों के समान वह क्रांति के पक्ष में आ गया उसके साथ अपने जीवन को भिजा दिया और सोवियत देश के आदर्शों का अभिष्मक तथा सोवियत जनता का शिक्षक बन गया।

क्रान्ति के पूर्व तोलस्तोय केवल साहित्यकार था किन्तु सोवियत युग में वह महत्वपूर्ण सामाजिक कार्यकर्ता बन गया जिसकी बातें लोगों ने ध्यान से सुनीं। वह विज्ञान अकादमी का सदस्य चुना गया और सोवियत संघ के आर्बेर से विभूषित हुआ। १९३७ में वह उच्च सोवियत का सदस्य चुना गया। जर्मन फ़ासिस्ट बर्बरता की पीठ के सरकारी कमीशन के सदस्य के रूप में भी उसने युद्ध के वर्षों में काम किया।

क्रान्ति के पूर्व की सर्जना

१९०७ में उसने अपनी पहली कविता की पुस्तक प्रस्तुत की। लोक कथा की पुस्तक (मराठी-भास पत्नी) की कथाएँ, कविता की पुस्तक 'भीली नदियों के पीछे' अठारहवीं शताब्दी के रूसी युग की कहानियाँ— इन सबके द्वारा उसका साहित्यिक कार्यकलाप आरम्भ हुआ। साहित्यिक क्षेत्र में उस पद्य उन कहानियों से प्राप्त हुआ जो बाद में 'बोस्पा के पार' में एकत्रित कर दी गयीं। इन कहानियों तथा अन्य कृतियों में वह आत्मचरितम्बक कथाएँ का प्रतिनिधि है और अपनी सर्जना में बुद्धि



के निकट है। किन्तु जहाँ बूनिह इस मरणशील सामन्ती व्यवस्था के साथ अपने को मिला देता है और उसके अन्त से व्यथित होता है और सामन्ती अतीत में डूबकर बुझी रहता है वहाँ तोलस्तोय इस व्यवस्था का अभिचार्य ऐतिहासिक अन्त देखता है समझता है और जीवन के लिए उसकी अयोग्यता को प्रदर्शित करता है। इस विषय-वस्तु से संबंधित उसकी कृतियाँ गोपल कर्म्मण्य का स्मरण दिखाती हैं। उसकी आत्मकथात्मक कहानी 'निक्कीटा का बचपन' (१९१८) उसकी अष्ट कृतियों में से है जिसमें बच्चे के मनोविज्ञान का सूक्ष्म चित्रण तथा कृती जीवन की मुख्य विशेषताएँ देता हुआ वह अपने बचपन के संस्मरण प्रस्तुत करता है। क्रान्ति के बाद

तोलस्तोय सहसा सोवियत सेसकों की श्रेणी में शामिल नहीं हुआ। पाँच वर्ष (१९१८-२३) उसने बिबेस में लिखा। इन वर्षों में उसे मातृ भूमि के साथ अपने घनिष्ठ संबंध का भाव और भी अधिक हुआ। वह स्वयं कहता है कि मैं बहुत धीरे धीरे प्रौढ़ हुआ। समकालीनता में बहुत धीरे-धीरे प्रविष्ट हुआ। किन्तु इसमें वाकर फिर मैंने उसे सारी ज़िन्दगी के साथ अपना लिया।

सन् बीस के वर्षों में उसने जो कृतियाँ प्रस्तुत कीं उसमें उन विदेश में रहनेवाले या प्रवासी कवियों पर व्यंग्य है जो अपने देश के प्रति अरुण मते हैं।

उसकी प्रतिभा का चरमोत्कर्ष उन व्यापक ऐतिहासिक कथात्मक कवियों में मिलता है जिनमें युग विशेष के मूखमूत प्रश्नों का प्रस्तुत किया गया है। 'पीतर प्रथम' 'पीड़ा के बीच' यात्रा 'राटी' उपन्यास तथा 'इजान मर्कुर' में संबंधित नाटकीय कृतियाँ ऐसी ही रचनाएँ हैं।

पीतर प्रथम उपन्यास

तालस्तोय इतिहास की ओर इसलिए उन्मुख होता है कि वह जगदी सहायता से अपने चारों ओर के जीवन की जाँच तथा अतीत के

वनुजब के आभार पर वर्तमान को संघासित करने वाले नियमा को समझे। ऐतिहासिक विषय-वस्तु के ककारमक उद्घाटन की मुख्य विशेषताएँ हैं अतीत के चित्रण में जीवन-सत्य तथा वर्तमान के हित में सतर्की व्याख्या। ऐतिहासिक कथाओं में दीनस्तोव ने इनका ध्यान रखा है।

पीठर प्रथम का पहला भाग १९२९ में प्रकाशित हुआ। दूसरा भाग १९३४ में और तीसरा भाग अधूरा रह गया।

इस उपन्यास का महत्त्व उस उच्च हैसियत के उत्कर्ष के प्रदर्शन में है जिसके साथ कसौ इतिहास के ये पन्ने खुलते हैं। उपन्यास उस आधुनिक चरित्र को प्रस्तुत करता है जिसकी पूर्ण मूर्तिमत्ता पीठर के रूप में हुई है और उस सक्ति को प्रदर्शित करता है जिससे कभी जनता ने अपने राष्ट्र का निर्माण किया। पीठर का युग आधुनिक साम्यवादी परिवर्तन का युग है जब कि नयी जनता के बीच से नये लोग आते हैं जो बोझे ही समझ में रूप को नये सांस्कृतिक पथ पर आकृष्ट कर उसे सारे नये राष्ट्रों की प्रथम श्रेणी में प्रतिष्ठित करते हैं। इन सबों में पीठर उच्चतम मान है जो युवरा की अपेक्षा अधिक दूर तक वेच और समझ सकता है तथा अपने नए विचारों की कार्यान्वित करने की दृढ़ इच्छा प्रकट करता है। यह उपन्यास पीठर के जीवन का इतिहास प्रस्तुत करता और बूँक पीठर के जीवन को कम के जीवन से अलग नहीं किया जा सकता है इसलिए उपन्यास अठारहवीं शताब्दी के प्रथम अनुपात के कम का ककारमक इतिहास बन जाता है।

### पीठर का चित्र

पीठर के चित्रण का ककारमक महत्त्व केवल इस बात में नहीं है कि उसमें इस महत्त्वपूर्ण कभी व्यक्ति की असली विनिष्ठाएँ प्रदर्शित की गई हैं बल्कि इसमें आधुनिक कभी चरित्र की सामान्य विशेषताओं के रूप में चित्रण किया गया है। इसी से पीठर का जीवन उसके युग के जीवन का ही चित्र बन जाता है।

पीठर में आधुनिक चरित्र अपनी पूर्णता पर है जो उसे कभी

जीवन के पिछड़ेपन को दूर करने के लिए अथक परिश्रम करने की प्रेरणा देता है। उपन्यास रचने रचने वेश तथा पीतर दोनों के विकास को प्रस्तुत करता है। और पीतर की उन विविधताओं को प्रदर्शित करता है—सहनशीलता तथा दृढ़ता—जो बायीं हैं। असफलता उसको और भी दृढ़ तथा प्रयत्नशील बनाती है। कठिनाइयों में उसका चरित्र और भी प्रीड़ होता है। जबोव पर पहला आक्रमण असफल होता है। पीतर दूमरी बार फिर लम्पारी करता है और जबोव पर अधिकार कर लेता है। इसी प्रकार उसका देशप्रेम केवल देश का हित देखता है और दूसरों के उपहास की चिन्ता नहीं करता। जब उसे पता लगता है कि काम की सेना नार्बो जा रही है तो वह बरतरा समझ कर सेना छोड़कर चला जाता है यद्यपि उसके निकट बासे इस कार्यरता समझते हैं।

तोल्स्टोय पीतर के कठोर रूप पर पची नहीं डालता। कनिन ने पीतर के विषय में कहा था कि 'बहु बरतरा के विद्वद् बर्बरता के साधनों द्वारा सजाया।' पीतर का यह रूप इस उपन्यास में पूरा-पूरा दिखाया गया है।

इसके साथ ही पीतर बहुत बड़ा राष्ट्रीय कार्यकर्ता है जो अपने इस हित को समझता है और पूरे हृदय से उसकी सेवा करता है। वह रूसी जनता की खेद विविधताओं का अभिव्यंजक है। उसमें बड़ा माहम है तथा दृढ़ता और सहनशीलता भी है। उसका विकास उसके चरित्र की परिवर्तता कठिनाइयों में पूरा उपन्यास की बया-वस्तु निर्मित करते हैं।

उपन्यास के अन्य पात्र

पीतर के अतिरिक्त इस उपन्यास में और भी बहुत से पात्र हैं जो उस युग के जीवन की तस्वीर प्रस्तुत करते हैं। उपन्यास में रूसी समाज का उन पुराने 'बयादो' (अभिजात बुरस या बर्ग) का प्रतिनिधि-द'बायीं स्तर भी विचित्र किया गया है जो पीतर के विद्वद् हैं और

इसके साथ ही 'बमारों' का यह समुदाय भी चित्रित हुआ है जो पीठर के सुमारों के साथ था। नयी संस्कृति के विदेशी पिछा प्राप्त इजीप्टियन निर्माता यदि भी चित्रित किये गये हैं जो जनता का आदमी हैं जो पीठर के साथ हैं और जो पीठर के प्रति आत्म-समर्पण या जन्म-समर्पण का रूप प्रस्तुत करते हैं। ये लोग पीठर के साथ ही बहुत हैं और चित्रित होते हैं। इनकी जो मच्छी-मच्छी विषयताएँ थीं पीठर से उनका आह्वान किया और उनको लड़ने का मौका दिया। इससे साथ ही वे विदेशी भी चित्रित किये गये हैं जिन्होंने पीठर के युग में स्त्री जीवन में भाग लिया। उपन्यास में उन पारों का भी समुदाय है जिसके आध्यक्ष के जनता के निम्नतम स्तर के लोगों का प्रायः प्रदर्शित किया गया है जो युद्ध की कठिनाइयों को मोच रहे हैं, जो युद्ध में मर गये वा कठिन परिश्रम का कारण-बंद पाचार मर चुके हैं।

उपन्यास में चित्रित घटनाओं की जनक रूपता शरीर की क्षोभशील से लेकर आदर्श के महसूस तक के जीवन का विषय पारों की पंक्ति यह सब उस विराट ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का मुद्रण करते हैं जिसमें उपन्यास का मुख्य कार्य पीठर का जीवन चित्रित हुआ जो अनेक ऐतिहासिक घटनाओं से सम्बन्धित है और आजीव बेग मरिच के बेग से परिपूर्ण है।

### उपन्यास की भाषा

उपन्यास का प्रत्येक पात्र की अपनी भाषा है जिससे उसके चरित्र की विशेषता प्रकट होती है। उपन्यास की यह यथासंभव तथा अभिर्भवजनपूर्ण भाषा पाठक के सामने पूरे पीठर युग का चित्र प्रस्तुत कर देती है जिससे उसकी विशेषता तथा महानता का पूरा-पूरा आभास मिथ जाता है।

इस उपन्यास में समाजवाद का आदर्श नहीं है फिर भी इसमें समाज-वादी उपदेशवाद की विषयताओं का समावेश हुआ है। लक्ष्य युग के चित्रण में जीवन की उनके विकास-व्यापार का बीच चित्रित करता है और जनता का इतिहास स्रष्टा के रूप में प्रदर्शित करता है।

स्त्री जनता के इतिहास का महत्त्वपूर्ण क्षण वा युद्ध में प्राप्त उसका वय का तथा आजीव स्वतन्त्रता का लिए उनका युद्ध का वा चित्रण उपन्यास

जीवन के पिछड़ेपन को दूर करने के लिए अनेक परिश्रम करने की प्रेरणा देता है। उपन्यास धर्म धर्म देस तथा पीतर वीर्गों के विकास को प्रस्तुत करता है। और पीतर की उन विविधताओं को प्रदर्शित करता है—सहनशीलता तथा दृढ़ता—को जातीय है। असफलता उसको और भी दृढ़ तथा प्रयत्नशील बनाती है। कठिनाइयों से उसका चरित्र और भी मजबूत होता है। अजीब पर पहला आक्रमण असफल होता है। पीतर दूसरी बार फिर लड़ती करता है और अजीब पर अधिकार कर लेता है। इस प्रकार उसका देवप्रभ केवल देस का हित देखता है और दूसरों के उपहास की चिन्ता नहीं करता। जब उसे पता लगता है कि कार्ल की सेना नार्बे जा रही है तो वह तुरन्त समझ कर सेना छोड़कर चला जाता है यद्यपि उसके निकट वाले इस कामरता समझते हैं।

सोवियत पीतर क कठोर रूप पर नहीं डालता। सेमिन ने पीतर के विषय में कहा था कि "बहु बर्बरता के विरुद्ध बर्बरता के साथों साथ लड़ा था।" पीतर का यह रूप इस उपन्यास में पुरा-पुरा दिखाया गया है।

इसके साथ ही पीतर बहुत बड़ा राष्ट्रीय कार्यकर्ता है जो अपने देस हित की समझता है और पूरे हृदय से उसकी सेवा करता है। वह रूसी जनता की खेळ विविधताओं का अभिव्यञ्जक है। उसमें बड़ा साहस है तथा दृढ़ता और सहनशीलता भी है। उसका विकास उसके चरित्र की परिपक्वता कठिनाइयों से मुक्त उपन्यास की रसा-वस्तु निर्मित करत है।

उपन्यास क अन्त्य पात्र

पीतर के अतिरिक्त इस उपन्यास में और भी बहुत से पात्र हैं जो उन यम के जीवन की तस्वीर प्रस्तुत करते हैं। उपन्यास में कसी समान का उल्लेख "बयारी" (अभिजात कुल या वर्ग) का प्रतिनिधि-व्यक्ती स्वर भी विभिन्न किया गया है जो पीतर के विरुद्ध है और

इसके साथ ही 'बयारों' का बहु समुदाय भी चित्रित हुआ है जो पीतर के मुबारों के साथ था। नयी संस्कृति के विदेशी सिखा प्राप्त इजीमियर निर्माता जिन भी चित्रित किये गये हैं जो जनता का आह्वानी हैं जो पीतर के साथ हैं और जो पीतर के प्रति लोक-समर्पन या जन-समर्पन का रूप प्रस्तुत करत हैं। वे लोग पीतर के साथ ही बढ़ते हैं और विकसित होते हैं। इनकी जो अच्छी-बुरी विशेषताएं थीं पीतर ने उनका आह्वान किया और उनका बढ़ने का मौका दिया। इसने साथ ही वे विदेशी भी चित्रित किये गये हैं जिन्होंने पीतर के युग से स्वामी जीवन में भाग लिया। उपन्यास में उन पात्रों का भी समुदाय है जिनके माध्यम से जनता के निम्नतम स्तर के शोका का भाव्य प्रदर्शित किया गया है जो युद्ध की कठिनाइया को भोग रहे हैं, जो युद्ध में मर गये या कठिन परिश्रम का कारण-बंध पाकार मज्ज हो गये।

उपन्यास में बर्णित घटनाओं की अनक रूपता गरीब की सोपड़ी से लेकर बाइबाइ के महल तक के जीवन का विषय पात्रों की पंक्ति यह सब उस विरल ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का सूजन करते हैं जिसमें उपन्यास का 'मुख्य कार्य' पीतर का जीवन विकसित हुआ जो अनेक ऐतिहासिक बटिठ ठावों से संपुक्त है और राष्ट्रीय संघ भक्ति के नेत्र से परिपूर्ण है।

### उपन्यास की भाषा

उपन्यास के प्रत्येक पात्र की अपनी भाषा है जिससे उसके चरित्र की विशेषता प्रकट होती है। उपन्यास की यह यवातथ्य तथा अभिव्यंजनपूर्ण भाषा पाठक के सामने पूरे पीतर युग का चित्र प्रस्तुत कर देती है जिसमें उसकी विशेषता तथा महानता का पूरा-पूरा आभास मिल जाता है।

इस उपन्यास में समाजवाद का आदर्श नहीं है फिर भी हमें समाजवादी समार्थवाद की विषयताओं का समाका हुआ है। केवल युग के चित्रण में जीवन को उसके विकास-आपाक के बीच चित्रित करता है और जनता को इतिहास झट्टा के रूप में प्रदर्शित करता है।

स्वामी जनता का इतिहास के महत्त्वपूर्ण क्षणों का युद्ध में प्राप्त उनके संघ का तथा राष्ट्रीय स्वतंत्रता के लिए उनके युद्ध का आ चित्रण उपन्यास

म हुआ है उसका सोबियत जनता म देशभक्ति का भाव भरने की दृष्टि से बड़ा महत्त्व है ।

पीतर-बुच की कृषी जनता के साहसपूर्ण कार्यों की सोबियत सैनिकों के सामने उदाहरण रूप प्रस्तुत कर उनमें युद्ध के भाव को और ज्वलित करने के लिए, युद्ध समाचार-पत्र 'सास ताश' में द्वितीय महामुद्ध के दिनों में इस उपन्यास के अन्तिम अध्यायों के अंश छापे थे । इससे इस उपन्यास का महत्त्व स्वतः स्पष्ट है ।

पीतर प्रथम समाजवादी मर्यादावाद की दृष्टि से सुदूर अतीत की ककारत्मक व्याख्या का मुखर उदाहरण प्रस्तुत करता है ।

**'इवान मर्यादा के विषय में नाटक'**

द्वितीय महामुद्ध के बीच ठामस्तोय बर्सी अतीत के एक और अत्यन्त दिग्बन्धु व्यक्ति 'इवान मर्यादा' की ओर उन्मुख हुआ । हा वाचन म संवाद नाटक इन्हीं से सम्बन्धित है—'बीन बीर बीन्नि' तथा 'कठिन बर्ष' ।

सोबियत सैनिकों की ऐतिहासिक बलात्मक कृतियों की मुख्य विशेषता यह है कि उनमें प्रायः बर्सी इतिहास के सन सूझाकमा पर पुनर्बिचार किया गया है जिसे कि प्राचीन इतिहास विज्ञान ने लिया था और उसे न स्वीकार कर अपनी दृष्टि में उनकी व्याख्या की गयी है और उन्हीं नये रूप में प्रस्तुत किया गया है ।

सोबियतों के नाटक इवान की नये रूप में प्रस्तुत करते हैं जो कि परंपरा में विस्तृत मिश्र है । उनके व नाटक सोबियत माध्य साहित्य की महत्त्वपूर्ण कृतियाँ म दिन आते हैं ।

**'रोटी'**

सुदूर अतीत के विश्व के साथ-साथ उनमें एसी कृतियाँ भी प्रस्तुत की हैं जो अतीत हैं बहुत दूर नहीं जानी हैं और जिन्हें 'समसामयिक ऐतिहासिक उपन्यास' कहा जा सकता है—जो गृह युद्ध के वर्षों से सम्बन्धित हैं । 'रोटी' तथा 'पीड़ा' के बीच मात्रा एसी ही कृतियाँ हैं । 'रोटी' में १९१८

में सरोस्तिन (स्ताकिन प्राय) की साहसपूर्ण रक्षा की कथा कही गयी है।

तोलस्तोय ने लिखा कि उसकी इस कथा में "उसके बारे में कहा गया है जो संसार में सबसे मुख्य है—हमारी क्रान्ति के दर्शन के विषय न क्रान्ति के महान् व्यक्तियों के विषय न विजय दिखाने वाले युद्ध के संघर्ष के विषय में अपनी क्रान्ति के आशावाद के विषय में और इन विषय में कहा गया है कि युद्ध की भाग ले बीच किस प्रकार सोवियत व्यक्ति का चरित्र निर्मित हुआ।"

इस सबके विषय के लिए वह गृह-युद्ध की एक अत्यन्त महत्वपूर्ण घटना सरोस्तिन (बच स्ताकिनप्राय) गणर के लिए युद्ध की ओर उन्मुख हुआ। इस नगर की रक्षा का कार्यभार स्ताकिन पर डाला गया और इन संबंध में युद्ध का संचालन (१९१८ में स्वयं स्ताकिन ने किया। सरोस्तिन की सफल रक्षा न बिरोवियों की पराजय और गृहयुद्ध का अंत निर्दिष्ट कर दिया।

'रोटी' का महत्त्व सबसे पहले इन बातों में है कि इसमें समान तथा स्ताकिन के कठोरतापूर्ण रूपों के सर्वत्र की समस्या प्रस्तुत की गयी। इसमें केन्द्र को बड़ी सफलता भी मिली। समाने कलिन तथा स्ताकिन का बड़ा में जोरदार चित्र प्रस्तुत किया और उनको ईतिक जीवन तथा क्रान्तिकारी कार्यकलाप के बीच दिखाया। पाठकों के सामने स्ताकिन की संघर्षकारी प्रतिभा पैनी दृष्टि बुद्धता साहस क्रान्तिकारी जनता के माथ उसके पविष्ट संबंध का बड़ा ही स्पष्ट और ठोस चित्र आता है। तोलस्तोय ने इन अटिष्ठ तथा लौकिक वातावरण का भी चित्रण किया है जिसने पार्टी के नेताओं में अमानुषीय शक्ति बुद्धता तथा साहस की मांग की। बिरोवतया लाल सेना के मगडन के संबंध में सरोस्तिनोव का रूप अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

ऐतिहासिक व्यक्तियों के चित्रण के साथ-साथ इसमें बोस्टेविच का चित्र भी प्रस्तुत किया गया है जो अत्यन्त संघर्षित विचारशील तथा साहसी है और जो अमानुष प्रतीत होने वाले काम का भी पूरा करने की पविष्ट रहता है। इवानगरा का चित्र उमा ही है। समान माथ कथा का



बस्तु-तत्त्व प्रत्यक्ष रूप से सबधित है। यह क्रान्तिकारी सेना का साधारण व्यक्ति है। उसकी विजय इसलिए होती है कि उसकी सेना उसके सर्वूल लोग से ही निर्मित है जो बड़े साहसी हैं। बर्सीपीना क रूप में लेखक न मारी-म्बरतन्त्रता को प्रदर्शित किया है या कि क्रान्ति के बाह रूसी नारियों को मुक्त हो गयी। इसके साथ ही इस उपन्यास में क्रान्ति के शत्रुबा पड़ यन्त्रकारियों तथा बेदाओहियों का भी विश्व प्रस्तुत किया गया है। निरिचत ऐतिहासिक घटना पर कोन्त्रित होने के कारण तथा वास्तविक ऐतिहासिक व्यक्तियों के विश्रण के कारण इसकी प्रबन्ध सीसी भी बहुत प्रभावित हुई।

प्रबन्ध रूपता की दृष्टि से इसे ऐतिहासिक क्रान्तिक (बर्सीपुगत घटना का क्रमिक बर्धन) कहा जा सकता है। इवानपारा तथा बर्सीपीना की कथा यौव है प्रबन्ध है सरीस्सिन की रक्षा। स्तासिन की विजय के तार के साथ उपन्यास समाप्त हो जाता है। इसलिए इसे किनी न किनी प्रकार क ऐतिहासिक उपन्यास की काटि में रखा जायगा। ऐतिहासिक मसबिहों तथा अन्य सबधित सामग्री के व्ययभिन्न समावेश के कारण इसकी कथा बहुत घड़ी तथा सुमबद्ध नहीं है।

उपन्यास की माया में ऐतिहासिक सामग्री की बटिकता की मसक है। वही-वही पर ऐतिहासिक मसबिहों छने हुए मापणों तथा सरकारी बायबो क बस पात्रों की वातपीत में उद्धृत कर दिये गये हैं। उपन्यास में कल्पना तथा इतिहास दोनों का मल है।

पीड़ा के बीच यात्रा

तोल्स्टोय ने 'पीड़ा के बीच यात्रा' लिखने में बीस बप लगाए। यह बची है। इसका पहला भाग 'बहुते' १९२१ में लिखा गया दूसरा भाग 'मनू १९१८ १९२६ में और तीसरा भाग 'धूपला मबेरा' १९४१ में लिखा गया। इस बची का शीर्षक 'प्राचीन धार्मिक माब ईमा मनीह की मा की पीड़ा के बीच यात्रा' में लिखा गया है। बन्नुन इस बची का विषय बस्तु रूसी बुद्धिजीवियों की क्रान्ति के युग में जनता की ओर यात्रा है।

## मलेकसेह निकोलाएबिच तोलस्योय

क्रान्ति के पूर्व के कमी जीवन की व्यापक पृष्ठभूमि में या बहिना-  
कात्या तथा हास्या—और उनके नक़्शीक बाम सागा का जीवन चित्रित  
किया गया है। इन बहिना का प्रथम महायुद्ध मरनुबर क्रान्ति दनीकिम  
स युद्ध आदि इन सबके बीच स गूजरता पड़ता है और इसके बाद ही व  
बचन निरुद्ध बाला से मास्का मे एक समा में मिल पाती है। उपन्यास  
कात्या के प्रति कहे पय इन शब्दों के साथ समाप्त होता है तुम ममसनी  
हां हमारे इन बेय या सक्रि का बहाये यये लून का सारी छिना हुई और  
मौन पीड़ा का क्या मतलब है? हम संसार की भलाई के लिए पुनर्निर्माण  
करेंगे। इस समारंभ के सब लोय हमके लिए अपना जीवन अर्पित करन  
का तय्यार है। यह कल्पना सही है यह काग तुम्हें भाब के निशान तथा  
गाली व नीरु निशान दिखे हों और यह अपने देश में यह कम है।

‘बेनी गृहयुद्ध की महत्वपूर्ण घटनाका का लहर जनता द्वारा रास्त  
की आज सन्धिया तथा शक्तिया पर उसकी विजय तथा उसके स्वयं  
सबा के अयुक्त परिभम और प्रयत्न का पूर्णतया तथा व्यापकता के साथ  
प्रदर्शित करती है।

यह ‘बेनी साबियन साहित्य की महत्वपूर्ण इतियो में मानी जाती  
है। १९४३ में इस इति पर मलेकसेह तोलस्योय का स्टाकिन पुरस्कार  
प्राप्त हुआ। तोलस्योय ने यह कपया बापस करते हुए स्टाकिन से यह  
प्रार्थना की कि इन एक स साल सना के लिए टैक बनबा दिया बाम।

द्वितीय महायुद्ध के वर्षों में तोलस्योय का कार्यकलाप  
द्वितीय महायुद्ध के दिनों में अरुसइ तोलस्योय बेयमकत प्रचारक-  
कवक के रूप में हमारे सामन जाता है और फ्रांसिस्टा के बिकर मावूमि  
की रखा करने बाला के लिए बेयबामियां का आह्वान करता है। ‘मावू  
मूमि’ में उनके बैसामकित स पूर्ण प्रचारकक के ल संगृहीत है। यह संग्रह  
कलात्मक प्रचारकक कलन का सुंदर उदाहरण है। युद्ध के दिनों में उमने  
बड़ी सक्रि तथा स्वयं से काम किया। प्रचार सेब मिलने के साथ-साथ  
उसने द्वितीय महायुद्ध से संबंधित कहानियां ‘इबाम मुदरयाब की कह-  
नियां भी लिनीं।

## ८ युद्ध से पूर्व के वर्षों का साहित्य

[ १९३७-१९४१ ]

१९३६ में सोवियत द्वारा सोवियत संघ का संविधान स्वीकृत हुआ जो कि इस देश के जीवन के लिए बड़ी महत्वपूर्ण घटना थी। औद्योगिक तथा कृषि व्यवस्था की अत्यधिक उत्पत्ति ने देश के विकास की नयी परिस्थितियों को प्रस्तुत किया। समाजवादी परिष्कार का नया रूप परिष्करीय तथा प्रगतिशील धर्मिक या स्तकानोपय आन्दोलन द्वारा देश में फैल गया। सोवियत संघ की सभी आठियों के बीच मित्रता और नी बूढ़ हुई। प्रत्येक आठि के सांस्कृतिक जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं को तथा उच्च महान पुस्तिका की अपेक्षितों को उत्तर के रूप में सारे समय में मनाया जाने लगा। देश समाजवादी समाज के निर्माण और साम्यवाद की ओर क्रमिक संक्रमण में प्रवृत्त हुआ। समाजवादी व्यवस्था राष्ट्रीय जीवन के सभी क्षेत्रों में प्रतिष्ठित हो गयी।

अब ऐसी पीढ़ी सामने आई जो कि सोवियत शासन के बीच ही जन्मी तथा बड़ी हुई थी जिसका कान्ति के पूर्व की सघर्षता से कोई भी सामान्य परिचय न था। कान्ति के पूर्व की घटनाओं को उसने कमल पुस्तकों से ही जाना था। ऐसी पीढ़ी की जीवन भावना और दृष्टि तथा भावना सर्वथा नये थे। इस नयी पीढ़ी के साथ ही नये साहित्यिक नाम भी आए जिसकी सर्वना सोवियत युग के नवयुवक तथा नवयुवकों के समान किन्तु महत्वपूर्ण चित्र प्रस्तुत कर रही थी।

इस समय की सर्वना ने समाजवादी बुनियाद का बड़ा आकर्षक और आगानुष चित्र प्रस्तुत किया और साथ ही उत्साहपूर्व परिष्कार और सघर्ष से मानवों को सोवियत समाज के जीवन का उत्पादन किया। कल्प निर्माणवादी सर्वनात्मक परिष्कार इस समय के साहित्य का मुख्य बस्तु

विषय बन गया। श्रीमोक्ष स्तरकाव्य मशीनिकन डिप्लोमोब जादि की कृतियों में उत्पादन के क्षेत्र में नवीनता का संचार करने वालों का तथा देशनिर्माण और देश की प्रगति की ओर प्रयत्नों का जो चिन्तन हुआ है उसमें परिष्कार की भावना का सर्जना के प्रेरक रूप में जीवनके श्रुतार रूप में और व्यक्ति को मानसिक विकास देने वाले के रूप में हुई है। इसके साथ ही इन लेखकों की कृतियों में यह दिखाया गया है कि सोवियत व्यक्ति न केवल वर्तमान का बल्कि भविष्य का भी निर्माता है और जब उसके सामने विकास की असीम संभावनाएँ हैं। इस युग की श्रेष्ठ कृतियो में व्यक्तित्व का उद्घाटन व्यक्ति के आन्तरिक संसार की संपूर्ण समृद्धि के बीच हुआ है। व्यक्ति की सक्रिय समृद्धि और आनन्द का श्रेष्ठ 'कलेक्शन' या समूह के साथ छूने में और अमता के साथ उसके अविच्छिन्न संबंध में है।

मशीनिकन के (अपूर्ण) उपन्यास 'दूर पिछ्सी जनह के सीप' में यह दिखाया गया है कि गाँव और सुदूर के पिछड़े शहरों के लोग बड़े-बड़े निर्माण कार्यों पर किस प्रकार काम करते हैं और इस काम के बीच इनके व्यक्तित्व का किस प्रकार विनाश हो रहा है। धीरे-धीरे इन लोगों की भावना बदलती है और वे शारीरिक काम का अपना निजी काम समझ कर उसे उल्टा ही करते हैं। मशीनिकन ने इस प्रकार व्यक्तित्व-निर्माण पर उद्देश्य की एकता के सुख में गूँवने वाली समाजवादी शिला का व्यापक प्रभाव प्रदर्शित किया है।

अपनी कहानी 'टैकर तथा डेरबैत' में श्रीमोक्ष ने नवमुखक स्तरकाव्य बीमा के विश्व संकट किया है। इन कहानियों में यह दिखाया गया है कि मैकनिकन शालोक के प्रभाव से टैकर डेरबैत का आधिपत्य या अधिगमन किस प्रकार विकसित होता है। श्रीमोक्ष के नायक अग्य सोवियत लेखकों के नायक के समान चरित्र की वह विशेषताएँ प्रदर्शित करते हैं जिनमें जीवन के प्रति नया दृष्टिकोण कथित होता है तथा जिनमें सोवियत युग में परिपुष्ट नये साहित्यिक तथा कलात्मक आदर्श प्रतिबिम्बित होते हैं। बीमाव की सर्जना की जो नवीनता है, वह उनके जीवन के साथ अनिष्ट संबंध तथा समाजवादी निर्माण में उसके योगदान का परिचय है।

इस कृति में नये लोगों समाजवादी परिधम के नये तरीकों तथा नयी संभावनाओं का उद्घाटन हुआ है ।

साम्यवाद के युग में सोवियत समाज का जीवन तथा साम्यवाद की ओर उसका संभारण सिमोनोव के उपन्यास 'समुद्र पर रास्ता' में प्रतिबिम्बित हुआ है । इस उपन्यास में नये व्यापक जीवन की ओर मानवता संभरण मानो खुल समुद्र पर विस्तृत समुद्री रास्त पर उसका संभरण है । मानवता का अपमान इसी समुद्री रास्ते पर आने बड़ रहा है और यह अग्रभाग रूसी जनता है । यही उपन्यास का मुख्य भाग है । नये जीवन नये व्यक्ति और नयी नैतिकता का प्रदर्शन और समर्पण करने के साथ-साथ सिमोनोव बुरुजा और प्राचीन व्यवस्था की आलोचना भी करता है और यह दिखाता है कि जब इस व्यवस्था का कोई भविष्य नहीं है और व्यापक समुद्री रास्ता उसकी पहुँच के बाहर है ।

गाँवों में नये जीवन की स्थापना का विषय-वस्तु स्मिर्नोव के उपन्यास 'सड़के' में तरासोव की कहानियों तथा बजामा में अवेचकिन की कहानियों में और कोलसोव तथा पानोव की कृतियों में पस्तकित हुआ है । द्वितीय महायुद्ध के पूर्व के कस्तोवी जीवन का बड़ा यथार्थ चित्रण अवेचकिन की कहानियों में मिलता है ।

गाँव कस्तोवी नये कारखाने नवनिर्माण आदि से संबंधित इन कृतियों में समाजवादी व्यवस्था और परिस्थिति के बीच नायकों के क्रमिक विकास और उनके व्यक्तित्व की क्रमिक प्रीकृता का आकर्षक चित्र प्रस्तुत किया गया है । इस युग की सामान्य साहित्यिक प्रगति के बीच इन कृतियों का महत्त्व इस बात में है कि इनके द्वारा गाँव कस्तोवी जीवन आदि के चित्रण का नया बीजबपन हुआ जो कि माने बसकर मुझातर काल में पूर्ण तथा पुणित पस्तकित और विकसित हुआ ।

इस युग में भी अक्यूबर क्रमि और नूहुयुद से संबंधित कई कृतियाँ प्रस्तुत की गयीं । फरेवेव के उपन्यास 'उदेग में आगिरी' की चर्चा की जा चुकी है । अस्तोवस्की का (अपूर्व) उपन्यास 'गुफाना में जर्म' भी नूह मुद की घटनाओं से संबंधित है । बटाएव की कथा अपने नाम बता रहा है

अमेरिका के १९०५ की क्रान्ति के युद्धों का बर्षान यद्यपि यह बर्षों के लिए छिन्नी गई थी फिर भी यह बर्षा और सभी के बीच बड़ी लोकप्रिय है। प्रोसमान की इति 'स्टेपान बलघूगिन' में क्रान्ति के पूर्व के धर्मिक बर्ष का विषय दिया गया है। इसी प्रकार २म युग में लिखित क्रान्ति तथा युद्धयुद्ध से संबंधित और भी कई कृतियाँ हैं। फिर भी कुछ आलोचकों का यह मत है कि इनमें क्वी धर्मिक बर्ष के सान्द्रोक्त का इतिहास और बोल्शेविक पार्टी के संघर्ष और युद्ध का इतिहास व्यापक कलात्मक रूप में प्राप्त कर सका।

नाटक

इस युग में नाटकों का भी महत्वपूर्ण विकास हुआ नाटकों की विषय-वस्तुओं में व्यापकता आई, जीवन के विभिन्न पक्षों का चित्रण हुआ और सोवियत व्यक्ति का यथार्थवादी चित्र प्रस्तुत किया गया। महत्वपूर्ण समकालीन समस्याओं का ध्यान देना में समाजवाद का निर्माण तथा नये व्यक्ति का विकास इन नाटकों में विशेष रूप से प्रवर्धित किया गया है। इनके मात्र ही नाटकों के क्षेत्र में जो बुर्जुआ प्रभाव पड़ रहा था संघर्ष-हीनता का जो सिद्धान्त प्रवेश कर रहा था और 'फार्मलिज्म' और यथार्थवादिता को जो व्यापकता प्राप्त हो रही थी उनकी और उनका अंकन करनेवाले नाटकों की सोवियत प्रेस और कम्युनिस्ट पार्टी ने कड़ी निन्दा की।

विक्टर एसेब का नाटक 'कौति' इस युग की विशिष्ट कृति है। यह यह पद्यात्मक नाटक है। इसमें प्रधान पात्र हैं मतीस्कोव और मायक। मतीस्कोव साहसपूर्ण कार्यों की मार बेधमकित और बलिदान की भावना से प्रवृत्त होता है और इन्ही कार्यों की मार मायक व्यक्तिगत सम्मान तथा कौति को लालसा से। नाटककार मायक की व्यक्तिवादिता की जाकोचना करता है और जनता द्वारा छिने गये प्रत्येक कार्य करनेवाले मतीस्कोव का समर्थन करता है।

बप्ट्रीनायेनेव का नाटक 'मार्सेका' उल्टी हुई मुश्किल पीढ़ी से संबंधित है और समाजवादी जीवन की भावना से परिपूर्ण है।

स्त्रियोन्नीव का नाटक 'प्लाञ्चवास्की के बगीचे' बहुत कुछ प्रतीकात्मक है। इसमें फला-फूला हुआ बगीचा न केवल बड़े मकामेब के जीवन का ही प्रतीक है बरन् यह अपने देश में समाजवाद के निर्माण में रत सोवियत जनता के मुक्त और प्रकाशपूर्ण जीवन का चित्र भी है। पूरा परिवार इस उद्योग की रक्षा को अपना सर्वोच्च मानता है। मानो सारी जनता देश की रक्षा में रत है।

स्त्रियोन्नीव के दूसरे नाटक 'सामान्य व्यक्ति' में नये जीवन की भावना और पुराने की तीव्र आलोचना है। इसमें सामान्य सोवियत व्यक्ति का काव्यपूर्ण चित्र प्रस्तुत किया गया है और यह बताया गया है कि जनता से अलग होने और असामान्य बनने की भावना यह सकीर्ण बुजुर्गों की भावना है और यह सौन्दर्य नहीं बरन् कस्पता है। जो सामान्य है वही सनातन है। यही भावना इस नाटक के मूल में है।

क्रोन के नाटक 'गहरी साज' की विषय-वस्तु दसमशक्ति की भावना से परिपूर्ण परिश्रम है। इसी भावना से हम नाटक का कथानक, मर्त्य पार्श्वों का चित्रण अनुप्राणित है। कप्ती और अजरबाद्जानी तक के प्रोविंसी का एक छांटा सा समुदाय जल्दते हुए रैमिस्तान में तल की साज में लया है। अनेक विरोधा के बीच स्टार परिश्रम के द्वारा इनको अपने कार्य में विजय मिलती है। देश की कठिन सोज का देश-भक्तिपूर्ण कार्य के रूप में चित्रित किया गया है। परिश्रम की समस्या के माध्यम से सोवियत व्यक्ति के साम्प्रतिक विकास की समस्याओं को प्रस्तुत किया गया है और सुझाया गया है।

इस नाटक में मीमरोव न मगइलकोनिन के रूप में सामान्य सोवियत व्यक्ति का चित्र प्रस्तुत किया है। स्कोनिन के सामान्य किन्तु साहसी चित्र में पाठकों को वही गर्वपूर्ण देखने का मिले है जो कि उनमें है।

विन्वीव के नाटक 'अपना लचीलिया' में उन नये मानवीय संबंधों की सहृदयता में बैठने की काव्यिक की गयी है जो कि इस देश में समाजवाद की प्रतिष्ठा के बाद यहाँ के समाज में व्यापक हो गये हैं। इसमें नैतिक मनी

सामाजिक समस्याओं पर और विशेष रूप से परिवार तथा प्रेम की समस्या पर ध्यान केन्द्रित किया गया है।

बापूजीब के नाटक 'ताम्या' में ताम्यारिषीनिना के अन्तर्परिवर्तन तथा समाजवादी व्यक्ति की प्रतिष्ठा और विकास को चित्रित किया गया है। इस नाटक में सोवियत व्यक्ति के जीवन रहन-सहन तथा विचार में समाजवादिता का समर्पण किया गया है। नाटक में ताम्या अपने निजी सुख में सीमित और छोटा से अलग थी। बाद में बापूजिब अन्तर्परिवर्तन के फलस्वरूप उसकी समझ में आता है कि असली सुख निजी को सामाजिक में मिछा देने में है और जनता के लिए उपवीपी तथा उनके प्रेम और बाहर का पात्र बनने में है।

१९३७ में कई महारत्नपूर्ण नाटक पगोबिन का 'बंदूक से सुसज्जित व्यक्ति' 'कनिष्क का 'सत्य चिन्मोच का नेत्रा के तट पर' प्रस्तुत किये गए जिनमें अस्तुबर की समाजवादी कान्ति को बटमाओं के आधार पर कम्युनिस्ट पार्टी और सोवियत वासन के संस्थापक सेमिन का चित्र प्रस्तुत किया गया था।

पगोबिन के नाटक 'बंदूक से सुसज्जित व्यक्ति' में सेमिन को सामाजिक पृष्ठभूमि और कान्ति की बटमाका क बीच जनता के साथ अभिन्न रूप में प्रदर्शित किया गया है। नाटक का मुख्य भाव धार्मिक और कृषक वर्ग के साथ अभिन्नता और पार्टी तथा धार्मिक वर्ग की एकता सेमिन और कान्ति के पारस्परिक संबंधों के द्वारा प्रस्तुत और स्पष्ट किया गया है।

इस युग के अन्त में आन बाऊ द्वितीय युद्ध की आगला आ आगला मिसल लगाया था। द्वितीय युद्ध के आरम्भ ने कुछ ही पहले सीमनीब द्वारा लिखित नाटक 'हमारे सहर का बादमी' में इसकी अभिव्यक्ति हुई है। इस नाटक का उद्देश्य युवक वर्ग में देरारखा तथा कममौमौक की छाडनपूर्ण परंपरा का भाव भरला है और जानेवाली पीढी के लिए जनको तैयार करना है। सिमोइ लुकोबिन के रूप में सोवियत युवक वर्ग की लपी पीढी का चित्र प्रस्तुत किया गया है जो कि देश के लिए सही प्रकार तय्यार है जिस प्रकार कि उसके लिए पिता और बड़ भाई अपने समय में तय्यार थे।



सोमनोव ने यह प्रदर्शित किया है कि कठोर परिश्रम और संघर्ष के बीच नायक का चरित्र किस प्रकार बनता है और बूढ़ होता है।

द्वितीय युद्ध के आरम्भ के कुछ समय पहले कठिणपथ सैनिक— ऐतिहासिक नाटक सल्लर्ब्येव का 'फ्रीडरिख मार्शल कुतुबीव वास्तेरोव' और एजुमोवस्की का 'जेनेरल मुबोरीश' आदि प्रस्तुत किए गये।

इस युग का नाट्य साहित्य बड़ा संपन्न है। फिर भी इस समय रूसी नाट्य साहित्य को ऐसी सफलताएँ न मिली थीं कि उदाहरणीय या बल्लोस्की नाट्य साहित्य को।

### प्रगीत काव्य

साहित्य के अन्य क्षेत्रों के समान इस युग के काव्यक्षेत्र में भी समाजवादी समाज पर आधारित सोवियत जनता की सैनिक सर्जनात्मक एकता का भाव मुखरित हो रहा है। प्रगीतारमक रचनाओं में समाजवादी निर्माण की प्रेरणाएँ और भी सशक्त क साव अभिव्यक्ति हो रही है।

प्रगीतारमक रचनाओं के विकास के साथ प्रगीतारमक सर्जना का विकास भी संबद्ध है। इस युग में सोवियत गीतों का अच्छा विकास हुआ और कई कवि ईसाकोव्स्की, मुरकोव, सेवदेव कुमाच प्रकोप्रियेव गूसेव सेकि-बोस्की आदि इस क्षेत्र में बड़े प्रसिद्ध हुए।

स्वतंत्र जीवन के बीच परिपुष्ट सोवियत व्यक्ति के स्वभाव का वैशिष्ट्य 'साइगा' (साइबीरिया के जने जमल) में निर्माण 'मित्री' (भूमि के रूखे स्टेशन) निर्माण का कार्य सुदूर पूर्व में 'कल्लोव' आदि जीवन द्वारा साहित्य में प्रस्तुत नयी-नयी विषय-वस्तु समाविष्ट हो रही है।

प्रगीतों के साथ-साथ प्रबन्धात्मक काव्य का भी विकास हुआ। इस नाध्यक्ष की ओर ईसाकोव्स्की बड़े हनवर असंख्य सोमनोव आदि ने ध्यान दिया। इस क्षेत्र में ल्वरकोव्स्की का काव्य 'मुराविया देरा' बड़ा प्रसिद्ध हुआ।

इस युग के अन्त में जब कि भित्ति पर मरु के बादल इकट्ठे होने लग रहे थे, वे प्रति समझता तथा तत्परता और धनु के प्रति शूना का

मान काव्य क्षेत्र में व्यापकता के साथ सुवर्धित हुआ। तीव्रतम, जेजिमोन्की मुरकोव त्वरदोम्की तथा अन्य कवियों की रचनाओं ने सोवियत जनता से सामान्यकाव्यों की धार से छोड़े जाने वाले युद्ध की संभावनाओं की तथा ध्यान में रखत ही बड़ा और मजबूतों में देखा गया कि लिए सब-कुछ खोजाबर करने की उत्प्रेरता भरी।

ईसाकोव्स्की की प्रगीतात्मक रचनाएँ देशभक्ति का सर्वोत्तम उदाहरण हैं। मुख्यतः से सोवियत गीतों का निष्पन्न करत हुए ईसाकोव्स्की ने अपने गीतों और कविताओं में सामान्य सोवियत जनता के भावों और विचारों का बड़ा आकर्षक चित्र प्रस्तुत किया— 'चार इच्छाएँ' 'पुष्पी' 'सन्' 'पठक' आदि। इस समय उसने छात्रावृत्तों और जनकी कला का महत्त्व अभ्यसित किया और गीतों की रचना में प्रवृत्त हुआ। गीतों के क्षेत्र में वह अग्रिम है और उनके गीतों की लोकप्रियता बड़ी व्यापक है। सोवियतों के परंपरा-प्राप्त बस्तु-सर्व (विद्या विरह प्रतीक्षा मिथल आदि) को उपमाकर हमने उसमें महीन सम्भावना की और उनको नवीन रूप में प्रस्तुत किया।

ईसाकोव्स्की के गीतों के निष्पन्न ही त्वरदोम्की की कविताएँ 'मार्ग पहाड़ के पीछे हैं। इनमें सामान्य सोवियत व्यक्ति के प्रति गंभीर प्रेम स्वी प्रकृति तथा किताना के परिचय का बड़ा काव्यात्मक बचन हुआ है। इनकी रचना में सामान्य व्यक्ति और उसके जीवन का व्यापक काव्यात्मक चित्र प्रस्तुत किया गया है। काव्योत्पी जीवन का महत्त्व के साथ बचन करते हुए कवि ने यह प्रदर्शित किया है कि देश का समाज चाही विकास सोवियत व्यक्ति के जीवन का कंसा समूह बना रहा है (इति फार्म नई सोव, उद्गार में बस्ती)।

त्वरदोम्की की कविता 'माहार का परिवार' में उस व्यक्ति की भावनाओं का बड़ा सुंदर अभिव्यंजन हुआ है, जिसके लिए इस देश के सभी राज्यों उन्मुख हैं। अपना घर छोड़ता हुआ वह अपने पूर्वजों के ध्यान की एक मुद्री मिट्टी साथ लही से जाता क्योंकि साथ देश उसका अपना है, सारी भूमि उसकी शान्ति है।

यह भावना कि सारी भूमि अब समस्त जनता की है और उसके स्वतन्त्र तथा मानन्दपूर्ण जीवन के लिए उन्मुक्त है। उन् टीस के अन्त तथा सन् बीसवीस के शुरुआत के आरम्भ के साहित्य में पूरी तरह व्याप्त है। फिर भी यह भावना विषय रूप से गीतों में अभिव्यक्त हुई है। ये गीत बड़े व्यापक हैं और साहस जीवन के मानन्द आघातारिता तथा बेधमक्ति से परिपूर्ण हैं।

सुरकोब की काव्य-रचना का मुख्य भाग है समाजबारी कान्ति और समाजबारी रसा की रसा। उसके काव्य का प्रतीकात्मक माध्यम बड़े सीमिक है जो कान्ति की विजय के लिए लड़ा है और जो अब देश में नये जीवन की प्रतिष्ठा कर रहा है। यह उमकी रसा के लिए हर समय तैयार है। सुरकोब के काव्य में योद्धा बेधमकत का चित्र प्रस्तुत किया गया है।

सीतकार के रूप में बनीसी अबदेब कुमाव भी बहुत प्रसिद्ध है। उसके गीतों में बेधमकित उत्साह मानन्द और जीवन की पूर्णता तथा अनेक क्पात्मकता छलबन्दी है (वेग का गीत गीता की पुस्तक)। इस युग में काव्य कवियों के भी कतिपय गीत बड़े प्रसिद्ध हुए। सीमनोब के गीतों में उन लोगों के साहसपूर्ण कार्यों का निर्माता उद्गाष्ट वैकनिक आदि का वर्णन हुआ है जो शैव और साहस के साथ चुपचाप अपना काम करते रहते हैं। दल-माटीबन्दी के काव्य का मुख्य विषय है अन्त 'कमगोमोत' का कठिन छलगाहपूर्ण परिभव। उसके काव्य के माध्यम पञ्चवर्षीय योजनाओं को कार्यान्वित करने वाले कमगोमोत के अन्तन गवन्ध हैं।

आत हुए युद्ध की आग्रता और चिन्ता का भाव इस युग के अन्त के काव्य में मुक्तित हामे मगा था। हमने बेगररसा की विषय-बन्धु कई कवियों के काव्य में अन्तियनया तीव्रता के काव्य में बड़े दक्षिणाती रूप में अभिव्यक्त हुई। तीरानोब के काव्य-अन्त 'दूमरी छाया' में कवि की परिभव के पूँजीबानी देशों की अपनी यात्रा की अनुभूतिशी और विचार प्रकट हुए। माच ही हममें आनेवाले युद्ध की आग्रता और अपनी जनता की विजय का बड़े विश्वास भी प्रकट हुआ। पूरे काव्य में अन्तकूर वर्ष की अन्तर्राष्ट्रीय एका और बड़ता का भाव मुख भी व्याप्त है।

इस युग का प्रगतिशीलक काव्य बड़ा लम्बू है। इसमें समाजवादी युग के व्यक्ति के मानस का बड़ा गम्भीर उन्वयान हुआ और इसने इस व्यक्ति को अपने समाजवादी देश की रक्षा के लिए सदा तत्पर रहने की सिखायी।

### प्रबन्ध काव्य

प्रगतिशीलक काव्य के साथ-साथ इस युग में प्रबन्ध काव्य का भी विकास हुआ। इस क्षेत्र की इन वर्षों की सबसे महत्वपूर्ण रचना लवर-दासकी का प्रबन्ध काव्य 'दिन मुराबिया' है। 'दिन मुराबिया' (मच्छी बरतीबासा दस) किताबों में सयों समाजवादी चेतना की प्रतिष्ठा और उसका बन्दर से निजी निश्चित्य या अधिकार-भावना को निश्चल फेंकने की कथा है। काव्य के क्षेत्र में सामान्य किताब निश्चिता मरगुताक है जो साहित्य साधन में शरीरी से मुक्त हुआ है और जो अब परिचय द्वारा अपन को ऊपर उठाना चाहता है। वह अपनी छापी भी दुबडी का स्वतन्त्र मानिक बनकर रहना चाहता है और समिकित कसबोडी जीवन में दरता है क्योंकि उसे यह भय है कि आ कृष्ण उसके पास है वह भी लो जायगा।

यह काव्य मरनुतेक के आन्तरिक विकास को कथा है और यह विकास मरनुतेक द्वारा परीक्षा मुराबिया की लाज का पाका के रूप में दिखाया गया है। बीर-बीरे बहु इस निष्कर्ष पर पहुँचना है कि केवल निजी मुक्त व्यक्तिगत मुक्त के बाजार पर अब आगे जाना जयभव है। उस अब व्यापक समिकित सामाजिक सामूहिक जीवन चाहिए। इस प्रकार दिन-मुराबिया (मच्छी बरतीबासा काव्यिकि दस) कसब किताबों का युग परिचयन ही नहीं प्रमिति बण्डा बरन् बेसम्पारी समाजवादी पिछा का रूप भी प्रस्तुत करता है। यह काव्य जनता के विकास की एक महत्वपूर्ण पंक्ति का जीवन प्रदर्शित करता है।

सामाजिक का काव्य विद्यपी के जीवन से संबंधित है। इसमें कम्पुनिस्ट केन्द्र का विश्व प्रस्तुत किया गया है जिसका जीवन जनता और पार्टी का समर्थित था और जिसमें अपार साहस और मानवीयता थी। इस काव्य के अन्त में छिड़ने वाले युद्ध के खतरे की सूचना है जिसके लिए साहित्य

जनता को तैयार रहना परमावश्यक है। ऐतिहासिक विषय-वस्तु को लेकर सीमनोव व 'बर्फीली हत्या' और 'सुबोरोव' में इस के समाहित सेनापति का चित्र प्रस्तुत किया है जिसका रूसी जनता की शक्ति और विजय में अद्विग्न विश्वास था।

बेरा इन्बर की 'सफरी डायरी' में जाबिया की संस्कृति का चित्र प्रस्तुत किया गया है। इसके साथ ही इसमें सोवियत व्यक्ति का भी चित्र है जो अपने समाजवादी देश के प्रति बकावार है और दूसरी जातियाँ की संस्कृति का भी ध्यान करता है। जमयेव का 'अलीशेमिर मायाकोव्स्की' मायाकोव्स्की के जीवन से संबंधित काव्य है। इसमें मायाकोव्स्की के बहुमुखी जीवन का अत्यन्त समीप चित्र प्रस्तुत किया गया है।

इस युग के काव्य में व्यंग्य-काव्य का अच्छा विकास म हो सका। साहित्य के कतिपय अन्य अर्थों के समान काव्यशास्त्र में भी 'फार्मलिज्म' तथा अन्य बुर्जुआ सिद्धान्तों का विरोध हुआ। 'प्राम्बा' के विचारों तथा गोर्की के सन्तों ने एक ओर इनका विरोध किया और दूसरी ओर, क्लासिकल साहित्य की समृद्ध विरासत को अपनाते ही सलाह दी। सोवियत काव्य के विचारारमक ककारमक स्तर को उँचा उठाने में इनका बड़ा महत्व है।

इस युग में इन मध्यमक काल के साथ-साथ साहित्यकारों की पुरानी पीढ़ी भी साहित्य संज्ञक में लगी हुई है। इन्हीं अर्थों में अफनसी तास्त्वोय की 'पीड़ा के बीच यात्रा' तथा घालोखान की 'शांत ज्ञान' जैसी सोवियत साहित्य की महत्त्वपूर्ण इतियाँ पूरी हुई।

### ऐतिहासिक उपन्यास का विकास

सोवियत साहित्य जिस प्रकार वर्तमान के अंकन में लीन है उसी प्रकार वह अतीत के महत्त्व को भी समझता है। इसी से सोवियत लेखक बग के अतीत जीवन के महत्त्वपूर्ण दृश्यों तथा व्यक्तिमा का बराबर अंकन करते रहते हैं और उनका अपनी दृष्टि में मूल्यांकन करते हैं। साथ ही वे

यह भी प्रदर्शित करते हैं कि क्वी व्यक्ति का जातीय चरित्र ऐतिहासिक विकास के बीच किस प्रकार गठित हुआ ।

सोवियत साहित्य में ऐतिहासिक उपन्यासों का विशिष्ट स्थान है । यथावधानी लेखकों की तुलना में ऐतिहासिक उपन्यासकार के सामने दूसरी समस्या होती है । उसका उस भवितव्य से काम रहता है जो समय तथा उसके आवर्त होने की दृष्टि से उसके दूर रहता है । एक ओर तो उसे उस युग की विशिष्टताओं का सच्चा-सच्चा अंकन करना रहता है और दूसरी ओर उसे उस युग की ऐसी विशिष्टताओं को प्रहस्य करना होता है जो आज के पाठक की भावनाओं को विकसित करने में उसकी सहायता कर सकें । उसे भवितव्य का समकालीनता के आवर्तों से संबंधित करना होता है । सोवियत ऐतिहासिक उपन्यासकार ऐसा ही कर रहे हैं । वे देश के जीवन के उन क्षणों का चित्रण करते हैं जिनका आज के युग के आवर्तों के लिए तथा समकालीन पाठक की रसमयि की भावना के विकास के लिए भी महत्त्व है ।

वे ऐतिहासिक हतियों देश के उन महान् व्यक्तियों से संबंधित हैं या कि स्वतन्त्रता के सेनानी रहे हैं । स्टाकिन ने अपनी यादों के शिखरों में कहा था कि 'इस सोवियतों की यमोस्लिन्डोव राजिन-मुपाशोव जैसे ऐतिहासिक व्यक्तियों में बड़ी विलक्षणता रही है । इन दोनों के कार्यकाल में हमें पीड़ित वय के आरम्भिक उद्घटन की उत्सुक मिलती है । किसान विद्रोहों के आरम्भिक प्रवर्तकों के इतिहास का अध्ययन हम दोनों के लिए बड़ा शिखर रहता है । सोवियत साहित्य की कई हतियों यमोस्लिन्डोव मुपाशोव (युद्ध के बीच शिखर का उपन्यास एमस्लियान मुपाशोव) तथा राजिन (अपीगिन का 'स्तेपान राजिन') से संबंधित हैं । क्वी संस्कृति का महान प्रतिनिधि सोमेनातोव बहुत ही कल्पना का प्यास अपनी ओर आह्वान करता है ।

यूद्ध-युद्ध की विषय-वस्तु ने बहुत ही सैरकों की आह्वान किया । यूद्ध-युद्ध के बाद देश की जो उत्पत्ति हुई उसने स्वतन्त्रता के इस युद्ध तथा इनमें आज तक आने की रसमयि तथा शिखर का महत्त्व स्पष्ट है ।

इबानोव की कहानी पारलामको तथा मसकनी तोल्स्टोय की कृति 'रोटी और पीड़ा के बीच यात्रा' ये गृह युद्ध के मायको का चित्रण हुआ है।

ऐतिहासिक विषय-वस्तुओं की और उमूल होते हुए ये लेखक सबसे पहले उन घटनाओं की ओर आकृष्ट हुए जो कि रूसी जनता के अपने स्वातंत्र्य युद्ध से संबंधित हैं। सोवियत संघको ने रूस के प्राचीन इतिहास की साहसपूर्ण घटनाओं के आधार पर रूसी राष्ट्रीय चरित्र की उन विविध-पट्टाओं को प्रदर्शित किया जिन्होंने अपने भयंकर शत्रुओं को मर्दा करने में सहायता की और मुषोरोव कुतुबोव जैसे प्रतिमाघाती सेनापतियों को प्रस्तुत किया। मोस्माकोर्व का उपन्यास 'गदीवल्केव' भी बड़ा लोकप्रिय रहा।

तातारी आक्रमण के युग के उपन्यास 'चमक ली और 'बाटी' तातारों से मुक्ति मोवरोदिन का विभिन्नी बस्कोय 'बुबस्काय सील पर' अलेक्सांद्रनेस्की द्वारा जर्मनों का नाश (मोमनोव का बर्फीसी हत्या।) पीतर प्रथम के समय का साहस (अ. लीस्कीय का पीतर प्रथम नपोस्मिन पर विजय ससम्बोव का रगुमीना कीरुड मार्सेस कुतुत्पाव मॉविकोव प्रियोय की लोकप्रिय कृति 'सबस्वोपस की रसा' सर्गेइव-स्वेंस्की का सेबास्तोपोल का परिश्रम—इन सब घटनाओं को सावियत लेखकों ने रूसी जनता की महानता युद्ध के बीच प्रदर्शित उसके साहस तथा युद्ध में प्राप्त उद्यम का के ऐतिहासिक कलात्मक चित्रों में परिणत कर दिया। और जब माय चलकर देग की सीमा पर युद्ध के बादस गरजे तो उनके उत्तर में इन कृतियों की दशमकित का स्वर चारा भार में गूंज उठा।

सन् १९४१ की २२ जून को जर्मन सेनाओं ने सावियत संघ पर आक्रमण कर दिया। शीतिमय निर्मात्र का युग महान समाप्त हो गया और युद्ध का युग शुरू हुआ।

## ९. युद्धकालीन साहित्य

[ १९४१-४५ ]

द्वितीय महायुद्ध सोवियत देश के जीवन में महत्त्वपूर्ण मोड़ साबित हुआ। शांति का युग समाप्त हो गया और जर्मन फ़ासिस्ट आक्रमणकारियों से देश को मुक्त करने का युग शुरू हुआ। सारी सोवियत जनता देश की रक्षा के लिए तैयार हुई।

स्तालिन ने सन् ४५ में कहा कि 'युद्ध केवल अभिसाप ही न था। यह इसके साथ पिछा का बहुत बड़ा स्कूल तथा जनता की सारी समितियों की कसीटी था। युद्ध सचमुच में सोवियत सासन तथा संस्कृति में पली हुई जनता की परीक्षा थी और जनता उस परीक्षा में सफल हुई।

फ़ासिस्टों के ऊपर सावियत बिजय ने यह प्रमाणित कर दिया कि समाजवादी संस्कृति के बीच विकसित सोवियत जनता की परिष्कृत तप धुंगठन की सवित कितनी विकसित और बड़ी बड़ी थी और उसका देश प्रेम कितना ठोका था जिसने सारी जनता को एक मूत्र में बाँधकर उसे देश के स्वातन्त्र्य के लिए सब कुछ ग्योछावर करने की सवित थी। युद्ध कसियों की नैतिक सवित की कसीटी बन गया जिसमें वे धरे उतरे।

साहित्य ने कसी जनता की उन्हीं विशिष्टताओं का चित्रण किया जिनोंने उसे इस महायुद्ध में बिजयी बनाया। सोवियत लेखकों ने युद्ध के नायकों के चित्रों में कसी जनता की उन्हीं विशिष्टताओं—तीक्ष्ण बुद्धि चरित्र की बृद्धता अपुत्र सहनशीलता आदि का अंकन किया। युद्ध उस सर्वनात्मक साहित्यिक सिद्धांतों की भी परीक्षा थी जिनकी अभिव्यक्ति सभी एक सोवियत लेखकों की श्रेष्ठ श्रुतिया में हुई थी। युद्ध-संग में वे ही विशिष्टताएँ सामने आईं जिनका अंकन सोवियत लेखक अपने नायकों के चित्रों में कर रहे थे तथा जिनकी प्रेरणा और पिछा वे अपने पाठकों में कर रहे थे। सोवियत श्रुतियों के साहसपूर्ण कार्यों में लोगों को उनके



सोचप्रिय नायकों तथा कर्त्तव्यता तथा जग्य की ही भासक किसी कर्त्तव्य के ( नायक ) स्वयं सोचियत लेखकों की कोरी रूपमा न वे, बरन् स्वतः जीवन से बुने गये वे । इस प्रकार श्रुति सोचियत साहित्य जीवन से विशिष्ट रूप से सवधित था इसी से वह उन प्रदनों का बड़ी व्यापकता तथा विस्तार के साथ उत्तर दे सका जिनको कि जीवन में मूख के बर्षों में प्रस्तुत किया ।

मूख ने लेखकों के सामने कई सर्वनात्मक समस्याएँ प्रस्तुत कीं । लेखकों के लिए यह आवश्यक था कि वह काव्यात्मक रूप से सोचियत जनता की भावनाओं को उभार सकें और उसमें देशप्रेम के उत्कर्ष का, विषय के लिए हर प्रकार की उत्प्रेरणा और सप्रदता को तथा अपनी विषय में उसका अधिक विस्वास को अभिव्यक्ति कर सकें । उनके लिए यह भी आवश्यक था कि वे अपनी कृतियों में उन सभी घटनाओं का जयन कर सकें जो कि मूख क्षेत्र में हो रही थी और वे सोचियत जनता के साहसपूर्व कार्यों की कथा कह सकें । अन्त में उनके लिए यह भी अत्यावश्यक था कि वे सारे संसार के सामने काश्चिन्म की बर्बरता का पूरा-पूरा विष प्रस्तुत कर सकें और 'भूषा का विज्ञान' रख सकें जिससे सोचियत जनता तथा मशर जग जाय वि काश्चिन्म का जमनी रूप कितना मूर्ख तथा बर्बरता से पूर्ण है । स्वतः हठार से अधिक लेखक (सोचियत जन्मक मंत्र के एक तिहाई से अधिक) मना में मर्ती हुए और बहुत स (हृदय कीमोष वेमोष स्नाम्नी) वापस न सौं और मूख मूमि में सदा के लिये सो गए ।

मूख-मूख के बर्षों के समान मूख के इन बर्षों में भी साहित्य के वे रूप या प्रकार न मन माए जिनमें घटनाओं की प्रतिक्रिया जन्मी से जन्मी अभिव्यक्ति की जा सकती थी—प्रगीत मुक्तक कविताओं के नाय पोस्टर छोटी कठानियाँ प्रचारारामक मेल घटनाभित सेव आदि । मायाकोम्पनी की 'रान्ता की विहकी की परंपरा फिर से जीवित हुई । मारको तथा जग्य गहरों में लाम की विहकी के पोस्टर छाने लये । मूख के मोर्ष पर होम बानी घटनाओं से संबंधित जन्मी न जन्मी समने में मिनने गए प्रचारारामक मेल ह्वार जहाज से मरे जाने के और लक्ष्य पत्रों में छाने के जिनमें बीरों का आह्वान रहता था और गानियत सेना के साहसपूर्व कार्यों की बर्षा

रही थी। अलेक्सेइ तोलस्तोय ने युद्ध के वर्षों के साहित्य को जनता की बीर आत्मा की भाषा में ठीक ही कहा है। इस समय प्रचारात्मक रस बहुत ही लोक व्यापक हुए। प्रचारात्मक लेखों के साथ म अलेक्सेइ तोलस्तोय मिमोनोव सोमोखोव सीमोनोव, फेदेयेव टीखनोव रकवकोव सोसमन गरबाशोव स्वस्ताम्की जैसे प्रसिद्ध लेखकों ने काम किया। इन लेखों में सबसे पहले सोवियत बेधमकों के छाहसपूर्ण कार्यों का अधि-र्ष्यजन हुआ तथा फ्रांसिस्ट वर्गों के विरुद्ध युद्ध में सोवियत जनता की जो हानि हुई, जो दुःख उसे उठाना पड़ा और जो बलिदान उसने दिए उनका वर्णन हुआ है।

युद्ध के वर्षों में सोवियत लेखकों ने कलापूर्ण प्रगीत मुक्तक गद्य नाटक आदि की सृष्टि की। इनमें से कई कृतियाँ स्टाकिन पुरस्कार से पुरस्कृत हुईं।

प्रगीत मुक्तक के क्षेत्र में टीखनोव सीमोनोव एबरडोव्स्की मुरकोव ईसाकोव्स्की तथा अन्य सोवियत कवि अपनी कृतियों में सोवियत भविष्य की आंतरिक अनुभूतियों की बड़ी व्यापक और गहरी अभिव्यक्ति प्रस्तुत कर रहे हैं। इन वर्षों की प्रधान विषय-वस्तु है देश के प्रति प्रेम। मुरकोव को समर्पित अपनी कविता में सीमोनोव ने लिखा 'भोक्तियाँ मुझे अभी तक माफ करती जाती हैं, बचाती जाती हैं फिर भी मैं जानता हूँ कि जीवन समाप्त हो गया है। फिर भी मुझे कसी मृत्ति का पत्र है, जहाँ मैं पैदा हुआ, इसका गर्व है कि इसके लिए बड़का पैटी बिरासत है।

बहुत से कवि जेनिन की ओर संकेत करते हुए जनता का आह्वान करते हैं और यह कहते हैं कि 'इस महायुद्ध में हम मस्लुवर कान्ति की परंपराओं तथा संश्रान्तियों की ह्री रक्षा करते हैं। सोवियत जनता इस युद्ध में जेनिन के संके को ऊँचा फहरा रही है।' इसके साथ ही (स्टाकिन से संबंधित तथा अन्य बहुसंख्य) रचनाओं में कम्युनिस्ट पार्टी तथा जनता के

एक्य का भाव प्रकट किया गया है। सोबियत संघ में रहनेवाली अनेक जातियों के एक्य तथा आधुनिक भाव की अभिव्यंजना भी युद्धकालीन काव्य में बहुत हुई है। सोबियत संघ का गीत अनेक जातियों को एक में एकन वाले इसी समाजवादी राष्ट्र को समर्पित है। युद्धकालीन सोबियत काव्य का मौलिक और उसकी कलात्मक शक्ति इस बात से निर्धारित है कि कसका और उनका भावका का स्वार्थ उनके विचार और अनुभूतियों तथा स्वतः उनका भाव्य एक दूसरे से अभिन्नकत था। १

युद्ध के वर्षों में व्यंग्यारमक कविताओं के अनेक प्रकार बहुत प्रचलित हुए। व्यंग्यारमक कविताओं और चरित्रकथा में क्रासिस्टों के प्रति जनता का क्रोध तथा जनता की जुगा अभिव्यक्त हुई। व्यंग्यारमक कविताएँ, बाल्सा फेस्टन व्यंग्यविज्ञ पैम्फ्लेट एपिग्राम आदि का प्रयोग बेबेनी, मर्दाक मिनाइकोव सेवरेव क्रमाथ बसीस्येव आदि ने किया।

सबू के प्रति जनता का भाव भी सोबियत लेखकों की रचनाओं में बड़े खोरदार दायरों में व्यक्त हुआ है। गुरकोव ने अपनी एक कविता का शीर्षक में जुगा का मीत गाता रखा। जनता के साथ युद्ध की कठिनाइयों को झेलता हुआ तथा दैग की रक्षा करता हुआ साइस संपूर्ण सैनिक ही उसकी कविताओं का नायक है।

सीमोनोव ने यह बड़ी अच्छी तरह प्रदर्शित किया है कि अपने निकटस्थों या संबंधियों का भाव किस प्रकार सैनिक का उत्साह से भर देता है और कठिन परिस्थितियों के बीच उस यह विचार-शक्ति देता है कि घर पर लोग उसकी विजयी के रूप में प्रतीक्षा कर रहे हैं। इसी भाव को परस्फुट करती हुई उसकी कविता 'मेरी प्रतीक्षा करा' सैनिकों के बीच बड़ी लोकप्रिय हुई और सैनिकों के अनेक पत्रों में उत्कृष्ट उद्धरण मिल गये। इसमें कवि ने प्रपनी के प्रति प्रेम के भाव का युद्ध में विजय के विश्वास के साथ गुंजा दिया।

सीमोनोव ने उस व्यक्ति की अनुभूतियों की तीव्रता का बड़ा सुंदर

१—डोबर्ग इन्डोरिई रूसकीय एलेक्सीया क्लिचेरादूरी नाम द्वारा  
९० १४८।

अभिर्भजन किया है जो उस सबकी रक्षा के लिए, जो कि उसे परम प्रिय है अपना जीवन होम कर रखा है और अपने निकटस्थों से उस आत्मिक या नैतिक सहायता की आशा करता है जो कि उसमें पृथक्ता और साहस भर दे। वह मर्यादा तथा मर्यादा की पुनरावृत्ति द्वारा ऐसी सजीव भाषा की सर्चना करता है जिसमें अनुभूतियों का अभिर्भजन तथा कक्षात्मक विरहसनीयता दोनों हैं।

सोवियत व्यक्ति के आंतरिक भावों तथा अनुभूतियों के अभिर्भजन की क्षमता ईसाकोष्की के प्रणीत मुक्तकों की बहुत बड़ी विशेषता है। इन गीतों में और सैनिक तथा पार्टिजन का चित्र प्रस्तुत किया गया है और इसके साथ ही देशनाथ पर जनता के शोक तथा क्रासिस्टों के प्रति क्रोध का भाव प्रकट हुआ है। ईसाकोष्की के गीतों के मुख्य भाव म बिल्ली हुई बहानी निर्मल प्रेम प्रेमी या प्रेमिका के प्रति विश्वास और प्य-प्रेम है।

### प्रबन्ध काव्य

जीवन के साथ घनिष्ठ संबंध ने सोवियत कवियों को प्रणीत मुक्तकों के साथ-साथ ऐसे प्रबन्ध या आख्यायिकाओं के प्रमथन का भी अवसर दिया जिसमें बड़ी व्यापकता के साथ युद्ध की घटनाओं तथा लोगों के चरित्र की अभिव्यक्ति हुई। युद्ध के वर्षों में काव्य के इस प्रकार की ओर लोगों का ध्यान स्वभावतया गया जिसमें युद्ध में भाग लेनेवालों के बलिदानों का तथा आत्मिक उत्कर्ष का और सोवियत जनता की सर्वसामान्य भावनाओं का वर्णन किया गया था। १९४१ के अन्त में तीखनोव का (आख्यायिका) काव्य हमारे साथ कीरोव प्रकाशित हुआ (स्तालिन पुरस्कार द्वारा पुरस्कृत)। यह कविता कनिनप्रद के बीरे के विषय में है। "सड़कों पर प्रतिरोध है और फाटक पर लाइवा लुपी है। सेनेइ मिरीनोविच कीरोव रात में हम राह में भूमता है। मानो आस्थाबिन्दों की न झुकनेवासी लौह इच्छा कभी जनता की अलग-अलग दुःखता राह का अन्त नहीं लगा रही है। साहस तथा विजय का विश्वास स पूर्व तीखनोव का यह काव्य युद्धकालीन महत्त्वपूर्ण साहित्यिक दृष्टियों में स एक है।

शम्शु द्वारा बिरे हुय केनिनप्राद के (तथा मास्को के) बीरतापूर्ण युद्ध में बहुत-सी साहित्यिक कृतियों को जन्म दिया। तीखनोव ने राशि में केनिनप्राद का रोमांटिक चित्र प्रस्तुत किया जो कि हर प्रकार की कठिनाइयों को झसने को तैयार है। दूसरे काव्य यथार्थवादी स्तर पर हैं और उन महान् कठिनाइयों का चित्रण करते हैं जिनको कि इस राष्ट्र में छोका फ़िर भी आत्मसमर्पण नहीं किया। (स्फ़ाद) बेरा 'फ़रवरी की बापरी' में जो० बेरमास्सुस गर्ब के साथ उन अनुभूतियों के बारे में कहता है जो केनिनप्राद के रक्षकों के हृदय में सर्बोपरि थीं जिनसे प्रेरित वे भाव शोक-मृत्यु की चढ़ के बीच स्वस्वों की रक्षा कर रहे थे जिनसे कि प्रवीण बनसे ईर्ष्या करें। पुखोकोव्स्की 'मेरी बियन' में बेरा इन्वर केनिनप्राद का वर्णन उसके अत्यन्त कठिन दिनों तथा विजय के दिनों के बीच करता है और कविता अन्तर की रचना से परिपूर्ण है। इसमें अतिरिक्त कोम का भाव आक्रमणकारी के प्रति सारी जनता के कोप के भाव का अभिव्यक्त है।

अतीगेर की कविता 'जोया कस्वा' अत्यन्त नया के साहसपूर्ण काव्यों से संबंधित है, सोवियत जनता की इस नायिका का बड़ा ही प्रगीतारमक चित्र प्रस्तुत किया गया है। कविता की रचना काव्य की नायिका से कवि की बातचीत के रूप में हुई है। इसमें कवियित्री ने हम जन नायिका के व्यक्तित्व के धीन्द्रय, उसकी नम्रता और उसकी अनुभूतियों का अतिरिक्तन किया है।

पाबेक अन्तकोव्स्की ने अपनी कविता 'बेटा' योर्बे पर मरे अपने पुत्र की स्मृति में लिखी है। इसमें युद्ध के अत्यन्त कष्टम पर—मजपुबक सिपाहिर्नों की मृत्यु और पिता के शोक का चित्रण हुआ है।

ट्रेजेडी या कठुषा की भावना मानव जीवन की आगाहीन अपराधेय विषमता से संबद्ध है जिसमें युक्ति पाने का कोई रास्ता नहीं है। प्राचीन द्रवडी काव्य के विरुद्ध नायक का युद्ध और उलका नाम चित्रित करती थी नायक का एंश भाग्य आ पड़ान से ही निश्चित है जो अरिर्बर्नीय है और जिनमें कोई हेरफ़र नहीं हो सकता। अपने भाग्य के

किन्तु उस युद्ध में नायक का भाग हाता है। नायक की निराम-आगा में ही अन्त में ट्रेजडी का कर्म भाग निहित है।

यह ट्रेजडी तभी तक अनिर्वास्य तथा अत्यन्त कर्म प्रतीत होती है जब तक कि हम इसे असम-असम्य व्यक्तिगत जीवन के परे म या व्यक्तिगत स्तर पर देखते हैं। हम यह जानना चाहिए कि व्यक्ति म ही सब कुछ नहीं समाप्त हो जाता। व्यक्ति ही सब कुछ नहीं है। उसके पं छ उसका पद है उसकी जनता है। यदि हम इस व्यापक लोकदृष्टि या सामाजिक दृष्टि को बनाए रह तो देखेंगे कि व्यक्ति का अन्त कितना ही कर्म क्या न हो फिर भी सय कुछ समाप्त नहीं हो जाता। यदि मनुष्य यह समझता है कि वह किसी व्यापक सत्य के लिए अपनी जान द रखा है वह मर कर अपने प्रियजना को बचा रखा है तो उसके अनिर्वास्य के इन आत्म-ये मृत्यु पर उसकी विजय है। इस व्यापक दृश्य के कारण ही उसका व्यक्तिगत अन्त सर्वनाश या सर्वान्त नहीं है। इसी छ उसके व्यक्तिगत अन्त के कर्म अन्तकार से बाधा की किरण फूटती है और ट्रेजडी पुन ट्रेजडी नहीं रह जाती।

युद्ध के पूर्व से ही मोक्षित साहित्य म प्रचलित 'आभापूर्ण ट्रेजडी' पराशरकी का मही मर्भ है। ट्रेजडी केवल व्यक्तिगत स्तर पर ही ट्रेजडी रहती है। मनुष्य अपराधेय बाधाओं छ युद्ध म मल्ट हो जाता है। किन्तु यदि मरता हुआ वह यह जानता है कि वह कर्म या कार्य प्रिये पूरा करने के लिए वह जी-जान सब कुछ अर्पित कर रखा है सफल होया और वह अपनी मृत्यु द्वारा उन सबको साथ छ बचा रहा है जो कि उस अत्यन्त प्रिय हैं तो यह निराशा की गहन ठमिष्ठा म मुक्त पूर्ण ट्रेजडी नहीं है—एक व्यक्ति के अन्त पर पूर्ण निराशा या मादग्मेयी की चेतना कमी नहीं छाती और न उसका अन्त ऐन शोक को जन्म देता है कि प्रियका रामन न हो सके। अन्तकोश्ली क अपने काव्य म स्वजन के मन्त्र की ट्रेजडी या जो शोक है उसका अर्पणम इमी प्रकार होता है। इन शरश के साथ वह अपनी कविता समाप्त करता है—

'इम अनन्त युद्ध मे पाश वीर ने और अठन म तुम्हें दुःख मनाते

का कोई अधिकार नहीं है। बड़े महान् सत्य के नाम पर, जो कि तुमसे कहीं अधिक बड़ा है, दूसरों के प्रिय बेटे प्रिय बेटों की जगह सने जा रहे हैं। युद्ध के अन्तिम वर्षों की कृतियाँ सीधे आने वाली, विजय के उत्साह से परिपूर्ण हैं। यदि १९४१-४२ की कृतियों में सन्तुष्टा स्वस्थ मूर्ति का चित्र है तो अब फिर से इस समय की रचनाओं में मये जीवन का चित्र उभर रहा है जो माना उदय होनेवाले सूर्य या बसन्त के समान है (इन्बर की कविता 'बसन्त' सुवर्णम की रचना 'इमारी प्रतिष्ठा की बहन—बसन्त')।

### यसोक्षी स्पोकिन

यदि तीखनोव ने कीरोव के माध्यम से केनिमप्रार का प्रतीकारमक रामाटिक चित्र प्रस्तुत किया और बर्सीबेर तथा अन्तकास्की ने कविता की प्रगीकारमकता पर जोर दिया जिसके मूख म जीवन के यन्तार्थवादी तथ्य से तो स्वरदोस्की ने अपनी कविता 'बर्सीमी स्पोकिन' में कृती सैनिक का सामान्य यन्तार्थ चित्र प्रस्तुत किया। स्पोकिन सामान्य सिपाही है जिसमें कृती सैनिक की सामान्य विशेषताएँ बड़े स्वामाधिक बग से प्रकट होती हैं। उसमें साहस बलिदान की भावना स्वयं प्रेम तथा रहस्य-रम्य की बधि है। युद्ध की अन्तकारमक परिस्थितियों के बीच उसका चित्रण किया गया है और उसमें वे विशेषताएँ दिखाई गयी हैं जिनके कारण सोवियत सेना अजय है। वह जानता है कि प्रत्येक सैनिक के साथ सारा बैरा है वह अकेला नहीं है। कविता अनेक घटनाओं से मिलित है जिसमें स्पोकिन का युद्ध का जीवन चित्रित किया गया है। सन्तु की गतिविधि की बीछार के बीच दकदक में पड़ा हुआ वह हिम्मत नहीं हारता, वह नहीं हीर कर अपना काम पूरा करता है और सन्तु का हवाई पड़ाव विद्यता है तथा अपने प्लाटून के साथ आक्रमण करता है। बुरी तरह लक्ष्मी हो आने पर भी वह अपनी अपना ह्यूटी पर लोट जाता है। यही उसका जीवन है और यही सोवियत सेना का भी जीवन है। अपनी विजय में अधिक विश्वास उसे अनुमिष्ठ पकित देता है और वह सब काम सकलता से संपन्न करता है। बधि ने स्पोकिन के माध्यम से बड़ी कलात्मकता के

साप समकालीन नायक का चित्र प्रस्तुत किया है और त्योकिन जैसे सामान्य सैनिक के रूप में सारी जनता के मुख को प्रस्तुत किया है।

कवि ने सोवियत सेना की पृष्ठ-भूमि में अपने नायक का चित्र प्रस्तुत किया है। कवि अपनी सामग्री—क्रीम का रहन-सहन उसके अनाबिज्ञान उसकी भाषा से बहुत अच्छी तरह परिचित है। भाषा इसके व्यंज्य से उत्तम है। मुख के बिनो में यह कविता बड़ी लोकप्रिय हुई। नायक के चित्र की महत्ता के कारण मुख के अनेक पक्षों के चित्रण के कारण और प्रतीकारत्मक तथा सविनयनीय भावों की गहराई के कारण मुखकाशीम काव्यों के बीच स्वरबोम्बकी का यह काव्य सर्वोच्च स्थान प्राप्त करता है। मुख के बपों में इससे लोगों को बड़ी प्रेरणा मिली और आज भी इसका विचारारत्मक तथा कसारत्मक महत्त्व है।

गद्य

मुख के बपों में सोवियत गद्यकारों ने कई दिशाओं में काम किया। इनमें मुख की भटनाओं का चित्रण करने वाले लेख बहुत व्यापक हुए। इन लेखों में ऐतिहासिक महत्त्व की बहुत अधिक सामग्री इन लेखकों द्वारा एकत्रित हुई। इनमें मुख के वे सभी युग सभी परिस्थितियाँ चित्रित हुईं जिनके बीच से यह मुख बना। इनमें सविष्य की पीढ़ियों की प्रेरणा देनेवाली सोवियत नायकों की बेशुद्धारी की अनूठपुर्ब साहस तथा बलिदान की भाषा सुरक्षित है। देश प्रेम को उद्बोधित करनेवाले तथा राष्ट्र के प्रति भूमा भङ्गानेवाले इन कसारत्मक प्रचारारत्मक लेखों में देश की जनता को मुख के लिए समझ कर बहुत बड़ा काम किया। अन्ततोग्त्र तोलस्तोय की लेखों की पुस्तक 'स्वदेश', ऐरनदुर्व की पुस्तक 'मुख' तथा अन्य कृतियों का सैनिक तथा नागरिकों सभी पर बड़ा प्रभाव पड़ा। मुख काशीम इन प्रचारारत्मक लेखों का बड़ा सामाजिक शिक्षारत्मक महत्त्व था। आज जब यह ध्येय इन लेखकों के सर्वकारत्मक मार्ग में महत्त्वपूर्ण, चरम बन गये और इनके आधार पर लेखका ने सीमलोव गरबातोव पून्धोय इस मुख के संबंध में बड़ी महाकाव्यारत्मक कृतियाँ प्रस्तुत कीं। मुख की परिधिधि के साथ सागों का अनुभव तथा पर्यवेक्षण भी बड़ा



और सेहों तथा छोटी कहानियों के साथ अधिक व्यापक वस्तु विधान वाली कृतियाँ—बड़ी कहानियाँ तथा उपन्यास—भी सामने आईं। बाँरा पसिलम्बन्व्या का 'इत्र पनुप' गरवाथोव का 'अशित' प्रोसमन का 'अमर जनता' सीनोनीच का 'दिन और रात'। इन कृतियों ने युद्ध के अनेक पक्षों का चित्रण किया और देश की रक्षा करनेवाले सोवियत व्यक्ति की नयी-नयी कसिष्ठताओं को प्रदर्शित किया। इनमें उन प्रदेशों की सोवियत जनता की देश के प्रति बकावारी चित्रित की गयी है जहाँ जर्मनों का अधिकार था (अशित)। इतिहास में असम्भ्य स्तालिनवाद की रक्षा की वृद्धता का चित्र है (दिन और रात) अग्रिस्टों की बर्बरता प्रदर्शित है ('इत्रपनुप') तथा सोवियत जनता की राजनैतिक नैतिक एकता तथा आरिभक महानता का चित्रण है (फेदेरेव का 'अवान गार्ड' या 'युवक रक्षक')। इन सभी कृतियों में महायुद्ध के युग की छाप है।

क० सोबसेव की कहानियाँ 'समुद्री आत्मा' में प्रत्येक नायक कर्तव्य साहस तथा वृद्धता की भावना से युक्त है। स्टीमर के तीन बालक बालियों के बीच लक्ष्मी हो जाने पर भी अथन स्टोपर का नहीं रोक्ते और उसे बलात् करते हैं। गणप नाटकीयता रोमाटिक रूप तथा रूपन का सारथ्यी रूप सोबसेव की रीसी की अपनी विषयता है।

अलकसंड्रै तोलस्टोय की कृति 'इवान घुबरयोव की कहानियाँ' की विषय-वस्तु रूसी अस्थीय चरित्र है। इन कहानियों में लेखक ने इस प्रश्न का उत्तर दिया है कि इस युद्ध में रूसी क्या चित्रयी हुए।

१९४२ में बसीसी प्रोसमन की कृति 'अमर जनता' प्रकाशित हुई। उसमें जनता की ऐतिहासिक चरित्र की प्रमति के रूप में चित्रित किया गया है और सोवियत संघ का जन रक्षा रूप प्रदर्शित किया गया है। साथ ही जनता और कम्युनिस्ट पार्टी का एकत्र दिनाया गया है जो कि क्रान्ति पर अमकी चित्रम का मूस कारण है।

बाँरा बसीलम्बन्व्या के उपन्यास 'इत्रपनुप' में जनता द्वारा बिरोध की चरित्र को प्रदर्शित किया गया है और उस क्षेत्र की रूसी जनता

## मुद्रकालीन साहित्य

का जीवन और युद्ध विभित किया गया है वहाँ पर फ्रांसिस्टों का अधिकार था। यह पुस्तक यह प्रदर्शित करती है कि किस प्रकार कृषी जनता माताएँ और यहाँ तक कि बच्चे फ्रांसिसम के आत्याचार के बीच देश की स्वतन्त्रता के सेनानी बन गये। इनका दीर्घक स्वयं जनता की जाने वाली विजय का प्रतीक है। सावियत जनता की अपराजेयता और शत्रु दारा अभिद्रुत क्षेत्र में अपने दुष्ट सहन तथा युद्ध की विषय-वस्तु का उद्घाटन गारबातोव की कृति 'अभित' में हुआ है। इसका मुख्य भाग यह है कि जो शत्रु का आत्म-समर्पण नहीं करते तिनकी आत्मा 'अभित' है, विजय उन्ही की है।

'घर और बिन' में युद्ध के बीच स्थायित्वाय के बिना और रातों का आतावरण प्रस्तुत किया गया है जब कि केवल सड़क के लिए ही नहीं बल्कि प्रत्येक मंडित और मजिस की प्रत्येक सीढ़ी के लिए खड़ा ही नहीं थी। 'घर और बिन' में सीमानोव ने स्थायित्वाय के युद्ध में सोवियत सैनिका के साहस और दृढ़ता का चित्र प्रस्तुत किया है। युद्ध के सामान्य क्रमों के रूप में कथा के केन्द्र में कप्तान सबूरोव है जो बटास्मिन का क्रमोद्धार है। उसके युद्ध के कार्य-कलाप द्वारा पाठकों के सामने स्थायित्वाय का चित्र प्रस्तुत होता है। कथा में वर्णित घटनाएँ सबूरोव के सैनिकों द्वारा अभिद्रुत एक टूटे-फूटे मकान के चारा मोर कब्रित है जिसकी सोवियत सैनिक रक्षा कर रहे हैं और जिसे जर्मन सैनिक अपने अधिकार में चाहते हैं जो कि इस कथा में विवक्षित हल्ला है। इसकी मकान की रक्षा में सबूरोव और सोवियत सैनिक जपूर्व दृढ़ता साहस तथा मान्तरिक चरित प्रदर्शित करते हैं। द्वितीय जर्मन क्रमोद्धार प्रौत्सोंको कप्तान सबूरोव उसकी प्रियतमा उसके युद्ध के साथी यह सभी लोग एस हैं जिनका साथ आचरण, कार्य-कलाप इस तथ्य और कथ्य से प्रेरित है कि जहाँने अपने को पूर्णतया स्वदेश रक्षा के लिए समर्पित कर दिया है और प्रत्येक क्षण अपना जीवन होम करने को तय्यार है। जब भी एक क्षण का विषाम संभव प्रतीत होता है उस समय कप्तान सबूरोव आक्रमण का प्रस्ताव रखता है और अपनी

कटास्मियन के साथ बर्नोनी पर आक्रमण कर देता है। इसमें सोवियत जनता की अपराधमयता और असीम देश प्रेम का निदर्शन है या कि उसे व्यक्तिगत स्वाधीन और सभी प्रकार की कठिनाइयों पर विजय पाने की शक्ति देता है।

सीमनोव की इस कथा का महत्त्व इस बात में है कि उसने युद्ध के समर्पण तथा असीम कठिनाइया का पूर्ण चित्र प्रस्तुत किया और उन सोवियत देशमन्त्रों को चित्रित किया जिन्होंने इन बाधाओं के होते हुए भी स्तालिनप्राय की रक्षा की और विजय प्राप्त की। अत्यन्त कठिन परिस्थितियों के बीच प्रदर्शित सोवियत देशप्रेम के स्वरूप और स्वभाव का गंभीर उद्घाटन सीमनोव की इस कथा का विशेष गुण है।

बिजोनोव की कृति 'बिस्लीकोवूम्स्क पर अधिकार' की घटनाएँ भीपर नवी के पश्चिम सोवियत सेना के आक्रमणों से संबंधित हैं। कथा के नायक टिक बाक हैं। उनके माध्यम से सोवियत सेना की उच्च कर्तव्य भावना और साहस का चित्रण किया गया है जो उसकी अपराधमयता का मूल श्रोत है। इसके साथ ही नायक इस भावना से भोत प्रोत है कि वे युद्ध द्वारा संसार का अधिक निर्मित कर रहे हैं और उनकी बुद्धि तथा उनके साहस पर जनता तथा मानवता का उद्धार निर्भर है।

घोसोसोव की कृति 'बे मातूमि के लिए लड़' में बान के स्तेपो में युद्ध का वर्णन है। इसके नायकों के साहसपूर्ण कार्यों का उद्घाटन सोवियत व्यक्ति की मूठमूठ देश प्रेम की चेतना की अविच्छिन्नता के रूप में हुआ है। घोसोसोव के नायक घाति प्रमी परिष्करी व्यक्ति के रूप में चित्रित हुए हैं जो कि घातिमय समय को फिर से वापस लाने के लिए युद्ध कर रहे हैं। घानू के प्रति उनसे हृदय में पृथा है क्योंकि उनसे इनके घातिमय निर्माण का नाम रोक दिया। देश के प्रति अमाय प्रेम साहस एक बूझरे के प्रति उत्तरदायित्व की भावना—यह इन नायकों की विशेषताएँ हैं।

यहाँ यह कहना आवश्यक है कि यद्यपि १९४१-४५ के साहित्य में युद्ध के बीच जनता के साहसपूर्ण कार्यों का वर्णन हुआ है फिर भी मोर्चे के पीछे जनता के युद्ध का पारी रखने का जो कार्य और प्रयत्न है उसका

विषय बड़ा दुर्बल है। बेसोल्टाम्स्कोयेसोसे (बसोल्ताम्स्कोये सड़क) प्रागिन्याम का 'गधा' में उतरा पनफूयोरोव का 'शान्ति के लिए युद्ध' परेवेन्सेव की 'परीसा' करवाएवा की 'अग्नि' गदकोव की 'प्रतिज्ञा' जारि इतियां इसी विषय-वस्तु को लेकर लिखी गई हैं फिर भी जामाचका के विचार से इन इतियां को एसा कलात्मक रूप नहीं प्राप्त हो सका है वैया कि होना चाहिए। युद्ध के अंतिम वर्षों की इति 'मोर्से' स मलाम में सैनिकों की मासमाओं का विषय हुआ है जो धनु पर विजय प्राप्त कर अविष्य के साक्षिण्य निर्माणकारी कार्यों के विषय में सोचने लगे हैं जिससे कि साक्षिण्य बनता का जीवन युद्ध के पूर्व की अपेक्षा और भी अच्छा हो जाय। फिर भी साक्षिण्य निर्माणकारी परिषद की विषय-वस्तु युद्धोत्तर काम में पूर्वतया बंकि हो सकी।

#### नाटक

युद्ध के वर्षों में नाटकों का बड़ा विकास हुआ। साक्षिण्य देता भक्तों के भावना और अनुभूतियों की महत्ता को प्रबलित करने के लिए साक्षिण्य वत कलक युद्ध के बिना में साहित्य के इस रूप की ओर उन्मुख हुए।

#### रूसी जनता

युद्ध के दिनों में जनता को उन्मुख तथा सज्ज करने में तथा उत्सर्ग स्फूर्ति भरने में साक्षिण्य रोगपेच का बड़ा महत्वपूर्ण योग है। युद्ध के वर्षों में कलाकारों के बहुत से संघस (१९८५) युद्ध के माथों पर गये और वहाँ कलात्मक प्रदर्शन प्रस्तुत किये।

युद्धकालीन नाटकों के सामान्य भाव का स्रोतक के विषयोव का यह रूप है जिसे उसने प्रासिस्टों के माक्रमण के चार दिन बाद 'प्राणा' के लिए लिखा था। इसमें उसने कहा कि आज के साक्षिण्य नाहित्य का लक्ष्य है अपनी सारी प्रतिभा और प्रेरणा का इस बात के लिए प्रयोग कि जनता की अनुभूतियां अपने ज्ञेय देव के प्रति उसमें उद्दीप्त प्रेम तथा साहस की व्यंजना हो सके और न केवल इनका अभिव्यजन हो बल्कि युद्ध में उठे विषय की प्रेरणा तथा भावना से भरे।"

क्रासिस्टों के विरुद्ध सोवियत जनता के 'पार्टिज़न' (छापामार) युद्ध की विषय-वस्तु युद्ध कालीन नाटकों में प्रचलन रहा है। इसकी अनिश्चित तिथियों के नाटकों 'आक्रमण' तथा 'स्योनुष्का' कनिशूक के युद्ध के स्तरों में 'छापामार' अथवा 'मिस्न' 'आलीगर के सत्य के बारे में कथा' भादि नाटकों में हुआ है। इसके साथ ही रमाखान के 'प्रसिद्ध बंग' फ्रीम के 'प्योत्रकीमोन' स्तनीम्बी के 'उपलबासी' नाटकों में सोवियत यमिकों और कललोवियों के उन माहगपूर्व कथों का प्रदर्शन हुआ है जिनके सहारे यह देखा इतना बढ़ा यह इतने समय तक चला सका।

युद्धकालीन नाट्य साहित्य की सबसे बड़ी उपलब्धि १९४२-४३ में हुई जब एक के बाद एक उच्च कोटि के नाटक जनता के सामने आये। इनमें सीमोनोव के 'रूसी जनता' तिफोलेव के 'आक्रमण कनिशूक के 'मार्च' अलफेई टोम्स्तोय के 'मार्चर इवान 'सोवियत साहित्य की महत्वपूर्ण कृति के रूप में माने जाते हैं।

जब सीमोनोव का नाटक 'रूसी जनता' प्रकाशित हुआ तो तार द्वारा यह पूरा नाटक अमेरिका मना गया। उस समय क्रासिस्टों के विरुद्ध रूसी जनता के साहस की कथा कहनेवाली कृतियों का विवेक में इतनी बराबरी से इन्तजार हो रहा था।

इस नाटक का नायक सामान्य रूसी स्त्री-पुरुष हैं जिन्हें हर जगह देखा जा सकता है। मृतपूर्व सोवियत कालेबासा सोवियत और अब सोवियत सेना का अफसर तिफोलेव उसकी प्रपत्नी सोवियत नाम्ना बुड्डा रूसी अफसर-बाधिन की अपनी अविच्छिन्न कृति से सज्जने के लिए सोवियत सेना में दाखिल हुआ है तथा सोवियत से सामान्य सोवियत जनता से भिन्न नहीं है। इनमें बड़ी मूल्यमूला गुण हैं जिनसे कि सामान्य जनता निर्मित है। कर्तव्य की भावना युद्ध के लिए सब कुछ सहन की तत्परता— इनके चरित्र की मुख्य विशेषताएँ हैं।

कमांडर मखानान की दुकड़ी एक छोटी से गृह में अर्धना द्वारा चिरी है। कमांडर से मकर सामान्य सैनिक तक यह जानता है कि मृत्यु निश्चित

है फिर भी चाहे आत्म-समर्पण महा करता और न अपनी उमड़ छाड़ना है। सफ़ासाब बिना सकाब अपनी प्रयत्नी बाल्या को सक्त्पूर्ण चाहे छात्र-वक्ता मान के लिए बेइतना है और बास्मा बिना फ़िक्रि-छाड़ना के इस काम पर जाती है और अपनी बलि हम को मर्याद है।

सफ़ासाब और उसकी टुकड़ा का साहस उस समय बिनाय रूप से प्रकट होता है जब उसकी रला के बिण आता हुई साविजन मना से मृत्यु का संकेत दूर ही जाता है किन्तु फिर से प्राप्त मान के अवनत और अपनी सुरक्षा को टुकराकर बहु यज्ञ की यात्रा संनिका के सामन खलता है बिनाम यदि सब नहीं तो बहुत उता डकर ही मर हा जाएंग। निरिचल मृत्यु फिर जीवन प्राप्ति का आनन्द और फिर तल्पम मृत्यु की और बिना सकोब के सचरम पूर्ण परिस्विति का विचन इस नाटक में किया गया है। अधिक घण्टिगाबी मरु से उन्हें पुन जीवनना है और अपन अधिकार में रखना है का सना के यात्रायोड के लिए मर्यादरमक है।

सकौतीब बिना बिनी प्रकार के सकौब व अपनी टुकड़ी का युद्ध में से जाता है और अपने जीवन की बिन्ता नहीं करता। बहु जानता है कि देश के प्रति कलष्य मनुष्य के व्यक्तिगत स्वार्थ से नहीं उँबा है।

सीमतीब का यह नाटक 'प्राणा' में रूपा या और लाका काया के इन पड़ा। यह नाटक युद्धकालीन महत्त्वपूर्ण इतिहास में से एक है। इसमें कसी जमता के इधमेम का बड़ी स्पष्टता से उद्घाटन किया जा कि इसमें उच्च भावनाओं का जगाता है आगिभिक बुद्धता जाता है और कठिमाइया की सहन की अपूर्व घण्टि बता है। सबसे बड़ी बात यह कि ये विशिष्टताएँ बिसेय प्रतिमा सपन्न ब्यक्तियता में नहीं बरन् सामान्य साधारण छापा के जीवन के उदाहरण द्वारा प्रस्तुत की गयी हैं। इसमें सोबियत सेना की बुद्धता तथा साहस का प्रदर्शन युद्ध के प्रतिदिन के जीवन की कठिमाइया के बीच हुआ है।

इस नाटक का नायक साविजन युग की कसी जमता है। इसी में (कसी जमता) सब कुछ कह दिया गया है इसी में सब कुछ किया है।

## प्रॉट या मोर्चा

रूसी जनता के समाज कमिश्नर का नाटक 'मोर्चा' भी प्राम्वा में छपा था। कमिश्नर एक यूक्रेनीय सेक्टर है किन्तु उसके नाटक ने ऐसे प्रश्न को उठाया जिसका कि सारे देश से सम्बन्ध था। इसलिए यह केवल यूक्रेनियों की ही चीज नहीं बरन् सोवियत साहित्य की वृद्धि बन गयी।

यह नाटक १९४२ की ग्रीष्म क संकटापन्न दिनों में प्रकाशित हुआ जब कि जर्मन कुर्बान्स्की स्त्री को पार कर गये थे। कनकाड सतरे में था और जर्मन स्तालिनवाद तक पहुँच गये थे।

देश के ऐसे संकटापन्न दिनों में कमिश्नर ने बड़े साहस के साथ उन समाधिपतियों का चित्र खींचा जो आरम्भ-संतुष्ट थे और जो अपने प्राचीन अनुभवों पर निश्चित बैठ युद्ध की नवीन वैज्ञानिक प्रक्रियाओं से बेखबर थे। आज का युद्ध-विज्ञान कनाडरा के सामने नयी माँग प्रस्तुत कर रहा है। इनको न समझने का अर्थ है पराजय तथा नाश। जनरल गोरखोव यँसा ही समाधिपति है जो युद्ध-युद्ध के समय ऊपर उठा और जिसका बड़ा प्रभाव है। किन्तु यह नये युद्ध-विज्ञान की आवश्यकताओं की न समझ पाता है और न उनके लिए तय्यार है। सुझावियों से भिरा हुआ वह स्पष्ट स्वतन्त्र सम्मतिपूर्ण का दबा देता है। इसका परिणाम होता है युद्ध में असफलता और देश की मृत्युवाह निधि सोवियत जनता का नाश। गोरखोव का चरित्र यह प्रकट करता है कि युद्ध में विफलता राष्ट्र की बड़ी बड़ी व्यक्ति के कारण नहीं होती बरन् इसलिए होती है कि जिन लोगों को देश की रक्षा का भार मिला गया है वे युद्ध के नवीन विज्ञान से अनभिज्ञ नहीं हैं। गोरखोव के विपरीत कमिश्नर जनरल जम्पोव का चित्रण करता है जो युद्ध के अनुभवों से युक्त है और राष्ट्र में भी मीठान का तैयार है और फिर उसे सबके निगाने को तय्यार है।

इस नाटक में इन प्रकार कर्माडरों को आरम्भोत्थता के लिए विवश किया और उनको हार तक पहुँचाने की नया धारें खोजने और उत्तर देने की प्रेरित किया जिसमें कि जनरल जेनरल गोरखोव क संस्कार न था था। इसके साथ ही इस नाटक में देश के विजय में उन आरम्भ-विफलता की भी

प्रकट किया जिससे कि वह सामयिक असफलताओं के बावजूद युद्ध का संघास्य कर रहा था। इस नाटक में बुटि स्वीकार और आत्म-सक्ति दोनों का प्रदर्शन किया गया है। कनिचूक के इस नाटक का महत्त्व इस बात में है कि इसमें साहित्य के लकारात्मक मायक के शिवन का उदाहरण प्रस्तुत किया गया है। साहित्य का एक छन्द्य जीवन में अद्यापि अविजित नृटियों का प्रदर्शन तथा शौनों की बुराईयों की आलोचना भी है। 'मीर्चा' नाटक इसी लक्ष्य जीवन के विकास में बाधा डालने वाली सभी नृटियों की प्रति युद्ध करता है।

### आक्रमण

लीमनोव ने सामान्य सैनिकों का देश प्रेम प्रदर्शित किया। कनिचूक ने उनके समापतियों का और लिमोनोव ने देश प्रेम की शक्ति का और यह दिखाया कि देश-प्रेम किस प्रकार व्यक्ति को अपनी तुच्छ भावनाओं स्वार्थपरता तथा अन्य व्यक्तियों से अपनी शिष्टता की भावना पर विजय प्राप्त करने में सहायता देता है। लिमोनोव के नाटक का मायक क्योदोर ऐसे समय अपने घर में बापस मौटता है जब कि जर्मन उसमें प्रवेश करने वाले हैं। वह न उनके साथ सहमत है जो कि घर छोड़ कर जाना चाहते हैं और न उनके साथ जो छापेमार रूप में जर्मनों से लड़ना चाहते हैं। वह अभी-अभी कई वर्ष बेल में बिठा कर छोटा है। वह स्वयं लोगों से अलग रहा है। इसलिए लीम उसका ऐसे महत्त्वपूर्ण क्षण में विश्वास नहीं कर पाते। एकाकी, अन्दर ही अन्दर उसमें बड़ा मानसिक तथ्य होता है।

लिमोनोव यह प्रदर्शित करता है कि किस प्रकार क्योदोर में देश शक्ति का माय पुष्ट होता है और बाधाओं के होते हुए भी अपमान शोक और अपने अर्थ पर विजय प्राप्त करता है। क्योदोर न अच्छी भावनाओं का पुनर्जन्म होता है। वह इस युद्ध में जान लेता है और वेस्ताओं या कुक्रिया के आधमी को मार डालता है। जर्मन कुक्रिया को पोलो में डाल कर वह अपने को पाटिडन या छापेमारी का कर्मांडर बताता है। इस प्रकार वह अतन्वी कर्मांडर की भवा लेता है और नीर की तरह मरता है।



इस नाटक का मुख्य भाव यह है कि बेघात का भाव सभी रुसियों का एक भाव म पिरो देता है। उनकी तुच्छ स्वार्थ भावनाओं को नष्ट कर देता है। और उन्हें बेघात के युद्ध में अपना बलिदान योद्धा बना देता है। इस नाटक में सोवियत सेना की अपराधमय तथा धनु की तुच्छता में उसकी कहीं अधिक नैतिक स्पष्टता की भावना को व्याप्य से समन्वित सामाजिक मनोबैज्ञानिक नाटक के रूप में अभिव्यक्ति मिली।

रूसी जनता' आक्रमण' और 'मार्चा' का समस्त युद्धकालीन नाट्य साहित्य पर बड़ा व्यापक प्रभाव पड़ा। सीमोनोव कनिचूक तथा सिमोनोव के नाटक स्तालिन पुरस्कार द्वारा पुरस्कृत हुए।

युद्ध के अन्तिम वर्षों में एसी नाट्य कृतियाँ सामने आईं जिनमें विजय की धार बड़ी हुई सोवियत जनता के क्रासिरम के विरुद्ध साहसपूर्ण कृत्यों को अमर बनाने का प्रयत्न कथित होता है। बिबनेन्की का नाटक सेमिनग्राद की बीबासों के पास सेमिनग्राद की रक्षा य संबंधित नाटक है। चेपूरिन का नाटक 'स्तालिनग्राद वाले' स्तालिनग्राद की रक्षा के साहसपूर्ण कृत्यों का चित्रण करता है। छेबर्तीपास के माबिको का साहसपूर्ण चित्र लबरेनेव के नाटक 'काल सागर का गीत' में सुरक्षित है। इन नाटकों के रचयिताओं ने इतिहास उपलब्ध का घटनाओं की विद्याकृता और उनका ऐतिहासिक महत्त्व को प्रस्तुत किया है। कान के 'जहाजी बड़ा का अक्रमण नाटक में सोवियत नौसेना के आदर्श अफसर का चित्र है।

इस प्रकार युद्धकालीन नाटकों ने मनु २०-३० के नाटका की परंपरा का कार्य बढ़ाते हुए उस नवीन ऐतिहासिक विषय-वस्तु प्रधान किया और इस परंपरा को समृद्ध बनाते हुए अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

### ऐतिहासिक उपन्यास

युद्ध के वर्षों में ऐतिहासिक कथावस्तु का सोवियत साहित्य के बीच महत्त्वपूर्ण उत्थान हुआ। जनता अपने उन महान् पूर्वजों का असेसा ग्रनेन्की विमिनीवास्तव्य अन्वसाम्प्र शुबोरोव मिगाईन् बुनुबोव आदि का बराबर स्मरण करनी रही जो कि रूस के सम्मान और उसकी

स्वाधीनता के लिए लड़े। सुवोरोव कुतूबोव उपाकोव गम्भीरमोव मादि के बिना सैनिका को युद्ध में बराबर प्रेरणा और स्फूर्ति देते रहे।

युद्धकालीन ऐतिहासिक कृतियाँ की कथाबस्तु मुख्यतया उन युगों से संबंधित है जब कि रूसी राष्ट्र की बृद्धता और आतीम स्वतन्त्रता के लिए प्रबल प्रयत्न हुए। इवान भयंकर के युग में बहुते से सैनिकों का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया क्योंकि यह रूसी राष्ट्र के केन्द्रीकरण के इतिहास का महत्त्वपूर्ण समय माना जाता है।

युद्ध के वर्षों में इवान भयंकर से संबंधित कई कृतियाँ सामन आईं— अलेक्सेई टोल्स्तोय के नाटक 'सस्वीस्की तथा सलखयेव के नाटक 'लिबोम्स्कीय युद्ध और महान् शासक' और कस्तिन्वोव का उपन्यास 'इवान भयंकर'। कस्तिन्वोव के उपन्यास 'इवान भयंकर में इवान के शासन संबंधी कार्यों को इस मुख्य बिन्दु से प्रेरित किया गया है कि इवान इस की एकता और राष्ट्र का केन्द्रीकरण चाहता है और इस की अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति मजबूत बनाना चाहता है। सेलुक सासहर्षी मठाजी के रूसी समाज तथा जनता के जीवन का बिना प्रस्तुत कर रहा है जिसमें सभी स्तर और सभी वर्ग बयार, सौभाग्यर किशान आदि बिभ्रित किये गये हैं। आलोचकों का कहना है कि सेलुक ने इसमें इवान की वैदेशिक नीति पर अधिक ध्यान दिया है और उनकी गृहनीति पर, सोलहवीं शती के इस के सामाजिक संबंधों और जन-जीवन पर कम। उनकी पृष्टि में यह इस उपन्यास की बृद्धि है।

जिम्बोव का नाटक 'सेनानायक' और गोमुबब की कथा 'ब्रह्मविज्रान' इतिहास के दूसरे युग से संबंधित है। इनमें सन् १८१२ में नैपोलियन के बिकरुत जमता का देशप्रेम नैपोलियन की सेना का नाश तथा पाटिजना का छापामार युद्ध दिनाया गया है। गोमुबब की इस कथा की रूसी यह मानी जाती है कि 'ब्रह्मविज्रान' के बिनायक में सेलुक ने सबसे उनके सेनानायक के रूप को उभारा है। फलत उक्त जीवन और चरित्र के अन्य पक्ष धूमिल पड़ गये और उसका बिना बरुती लच्छे से निखर न सका।

स्तेपानोव के उपन्यास 'पोर्टे आर्चर' का मुख्य विषय है जनता का साहस युद्ध कला की समस्या और युद्ध का मताभिज्ञान। यह उपन्यास बड़ा लोकप्रिय हुआ। इसने ( १९०४-१९०५ ) के रूसी-जापानी युद्ध में इस किले की रक्षा तथा उसके पतन का इतिहास चित्रित है। फिर भी इसमें १९०५ की क्रान्ति के निबन्ध पद्य की जो सामान्य स्थिति थी और देश का वैसे वातावरण या उससे युद्ध की घटनाओं का जो राजनीतिक तथा सामाजिक सबब था उसका पूरा-पूरा उद्घाटन नहीं हो सका।

सौविध्यत आलोचकों की दृष्टि से युद्धकालीन कई ऐतिहासिक कथा-वस्तु वाली साहित्यिक कृतियों में देश के इतिहास की महत्वपूर्ण घटनाओं के विषय में कुछ सैद्धान्तिक राजनीतिक पंक्तियाँ रखी थीं। कतिपय कृतियों जैसे सर्गेय के बिसाठी' यरबुस्तोवा के 'जहाज समुद्र में जा रहे हैं' में जतीत का मार्चोकरण हुआ है। प्रभु बर्ग ने कई लोगों को बड़ा मार्चोकरण चित्रित किया गया है और रूसीराष्ट्र के बर्ग प्रथम रूप को भुला दिया गया है। इसी प्रकार प्रथम महायुद्ध से संबंधित कुछ कृतियों में रूसी सैनिक का साहस तो चित्रित किया गया है किन्तु यह नहीं बताया गया है कि कम्युनिस्ट पार्टी इस युद्ध में जार की पराजय चाहती थी और जारशाही को नष्ट करने के लिए इस युद्ध को मुह-युद्ध में परिवर्तित करना चाहती थी। उनके मतानुसार ऐतिहासिक घटनाओं के बुर्जुआ सिक्कर से विकृतीकरण ने इन कृतियों के कलात्मक स्तर को नीचा कर दिया।

## १० असेक्सान्द्र अलेक्सेन्द्रेविच फ्रदेयेव

[ १९०१- ]

असेक्सान्द्रविच फ्रदेयेव उन मोबियत सङ्गठन में हैं जो अपने कार्य-कलाप के आरम्भ से ही साक्षियत तथा क निमान में वाग दते रहे हैं और बिनकी सवना को इस निर्माण के बीच-अनुभव में सामग्री सिद्धी रही है। फ्रदेयेव का जन्म २४ दिसम्बर १९०१ में हुआ था। सन् १९१८ में वह बोल्शेविक पार्टी में दाखिल हुआ गया। गृहयुद्ध के वर्षों में उसने मोबियत पानुजों के विरुद्ध कृत्रिम युद्ध में भाग लिया। १९१९-१९२१ में वह 'पार्टिजन बना और बाह में काक मना में बहु दुष्करता तथा आपातियों के विरुद्ध लड़ा। वह एक विद्रोह के बचाने में बुरी तरह बख्सी भी हुआ। गृहयुद्ध के बाद वह पार्टी के काम में लग गया।

उसकी शर्मता के मूल में गृहयुद्ध के संस्कार हैं। १९२१ में उसने किराना शुरू किया। १९२३ में उसने अपनी कथा 'बाइ' समाप्त की। बार के विरुद्ध-कथा की कथा-वस्तु गृहयुद्ध से संबंधित है। १९२७ के उपन्यास के प्रकाशन से उसकी ख्याति बहुत बढ़ी। उनमें 'उप' (स्त्री आभिजात्य के क्षेत्र के समांगीकरण) में बहुत काम किया और बार में साक्षियत क्षेत्र में काम मधेरी हो गया। उसमें से आखिरी तथा 'युवक रक्षक उपन्यासों में उसका नाम और भी बढ़ा। वह खनिज के मार्बल द्वारा पुरस्कार हुआ और उच्च साक्षियत का टिप्पणी चुना गया। वह कथक संघ का संचालक है और कम्युनिस्ट पार्टी की सेंट्रल कमेटी के सदस्य के रूप में पार्टी का काम भी करता है।

नारा

फ्रदेयेव का उपन्यास 'नारा' साक्षियत साहित्य की महत्त्वपूर्ण इति मानी जाती है जो बहु-मुख से संबंधित है। इस उपन्यास के लिखन में उसने बड़ी महत्त की। उसके कथनानुसार हममें ऐसे अन्वेष भी हैं

षा बीस बार लिखे गये और चार पाँच बार से कम छिपा गया उसमें कोई अप्प्यास नहीं है। युद्ध के बीच मानवीय चरित्र का विकास और परिवर्तन तथा आन्तिकारी युद्ध का चित्रण इस उपन्यास की विशेषता है। बहुयुद्ध के बीच मनुष्य की परीक्षा होती है उसका चूनाब होता है।

उपन्यास के केन्द्र में बोस्पासिज सचिसोन है जिसमें आन्तिक के बीच पार्टी का रूप उद्घटित होता है। आन्तिक के बीच बहु सगठन की अपूर्व समता प्रदर्शित करता है। सचिसोन का चित्र सोवियत साहित्य के अत्यन्त सफल बोस्पासिज के चित्रों में से एक है। सचिक के रूप में उन बुद्धिजीवियों का भाग्य प्रदर्शित किया गया है जो बज्रुमा व्यक्तिवाद के विचार हैं और जगता से अलंबद्ध होने के कारण प्राण्य हैं। बहु केवल अपन लिए है इसलिये बहु अपने लिए सच्चे जीवन में महत्त्वपूर्ण स्थान नहीं प्राप्त कर पाता। बहु अकेला रह जाता है और परीक्षा के क्षण में इस टुकड़ी का पता चम् को द देता है।

रुग्ना एक छोटे से पाटिजन (छापामार) समुदाय के माध्यम से उन मूलभूत शक्तियों को प्रदर्शित करता है जिन्होंने बहुयुद्ध में भाग लिया। बोस्पासिजों का संघटनकारी कार्य आन्तिकारी आंदोलन में मजदूरों या शक्तिों का महत्त्व बुद्धिजीवियों और किसानों के भिन्न भिन्न स्तरों सामाजिक जीवन के विस्तार की गहराई—यह कठोरता की मुख्य विशेषता है जो उसकी कृतियों को महत्त्व प्रदान करती है।

गोर्की के उपन्यास 'मा' से नाथ' उपन्यास का मुख्य भाग बहुत कुछ मिलता जुलता है जैसे 'मा' उपन्यास में बाहुम रूप से मायक की पराजय है फिर भी उपन्यास जनता की भविष्य की विजय के विश्वास से पुन है उसी प्रकार 'नाथ' उपन्यास में यद्यपि मेरिगोन की टुकड़ी नष्ट हो गयी और उसमें केवल १९ आदमी बच है फिर भी यह स्पष्ट है कि आन्तिक नष्ट नहीं हुई उनका पीछ बसता है। सचिसोन के मायिया का बीगता पुन अलग यह बना रहा है कि जनता अपन में फिर से कार्य नहीं गति का अनुभव करेगी और फिर से युद्ध उड़नी ?

उपन्यास की रचना पाना के चित्रण का सिद्धांत जीवन में जो

कुछ है कबल वही नहीं बरन् वह जो कि उसमें प्रीति का रूपा है उनके विषय की क्षमता यथायथा का अन्विकारी विकार क बीच विषय यह सब बताव है कि इन उपस्थान में समाजवादी समाजवाद का पूरा-पूरा समावेश हुआ है। कुरैयेव उपस्थान के पात्रों के विभिन्न पक्षा को प्रदर्शित करता है, उनकी अनुभूतियों की महत्तायों में पाठकों का ज्ञापना है उनके चारों ओर के वातावरण को बड़े विस्तार में विवृत करता है विषय कि उनमें व्यक्तिगत का बड़ा ठोस और स्पष्ट चित्र उभरता है।

उपस्थान के कथन में लक्षितान है उनके माध्यम में बोधविक का नेता का तथा संगठनकर्ता का चित्र प्रस्तुत किया गया है। फयदेव बड़े कीर्णक से यह प्रदर्शित करता है कि किस प्रकार अपनी मानवीय दुर्बलताओं पर विचार प्राप्त कर अपनी व्यक्तिगत इच्छाओं का व्यापक सामाजिक लक्ष्य में अभिमत कर, वह अपनी भारी गति कागि की महा में लगा देता है और उन साग का संगठन करता है जो उसका विरुद्ध कर मीन के मूह में भी जान को तैयार है। मानवता के आत्म के जो स्वप्न वह देखता है वह उस बड़िम क्षणों में लीन गति बना है और जीवन में उसका विरुद्ध बना उठता है। वह संगठनकर्ता भी बहुत बड़ा है और अपनी दुर्बली में अनुमानन रखता है। अनुमानन संगठनकर्ताओं का वह विचार-स्वर में समझता है और आन्विकी जगत्वात्क मराजका के न्याय के हवाले कर देता है। सब जानते हैं कि वह कबल अपनी ही नहीं देता बरन् उनकी अपनी कार्यक्षमता भी होती है। इसी में सब उसका अनुमानन म करते हैं। बोधविक विचारों की आन्विकी गति से ही वह दुर्बली को अपने अनुमानन में रखता है।

मरीजका चोरी भी करता है और गणक भी पीता है फिर भी वह देगसका क लिए तय्यार है और वह इन नाम में देण के लिए बिना हिचकिचाहट के अपनी बक्ति दे देता है।

इन उपस्थान के मूल में समाजवाद का विचार है। लेखक मुहुमुह की बटनबाजों का समाजवाद की दृष्टि में दरता है। वह समाजवाद के इन मुह को देगसक्ति के जल-आन्विकी के रूप में विवृत करता है।

इसका संघासन बोलशेविक पार्टी कर रही है जिसका प्रतिनिधि सेक्सोन है और जो स्वयं पार्टी नेतृत्व से निर्देशन प्राप्त करता है। इस प्रकार समाजवाद का विचार सारे उपन्यास का संगठन करता है। वह उस उच्च आवर्ष के रूप में प्रकट होता है जो लोगों को उदात्त बनाता है। उनको नैतिक उच्चता प्रदान करता है और उनको मानव की स्वतन्त्रता तथा दस सेवा के भाव की शक्ति स भर देता है। जितना ही मनुष्य इन आवर्ष के निकट और इसमें भिन्न है उतना ही ऊँचा और महत्वपूर्ण उसका नैतिक रूप होता है और इसमें उस्ता जितना ही मनुष्य इसमें दूर जाता है वह अपने नैतिक गुणों का खो देता है। सर्वमान इस आवर्ष का मूर्ति मान रूप है और अधिक इनके विपरीत।

उपन्यास इन प्रकार समाजवादी पर्यायवाद का उदाहरण प्रस्तुत करता है। जनतात्मकता इसकी विशेषता है। समाजवादी भाषण विविध सपन नायक का विशाल आस्तिकारी बिकाम के बीच जीवन का विषम जनतात्मकता—इन सबका इस उपन्यास में बड़ा गहरा और व्यापक चित्रण हुआ है।

‘उद्वेग से झौलियरी’

यह उपन्यास बहुत बड़ा है। इसका हीरो नाम बहुत महत्वपूर्ण है और नाम से मिलता-जुलता है। इसमें भी माइबीरिया के पार्टीजन (छापामारा) का युद्ध है और बोलशेविका का विद्रोह है। इसकी नयी घटनाओं में स एव यह है कि दसत पादों के हाथ में धर्मिक इमात साएँजी (जिसको प्रारब्ध कहते हैं) पड जाता है। उसे बहुत सताया जाता है जिससे कि वह अपने गुणिया सापिया का पता दे दे। वह सब प्रकार की याचना सहता है और मर जाता है लेकिन मेर नहीं देता।

इस उपन्यास का सचप्रथम उद्देश्य गमनालीन समाज का पूँजीवादी व्यवस्था से निरन्तर प्रोत्साहित्वात् काम्ति के माध्यम से समाजवाद में विक्रम प्रदर्शन करना है। गृहयुद्ध के युग का वर्णन करते हुए सैवक प्रायः पूँजीवादी सत्कार का विषय करता है और यह सूचित करता है कि यद्यपि यह पूँजीवादी व्यवस्था अब अतीत की बस्तु हो गयी, फिर भी इसके

समबंध धर्मा अधिष्ठ हैं और कान्ति क विच्छेद छड़ रह है । इनका यह युद्ध बेवक उनका पामलपन है । सामाजिक एतिहासिक घटनाओं क बेतन संवाहन क विचार की इन उपन्यास में बड़ी स्पष्ट अधिभ्यक्ति हुई है ।

द्वितीय युद्ध क पहलू के छद्रेयेव के उपन्यास में साहित्य साहित्य के विकास में बड़ी भाग दिया । यह युद्ध को विषय-वस्तु क चित्रण म उसके उपन्यासों में नवीनता का समावेश किया ।

### अधान गाई या युद्धक प्रहरी

द्वितीय महायुद्ध की घटनाओं क आधार पर छद्रेयेव ने अधान गाई या युद्धक प्रहरी' उपन्यास की रचना की । इन उपन्यास म साहित्य अन्तः का संघर्ष चित्रण हुआ और युद्ध क दिना म प्रकट होत वाली उसकी महत्त्वपूर्ण विषयताओं को बड़ी स्पष्टता स प्रस्तुत किया गया ।

### उपन्यास का घटनात्मक आधार

यह उपन्यास युद्ध की प्रथम घटनाओं पर आधारित है । १० जुलाई १९४२ में बर्लिन न इनबास स एक छहर 'स्लान्नादान' पर अधिकार कर दिया । अन्तः पर उनका अध्याचार शुरू हुआ । छहर से आ महयुद्ध बाहर न या छह से उनके लिए यह अध्याचार महान-नीमा स बाहर हो गया । सोयह वर्ष के अनेक शराबास में नितम्बर में 'युद्धक प्रहरी' के रूप में उनका लुक्रिया संगठन किया । अक्टूबर तक उनमें १०३ युद्धक आ मये और अक्टूबर इन लुक्रिया संगठन का बनिमार बना । युद्धक प्रहरी संगठन न चार पहलूने काम किया । अथवा वैदिका तथा पुस्तक का नष्ट किया और आस मना के आने के समय विशाह करन क लिए मसब इकट्ठ किये । किन्तु शान्त येना द्वारा नगर उधार के पहुँचे ही जनवरी में अमनों को इन संगठन का पता लग गया और इन संगठन के १०३ व्यक्तिना म स कुल धाई बच । १९ मार्च १ ४३ में अनेक के गब का पता लगा जिस पर छह अध्याचार क विच्छेद प ।

लेखक ने इन युद्धक प्रहरी संगठन के बारे कार्य-वस्तुओं को, बिना एक को भी छोटे, अधिष्ठ करने का तथा युद्धक प्रहरीना के चरित्रों को



सत्यता के साथ उद्घाटित करने का मह्य अपने धानने रखा । इस उद्देश्य से लेखक ने घटनास्थल पर जाकर खुफिया संगठन के जीवन की बहु मूल्य सामग्री एकत्रित की । सर्वप्रथम कागजात से परिचित हुआ और उसके के सबधियों तथा निकटस्थों से पूछताछ की । 'मुक्क प्रहरी' उपन्यास इत्सी का परिणाम है । यथावत् अन्त के प्रयत्न के साथ साथ इसमें कल्पना का भी योग है । स्थापन सफाजोब तथा अन्त-तौली अरखोवक के बिना कल्पना प्रसूत है । फिर भी उपन्यास मूल रूप में यथावत् घटनाओं पर आधित है ।

### उपन्यास का महत्त्व

इस उपन्यास का महत्त्व केवल इस बात में नहीं है कि इसमें युद्ध को एक महत्त्वपूर्ण घटना की स्मृति आने की पीढ़ी के लिए बह पल से सुरक्षित है बल्कि इस ऐतिहासिक घटना के माध्यम में नायका सोवियत युग के लक्ष्यकों की सामाज्य विनिष्ठाएँ प्रदर्शित की गयी हैं जो सोवियत समाज में और लक्ष्यकों में पुष्ट हुई जिनका पोषण सोवियत साहित्य कर रहा है । प्रदेयक का योगदान हम जान म है कि मुक्क बर्न इन पात्रों के रूपों में स्वदेश सेवा का आदर्श देखा है और इसके उदाहरणों पर अपने को आत्मना आहता है और इस बात में कि उसने उपन्यास की मूल-मूल घटनाओं को युग के राजनीतिक सामाजिक तथा दार्शनिक प्रश्नों से सम्बन्धित कर दिया । उपन्यास की यह घटना द्वितीय युद्ध की केवल विनिष्ठा घटना के रूप में नहीं चित्रित है बल्कि उसका मह्य व्यापक 'जातीय या राष्ट्रीय विचार से जाड़ दिया गया है और अन्तोनोवम के लक्ष्यकों की विनिष्ठाएँ भी सोवियत पीढ़ी की विनिष्ठाभा के रूप में प्रदर्शित की गई हैं ।

उपन्यास में सोवियत समाज की पिता-पुत्र की वा पीढ़िया चित्रित है—कि लोग जिन्होंने लक्ष्यकों में सङ्घटन देण के लिए स्वतन्त्रता प्राप्त की और वे जिनका मात्र विदेशी आक्रमण के विना म अपनी परीक्षा देनी है और यह प्रमाणित करना है कि वे बेगमस्त पिता की देणभन संतान हैं ।

## पुरानी पीढ़ी

पुरानी पीढ़ी कम्युनिस्टों के रूप में चिह्नित की गयी है। फिलिप पदाविष स्मृतिकोव इवान पयोबरोविच प्रसॅको निकोलाइ पत्रो-विचबराकोव पकीना मिमारगव्ना सम्मोवा तथा अन्य यह लोग बड़े अनुभव हैं और धनु के विरुद्ध पर्यन्त रहते हैं। स्मृतिकोव तथा बराकोव उनका मेव केने के लिए जमनों के साथ काम करते हैं और अपने मित्रों के संदेह तथा भ्रमा के साथ बतते हैं। स्मृतिकोव के संभामन में काम्पोवान के मवपुवक धनु के विरुद्ध सुफिया काम करते हैं।

उदेवेव ने स्मृतिकोव का चित्रण बड़े विस्तार से किया है और उसकी बुद्धता तथा उसके संकोचशील स्वभाव को प्रबोधित किया है। उसके रूप में पार्टी के संभामक का चित्र प्रस्तुत किया गया है जो सुफिया रूप में धनु के पीछे काम करने के लिए बड़ा तक जाता है और बनता ही धनु के विरुद्ध मुठ करने के लिए समकित कर केता है।

वह उपन्यास बतकाता है कि सब कुछ बड़ापुरी या बसियाम में ही नहीं है बल्कि इन आदमों के चेतन ज्ञान में है जिनके लिए वह धनु से कड़ खा है और जो उसे बतमा केना ठग केते हैं और उसने इतना साहस मर केते हैं। साथ ही यह साहस केवल व्यक्ति विधिष्ट का नहीं है बल्कि सामूहिक साहस है बनता का साहस है। सोवियत व्यक्ति की खात्मिक उच्चता इस बतमा पर आधारित है कि उनका बनता के साथ अभिनिष्ठ संबंध है। वह इन बात का अनुभव करता है कि बनता उसने साथ है और यही चेतना उसे अप्रतिम शक्ति देती है। इसी शक्ति से पुष्ट कोषविकों का चित्रण इस उपन्यास में हुआ है और वे बनता के साथ उसी ऐक्य को घिया सभी पीढ़ी को दे रहे हैं।

## नयी पीढ़ी

माविषय लोक दृष्टि की यह आधारभूत विषयता जो सोवियत धासन में जनयी और पार्टी ने चिसकी गिहा ही नयी पीढ़ी में पूरी-पूरी विद्यमान है। इस नयी पीढ़ी के लिए अपने व्यक्तिगत भाग्य को बनता तथा देना

के धाम्य से अलग करना असंभव है। वह अपने को देश का अविभाज्य अंग समझती है। इसी से यह पीढ़ी दात्रु के बिना अपने काम आप शुरू कर देती है। मुबक प्रहरी का एक मायक अनातोली पदाव कहता है कि पितृ भूमि संकट में है—एंग सफ्ट म है जिस न दखना जिसके बारे में न सोचना असंभव है—शीरन काम करना चाहिए। दूसरी नायिका ऊर्या प्रोमोवा कहती है मैं समझ गया। भरे लिए दूसरा रास्ता नहीं। या मैं इस प्रकार जी सकती हूँ या मैं बिल्कुल नहीं जी सकती हूँ। मैं मैं के सामने प्रतिज्ञा करती हूँ कि आखिरी क्षण तक मैं इस रास्ते से न हटूंगी। और वह जर्मना से मुठ करता है।

उपन्यास में कास्नाशन के मरपुवको के प्रतिनिधिया का जो चित्रण हुआ है उसमें उनकी अपनी विशेषता है और उनका अपना व्यक्तित्व है फिर भी उद्देश्य और अनुभूति की एकता उनको एक बना देती है। नयी तथा पुरानी दोनों पीढ़ियाँ अपने को जनता का प्रतिनिधि समझती हैं और अपने उत्तरदायित्व का अनुभव करती हैं। उनके विचार और कार्य इसी से निर्धारित होत हैं। उपन्यास में इन दोनों पीढ़ियों का बड़ा रोचक चित्रण हुआ है।

उपन्यास में मित्रता बफादारी और निर्मल प्रेम का भी चित्रण हुआ है। अपने मित्र ब्रोद्या की सहायता करने के लिए बाग्या जेमनु को अपनी श्रियतमा के साथ अहर छोड़कर चले जाने का प्रस्ताव नहीं स्वीकार करता और तास्या अरमोव ब्रोद्या के साथ रहता है जिससे कि जर्मनाके आन के समय बीमार ब्रोद्या अकेल न रह जाय। बफादारों की अग्रणी मित्रता बलवान हूबय म हूँ मित्रता करती और यह 'मुबक प्रहरी' जर्मन पत्रिका के बीच अपनी इसी आरिष्ट शक्ति का प्रदर्शन करते हैं। जब उन्हें फोमी के लिए से आया जाता है तो वे गीत गाते हैं।

मित्रता के साथ-साथ मुबक-युवतिया के बीच विद्यमान निर्मल प्रेम का भी चित्रण इन उपन्यास में हुआ है। अन्क और नीना मिरोवा और बाग्या बाग्या और ब्रोद्या तथा अग्र्य मव प्रेम की उच्च भावना से संबंधित

है जो कि उनको सामाजिक कर्तव्य से विमुक्त नहीं करती बल्कि उसके पालन करने के लिए और भी दृढ़ता तथा बलिदान की शक्ति देती है। जब बाग्या बलाबा से कहता है कि इस क्षुब्धिया संगठन में काम करने में मौत का सतता है तो वह उत्तर देती है कि मैं तुम्हारे साथ मरने को तैयार हूँ। और सबकुछ में अंतिम क्षण में बलाबा जान में बाग्या का साथ देती है। परिवार का जो पित्र इस उपन्यास में प्रस्तुत किया गया है उसमें बड़े और बच्चों के बीच भावना की एकता है। इसी से संकट के समय सारा परिवार एक मन से काम कर पाता है। कई महीने जो 'भुबक प्रहरीयो' का संयोजन बिना कोई मुकसान उठाए काम कर सका और शत्रुओं को हानि पहुँचा सका उसका मुख्य कारण यह है कि युवकों ने बड़ों के अनुशासन में काम किया और संकट के क्षण में माता-पिता ने बुपचाप अपनी संतान सेना को सौंप ही।

बच्चों के जीवन में स्कूल का जा योगदान है उस भी इस उपन्यास में प्रदर्शित किया गया है। 'भुबक प्रहरी' उपन्यास स्तान्निन-पुरस्कार से पुरस्कृत हुआ। सोवियत साहित्य के युद्ध से संबंधित उपन्यासों में इसका बड़ा ऊँचा स्थान है।

## ११ युद्धोत्तर निर्माण के समय का साहित्य

[ १९४५- ]

२ सितम्बर १९४५ को जापान के आत्म-समर्पण पर स्तालिन ने कहा था कि हमारी साक्षियता जनता ने विजय के लिए कोई भी मेहनत उठा नहीं रखी। हमने बड़े कठिन वर्ष दिए। अब हममें से प्रत्येक कह सकता है कि हम विजयी हुए।

और सचमुच में सोवियत जनता ने विजय के लिए सब कुछ होम कर दिया। किन्तु बलिदानों के बावजूद यह विजय मिली इसका अंशजा पूरी से लमाया जा सकता है कि युद्ध में सत्तर लाख व्यक्ति मर चुके थे। उद्योग-धंधे कलमोंक स्कूल पुस्तकालय आदि जो मर चुके थे उनकी चर्चा ही क्या। जघन अधिकार में आ गए हैं उनकी असीम हानि हुई। उसे १७९ करोड़ रुबल में आँका जाता है जो कि उस क्षेत्र की वायदाद की दो तिहाई कीमत थी।

एसी हानि संसार के और किसी भी देश को नहीं उठानी पड़ी। फिर भी यह सोवियत जनता के निर्माणकारी परिश्रम की शक्ति का उदाहरण है कि १९४८ में देश का अपना उत्पादन युद्ध के पहले के स्तर पर पहुँच गया। मग १९५२ में औद्योगिक उत्पादन युद्ध के पूर्व के वर्षों की तुलना में दुगुना हुआ। कम्युनिज्म के निर्माण का जोर देश की मयी सफलताएँ और सशक्तियाँ दिखाने के लिए रखा है। पाँच वर्षों (१९४९-५०) में १५०० नव नविक व्यक्तियों को विज्ञान तथा कला के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण कार्य के लिए स्तालिन-पुरस्कार मिला।

कम्युनिज्म की और अधिक गंभीर तथा देश के निर्माण के कार्य में साक्षियता साहित्य के मामले में लक्ष्य प्रस्तुत किया। देश के जीवन के इस महत्त्वपूर्ण क्षण में—जब कि जीवन की मयी समस्याएँ साहित्य के सामने नये प्रश्न प्रस्तुत कर रही थीं—गार्दी सभा के समान फिर सामने आई और

## सुझौतर निर्माण के समय का साहित्य

उमने बताया कि साहित्य क्षेत्रका जो फिन नये रास्ता पर चलना चाहिए। जनता की चेतना के विकास में साहित्य के योगदान के महत्त्व का पार्टी बहुत अच्छी तरह समझती है। इसी से वह साहित्य की गतिविधि का आक्रामक तथा निर्रोगन बड़े ध्यान से करती है। इस संबंध में १९४६ में पार्टी के तीन ऐतिहासिक महत्त्व क मसबिदे और निररथ्य प्रकाशित हुए। पार्टी के यह निररथ्य साहित्य के संबंध में साटक के संबंध में और मिनेमा के संबंध में हैं। १९४८ में मापेरा के संबंध में भी पार्टी का निररथ्य प्रकाशित हुआ। मापा विज्ञान के प्रश्नों के संबंध में स्वाकिन का जो काम है (मार्क्सवाद और मापा विज्ञान के प्रश्न) उमने कहा तथा विज्ञान क विकास क नये रास्ते खोले। इसने मूलमूल विचारा न सोवियत रजकों का कलात्मक कौशल तथा मापागत स्पष्टता तथा समृद्धि के लिए उत्साहित किया और 'रूपवाद तथा प्रकृतिवाद क विरुद्ध लड़ने में मदद की। साहित्य तथा कला के संबंध में पार्टी का जो निररथ्य पा उसन इस बात पर जोर दिया कि क्षेत्रका का निर्रोगन उस मूलबस्तु में होना चाहिए जो साहित्यत समाज का मूल आधार है—सोवियत समाज यह नहीं मह सकता कि उमने सबपुबकों की शिक्षा सोवियत राजनीति से उदासीन रख कर ही और के इसके मतवाद या लिबराली की चिन्ता न करे। 'इसी से मतवाद हीनता या राजनीतिहीनता या 'कला कला के लिए की शिक्षा सोवियत साहित्य के लिए अप्राप्त है और सोवियत जनता तथा सामन के हितों के लिए हानिकारक है। डूमर टकरा में कम्युनिस्ट पार्टी की नीति समकता के लिए युद्ध करना और फार्मलिज्म तथा फार्मोपालिज्मिज्म क विरोध करना था। साटका और रयमंच क बारे में पार्टी का जो निररथ्य हुआ उसमें इसकी और भी ब्याख्या हुई। उनमें कहा गया कि २ 'हमारे साटककारों और रयमंच के कार्यकर्ताका का यह काम है कि वे साहित्यत समाज और साहित्यत व्यक्ति के विषय में स्पष्ट मूल्यदान तथा कलात्मक

१ कलकत्ता महासभ्या फ्लिपडपुग नियामकेयक पृष्ठ १६०  
 २ कलकत्ता महासभ्या फ्लिपडपुग नियामकेयक पृष्ठ १६१।

इतिमों कं  
 तथा उनसे  
 प्रतिबिम्बा  
 में हर प्रक  
 प्रकट हुआ  
 उगल उगल  
 लिए साह  
 मं बिहवा  
 पर बिजय  
 रगमंथ कं  
 व्यक्तिया  
 व्यक्त य

माटा  
 था । मुझे  
 में रंमंथ  
 मिनरिया  
 को पपी उ  
 को) कि  
 किया था ।

पार्टी  
 में सोबिय  
 हम प्रकार  
 रूप रंगका  
 की बिचार  
 ममाने में

### मुद्रोत्तर निर्माण के समय का साहित्य

स्तर को ऊपर उठाया।<sup>१</sup> साक्षियत कल्प कम्युनिस्ट पार्टी के निरूपण द्वारा इस प्रवृत्तियोंके विरुद्ध पुंड करन के लिए समूह और मुनसिजन की ययी। अज्ञानक न कहा कि हमारी जनता की रुचि और भाग का स्तर बढ़ा देना उठ गया है—साक्षियत जनता साक्षियत जनता म जनता विपारात्मक पक्षि की मानसिक भाजन की भागा बन रही है या महान् निर्माण की यात्रायात्रा को पूर्ण करने म मदद द।

साक्षियत साक्षियत कम्युनिस्ट मही कर मी रहा है। सामाजिक रूप म उमका प्रमान लक्ष्य कम्युनिज्म के निर्माण म हर प्रकार म पाय देना है। मुद्रोत्तर पाँच वर्षों न देग के समाजवाद म कम्युनिज्म की भार क्रमिक संरचना के लक्ष्य को धीरे धीरे बढ़ाया दिया। गहर और गंभ के बीच के भेद का निराकरण तथा सामाजिक तथा मानसिक परिपथ के बीच के भेद का निराकरण या कि अब देग के जीवन मे लयित हो रहा है अब साहित्य म भी प्रतिबिम्बित हो रहा है। यद्यपि नाम का साहित्य कम्युनिज्म के निर्माण का साहित्य है। यही उमकी प्रमान और मूसभूत विषय-बस्तु है।

इस निर्माणकारी कार्य के परिपथ और उतराहू की अतिरिक्त अत्रा-एव के 'मास्का म हूर निकोसाएवा के 'कमस बबाएम्की के 'मुतह्य तारे का माइन् पाबकेका के 'नगी' केनकीम्बदा के 'हमारे जीवन के दिन' प्रानिन के 'बात्री जैमे उपन्यासों म और स्वर्दाम्की के 'गहन पर मजान निदागोनाब के 'गोब मोक्षियत पर झडा जैमी कहिताओं में और गामिन यबकफिन आदि के मया में हुई है। समकालीन समस्याएँ लिथीत्रोब के 'रुमी जगम जैमी इतिया में प्रस्तुत हुई। यद्यपि इस उप-न्याम की घटनाओं में मुद्रोत्तरकाल का समावेश हुआ है।

कम्युनिज्म के निर्माण की विषय-बस्तु के माय-माप द्वितीय महायुद्ध की विषय-बस्तु भी मुख्य है। 'जनता द्वारा प्राप्त पुंड के विनाय अमूमक

१. कम्कया खरेलकीय लिपरापूरी विमोकेयक पृ० ११२



की व्याख्या । यह विषय-वस्तु स्वतंत्र नहीं बनने अन्य वस्तु-विषयों के साथ गुम्फित है । ज्वानोव ने कहा ' हम सोवियत नारी की विषय-वस्तु को जैसे लेनिनवाद की झड़की तथा वीर नारी नायिकाओं की विषय-वस्तु को जैसे विम्बूअन मुझकासीन महान कठिनाइयों को अपने कंधों पर झोसा और (अब) आर्थिक व्यवस्था के पुनर्निर्माण की कठिन समस्या के सुलझाने के लिए बड़े आतमत्याग से काम कर रही हैं ।

मुझ से संबंधित कृतियों में पसेचोव की 'असली मादमी की कहानी' बुबेद्रोव का 'सफ़र बिरोबा वा पेड़' इत्या एरेनबुर्ग का 'तूफ़ान' कटाएव का 'सोवियतों के शासन के लिए' कज़नेविच का 'तारा और ओदेर में यमंत' मुख्य हैं । इनमें न केवल मुझ की अलग-अलग घटनाओं का वर्चन हुआ है बरन फ्रांसिस्टो के विरुद्ध मुझ का संघाम्न करनेवासी और प्रस्ता देने वाली पार्टी के योगदान का तथा सोवियत सेना के युगोप के उद्धारकारी रूप का भी वर्चन हुआ है और यह प्रवर्धित किया गया है कि सोवियत संघ स्वतंत्रता और मित्रता के प्रपठिषील भावनों का संवाहक है ।

तीसरा मुख्य वस्तु-विषय पाश्चात्य बर्जुआ संस्कृति की आलोचना है । ज्वानोव ने बर्जुआ संस्कृति पर कटाकाट तथा आक्रमण करने के लिए सोवियत लेखकों का आह्वान किया क्योंकि इसका विरुद्ध प्रभाव अगली समाजवादी संस्कृति के विकास में बाधा डालता है ।

द्वारे संसार में शांति की स्थापना का विषय भी मुझोत्तर सोवियत साहित्य में विचार पा रहा है । सोवियत सेना इसका समर्थन कर रहे हैं । तीसरा सीमनोव एरेनबुर्ग कर्निबूक बमिसेम्क्या अगिल विरुध शांति समिति के सदस्य हैं । शांति के लिए संघर्ष का विषय कई लेखकों की रचना में अभिव्यक्ति पा रहा है । गुरकोव की संसार के लिए शांति सीमनोव का 'घात्र और मित्र' तथा 'रूसी प्रस्ता' एवरबोम्बकी की 'शांति की रक्षा में, तीसरा वी घाराएँ' मकीरको की 'नीचे समुद्र में पते' तथा अन्य ।

१ रूसी संवत्सकमा मित्रराजूरु ८० ई तिमाकयेव पृष्ठ १९३ ।

साक्षियत साहित्यकारों की कई इतियाँ ऐतिहासिक वस्तु-विषय से संबंधित हैं। इन इतियाँ की विषय-वस्तु कभी मजदूर आन्दोलन के इतिहास से संबंधित हैं। इनमें प्रोत्तिवारित क्रान्ति की तय्यारी और प्रोत्तना प्रथम कधी क्रान्ति प्रतिक्रिया के समय और तदीन क्रान्तिकारी बेस वस्तु वर की महान समाजवादी क्रान्ति और पृहपुष्ट का विषय हुआ है। फरिन के उग्यासी 'आरमिनक मानम्' और आभारण ग्रीष्म में क्रान्ति क वृत्त का समय और पृहपुष्ट के वयं बरिदत हुए हैं। एतदकाव की आरमकवात्मक इतियाँ 'बचपन की कथा' अस्पताल' क्रुममय में यह दिखाया गया है कि कयी विनाम सङ्का किम प्रकार विकसित हुआ और किम प्रकार उमका बरिदत बूढ़ हुआ तथा कयी गीवा व बडीत और बेहनवरुण कयी जनता के (उधीनधी वली क बल में उमके माग्य क) बारे में कहा गया है। सफ़बोवकी रचना 'बिनगाटियाँ बिरनम्की का बरिदत मरनीय' १\*१\* आरि इतियाँ इतिहास के विभिन्न मुगाम संबंधित इतियाँ हैं। एका क क्रान्तिकारी इतिहास का उद्घाटन साक्षियत मन्त्रों के लिए बड़ा बरिदत विषय रहा है।

मुद्रोत्तरकाव में साक्षियत साहित्य के विकास की वस्तु विषय-गत यही मुख्य दिशाएँ हैं और यही मुख्य समस्याएँ हैं जिन्हें कि पार्टी ने साहित्य क सामने प्रस्तुत किया।

इन विषयवस्तुओं का उद्घाटन ने साक्षियत साहित्य के मुख्य सहाय-युग के मुगामपत्र मासक क रूप में साक्षियत व्यक्ति का विषय—की वृत्ति से आग्रह न किया बरन उमे और भी व्यापकता के माय पूर्ण किया। साक्षियत व्यक्ति क बरन का ऐसा लक्ष्य भी पार्टी के निरक्षय द्वारा ही प्रस्तुत किया गया था।

यद्यपि दोष में उग्यासी और कहानियों क साव-साव निर्बंधों का भी बड़ा विरोध हुआ। अन्तानोव की प्रणीतारमक कहानियाँ बरिदत के प्राग्य जीवन की समस्याओं में संबंधित ऐत बरिदत-काव के निर्माण संबंधी परिचाय क रूप तथा ऐग्याकोव कडीनिम आदि के रूप बड़े सौकरिम हुए।

पुस्तोत्तरकालीन काव्य के क्षेत्र में स्वरबोस्की निदोनोव विषयायें सुरकाव इसाकोव्स्की वशीनिन आदि के अतीत प्रस्तुत किये गये।

गाटकों के क्षेत्र में ऐतिहासिक नाटका (तिम्बेबेवा 'विजयी' बिस्मस्की) का अभिस्मरणीय १९१९ से लेकर ब्यांघ प्रथम कृतियाँ और समकालीन कर्मविद्या तथा प्रतीतिारमक कृतियाँ लिखी गईं।

### निर्माण की विषय-वस्तु

युद्ध के बाद स्वाभाविक ही था कि निर्माण की विषय-वस्तु पुस्तोत्तर कालीन साहित्य में प्रमुख स्थान ग्रहण करे। सोवियत संघकों में निर्माणकारी कार्य में परिष्कृत की प्रत्येक व्यक्ति के देशभक्ति के कृतव्य के रूप में प्रस्तुत किया। कृती जनता के साहसपूर्ण तथा अवक परिष्कृत करने की गति की बार लीना का ध्यान आकृष्ट किया जिसके द्वारा वह अपने देश के युद्ध में मरूट राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था तथा सांस्कृतिक जीवन का पुनर्निर्माण करती थी। इस प्रकार जनता के जीवन तथा कम्प्यूनिगम के निर्माण में व्यक्ति का सामाजिक योगदान साहित्यिक कृतियाँ की मुख्य वस्तु बन गया। इस विषय-वस्तु के उद्घाटन में मुख्य चित्र सोवियत सैनिक का है जो अब मार्च में बार सौटा है और अपने को दार्ष्टिमय निर्माणकारी कार्य में लगा रहा है तथा युद्ध के उस अनुभव का प्रमाण कर रहा है जिसके बीच उरका परित्र वृद्ध हुआ। कल्पना का पुस्तोत्तर कालीन निर्माण का तथा जीवन चित्र तथा गाँवों के जीवन में जा समाजवादी रूप प्रकट हुआ रहा तथा कलपोजा की प्रगति का रोचता है उन सबको अभिव्यक्ति करने वाली कृतियाँ में ब्याएम्बो के उपन्यास 'सुनहल तारे का नाइट' तथा पुष्पी पर प्रवास पार्सेको का 'गुडी' मास्मब का 'पूरे हृदय में निर्माणाका का कल' मरु है। कलताजी निर्माण की कठिनाइयाँ और उन पर विजय का प्रदर्शन साप्तेब की कृति 'सबरा में हुआ है। १९४६ के गूये और गराब फगत के बाद कलताजी व्यवस्था में पुनर्गमन का चित्र प्राचीन के बिदरु मशीन तथा प्रगतिशील सापनी तथा विचारों के युद्ध के बीच प्रस्तुत किया गया है। इसी प्रकार पुरास्कोव

## यूरोप के समय का साहित्य

की कृति 'कम्ब्राइन (मशीन) बासक जीर निकोलाएवा के 'एम० टी०  
 वी० डाइरेक्टर की कहानी' में मशीन ट्रान्स्टर स्टेशन के मजदूरों का  
 विषय हुआ है और प्राचीनता के बिना इन प्रयत्नशील लोग का  
 महत्त्व प्रदर्शित किया गया है जो कि काम के नये साधनों के प्रयोग के  
 पक्ष में है।

बर्षायेबरकी के उपन्यास का केन्द्र कलजोब में काम करनेवाला  
 मजदूर है जो सभी युद्ध से लौटा है जो सोवियत संघ का वीर है और जो  
 उखी घातक के साथ सब कलजोब में काम करता है जिससे कि वह  
 युद्ध में लड़ता था। युद्ध का ऐतिहासिक घातक निर्माणकारी कार्यकर्ता  
 बन गया। पाबसेवो के उपन्यास 'दुखी' में यह दिखाया गया है कि लड़ाई  
 के कठिन वर्षों के बीच ही जब कि अती पश्चिम में युद्ध चल रहा था  
 पार्टी और जनता कम्युनिज्म के निर्माणकारी कार्य में प्रवृत्त  
 हो गई।

पाबसेवो के उपन्यास के नायक बर्नल बरपायेव का मार्ग जटिल है।  
 युद्ध में अपनी टांग बाँकर और उपद्रव का मरीज बनकर वह फौज छोड़  
 कर फ्रीम में अपने लिए ठिकाना ढूँढने आता है। बकान और कमबोरी  
 मजबूत करता हुआ वह अब अपने को सामाजिक कार्य के अयोग्य समझता  
 है और अब श्रमशाप विभाग करना चाहता है किन्तु उसके पारा और  
 जीवन के निर्माण का जो नया कार्य चल रहा है उनका उसके ऊपर बल  
 शक्ति रूप से प्रभाव पड़ता है और वह धीरे धीरे स्वयम् इस बार में पक  
 जाता है। अब उनकी समझ में आता है कि वह विस्तृत निरर्थक नहीं है  
 और उसके युद्धकामीन अनुभव का ऐतिहासिक परिस्तिति में भी उपयोग ही  
 सकता है और वह सागा का सञ्चालन करता है। इस प्रकार वेग तथा  
 जनता के हित के लिए आवश्यक कल्याणकारी कठिन परिश्रम करने में  
 उसे सुधी मिलती है। वह जनहित के कारणों में अपने को समर्पित कर  
 देता है। इसी में उसने चरित्र का विकास होता है। उपन्यास का मुख्य भाग  
 यह है कि व्यक्ति का सच्चा मानव्य जनता में है और वही उसकी गुनी  
 का द्रोत है।

गरबातोब के उपन्यास 'बनबास' में नये व्यक्ति के निर्माण की समस्या प्रस्तुत की गयी है और यह दिखाया गया है कि सोवियत जनता के सर्जनारमक निर्माणकारी कार्य के बीच नये व्यक्ति का चरित्र किस प्रकार डब रहा है और विकर रहा है।

सोवियत धमिक वर्ग (विद्येपतया औद्योगिक क्षेत्र के मजदूरों) के जीवन से संबंधित कृतियों में कोषेटीब की कृति 'अरबीन' और केठलिन्स्-क्या की कृति 'हमारे जीवन के दिन' अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। कोषेटीब के उपन्यास में स्त्री धमिक वर्ग की बहुकामिकारी परंपराएं प्रस्तुत की गई हैं जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में बराबर स्याप्त होती जाती है। उपन्यास का मुख्य भाव है धमिक वर्ग का महत्वपूर्ण ऐतिहासिक योगदान। हमारे जीवन के दिन का मुख्य विषय-वस्तु क्लेकियब या समूह के परिश्रम तथा योजना को पूरा करने के गंभीर प्रयत्न से संबंधित है जिसके बीच संघर्ष का चरित्र निर्णित और प्रीढ़ होता है। स्त्रिका ने यह प्रदर्शित किया है कि सोवियत व्यक्ति परिश्रम के बीच ही अपना आनंद प्राप्त करता है।

अडाएब का उपन्यास 'मास्को से दूर' परिश्रम के विषय-वस्तु का उत्पादन अन्य उपन्यासों की अपेक्षा बड़ी पूर्णता से करता है। इसमें युद्ध के बीच सांठिमय महत्वपूर्ण निर्माण का कार्य प्रदर्शित किया गया है। मास्को से दूर पुरब में ठेस की पाइप लाइन बिछाने के पहाय तीन साल की योजना थी। युद्ध शुरू हो जाने पर अब बराबर सरकार ने इसी काम को दो वर्ष में पूरा करने को कहा। बहुरी का यह काम अर्धमय प्रतीत हुआ और बहुरी को युद्ध के बीच ऐसा निर्माण निरर्थक और महत्वहीन लगा। उनकी दृष्टि में इस छाड़कर मास्को की रक्षा के लिए जाता अभिन महत्वपूर्ण था किन्तु निर्माण का संघातन करनेवाले बीस्यदिक युद्ध-मार्ग के पीछे हान बाक सांठिमय काय दोनों का महत्व समतल है। वे नम काय को पूरा करने का बीड़ा उठाते हैं। उन्हें कोई बाधा अपने लक्ष्य में नहीं हटा पाती और वे अपने काय में सफल होते हैं। अडाएब का यह उपन्यास समान्यवादी परिश्रम के क्षेत्र से पूर्ण है।

युद्ध का वास्तु-विषय

शांति के समय में भी युद्ध के अनुभवों का बर्चन सोवियत लेखक इस लिए करते हैं कि युद्ध की घटनाओं का कथारमक बर्चन देकर और साथि बत जनता के साहसपूर्ण कार्यों का विवरण कर वे नई पीढ़ी के चरित्र को बुझ कर सकें और उनमें साहस वेष प्रेम आदि का भाव भर सक।

लेखकों ने युद्ध की जगनाओं द्वारा उन राजनीतिक नैतिक मुजों की मोर ध्यान केन्द्रित किया है जिन्होंने सोवियत जनता को फानिस्टों पर विजय दिखाई। बहुत ही कृतिया में सोवियत सेना को फ्रांसिज्म के अनियाप न मारोप को मुक्त करने वाले उदारक के रूप में और रूस को शांति के समयक और शांति के योद्धा के रूप में चित्रित किया गया है। इसकी कृतिया का मुख्य विषय है विजय दिखाने वाले सोवियत सैनिक और वेष की रजा में सप्तश सोवियत जनता के अनेक रूपारमक जीवन का विवरण। बहुत ही कृतियाँ इन लोगों की लिखी हुई हैं जिन्होंने स्वयम् इस युद्ध में हिस्सा लिया। पाटिजन और कफिया युद्ध में भाग लेनेवाला के इन युद्धों के कई संस्मरण प्रकाशित हुए कज्जोव का क्रोम में छिप तीर से अन्द्रेयेव का 'जन युद्ध पवोरोरोव का कुफिया' जिनमें सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी काम कर रही है।

इन बर्चों की कृतियों में युद्ध की मंत्रिमें चित्रित की गयी हैं। अबदेयेव के उपन्यास सड़कों पर डार में युद्ध का वारम्भ चित्रित है। उसमें यह बताया गया है कि पशुजोया डोरा को उन स्थानों में किम प्रकार हटाया गया है वही कि शत्रुओं या अ क्रमण का खतरा था। सोवियत जनता की संग टनगकित और सहन ककित का इसमें प्रदर्शन हुआ है।

कज्जोवकेविष के उपन्यास ठारा में सोवियत जामूलों के साहसपूर्ण कार्यों का वर्णन हुआ है जो पशु के मोर्चे के पीछे अपना उत्तरदायित्वपूर्ण कार्य करते हुए मरट हो जाते हैं। फिर भी यह कार्य बंद नहीं होता है क्योंकि उन मृत ब्यक्तियों की जयह वूमने सोवियत ब्यक्तिन आ जाते हैं और यह कार्य बन्धता रहता है। इसमें इस प्रकार यह दिखाया गया है कि सोवियत जनता की ककित आशय है और प्रत्येक ब्यक्तिन का जीवन वेग के लिए है।

बुकोम्स्की का उपन्यास 'वास्तिक आकाश' में समूहों वायुवात-वातकों की कथा है जो वास्तिक आकाश की रक्षा कर रहे हैं। इस कार्य में एक के बाद दूसरा वातक मर जाता है। सिर्फ एक वायु-वातक बचता है और उस पर वायुवातकों की दूसरी पीढ़ी तैयार करने का भार पड़ता है। इसमें सोवियत व्यक्ति का विकास उसका यज्ञ कीचल तथा उसकी वैश्व-व्यक्ति की भावना का उदघाटन हुआ है।

'सफ़र विरोजा का पैड़' इसी दृढ़ता का प्रतीक है जिस प्रकार विरोजा का पैड़ मृत्यु तक लड़ा रहता है उसी प्रकार सोवियत विपत्ती मृत्युपर्यन्त देश की रक्षा के लिए लड़ लड़ा है।

'सफ़र विरोजा का पैड़' में युद्ध के आरम्भिक युग का वर्णन और रूसी जातीय चरित्र का उद्घाटन है। इसके केन्द्र में सैनिक आन्देय का चित्र है जो धीरे-धीरे अनुभव करता है और अनुभवों सैनिक बन कर युद्ध के कर्तव्यों का पूरा करता है। स्तालिनवाद के युद्ध के कठिन समय का वर्णन नेकापोव की कहानी 'स्तालिनवाद की साइलों में' हुआ है। बिरे हुए स्तालिनवाद के साहसपूर्ण कृत्यों का वर्णन 'केतलीम्बुका के उपन्यास 'बेरे में' हुआ है। बहुत सी कृतियाँ पार्टिजनों 'छापामार' के युद्ध से संबंधित हैं। इनमें उन युद्धों का वर्णन है जिनका संचालन दात्रु द्वारा अभिहित देशों में इन पार्टिजनों द्वारा हुआ। कस्ताएव का उपन्यास 'सोवियत के घासन के पक्ष में इसी प्रकार का उपन्यास है। इसमें जर्मनों के विरुद्ध अठेसा के देशभक्तों के नाहनपूर्ण प्रतिरोध का वर्णन है। पार्टी ने इसकी आलोचना की और फिर लम्बक में १९५१ में इसका दूसरा रूपान्तर प्रस्तुत किया।

बरवारवा की कहानी 'अनरत की रात' में युद्ध का अस्थिर चरण प्रदर्शित किया गया है जब कि सर्वविधत घेमा विजयिनी के रूप में आगे बढ़ती है और दात्रु को लपट करती है। युद्ध के अस्थिर युग का विरोध चित्र फानिरम का नाम 'सोवियत मना की अपराधेव दासित और उनका उद्धार' कारी रूप कामकविन के उपन्यास 'आउंडर में बगैन्त' में मिलता है। इनमें यह दिखाया गया है कि सोवियत मना जगता की फानिरम में किस प्रकार रखा करनी है और उसे समाजवादी विचारधारा प्रदान करती है।

## बुर्जुआ संस्कृति की आलोचना

बपनी संस्कृति की बढ़ाई करने के साथ-साथ सोवियत संघक बुर्जुआ संस्कृति की आलोचना में भी लगे हुए हैं। इसमें बपना परम कर्तव्य समझते हैं। स्वयं फ्रांकोइ इसे बल्पन्त आवश्यक समझता है। उनके मरानुसार 'हमारे साहित्य का लक्ष्य बचक नहीं है कि हम समाजवाद पर बपनी नाविपत संस्कृति के प्रति बिने बड़े बुप्रभार प्रहारों और आलोचों का उत्तर प्रहारों में बरन् हम साहस के साथ बर्बर ह्यामोन्मुख अन् बुर्जुआ संस्कृति पर बघावात और आक्रमण करना चाहिये।

इत्या एरन्तुन के उपन्यास 'सूफान' में यह बिदाय कम में इच्छा है बहाँ इरिस्मिन्ट बर्ननी और उरक साबियों के बिद्व्य सोवियत जनता के मुद्र का ब्यापक बिचन हुआ है।

इतिबर पर सोवियत बिजय का जो एतिहासिक महत्त्व है उरका उरुवाटन एमेनबर्न के उपन्यास 'सूफान' में हुआ है। इनमें बहुत से पात्र हैं इनमें पूरे द्वितीय महासुद्ध का बर्नन है और यह बिचाया गया है कि मुद्र की बटनाओं से सनकाकीनों की बचना किस प्रकार प्रथिबिम्बित हुआ थी है।

सोमसोब के नाटक 'कसी प्रश्न' और कबिताओं 'मिन और एम्' का मूकमूठ बस्तु-बिषय भी यहीं आलोचना है। नाटक में अमेरिकन प्रेस के सिद्धान्तबिहीन कार्यकर्ताओं का बिचित्र बिधा गया है जो सोवियत जन की हर तरह से बदन्याम करना चाहते हैं और उनक बिद्व्य सूठी बातें छापना चाहते हैं। इनक सिब की टक्कर हुआ है जो सच्चा संबादवाता है और जो इनकी इच्छानुसार अमेरिकन प्रेस के प्रचार के लिए सोवियत जन के संबंध में सूठी बातें बिचने से इच्छा कर देता है।

बिदेषों की बुर्जुआ संस्कृति की आलोचना करने के साथ-साथ नाविपत संघक इन देवों में के प्रगतिशील आन्दोलनों की शक्ति का भी बिचन करते हैं।

सुधादि बर्नन के साथ-साथ लेखकों में साहित्य निर्माणकारी कार्य की



अभिध्वनित साहित्य में बड़े उच्छाह के साथ की। कृषी लेखकों ने उन सभी का हादिक स्वागत किया जो- निर्माण विज्ञान संस्कृति आदि के क्षेत्र में उभरि तथा प्रगतिशीलता के संवाहक थे और उन सब की आलोचना की है जो प्रतिगामी पिछड़े हुए और समय के अनुकूल न थे। प्राचीन और नवीन क संघर्ष का इस समय क साहित्य में बड़ा ही सजीव वर्णन हुआ है। कवेदिन के उपन्यास 'भुली किताब' में सोवियत संघ का और विज्ञान की प्रगति रोचने वाले व्यक्तियों का चित्रण किया गया है।

लिओनोव के उपन्यास 'कृषी जंगल' में ममकालीन महारबपूर्व समस्या का चित्रण हुआ है। यह गावियटठ साहित्य की अत्यन्त महारबपूर्ण कृति माना जाती है। लेखक को इस पर खनिन पुरस्कार मिला चुका है। उपन्यास के सारे चरामुख कृषी जंगल के चारों ओर एकत्रित होते हैं। कृषी जंगल की पृष्ठी में कृषी विज्ञान इवान बीलगाव का अन्तकल्पारमक चित्र उभरता है जो कृषी जमलों की रक्षा के लिए बराबर लड़ता है। यह कृति केवल एक व्यक्ति का चित्र नहीं है बरन् इसमें उधीसबी सती के अन्त और बीसबी गणी के आरम्भ के कृषी समाज का व्य पत्र चित्र प्रस्तुत किया गया है। अनेक प्रकार की समस्याओं के समावेश से यह कृति अत्यन्त महारबपूर्ण बन गयी है।

प्राणिन के उपन्यास 'तोडी' में भी इसी प्रकार वैज्ञानिक महत्व के प्रबन्ध प्रस्तुत किये गये हैं। इसकी मारी घटनाएँ एक प्रयोगशाला में कोरित हैं। मानवीय विचार की अन्तता और उमकी सतत प्रगति इस उपन्यास का मुख्य भाव है। इसमें यह बताया गया है कि कोई उपसक्ति वैज्ञानिक अनुसंधान का अर्थ नहीं है बरन् वह दूसरे अनुसंधान का पुनरागम है। इस तरह जोर और उपसक्ति प्रयत्न और प्राप्ति का क्रम चलता रहता है। साथ ही इन बात पर भी आर दिया गया है कि कोई उपसक्ति केवल किसी एक व्यक्ति की गुण गुण का परिचय नहीं है बरन् गुण के समिपिन प्रयत्न का फल है। 'तोडी' उपन्यास में अनेक प्रकार के चरिचों गुण गुण तथा नकारारमक का संघर्ष बड़ा सजीव एवं प्रबल है।

## यूद्धोत्तर निर्माण क समय का साहित्य

### सोवियत व्यक्ति का चित्र

यूद्धोत्तर बरों में सोवियत व्यक्ति का आ चित्रण हुआ है उसमें विवरण की निष्पत्ता होती हुए भी मूर्कभूत समानता है। इस मूर्कभूत समानता का कारण सोवियत लेखका का भावैक्य है जो कि इनमें पार्श्व तथा पार्श्वबहिता द्वार पुष्ट हुआ है और जो उनकी कम्प्यूनिस्ट समाज की रचना की प्रेरणा तथा प्रयत्न में प्रकट होता है। सोवियत व्यक्ति इसी का निर्माता है। इसी में सोवियत लेखकों में सोवियत व्यक्ति को वेगमयता में नवता के उद्धारक कम्प्यूनिस्ट समाज के निर्माता अममकी समानता की तथा आत्मबलिदान की रूप में चित्रित किया है। उस उच्च मानवता का प्रतिनिधि प्रदर्शित किया गया है जो कि मानवता के प्रति अपने उत्तरदायित्व का अनुभव करता है। मानवता के उपन्यास 'मुगह्ला प्राण' में सोवियत वैदिक भाएल्सकी का चित्रण हुआ है जो जर्मनों द्वारा सष्ट विभिन्न देशों के व्यक्ति का उद्धार करता है। पाबसका क उपन्यास 'गुसी' में बस्पाब का चित्र भी इसी प्रकार बड़ा महत्त्वपूर्ण है। पानाबा में अपनी कहानी स्तूतिका में यह प्रदर्शित किया है कि विनि-मक्ति-विनि कार्य को सोवियत व्यक्ति कितनी जिम्मेदारी के साथ पूरा करता है और इस कार्य में व्यक्तिगत और सामाजिक ऐक्य का अनुभव करता है। बूडे डाक्टर बसोब और कम्प्यूनिस्ट बानोभाब का ऐसा ही बड़ा मृग्यकारी रूप प्रस्तुत किया गया है। युद्ध के बीच सामान्य सोवियत व्यक्ति का विकास उसमें साह्य और उसकी बुद्धि-दृष्टांगिन का चित्र पूर्ण रूप में विशेषतया पक्षिभय की दृष्टि 'अमको आदमी की कहानी' में प्रकट हुआ है। पुस्तक युद्ध के बीच सोवियत व्यक्ति के दिन प्रतिदिन के साह्य का प्रदर्शन करती है। सोवियत संप्रदाय की अधिकता दृष्टियां क समान इसका बचानक भी यथायं घटनाओं पर आधारित है। इसमें बापुवान नामक मरयमिनेयेब की कथा है जिसमें जश्मा हा जाने पर बाना वीर काट बाछ जाते हैं किन्तु वह इस पर कि मे बापुवान बाकक बन जाता है। सेगक ने कम्प्यूनिस्ट मरयेमिनेयेब के चरित्र में उस अनूबं दृष्टता तथा महत्त्वपूर्णता का बड़ा गहरा तथा स्पष्ट चित्रण किया है जो कि व्यक्ति में उच्च रूप की प्राप्ति के प्रयत्न में ही प्रकट होती है।



युद्धोत्तर निर्माण के समय का साहित्य

त्वरदीप्ती की प्रगीतात्मक प्रतिभा का उदाहरण है उसका काव्य 'बाटी से दूर'। इसमें सोवियत देश के अनन्त विस्तार का बयन है। इसमें कवि ने अपने देश की यात्रा की। देश के दूर क्षितिज पर हर बार कवि को नवीन दृश्य दिखाई देते हैं। कवि इन अनन्त विस्तार का देश के लम्बे इतिहास के बीच देखता है और उसके अतीत पर दृष्टि डालता हुआ अनेक प्रकार के विचार प्रस्तुत करता है।

देश के पुनर्निर्माण व वस्तु-विषय की अभिव्यक्ति निद्रपोलोव के काव्य 'गाव सावियत पर संघा में हुई है। काव्य जनता के साहस देना प्रम और भाषाबादिता से परिपूर्ण है। कवि यह प्रदर्शित करता है कि कार कर्मचार क मित्रतापूर्ण परिश्रम के बातावरण के बीच किस प्रकार ए बूखे के निकट जाते हैं। युद्धोत्तर काल क कर्मजोबा के पाँच में जो परि वर्तन आया उसका इस काव्य में सच्चा अभिव्यजन हुआ है।

इसी प्रकार के निमाण काय क अनेक बिन्न सुकोनिन मेजीराव पूरवेंका विमर्श आदि की कविताओं में मिलते हैं। उनकी तथा अन्य कवियों की रचनाएं शक्ति के निर्माणकारी काय के बेय स परिपूर्ण हैं। इन रचनाओं में प्रगतिशील देशप्रेमी कम्युनिस्ट का बिन्न सामन आता है या जनता की शक्ति का रोपहित के लिए सेवृत्त तथा संचालन कर रहा है।

प्रगतिशील सोवियत व्यक्ति का बिन्न सामनोव की युद्धोत्तरवालीन रचनाओं (मित्र और उग्र १९५४ की कविताएँ) में प्रस्तुत हुआ है। (पीतात्मक नायक के माध्यम से बिन्नने लिए परिचय तथा कम्युनिज्म का निर्माण अपना निजी काम है युद्धोत्तरवालीन ययार्बता के अनेक पसा का उद्घाटन हुआ है। कवि कम्युनिस्ट नीतिबता की समस्याओं—मानवीय संबंध—मित्रता बकाबारी तांताबतमी तथा बिन्नेकारी से मानन का बिराध भी प्रस्तुत कर रहा है।

'पबेर (बिजय) में बगत काव्य में बिबाबोर व प्रगतिशील सोवियत व्यक्ति के युद्ध में निर्मित उसके बिन्न दृढ़ इच्छाशक्ति उच्च समाजबारी केतना कम्युनिज्म के लिए आत्म-बिनिदान की तत्परता का बिन्न अंकित किया है। बमन्त में खेतों में बसमोबी कार्यकर्ताओं और

है। इस कहानी में एक अल्प कम्युनिस्ट कमिसार बरब्योव का चित्र भी है जो प्रचारक है जो अन्तिम क्षण तक अपना कार्य करता है और अपनी मृत्यु द्वारा भी लोगों में प्रेरणा और उत्साह भरता है।

फ़ेदिन के उपन्यासों की मुख्य विषय-वस्तु है इतिहास, मनुष्य और क्रांति के बीच उसका स्वभाव। उनमें अस्तुवर क्रांति के पूर्व के तथा गृह युद्ध के वर्षों के कम्युनिस्ट का चित्र अंकित किया गया है। फ़ेदिन द्वारा प्रस्तुत कम्युनिस्ट इव्हेनकोव का चित्र सोवियत साहित्य में अंकित कम्युनिस्टों के उग्रमस चित्रों में से एक है। यद्यपि फ़ेदिन ने अतीत की सामग्री का उपयोग किया है फिर भी पात्रों के चरित्र की मूलभूत विशेषताएं मात्र के नायकों से संबंधित हैं। फ़ेदिन के उपन्यासों में इतिहास की प्रगति रूसी जनता तथा पार्टी की क्रांति के पूर्व और अस्तुवर क्रांति के वर्षों की घटनाओं के बीच विद्यास पट पर अंकित की गयी है।

### काव्य

युद्धोत्तर सोवियत काव्य की अच्छी कृतियों का मुख्य भाग है सम-कामीयता की भावना निर्माणकारी सहयोग परिधम का बेग' शांति के लिए आंदोलन और बेग का भाग की ओर कम्युनिज्म की ओर बढ़ने का प्रयत्न। युद्ध के बाद जब देश शांति के निर्माणकारी कार्य में लगा और जनता बेग की मष्ट भ्रष्ट राष्ट्रीय व्यवस्था के पुनर्निर्माण में प्रवृत्त हुई तो सोवियत काव्य में जनता के परिधम कठिनाइयों और विजय प्राप्त करने के उसके रूढ़ विद्वान और उसके जन-कल्याणकारी आत्मबलिदान की प्रवृत्ति की अभिव्यक्ति की।

युद्धोत्तरकाल की प्रथम महत्त्वपूर्ण कृति ल्वाइवोव्स्की का काव्य 'सड़क पर का मकान' है। इसमें उस मकान का चित्रण है जो कि फ़ीमी रास्त पर पड़ता है और उमरे रहनेवालों का पित्रंय है जिनको अनेक कठिनाइयाँ संभनी पड़ती हैं। इनके दो संस्करणों में बहुत अन्तर है। दूसरे संस्करण के अनुसार इस मकान में रहनेवाली अभा विवालीया शत्रु के साथ पड़ पाती है और अर्धनी भत्र की जाती है। इनके प्रति अग्रेये के माध्यम से कवि ने सोवियत जनता की अनूर्ध्व दक्षि और सहनशीलता का वर्णन किया है।

## युद्धोत्तर निर्माण के समय का साहित्य

स्वर्लोम्स्की की प्रगीतात्मक प्रतिभा का उदाहरण है उसका काव्य 'भाटी से दूर'। इसमें सोवियत देश के अनन्त विस्तार का वर्णन है। इसमें कवि ने अपने देश की यात्रा की। देश के दूर क्षितिज पर हुए बार कवि को नवीन दृश्य दिखाई देते हैं। कवि इस अनन्त विस्तार को देश के कल्पे इतिहास के बीच देखता है और उसके जटील परदृष्टि डालता हुआ अनेक प्रकार के विचार प्रस्तुत करता है।

देश के पुनर्निर्माण के वस्तु-विषय की अभिव्यक्ति निदानोब के काव्य 'गोब सावियत पर संडा' में हुई है। काव्य जनता के साहस देशप्रेम और माताभारिता से परिपूर्ण है। कवि यह प्रशंसित करता है कि लाल कल्लखोव क मित्रतापूर्ण परिभ्रम के वातावरण के बोध किंच प्रकार एक दूसरे के निकट आते हैं। युद्धोत्तर काल के कल्लखोव के पांवा में जो परि वर्तन आया उसका इस काव्य में सच्चा अभिव्यजन हुआ है।

इसी प्रकार के निर्माण कार्य के अनेक विन्न लुकोनिन मेबीरोव, यूद्वेको स्मिर्नोव आदि की कविताओं में मिलते हैं। उनकी तथा अन्य कवियों की रचनाएं प्राति के निर्माणाकारी काय के बग स परिपुर्ण हैं। इन रचनामा में प्रगतिशील देशप्रेमी कम्युनिस्ट का विन्न सामने आता है तो जनता की शक्ति का देशहित के लिए नेतृत्व तथा संचालन कर रहा है।

प्रगतिशील सोवियत व्यक्ति का विन्न सीमनोव की युद्धोत्तरकालीन रचनाओं ('मिन्न और यान् १९५४ की कविताएँ') में प्रस्तुटित हुआ है। प्रगीतात्मक नायक के माध्यम से जिसके लिए परिभ्रम तथा कम्युनिज्म का निर्माण अपना निजी काम है युद्धोत्तरकालीन मर्यादा के अनेक पसा का उद्घाटन हुआ है। कवि कम्युनिस्ट शैतिकता की समस्याओं—मानवीय संबन्ध—मिन्नता कफादारी उदात्तचरमी तथा विन्नेदारी से मायन का विरोध भी प्रस्तुत कर रहा है।

'पब्रेद (विजय) म बल्लत काव्य में विन्नेदोव ने प्रगतिशील सोवियत व्यक्ति के युद्ध में निर्मित उसके शरिण बुद्ध इच्छाशक्ति उच्च ममात्रकारी शैतना, कम्युनिज्म के लिए आर्य-शक्तिमान की उत्पत्ता का विन्न अहित किया है। बल्लत में खेती में कल्लखोवी कार्यकर्ताओं और

कैचटों का दुष्य मानो विजय के लिए सेना का अभियान है।

सुकानिन के काव्य 'काम का दिन' में मजदूरों की लयी पीड़ी तथा युद्धांतरकालीन लयी यथार्थता का चित्रण स्वाभिमन्याव की कैचटों के जीवन के बीच हुआ है।

अणुआम्सकी की कविता 'बरबात के पीछे की गल्लो में' समकालीन साहित्यिक व्यक्ति का चित्र है। इसमें कवि पाठका को अपने नायक इवान येनाटोव के जीवन को प्रतिबिंबि और चरित्र विश्वास से परिचित कराता है। कथा के आरम्भ में नायक छानो उन्न में अकसूरुब अग्नि के आरम्भिक दिना में पाँच से मास्को आया है। कथा का अन्त हाते होते वह तृतीय युद्ध के अन्त में राजधानी में निर्माण के कार्य में लगे हुए गिन्नी इजीनिमर के रूप में चिन्नाया जाता है। इस कन्नड़ी कवि के बीच उनका चरित्र विकसित होता है। इस काव्य में समकालीनता समाजवादी निर्माण और व्यक्ति का बड़ा ही सजीव चित्रण हुआ है।

इसाकोव्सकी की काव्यता

साहित्यिक व्यक्ति के चित्रण में प्रगीत मुक्तकों का भी विशेष स्थान है। इन प्रगीत मुक्तकों में साहित्यिक व्यक्ति के आन्तरिक समाज और अनुभूतियों का चित्रण हुआ है जिनमें उसके व्यक्तित्व तथा भावनाओं की अनेकरूपता तथा समृद्धि की अभिव्यक्ति हुई है। समाजवादी रस में व्यक्तिगत का पूरा विकास लमी होता है जब शिथिल समाज में लगे हो जाता है और व्यक्ति समाज का अविभक्त अंग बन जाता है व्यक्ति और समाज के उद्देश्य में कोई विरोध नहीं रह जाता और व्यक्ति समाजहित में लग जाता है। उच्च उचार तथा सर्वसामान्य लक्ष्य की प्राप्ति के प्रयत्न या युद्ध में उनका मूल्य पुष्ट और प्रकट होता है। साहित्यिक व्यक्ति के व्यक्तित्व को यह समृद्धि उमकी समाजपरक भावना समाजवादी प्रगीत मुक्तकों में प्रकट हुई है।

इन प्रगीत मुक्तकारों का सबसे बड़ा प्रतिनिधि मिखाइल वसीलियेविच ईगाकोव्सकी है। 'ईगाकोव्सकी मूल रूप में रीतकार है। उनके भीतर जनता में बहुत अधिक कोरप्रिय है। स्वाभिमन्य के विषय में

त 'कौन उनका जनता है' 'हाथ में हारनोमिनन दो' 'तुमन अपनी जनता कर, 'उत्त फूल न बढ़कर कुछ नहीं' 'मठरी बिड़िया तथा अन्य है। ईसाकोम्की का जन्म १९०० न हुआ। वह अक्सर इसका ज्ञान किया करता है कि अक्सर हुन काका राज का रक्झा भी लनीब न था। उनके गिझक ने उनका प्रथिना का 'हूबाना और उनका महायता म हा बहु बरिखता क बाब नो गीब क स्मूय तथा जिमनरिचिन म १९१७ तक पढ़ सका। १९१७ म उनमे कान्ति का स्वागन किया। हुन समय म उनका सामाजिक जीवन शुरू हुआ। १९१८ म वह पार्टी का मेम्बर बन गया। अन्तबारा मं विभिन्न काम करने क साम-माय बहु बरिखाएँ भी किञ्चता आता का किन्तु य बरिखाएँ उन पमन्द महा भाई और उनन पुतना पांडुनिपिया का जसा बाला। स्वयम् ईसाकोम्की क अनुमार उनका संतायप्रर बरिखाय १९२३ म शुरू हुआ और १९१७ म भारत म उनकी बरिखाया का मुझह निकला। उनका मूल्-पन्तु गाँवा का समाजबादी पुननिमाय है। गाँवो न उनकी रनिना का पहूबाना और इस हति की प्रसता की। उनकी बरिखाएँ माया मण्डा और अपनी ईमानबादी म उद्भक्ति करणबाडी है। यह गाँवो का कवन था। इस समय म साबियन साहित्य क बीब पीठकार क रूप म ईसाकोम्की का अपना बिगिण्ड स्वात बन गया। उनन अपना ध्यान गीता की भार कर्नरत किया और पार्टी ने उस मन्सो बनाया।

अपनी बरिखाया म ईसाकोम्की ने संबियत जनता की भावताओं का उसक गहरे देगप्रम का तथा स्वातित्त क प्रति जनता के प्रम का अभिव्यंजन किया। उनकी बरिखाया म साबियत दल के जीवन का बिद्येयतया नये साबियत गाँवा के जीवन का तथा साबियत जनता क बरिख की बिधिष्टताओं का अनेक रूपात्मक बिषय हुआ है। देग म रहुँनबाडी अन्त क जातियों के पारस्परिक मित्रतापूर्ण सबब तथा देगप्रम का परिषम द्वारा उपलब्ध सफसताओं तथा सप्रार्थिया पर उस्काय तथा गर्ब की और युद्ध क्षेत्र म प्रबोधित बीरता की वीरता तथा बरिखाया म बड़ी काव्यात्मक अभिव्यंजन हुई है। देग प्रेम तथा मनी दया का तुम्ना में



अपने देश के उत्कृष्ट तथा महत्ता की भावना ईसाकोष्की के जनतात्मक काव्य को बड़ी शक्ति तथा प्रभाव प्रदान करते हैं। 'सफरी चिकियां बीठे हुए प्रांम की खोज में उड़ी जा रही हैं। वे मरमं देशों की ओर उड़ रही हैं किन्तु मैं उड़कर कहीं नहीं जाना चाहता हूँ।

हे माधुसूमि मैं तुम्हारे साथ चूँगा । मुझ पराया सूर्य और परायी चरती नहीं चाहिए।

ईसाकोष्की की कविताओं में हृदयस्थलों का व्यापकता और उच्च संस्कृति के दर्शन होते हैं। इसके साथ ही उसकी काव्याभिध्वक्ति में ऐसी नादगी है जो केवल बड़े कवियों में ही देखने को मिलती है। संक्षिप्तता, हार्दिकता, स्वाभाविकता, कोमल व्यंग्य कवी प्रकृति से बृहत्तुलनाएँ और उपमाएँ अनेक क्पात्मक शब्द-अपेक्षक कवि के कलाधिकार कवी साहित्य और कवी लोकमर्मता से सीखा है। जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में अकट होनपासे गीतियत जनता के अनेक क्पात्मक विचार और भाव ईसाकोष्की के प्रगीत-मुक्तकों की मुख्य विषय-वस्तु हैं। १९५० में ईसाकोष्की लेनिन के आर्डर से पुरस्कृत हुआ।

ईसाकोष्की के प्रगीत-मुक्तकों के नायक के रूप में सौवियत व्यक्ति के चरित्र का बड़ी पूर्णता के साथ उद्घाटन हुआ है।<sup>१</sup> स्पष्ट प्रगीतात्मक शय की प्रेम्णात्मकता गीतों तथा चतुष्किमों का जीवन्त हार्दिक सूक्ष्म हास्य उसके गीतों का वस्तु भाव तथा उनकी सूक्ष्म मनोवैज्ञानिकता उनकी लोकगीतात्मक शय यथातथ्य अभिव्यंजक भाषा—इन सब विशेषताओं के रूप और वस्तु दोनों दृष्टियों से ईसाकोष्की की कविता को पुरा-पुरा जनतात्मक बना दिया।<sup>२</sup> ईसाकोष्की के सारे और सचाई से मरे गीतों में गिळती हुई खबानी और हार्दिक उत्साह तथा भांगरिच दुःख की कथा है जिसमें सौवियत देशभक्ति का अभिव्यंजन है।

१ बोबेई इस्तीरिई कन्दोय सबरस्कोय लिखरानूरी भाग २ पृ० १५१।

२ बोबेई इस्तीरिई कन्दोय सबरस्कोय लिखरानूरी भाग २ पृ० २८९।

## यूरोप निर्माण के समय का साहित्य

यूरोपकारण में हास्य और व्यंग्य प्रधान काव्य का समुचित विकास न हुआ। यों तो हास्य और व्यंग्य प्रधान काव्य के क्षेत्र में सीमनोब मिशानोब मर्जीक बर्सीसियेब आदि का तथा 'पेट्रियाल' पत्र का नाम लिया जा सकता है फिर भी काव्य का यह क्षेत्र पिछड़ा हुआ माना जाता है।

### नाटक

नाटक के संबंध में इस बात की चर्चा की जा चुकी है कि जाकोबना के इस क्षेत्र में अस्वस्थ प्रवृत्तियाँ दिखाई पड़ीं और कम्युनिस्ट पार्टी ने नाटकों के विकास के संबंध में अपना निरपेक्ष और कठिण सिद्धान्त प्रस्तुत किये। यूरोप नाट्य साहित्य की श्रेष्ठ कृतियों में पार्टी के इन्हीं सिद्धान्तों को—जिनमें जीवन से संबंध साम्यवादी विचारधारा का समयन और बुद्धिमान विचारधारा का विरोध मुख्य है—कलात्मक रूप दिया गया है।

युद्ध का चित्रण सोवियत व्यक्ति का साहस उसकी नैतिकता, जिसने कि उसे फ्रांसिसम पर विजय दिलाई—इन सबका अभिव्यंजन कश्चेनेब के नाटक 'इनके लिए जो समुद्र में हैं और थिस्कोब के नाटक 'विजयी' में हुआ है।

कश्चेनेब के नाटक में सोवियत नौसेना के अफसरों और सैनिकों का जीवन तथा युद्ध दिखाया गया है। साथ ही व्यक्तिगत उन्नति और संमान तथा सामूहिक हित की भावना के बीच संघर्ष भी दिखाया गया है। बरोम्स्की के लिए व्यक्तिगत संमान ही सब कुछ है और वह इनके लिए सब कुछ करने को तैयार है। मक्सीमोब सामूहिक कार्य की सफलता का ही सब कुछ मानता है।

इन व्यक्तित्वों के संघर्ष में दो भावनाओं की टक्कर है। गूदमर्जी व कारय बरोम्स्की मक्सीमोब के साथ ठीक-ठीक युद्ध संघातन नहीं करता और शत्रु की पनडुब्बी को निकल जाने देता है और मक्सीमोब वा इनमें दोषी ठहराता है। बाव में सच्ची बात का पता लग जाता है। बरोम्स्की की मरणा होती है और वह अपने अपराध को स्वीकार करता है।

बिजयी' नाटक में स्तालिनवाद के युद्ध के बाजार पर बिस्कोव ने यह प्रदर्शित किया है कि सोवियत बिजय का कारण जर्मन समूह की अवेधा सोवियत संगठन की उच्चता है। सोवियत बिजय का मूल कारण है जन शक्ति जनता का इच्छा। एक ओर तो सारी जनता है जो युद्ध का संचालन कर रही है और वग की रसा के लिए सब कुछ स्वाच्छावर कर रही है और दूसरी ओर जर्मन सैनिक हैं जो एक व्यक्ति हिटलर की इच्छा के गुलाम मात्र हैं। नाटक का मुख्य विषय इसी तबीन सोवियत जनता के चरित्र और साहस का उद्घाटन है। वस्तुतः बिजय इसी जनता की हस्ती है। वही 'बिजयी' है।

युद्धोत्तर काल में बहुत से ऐतिहासिक नाटक लिखे गये। इनमें विश्वेम्स्की का 'अविस्मरणीय १९१९ महारण्यपूण' है। इसका वस्तु विषय पार्सी द्वारा पेत्राव्राद की स्वैत गाइनों और बिदेथियों से रखा है।

इसी प्रकार और बहुत से ऐतिहासिक व्यक्तिप्रधान नाटक लिखे गये जो देश के महान् व्यक्तियों—जैसे समनामाव पुश्किन सरमेन्तोव पोपक बलिस्का आदि—तः संबंधित थे। ई. परोव का नाटक 'परिवार कनिन को अनाथों के पयों में प्रदर्शित है अमेकसान्द्र स्तेइम का नाटक 'अदमिरल का मर्दा' जहाजी बड़े के स्कूक के सस्वापक अनाथों के जीवन में संबंधित है।

इसी प्रकार कई नाटक अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिक जीवन और भाषि के लिए युद्ध की अभिषयना कर रहे हैं। गीमनोव का 'रूसी प्रश्न' तथा कवनन का 'अमेरिका की आवाज' इसी प्रकार के नाटक हैं।

युद्धोत्तर वर्षों में बहुत से नाटक लिखे गये जिनमें देश के जीवन का अभिषयना हुआ। गद्य और काव्य के समान नाटक भी समकालीन वस्तु-विषयों तथा भयन देश के पुनर्निर्माण में लगी हुई सोवियत जनता के कार्यक्रम की ओर उन्मुख हुए। सोमनाथ के साथ-साथ नये नाटककार (ज० मर्यादोव व गुराव तथा अन्य) भी सामने आ रहे हैं। मर्यादोव के नाटक मास्कोवोव चरित्र में सोवियत व्यक्ति के चरित्र का विकास और उत्कर्ष दिशावा गवा है जो अणत अन्तर के स्वार्थ और व्यक्तिचरित्र

## पुञ्जोत्तर निर्माण के समय का साहित्य

विषय प्राप्त करता है। नाटक के केन्द्र में फैक्टरी का आइरेक्टर  
 थापोब है। वह बहुत अच्छी तरह काम करता है। उसकी फैक्टरी  
 बीजनास स अधिक काम करती है। सब उसे सच्चा बसी समझते हैं किन्तु  
 बाद में पता चलता है कि सच्चे कसियों के लिए अनजान व्यक्तिवादिता  
 का बीज उनमें बर्तमान है। जब पञ्जोम की फैक्टरी उससे मदद मांगती  
 है तो वह इन्कार कर देता है क्योंकि वह समझता है कि ऐसा करने से  
 उसकी अपनी फैक्टरी का काम पीछे पड़ जायगा। पतापोब का अपने  
 भागे और क लोगों से विशेषतया पत्नी से संघर्ष हाथा है और भोग उसे  
 प्रभाते है कि केवल अपनी फैक्टरी का हित देखने में वह राष्ट्र क हितो  
 से नुकसान पहुँचा रहा है। पार्टीनेतृत्व पतापोब को अपनी गफ्तरी  
 समझाए और सही रास्ता पाने में मदद देता है। कमेडिब या समूह के  
 प्रभाव से इस प्रकार व्यक्ति का सुधार होता है और वह सम्यक दृष्टि प्राप्त  
 कर शूत्र स्वार्थों से ऊपर उठ जाता है।

सीमन्तोब के नाटक 'पराई टाई' में दूसरा ही वस्तु-विषय प्रस्तुत  
 किया गया है। उसमें एक सोवियत विद्वान् का चित्रण हुआ है जिसमें  
 (कालि के पूर्व की) पश्चिम के प्रति मानसिक गुलामी क संस्कार अभी  
 बर्तमान है। पश्चिम में संमान पाने के लिए वह अपना महत्वपूर्ण  
 विष्कार अमेरिका भेजता है और वह यह गही समझता कि इस प्रकार  
 वह अपने राष्ट्र का अहित कर रहा है। इस्टिम्बुट के कार्यकर्ताओं और  
 उस विद्वान् के बीच गंभीर संघर्ष होता है। आधिष्कार देश के बाहर गही  
 काम करने का आदेश देता है। इस प्रकार अपने प्रति देश का विश्वास  
 प्राप्त कर वह विद्वान् सर्वथा परिवर्तित होकर प्रयोगशाळा में जाता है  
 और अपने काम में लग जाता है।  
 इन नाटकों में गंभीर और तीव्र संघर्ष का अन्त उन सब के हमन  
 या उन सब पर विजय द्वारा प्रस्तुत किया जाता है जो कि सोवियत व्यक्ति  
 के विकास और उत्कर्ष को रोकते हैं। साथ ही यह भी दिखाया जाता है

नि सोवियत समाज प्रत्येक व्यक्ति को समाजवादी सर्वनात्मक परिमम के बीच पूर्ण विकास प्राप्त करने में और व्यक्तित्व के सद्गुणों की अभिव्यक्ति में सहायता देता है। बहुत से नाटक सचय या इन्द्रबिहीनता के सिद्धान्त को लेकर लिखे गये। कवी आलोचकों के मतानुसार यह अनुसरण ठीक न था और यह बुर्जुआ भावना की नृसामी थी।<sup>१</sup> उनकी दृष्टि में नाट्य साहित्य के लिए सबसे बुरी चीज थी इन्द्रबिहीनता की प्रवृत्ति। इस मसलत रास्ते पर पड़ हुए नाटककारों की कलम से ऐसे नाटक लिखे गये जो यथावृत्ता पर मुसम्मा चढ़ाते थे और बुर्जुआ सिद्धान्तों के प्रभाव तथा परोपजीविया के विरुद्ध सक्रिय युद्ध से लोगों को विमुक्त करते थे। उन्होंने ऐसे नाटकों की बड़ी कट आलोचना की। यद्यपि युद्धोत्तर काल में कई अच्छे नाटक प्रस्तुत किये गये फिर भी सामान्य रूप में इस युग के नाट्य-साहित्य का ककारत्मक स्तर बहुत ऊपर उठा हुआ नहीं माना जाता।

युद्धोत्तर साहित्य में शांति की विषय-वस्तु भी बड़े जोरों की के साथ प्रस्तुत की गयी है। कविता उपन्यास नाटक प्रचारात्मक लेख आदि के गुण सोवियत लेखक सस्यार में शांति और जाति-जाति के बीच मैत्री के भाव को बढ़ कर रहे हैं। इन कृतियों में साम्राज्यवादी विचारों की तीव्र आलोचना भी की गयी है और उन देशों और जातियों के प्रति सहानुभूति प्रकट की गयी है जो स्वाधीन होने की कोशिश कर रहीं हैं।

संसार में शांति आंदोलन को बढ़ करने के लिए कई अन्तर्राष्ट्रीय (पेरिस प्राय वारसा) काँग्रेसें बुलाई गयीं और सोवियत केसकों में उनमें भाग लिया इनमें आन्विक सस्यों के निर्माण का विरोध और अमेरिकन साम्राज्यवादिता की निंदा की गई। इस प्रकार साक्षित लेखक साहित्यिक मजता के साथ-साथ अन्तर्राष्ट्रीय सामाजिक-राजनीतिक कार्यव्यवस्था में भी रत हैं। कई प्रसिद्ध साक्षित लेखक विरह-शांति समिति के सदस्य हैं और इन रूप में वे योरोप अमेरिका और एशिया के कई देशों में जाकर वहाँ की जनता और विचारधारा से परिचित हो चुके हैं और वहाँ के लोगों को अपनी बातें बता चुके हैं। इस प्रकार अन्तर्राष्ट्रीय

१ आलेक ईन्गोर्डेव स्कोवोव मखेरमकोव कितरापुरी भाग २ पृष्ठ ३०४।

यूरोप के समय का साहित्य

यूरोपों के द्वारा घाति का आन्दोलन सारे विश्व में व्याप्त हो रहा है।  
साहित्य लेखकों की दृष्टि में इसी घाति-आन्दोलन की विराट् प्रति-  
बन्धि हुई है।

ऐरेनबुर्न के उपन्यास 'अंतिम कहर' (या संकट) में विराट्भ्यापी  
घाति आन्दोलन का चित्र प्रस्तुत किया गया है। इनके कथन में घाति के  
महर्षकों का यह संघर्ष या युद्ध है जो कि प्रतिक्रियावादिता और युद्ध  
कठनेवालों के विरुद्ध चलाया जा रहा है।

मीमनौब की कविताओं 'घनू और मित्र' में सामान्य जनता के  
प्रति प्रेम उसकी प्रवृत्तिगत जातीय परंपराओं के प्रति समान और सारे  
संसार के भूमिक वर्ग के साथ ऐक्य का भाव प्रदर्शित किया गया है।  
अधिक राष्ट्रीय घाति काँग्रेस में घोषित सहस्रक रूप में आने  
पर लीखनाब को हिन्दुस्तान पाकिस्तान और अफगानिस्तान को निकट  
से देखने का अवसर मिला। उसके वाक्यमय 'दो भारत' (और  
पाकिस्तानी बहानियाँ) में इन देशों की गरीबी और घोरता का चित्र  
प्रस्तुत किया गया है किन्तु इसके साथ विराट् और सर्व को नयी  
शक्ति जन्म के रहा है उसका अर्थ ही इसमें हुआ है।  
मीमनौब के नाटक 'कृष्णी प्रबल' में नये युद्ध छेड़नेवालों के प्रयत्नों  
की आलोचना की गयी है। इसका मुख्य भाव यह है कि राजनीति से  
तटस्थ नहीं रहा जा सकता है और प्रत्येक देश के सबसे बेममन को घाति  
का समर्थक अवश्यमेव होगा बाध्य।

इस प्रकार घाति आन्दोलन यूरोप में साहित्य का प्रभुत्व  
प्रकट बन रहा है।



